विनोबाका प्रेम-अभियान

चम्बलके बेहड़ोंमें

बागियोंका आत्मसमर्पण

[विश्वको चमत्कृत करनेवाली आँखोंदेखी कहानी]

श्रीकृष्णदत्त भट्ट

सर्व - सेवा - संघ - प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी

प्रकाशक : मन्त्री, सर्व-सेवा-संघ, राजघाट, वाराणसी
संस्करण : प्रथम : अक्तूबर १९६० : ५,०००
(संशोधित) : द्वितीय : अक्तूबर १९६१ : ३,०००
(संशोधित) : तृतीय : अप्रैल १९६४ : ३,०००
कुल प्रतियाँ : ११,०००
मुद्रक : ओमप्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड,
वाराणसी (बनारस) ६२२२–२०
मूल्य : दो रुपया

इसी पुस्तकका अंग्रेजी संस्करण

...AND THEY GAVE UP DACOITY

पृष्ठ : ३०४ :: मूल्य : ४.००

Title : CHAMBAL KE BEHADON MEN BAGIYON KA ATMASAMARPANA
Author : Shrikrishna Datta Bhatta
Subject : Sociology
Publisher : Secretary,
Sarva Seva Sangh,
Rajghat, Varanasi
Edition : Third
Copies : 3,000; April, '64
Total Copies : 11,000
Price : Rs. 2.00

प्रेम अभियान के [illegible]

विनोबा अपनी समस्या का चिन्तन करते हुए.

मेजर जनरल यदुनाथ सिंह
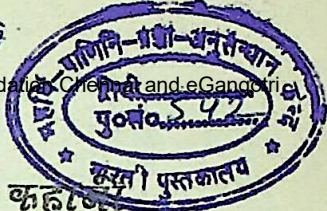
इस कहानीकी कहानी

…े इसने लिखा—'नक्षत्रोंकी छायामें !' अब लिखेगा—'सूरजके
…या 'चम्बलके बेहड़ोंमें' !''
… है २५ मई, १९६० की ।
…दिशामें बाल-रविकी किरणें हमपर अपना प्रकाश फैला रही थीं,
… हम लोग उठ रहे थे, तभी मुझे नोट लेते देखकर विनोबाने
… !

…बा, इ… …कर दीजिये कि नक्षत्रोंकी छाया जैसा नाम न
… समझते हैं कि उस किताबमें नक्षत्रोंकी बात होगी। बात है
… लोग समझते हैं आसमानकी !''—लल्लूदादाने शिकायत की।
… मुसकरा पड़े। हम लोग भी उठ-उठकर चल पड़े।

× × ×

यह सूरजके प्रकाशमें तो नहीं है, यह है—'चम्बलके बेहड़ोंमें !'
… शायद पूछें कि क्या है इसमें ? …तो आप जब इसे पूरा
…भी समझ सकेंगे, मोटी-मोटी बातें बता दूँ आपको :

…बलके बेहड़ोंमें है विनोबाकी उस ऐतिहासिक पदयात्राका आँखों-
…ा, जो उन्होंने मई-जून '६० में चम्बलके बेहड़ोंमें की।

…बलके बेहड़ोंमें है दुनियाको चौंकानेवाला अहिंसाका वह चमत्कार,
…गे हिंसा नतमस्तक होकर आ गिरी बाबाके चरणोंमें, अपनी
…ौर कारतूसें लेकर।

…बलके बेहड़ोंमें है बीस सशस्त्र इश्तहारी बागियोंका आत्मसमर्पण !
…ियोंका, जिनके पीछे पिछले सालोंका रेकर्ड कहता है कि एक-
…ौतके घाट उतारनेमें या जिन्दा पकड़नेमें दस-दस लाख रुपया
…ा है सरकारका !

● चम्बलके बेहड़ोंमें है उस इलाकेमें फैले भयंकर आतंक, रुदन और हाहाकारकी कहानी, जहाँका सेठ कहता है : 'बनिया तो बना ही है चूसनेके लिए !' जहाँ एक बागीकी बेटी कहती है : 'ये लोग मनई नाँय, पौहे आँय !' (मनुष्य नहीं, पशु हैं !)

● चम्बलके बेहड़ोंमें है पग-पगपर बागियोंको बाबाका यह सन्देश : 'मेरे दोस्तो ! आओ मेरे पास, अपने बुरे कामोंका साफ इजहार करो और उसका दण्ड स्वीकारकर कर डालो इसी जन्ममें अपने पापोंका प्रायश्चित्त !'

● चम्बलके बेहड़ोंमें है भयसे पीड़ितोंके लिए सच्चे वीर बननेका सन्देश, वैरसे पीड़ितोंके लिए है निर्वैर बननेका सन्देश ! बन्दूकवालोंके लिए है बन्दूकें लाकर बाबाको सौंप देनेका सन्देश !

● चम्बलके बेहड़ोंमें है रक्षाबन्धनका वह प्रसंग, जहाँ बहनें कहती हैं : 'रखियाँ बँधा लो, भइया !' और जहाँ बागी कहते हैं : 'आज तें हमाई नयी जिन्दगी है रही है !'

● चम्बलके बेहड़ोंमें है पुलिसको बाबाकी सलाह कि तुम पहले मक्खन बनो, बादमें भी मक्खन, बीचमें जरा-सा सख्त ! सेवा करो सबकी यह सोचकर कि 'मैं सेवक सचराचर रूपराशि भगवन्त !'

● चम्बलके बेहड़ोंमें है हरएकके लिए बाबाका सत्य, प्रेम और करुणाका सन्देश। कहते हैं वे : 'मैं तो इन्सानकी सेवा इन्सानके नाते करने आया हूँ। डाकू भी मेरे प्यारे हैं, पुलिसवाले भी। सरकारी अधिकारी भी मेरी ही जमातके हैं। असली डाकू तो है—धन-संग्रह। वह जो दरवाजेपर खड़ा है, वह तो तुम्हारा प्यारा छठा भाई है। बाँट दो अपनी सारी सम्पत्ति ! मिटा दो वैर-विरोध ! सब मिलकर गाँवका एक परिवार बना लो। फिर कहाँ रहेगा डाकू ? कहाँ रहेगी पुलिस ? कहाँ रहेगी गरीबी ? कहाँ रहेगा दुःख ? कहाँ रहेगा भय ? कहाँ रहेगा वैर ?'

× × ×

आप शायद कहें कि डाकू भी कहीं साधु बन सकते हैं ? पत्थर भी कहीं पसीज सकता है ?

'स्टेट्समैन' (२४ मई '६०) कहता है : 'ट्रांसमीटर चाहे जितना शक्तिशाली हो, प्रेम और शान्तिके सन्देश उन लोगोंके पास पहुँचनेमें देर लगती ही है, जो वर्षोंसे अपराधका धन्धा उठाये हुए हैं। सब न तो वाल्मीकि होते हैं, न जीन वैलजीन !'

मैं मानता हूँ कि देर लग सकती है, पर जीवनमें ऐसे क्षण आते हैं, जब पत्थर भी पसीज उठता है !

देखिये दादा मावलंकरके मानवताके झरनेमें एक गोता लगाकर और देखिये झवेरभाई मेघाणीके माणसाईना दीवाके प्रकाशमें आँख फैलाकर।

नहीं तो, दीनबन्धु एण्ड्रूजके जीवनकी ही एक घटना ले लीजिये :

'आप क्यों पड़े हैं मेरे पीछे ? आप मुझे पक्का ईसाई बनानेपर तुले हैं ! लेकिन मैं आपको साफ बता देना चाहता हूँ कि मुझे रत्तीभर भरोसा नहीं आपके भगवान्‌पर, आपके ईसापर !'

'भैया, तुम करो या न करो, भगवान् तो तुमपर विश्वास करते हैं। वे तो तुमसे बराबर स्नेह करते हैं !'—कहते हुए चार्ल्स फ्रीअर एण्ड्रूजने हर बारकी तरह उसे फिर चिपटा लिया गलेसे !

कॉलेज-जीवन समाप्त कर एण्ड्रूज जा पहुँचे दक्षिण-पूर्वी लन्दनके उस हिस्सेमें, जहाँ रहते थे—चोर, जुआरी, शराबी, ठग और धूर्त। चार वर्ष लगाये आपने वहाँ इन दीन भाइयोंकी सेवामें। इन्हीं लोगोंमें था एक ऐसा व्यक्ति, जिसे दुर्व्यसनोंकी लत-सी पड़ गयी थी। वह खूब शराब पीता और उपद्रव मचाता। नतीजा यह होता कि वह पकड़कर जेलमें ठूँस दिया जाता। जब-जब वह जेलसे छूटकर लौटता, एण्ड्रूज बड़े प्रेमसे उससे मिलते और उसके कल्याणके लिए प्रभुसे प्रार्थना करते।

अन्तमें एक दिन वह चिढ़कर बोल ही तो पड़ा : 'आप क्यों पड़े हैं मेरे पीछे !...'
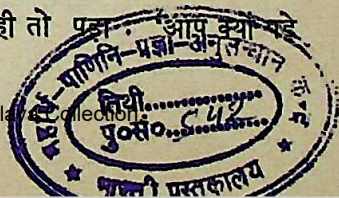
'भगवान् तो तुमपर विश्वास करते हैं, वे तो तुमसे बराबर स्नेह करते हैं !' न जाने कौन-सा जादू था इन शब्दोंमें कि उस व्यक्तिका जीवन एकबारगी ही पलट गया !

लोग हैरान थे उसका परिवर्तन देखकर।

जब उससे पूछा जाता : 'क्यों भाई, आजकल तुम्हारा व्यवहार इतना ममतामय और तुम्हारी वृत्ति ऐसी शान्तिमय क्यों हो गयी है ?' तो वह उत्तर देता : 'जानते नहीं ? भगवान् मुझसे प्रेम करते हैं, फिर मुझे भी तो उनके विराट् प्रेमके उपयुक्त बनना चाहिए न ?'

कुछ दिनों बाद वह चला गया अफ्रीका और वहाँ अनेक वर्षोंतक पादरीके रूपमें जनताकी सेवा करता रहा ![1]

× × ×

ठीक ही तो कहा है महादेवी वर्माने :

पुष्पमें है अनन्त मुस्कान,
त्यागका है मारुतमें गान !
सभीमें है स्वर्गीय विकास,
वही कोमल कमनीय प्रकाश !!

हृदयके भीतर बसे भगवान् कब जाग पड़ेंगे, कौन कह सकता है !

चम्बलके बेहड़ोंमें विनोबाने इसी भगवान्‌को जगानेका प्रयत्न किया।

विनोबा न तो किसीको डाकू मानते हैं, न बुरा आदमी। वे तो घट-घटमें प्रभुका दर्शन करते हैं। सबसे प्रेम करते हैं। सबकी सेवा करते हैं। हाँ, जो दुःखी हैं, पीड़ित हैं, शोषित हैं, उनकी सेवामें वे सबसे पहले लगते हैं। फिर वह कोई भी क्यों न हो !

इन्सानके नाते इन्सानकी सेवा करना उनका लक्ष्य है।

चम्बलके बेहड़ोंमें विनोबाका नाम विश्वमें जितना चमका, उतना तब भी नहीं चमका था, जब बीस साल पहले बापूने उन्हें पहला सत्याग्रही चुना था या तेलंगानामें भूदानका जन्म हुआ था।

१. श्रीकृष्णदत्त भट्ट : सेवाकी पगडण्डी, सं० २००६, पृष्ठ १६९-१७०।

आपने पढ़ी होगी यह कहानी अखबारोंमें, सुनी होगी रेडियोपर। पर यहाँ है वह प्रामाणिक रूपमें।

पुस्तककी सामग्री जुटानेमें एक नहीं, अनेक साथियों और मित्रोंका हाथ लगा है। सबका आभारी हूँ मैं। चि० गौतम बजाजने फोटो भेजे हैं, बाळभाईने नक्शा। मेजर जनरल यदुनाथ सिंहका फोटो भेजा है भारत सरकारने।

तो, यह है कहानी इस कहानीकी!

स्वर्गीय 'नवीन'की ये पंक्तियाँ याद पड़ रही हैं मुझे :

सन्त विनोबाकी वर वाणी,
यदि सुन सकें द्विपद हम प्राणी,
तो देखेंगे धरा बन गयी उन्नत स्वर्ग समाना है!

विनीत

काशी
विजयादशमी
२०१७ वि०

यह द्वितीय संस्करण

तकाजा बहुत दिनोंसे था कि इस पुस्तकका दूसरा संशोधित संस्करण तैयार कर दूँ, पर यह काम हो पाया है अब। पाठकोंकी माँग यह भी थी कि इसका कलेवर भी कुछ छोटा कर दिया जाय। आज्ञानुसार इस संस्करणमें पिछलेसे सवा दस फार्म कम कर दिये गये हैं।

—लेखक

काशी
अनन्तचतुर्दशी
२०१८ वि०

अ नु क्र म

इतिहासका नया मोड़

डायरीके पन्नोंसे

आइये, कुछ सोचें !

परिशिष्ट

चम्बलके बेहड़ोंमें

राज
स्थान
भरतपुर
आगरा
उत्तर
यमुना नदी
प्रदेश
इटावा
माधोपुर
भिंड
मुरैना
चंबल नदी
लश्कर
ग्वालियर
सिंध नदी
दतिया
शिवपुरी
प्रान्त
जिला
नदी
सज्जन क्षेत्र
विनोबा यात्रा मार्ग

चम्बल घाटी-क्षेत्र

इतिहासका नया मोड़

न हि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं ।
अवेरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो ॥

—बुद्ध

१. ये चम्बलके बेहड़
२. 'बागी है गओ !'
३. मुगलोंके राजमें
४. अंग्रेजी अमलदारीमें
५. स्वराज्यके बाद
६. अहिंसाकी दिशामें

वेहड़ोंमें बागियोंका गिरोह

१. ये चम्बलके बेहड़
२. 'बागी है गओ !'
३. मुगलोंके राजमें
४. अंग्रेजी अमलदारीमें
५. स्वराज्यके बाद
६. अहिंसाकी दिशामें

वेहड़ोंमें बागियोंका गिरोह

श्री यदुनाथ सिंह बागियोंको समझाते हुए

चम्बलके बेहड़ोंमें बागी
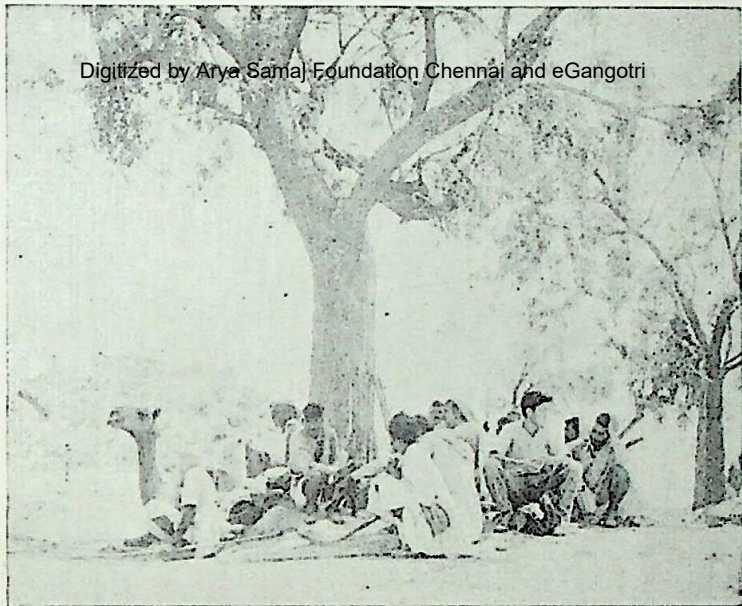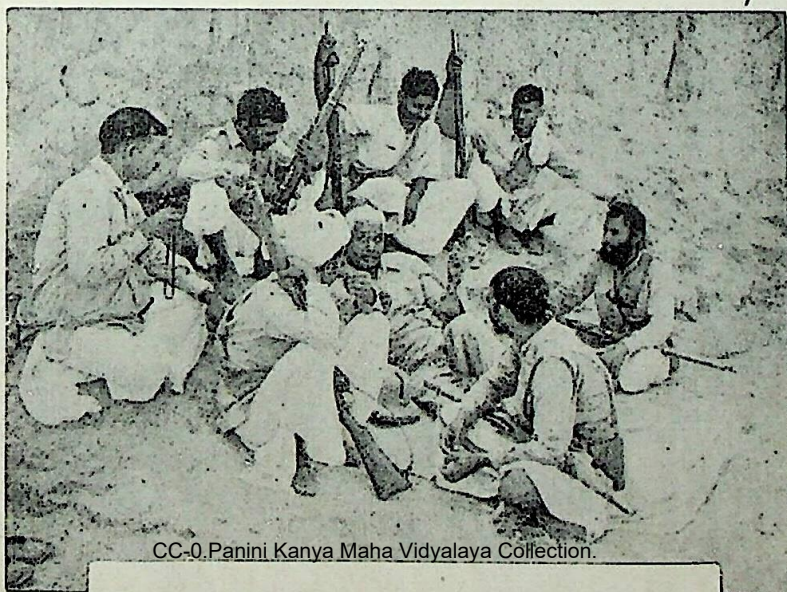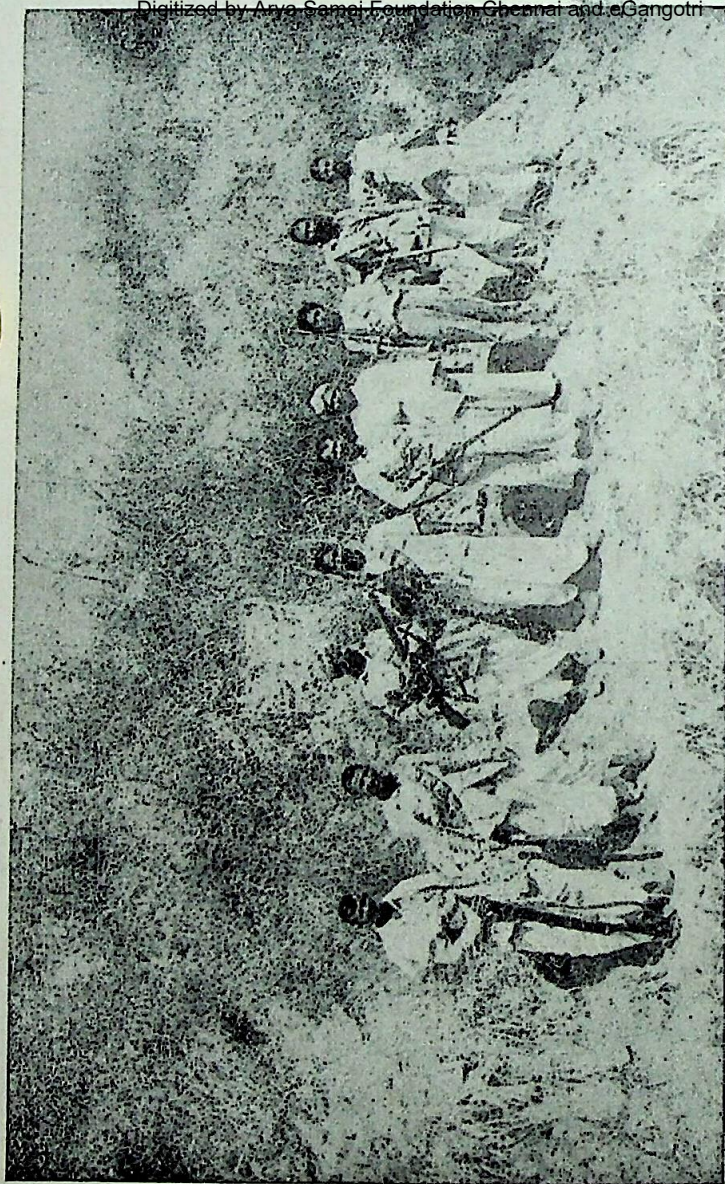
सखि, निरख नदीकी धारा।
ढलमल-ढलमल चंचल अंचल, झलमल-झलमल तारा !
निर्मल जल अन्तःस्तल भरके,
उछल-उछलकर, छल-छल करके,
थल-थल तरके, कलकल धरके,
बिखराता है पारा !
सखि, निरख नदीकी धारा ॥

लोल लहरियाँ डोल रही हैं,
भ्रूविलास रस घोल रही हैं,
इंगित ही में बोल रही हैं,
मुखरित कूल किनारा !
सखि, निरख नदीकी धारा ॥

सरयूके ही नहीं; गंगा-यमुना, वेतवा-चम्बल, नर्मदा-क्वारी—उत्तर भारत और दक्षिण भारतकी एक नहीं, अनेक नदियोंके पावन तटपर बैठकर मैंने 'राष्ट्रकवि' मैथिलीशरण गुप्तके 'साकेत'की विरह-विदग्धा उर्मिलाकी ये कड़ियाँ सुनी हैं और घण्टों बैठा रहा हूँ इनमें विभोर होकर।

× × ×

पर्वतोंकी गोदसे निकलनेवाली ये नदियाँ बन-बेहड़ोंसे होकर जन-मानसको परितृप्त करती हुई अनन्तकी ओर दौड़ी जाती हैं ! एक ही लगन, एक ही लक्ष्य, एक ही उद्देश्य !

ऋषि कहता है :

उपह्वरे गिरीणाम्
संगथे च नदीनाम्
धिया विप्रो अजायत।

पर्वतोंकी सन्निधिमें, नदियोंके संगमपर ब्राह्मणका, तत्त्वदर्शीका, ज्ञानीका जन्म होता है।

पर्वतोंकी कन्दराओंमें, नदियोंके तटपर और वन-बेहड़ोंमें हमारे असंख्य ऋषि-मुनियोंने तपस्या की है। भारतकी अरण्य-संस्कृति इतिहासका वह उज्ज्वल पृष्ठ है, जिसे देखकर, जिसे पढ़कर, जिसका अवगाहन कर हमारा रोम-रोम गद्‌गद हो उठता है।

× × ×

कश्मीरकी हिमाच्छादित पर्वत-माला हो, विन्ध्यकी मनोरम शैलमाला हो, पश्चिमी-पूर्वी घाटोंकी हरी-भरी पर्वत-श्रेणी हो, सागरका दुकूल हो, उड़ीसाकी ऊबड़-खाबड़ वन-भूमि हो, केरलसे कश्मीरतक, कलकत्तासे बम्बईतक देशके विभिन्न अंचलोंमें जब-जब प्रकृतिकी गोदमें, शुभ्र आकाशके नीचे, नक्षत्रोंकी छायामें बैठनेका मुझे अवसर मिला है, तब-तब आत्म-विभोर हो उठा हूँ।

प्रकृतिकी गोद मेरे लिए सदासे ही आकर्षणकी वस्तु रही है। फिर वह नदी हो या सागर, पर्वत हो या वन-बेहड़!

× × ×

और ये चम्बलके बेहड़?

इन्दौरसे ५० मील पश्चिममें पश्चिमी घाटोंसे निकलनेवाली चम्बल नदी ३०० मीलतक उत्तरकी ओर बहती है। कोटा पार करनेके बाद वह २०० मील उत्तर-पूर्व दिशामें बहती है और हमारे इटावा जिलेमें यमुनामें मिलनेके लिए कोई सौ मील दौड़ी आती है—दक्षिण-पूर्वकी दिशामें। यों वह मध्य-प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश तीनोंपर छायी हुई है। कोई आठ हजार वर्गमीलपर चम्बलने अपना आधिपत्य जमा रखा है।

इस टेढ़ी-मेढ़ी चंचल चम्बलकी धार बड़ी पैनी है, तीखी है; जिसके फलस्वरूप इसके किनारे बड़ा विकट कटाव हो गया है। कटावकी तीव्रता-का अनुमान ई० ए० कोथॉप, आइ० एफ० एस० की अध्यक्षतामें नियुक्त

कमीशन ([illegible]) की रिपोर्टसे लगाया जा सकता है, जिसमें वह कहता है :

"इटावा जिलेमें इस बातके स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध हैं कि आज जहाँ असंख्य भयंकर कटाव हैं, वहाँ आजसे कोई ४०० साल पहले बिलकुल समतल भूमि थी। इस अवधिमें कोई १५ करोड़ क्यूबिक फुट जमीन कटकर बह गयी है। इसका अर्थ यह होता है कि इन चार सौ सालोंमें यहाँ हर सेकण्डमें ११ क्यूबिक फुट जमीन बहती गयी है !"

हर सेकण्डमें ११ क्यूबिक फुट !

× × ×

इस कटावने चम्बलके किनारे ऐसी बुरी भाँति जमीन काटी है कि वहाँपर तरह-तरहकी गुफाएँ बन गयी हैं। ऊँचे-नीचे करारे हैं, टेढ़े-मेढ़े। वहाँ खेती करना कठिन ही नहीं, असम्भव-सा ही है।

और इस कटावके आसपास हैं बेहड़। ऊबड़-खाबड़ बेहड़। कहीं छोटे-छोटे पेड़ हैं, कहीं लम्बे और पतले।

ऐसे हैं चम्बलके ये बेहड़ !

किसानोंके लिए अवश्य ही वे दुःखद हैं। उनके पेटपर सीधा वार करते हैं वे।

पर मुझे तो उन्हें देखकर प्रकृतिकी मनोरम छटाका ही आनन्द मिलता है। आँखें घण्टों देखती ही रह जाती हैं। वृन्दावनके कुंजोंको, वहाँके करीरोंकी हृदयस्पर्शी याद आने लगती है और जयदेव आकर कानमें गुनगुनाने लगते हैं :

कुञ्जकुटीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली !

'बागी हैं गओ !' : २ :

जड़ चेतन गुन दोषमय, बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि बारि बिकार॥
ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग।
होंहि कुवस्तु सुवस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग॥

बात है सुयोग और कुयोगकी। विधाताकी गुण-दोषमयी सृष्टिका जो जैसा उपयोग कर ले। संतोंका तरीका है कि वे हंसकी भाँति गुणरूपी दूधको ग्रहण कर लेते हैं, दोषरूपी जलको छोड़ देते हैं। जिस वस्तुका उत्तमसे उत्तम उपयोग हो सकता है, उसीका निकृष्टसे निकृष्ट भी उपयोग हो सकता है। ग्रह, ओषधि, जल, वायु, वस्त्र सबका ऐसा ही हाल है।

चम्बलके बेहड़ भी इसका अपवाद नहीं।

× × ×

उस दिन स्वामी नित्यानन्द मुझे बता रहे थे कि चम्बलके ये बेहड़ प्रज्ञाचक्षु स्वामी शरणानन्दजीकी तपोभूमि हैं। चम्बलके पावन तटपर उन्होंने वर्षोंतक साधना कर जो आत्मविकास किया है और आत्मानुभूतिका जो अमृत प्राप्त किया है, उसमें आज जो भी व्यक्ति अवगाहन करता है, प्रसन्न हुए बिना नहीं रहता। उनके प्रसादके दो-एक कणोंसे ही इसकी पुष्टि हो जाती है :

"साधकके जीवनमें ऐसी प्रतीति नहीं रहनी चाहिए कि अमुक समय तो साधनका है और अमुक समय साधनका नहीं है। अमुक क्रिया या प्रवृत्ति तो साधन है और अमुक नहीं। उसका तो प्रत्येक क्षण और प्रत्येक प्रवृत्ति साधनमय होनी चाहिए। जिसकी समझमें सब कुछ भगवान्का है,

उसका अपना तो केवलमात्र एक भगवान्‌के सिवा और कुछ भी नहीं रहा। फिर उसकी कोई भी प्रवृत्ति भगवान्‌की सेवासे भिन्न हो ही कैसे सकती है ? उसके जीवनका प्रत्येक क्षण भगवान्‌की प्रसन्नताके लिए, उन्हींकी दी हुई योग्यतासे, उन्हींकी सेवामें लगेगा। इसके सिवा दूसरा साधन हो ही क्या सकता है ?

"साधकको चाहिए कि करने योग्य हरएक कामको साधन समझे। छोटेसे छोटा जो भी काम प्राप्त हो, उसे पूरी योग्यता लगाकर उत्साहपूर्वक जैसे करना चाहिए, ठीक-ठीक करे। उसमें तुच्छ बुद्धि न करे। जो काम भगवान्‌के नाते उनका काम समझकर किये जाते हैं, वे सभी साधन हैं। अतः उसे समझना चाहिए कि माला फेरना, झाड़ू लगाना, कमरा साफ करना—ये सभी मेरे प्रियतमके काम हैं।

"चित्तकी शुद्धिके लिए क्षमाकी बड़ी भारी आवश्यकता है। अतः साधकको क्षमाशील होना चाहिए। जब कभी उसे मालूम हो कि मेरे कारण किसीको कष्ट हुआ है, मुझसे किसीके प्रतिकूल व्यवहार हो गया है, तो तुरन्त उससे क्षमा माँग ले। यदि किसी दूसरेका व्यवहार अपने प्रतिकूल हो, तो तत्काल ही उसे क्षमा कर दे। अपने मनमें यह भाव ही न रहने दे कि उसने कोई अपराध किया है, ताकि उससे बदला लेनेकी भावना कभी भी उत्पन्न न हो। यह भाव रखे कि सरकारसे या ईश्वरसे भी उसको किसी प्रकारका दण्ड न मिले, बल्कि ईश्वरसे यह प्रार्थना करनी चाहिए कि इसकी बुद्धि शुद्ध कर दीजिये, ताकि यह अन्य किसीके साथ बुरा व्यवहार न करे। इससे साधकमें वैर-भाव मिट जाता है।

"जो काम मनुष्य दूसरोंसे अपने लिए नहीं चाहता, वह उसको दूसरोंके साथ नहीं करना चाहिए। जैसे, कठोर वचन हम दूसरोंसे सुनना नहीं चाहते, तो किसीसे कठोर वचन बोलना भी नहीं चाहिए। हम सम्मान चाहते हैं, अपमान नहीं चाहते, तो दूसरोंको सम्मान देना चाहिए; उनका अपमान नहीं करना चाहिए। जो अपना बुरा नहीं चाहता, उसे

दूसरे किसीका बुरा नहीं करना चाहिए। साधकको चाहिए कि किसीका बुरा न चाहे और परायी वस्तु लेनेकी इच्छा न करे।

"सिक्केसे वस्तु, वस्तुसे व्यक्ति, व्यक्तिसे विवेक और विवेकसे सत्यको अधिक महत्त्व देना चाहिए।"

× × ×

चम्बल-घाटीकी जिस तपोभूमिमें साधना करनेवाले एक सिद्ध साधकके मुखसे ऐसे अमृत-कण सतत झरते रहते हैं, वह तपोभूमि आज वर्षोंसे यह कहकर बदनाम है कि 'Dacoits and ravines go together! चम्बलके खड्ड माने डाकुओंके अड्डे!' चम्बलकी कन्दराएँ सैकड़ों सालोंसे कुख्यात डाकुओंका आश्रय-स्थल बन गयी हैं।

यह ठीक है कि पहले डाकू और लुटेरे चम्बलके बेहड़ोंमें छिपा करते थे, पर आज वैसा कम है। फिर भी आज सारा क्षेत्र 'डाकू-क्षेत्र' के नामसे बुरी भाँति बदनाम है। मानो वहाँ डाकू ही डाकू रहते हों, कोई सज्जन हो ही नहीं!

आज तो यह होता है कि आसपासके गाँवोंमें कहीं कोई घटना घटती है, कोई कत्ल होता है, किसीका खून होता है, कोई अपराध होता है, किसीको सताया या जलील किया जाता है, किसीका प्रतिशोध लिया जाता है, तो पानीदार चम्बलके पानीवाले आदमी 'बागी' हो उठते हैं। गाली और गोलीकी भाषा सुनकर जब उनका खून उबल उठता है और उनसे कोई अपराध बन पड़ता है, तो वे घरसे मुँह मोड़कर चम्बलके बेहड़ोंमें जा छिपते हैं। वहाँ उनके छिपनेकी गुंजाइश भी खूब रहती है।

कोई पूछता है: "फलाँ आदमी कहाँ है?"

लोग जवाब देते हैं: "फलनवाँ तौ बागी है गओ!" (वह तो 'बागी' हो गया।)

मुगलोंके राजमें : ३ :

ओ रजकणके ढेर
तुम्हारा है विचित्र इतिहास !

यह उक्ति ताजमहलपर ही लागू नहीं होती, चम्बलके बेहड़ोंपर भी लागू होती है। चम्बलके ही मैदानमें मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्तने सिकन्दरके सिपहसालार सिल्यूकसको दाँतों चने चबवाकर भारतसे भाग जानेके लिए विवश किया था। भारतीय इतिहासकी यह घटना अमर है, अविस्मरणीय है।

चम्बल-घाटीकी चर्चा इतिहासमें जगह-जगह मिलती है।

आइये, देखें इतिहास क्या कहता है :

मुगल सम्राट् बाबरने अपने संस्मरणोंमें चम्बल-घाटीके जाटों और गूजरोंका लुटेरों और दस्युओंके रूपमें वर्णन किया है। ये लोग जनताको लूटकर चम्बलके बेहड़ोंमें लापता हो जाते थे, फिर उन्हें पकड़ पाना हँसी-खेल नहीं था।

सिकन्दर लोदी, शेरशाह और अकबर—सबके सब चम्बल घाटीका लोहा मानते थे और इस क्षेत्रके दमनके लिए उन्होंने सेनाएँ भेजी थीं। बाह (आगरा) के भदौरियोंने मुगल सम्राट्को इतना त्रस्त कर रखा था कि भदौरियोंके राजाको पराजित होनेपर हाथीसे कुचलकर मार डालनेका फरमान जारी किया गया था। अकबरके विश्वस्त साथी इतिहासकार अबुलफजलकी हत्या इसी क्षेत्रमें हुई थी।

फतेहपुर सीकरीमें अकबरने अपनी राजधानी बनायी थी, पर यहाँसे उसे इसीलिए छोड़कर भागना पड़ा कि चम्बल घाटीके डाकू उसके सिरका दर्द बन गये थे। बादमें उसके उत्तराधिकारियोंको इसी कारण आगरेसे भी हटनेके लिए विवश होना पड़ा।

पिण्डारियों, रुहेलों और ठगोंने चम्बल घाटीपर अपना पूरा कब्जा जमा रखा था। वे बिना खतरेके निर्बाध गतिसे वहाँपर अपना तस्कर-व्यापार चलाते रहते थे। चम्बलके बेहड़ों, खारों और खड्डोंमें वे मजेसे जाकर छिप जाते थे। उन्हें पकड़ पाना और परास्त करना इसलिए टेढ़ी खीर था कि उनके बचावके ठिकाने ऐसे थे, जिनमें उन्हें खोज पाना असम्भव-सा था। उनके रास्ते ऐसे चक्करदार थे कि मीर साहब याद आ जाते थे :

उसे खोजते 'मीर' खोये गये
कोई देखे इस जुस्तजूकी तरफ़ !

अंग्रेजी अमलदारीमें : ४ :

"हर डाकूको उसीके गाँवमें फाँसीपर लटका दिया जाय और उसके परिवारवाले 'सरकारके गुलाम' बना लिये जायँ !"

यह है वारेन हेस्टिंग्सका वह फरमान, जो कि डाकुओंके कुकृत्योंसे बुरी भाँति त्रस्त होनेपर उसने जारी किया था। सन् १७७२ में एक कमेटीने उसे रिपोर्ट दी थी कि 'दस्युओंका यह तस्कर-व्यापार सैकड़ों वर्षोंसे लगातार चलता आ रहा है। वे निधड़क होकर अशक्त जनताको लूटते हैं, लोगोंका कत्ल करते हैं। इन डाकुओंके चलते डाकू-क्षेत्रमें 'न्याय' और 'शान्ति' शब्दोंका कोई अर्थ नहीं रह गया है !

चम्बल घाटीमें पिण्डारियोंका उत्पात जारी था। करीम, चित्तू और वसील मुहम्मद जैसे सरगना पिण्डारियोंके गिरोह जनताको त्रस्त किये रहते थे। सिंधियाकी पुलिसने बड़ी मुश्किलसे वसील मुहम्मदको गिरफ्तार कर अंग्रेज सरकारके हवाले कर पाया था। चित्तूको चम्बलके बेहड़ोंमें किसी चीतेने फाड़ खाया। यों इन लुटेरोंकी हरकतें कुछ कम हुईं अवश्य, पर विशेष नहीं।

सन् १८३९ में लार्ड आकलैण्डने आगराकी गद्दी सँभाली। उन्होंने चम्बल घाटीके डाकुओंको समाप्त करनेका काम कर्नल स्लीमैनको सौंपा। स्लीमैनने १२ सालमें १२०० डाकुओंका सफाया करनेमें, उन्हें मारने या पकड़नेमें सफलता पायी। गजराज और मेहरबान जैसे सरगनोंपर भी स्लीमैनने विजय प्राप्त की।

× × ×

इण्डियन सिविल सर्विसके आस्टेस किट्सने सन् १८८९ में 'सीरियस क्राइम इन एन इण्डियन प्रोविन्स'में चम्बल घाटीके डाकुओं और डाकुओं-के तौर-तरीकोंका विस्तारसे वर्णन किया है। उसमें एक जगह लिखा है

कि एक बदनाम डाकू कर्नल स्लीमैनसे कहता है : "हुजूर, हमारा तो 'बादशाही काम' था। हम लोग दिलेरीसे हमला करते थे और हजारों ही नहीं, लाखों रुपये लूट लेते थे। जैसी शानसे हम लूटते थे, वैसी ही शानसे, वैसी ही आजादीसे हम रुपया खर्च भी करते थे। हम लोग जिन्दगीभर लक्ष्मीकी गोदमें किलोलें करते रहे हैं और मस्तीसे पैसा उड़ाते रहे हैं। आप आज हमें ताँबेके जो चन्द टुकड़े देते हैं, उनसे हमारा काम कैसे चले ?"

मेहरबान जैसे डाकू राजाओंकी शानसे रहते और उसी शानसे घूमते। एक बार मेहरबानने अपनी बीबी सुजनियाके साथ पूरी शान-शौकतके साथ बंगालके श्रीरामपुरतककी यात्रा की थी।

कभी ये लोग वैष्णव-वैरागीका वेष बनाकर चलते थे, कभी सजी-सजायी बारातका। कभी बनजारेका रूप धरते थे, तो कभी फेरी लगाकर बेचनेवाले सौदागरका। कभी तोता-मैना लेकर उनके बेचनेका स्वांग करते थे, तो कभी अहीरका स्वांग बनाये फिरते थे।

यों इनके अनेक रूप थे, जिनकी आड़ लेकर ये अपना कार्य सिद्ध करते रहते थे और जनताको लूटा करते थे।

× × ×

'फूट डालो और राज करो'—अंग्रेजोंकी यह प्रसिद्ध नीति भारतमें खूब फली-फूली थी। इटावाके कलक्टर ह्यूम साहब, जिन्होंने बादमें भारतकी राष्ट्रीय कांग्रेसको जन्म दिया था, सोचने लगे कि डाकू-समस्याके समाधानके लिए इस सफल नुसखेका प्रयोग क्यों न किया जाय ?

उन्होंने गहराईसे इस समस्यापर विचार किया। उन्होंने पता लगाया कि किन जातियोंके लोग डाकू बनते हैं, क्यों बनते हैं, और किन जातियोंके लोग वीर होते हैं, किन जातियोंके लोग डरपोक।

सारी बातें सोच-समझकर उन्होंने यह नुसखा निकाला :

"राजपूतोंको, लड़नेवाली कौमोंको रोजीके वैध साधन दो, जिससे वे मजेकी जिन्दगी बिता सकें; उन्हें उनपर होनेवाले अत्याचारके साधनोंसे—

दीवानी अदालतों और देहाती सूदखोरोंसे—मुक्त कर दो। फिर वे उस सरकारके लिए प्राण न्योछावर करनेको प्रस्तुत रहेंगे, जिसके शासनमें उन्हें अच्छी तरह जीवन बितानेका मौका मिल रहा है।

"ऐसे उपाय करो, जिनसे गूजर, अहीर तथा चोरी करनेवाली जातियोंके लोग आसानीसे धनी बन सकें।

"बनियों, कायस्थों, ब्राह्मणों तथा ऐसी ही अन्य जातियोंके लोगोंपर टैक्स लगाओ, जो कलमकी बदौलत धनी बनते हैं और अपनी पुश्तैनी जायदादसे अपनेसे बड़ोंको वंचित करके उन्हें निकाल बाहर करते हैं; जो परले सिरेके डरपोक हैं और जो न तो अपनी सम्पत्तिकी रक्षाके लिए तलवार उठानेकी क्षमता रखते हैं और न सरकारकी सहायताके लिए।"

ह्यूम साहबकी यह नीति चालू होनेपर भी उसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। चम्बल घाटी अशान्तिका क्षेत्र बनी ही रही।

पैसा लूटनेके लक्ष्यसे तो कम ही लोग बागी बनते रहे; आपसी राग-द्वेष, दलबन्दी, मानापमान, अत्याचार, अनाचार और पुलिसके उत्पीड़नको लेकर अधिकतर लोग बागी बनते रहे।

हाँ, ग्वालियरके माधव महाराज सिंधियाने अपने शासन-कालमें अवश्य ही डाकुओंको अहिंसात्मक रीतिसे जीतनेका एक उत्तम प्रयोग किया था और तत्काल उसका असर भी अच्छा हुआ था। पर आगे वह परम्परा निभायी नहीं जा सकी!

अंग्रेजी पुलिस गाली और गोलीकी भाषाके द्वारा डाकुओंकी समस्या हल करनेमें लगी रही।

पर हिंसासे कहीं हिंसा दबती है? उसके मिटानेका एकमात्र साधन है—अहिंसा और प्रेम!

न हि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं।
अवरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो॥

—बुद्ध

स्वराज्यके बाद

सन् १८५७ में पहली बार भारतने आजादीके लिए सिर उठाया, सशस्त्र क्रान्तिका रास्ता अपनाया, पर ब्रिटिश संगीनोंने उसे कुचल दिया। हिंसाने हिंसाको दबा दिया। उस दौरानमें चम्बलके बेहड़ोंने आजादीके दीवाने ताँतिया टोपेको १८ महीनेतक शरण दी थी। बादमें सशस्त्र क्रान्तिके पुजारी पण्डित गेंदालाल दीक्षितने इन बेहड़ोंमें अंग्रेजी राज्यको उखाड़ फेंकनेके लिए निजबा, पंचमसिंह और डूँगर बटोही जैसे बागियोंको भी तैयार कर लिया था, पर इन सब दीवानोंकी तड़फड़ाहट तत्काल कोई असर न ला सकी।

असर लायी गांधीकी अहिंसा।

सन् १९४७ में हिन्दुस्तान आजाद हो गया।

अंग्रेज अपनी अमलदारी भारतीयोंको सौंपकर इंग्लैण्डके लिए रवाना हो गये।

हमने अहिंसाके शस्त्रसे आजादी पायी तो जरूर, पर आज चौदह सालके बाद भी हम अहिंसापर अपना विश्वास जमा नहीं पाये हैं। पुलिस और फौज, बन्दूक और तोप आज भी हमारी शान्ति-रक्षाका साधन बनी हुई है!

× × ×

चम्बलके बेहड़ोंमें आज भी हमारे सैकड़ों भाई छिपे फिरते हैं। लोग उन्हें 'डाकू' कहते हैं, वे अपनेको 'बागी' कहते हैं।

पुलिस उनकी समाप्तिके लिए प्रयत्नशील है जी-जानसे। पर अंग्रेजी सरकारकी विरासतके तौरपर गाली और गोली ही उसकी जेबमें है।

नतीजा सामने है—पुराने बागी धीरे-धीरे कम होते चलते हैं, नये बागी उगते आते हैं।

× × ×

मानसिंह, सुलताना, पुतली, कल्ला, लाखन आदिके गिरोहोंने जब

उत्तर प्रदेश, मध्यभारत और राजस्थानकी सरकारोंकी नाकमें दम कर दी, तो फरवरी १९५३ में श्री शान्तिप्रसाद डी० आई० जी० की अध्यक्षतामें तीनों सरकारोंने मिलकर एक संयुक्त मोरचा कायम किया। जुलाई '५५ में श्री इसलाम अहमद ने यह कमान सँभाली। ढाई सालतक यह अभियान चला। ३१ जनवरी, १९५६ में यह संयुक्त मोरचा ढीला किया गया।

सरकारी विज्ञप्ति कहती है कि इस मोरचे द्वारा सन् १९५४ के अन्ततक ६ बदनाम गिरोह समाप्त कर दिये गये। सुलतानाका गिरोह सन् १९५३ के आरम्भमें समाप्त हुआ और अगस्त १९५५ में मानसिंह और उसके बेटे सूबेदारसिंहका सफाया कर दिया गया। मानसिंहका गिरोह १०० हत्याओं और १००० डकैतियोंके लिए जिम्मेदार माना गया था। संयुक्त मोरचेमें ८३ बार पुलिस और डाकुओंकी भिड़न्त हुई, जिसमें ७४ डाकू मारे गये। पुलिसके ६१ ज्वान खेत रहे।

× × ×

अभी उस दिन अम्बाहमें मध्यप्रदेशके डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल पुलिस एच० एस० कोहिलीने बताया कि हमने जो डाकू-अभियान चला रखा है, उसके द्वारा १६ मेंसे १३ गिरोह समाप्त कर दिये गये हैं।

स्पष्ट है कि इस समस्याको सुलझानेमें पुलिस अपनी पूरी ताकतसे लगी है, पर वह भी इस बातको महसूस करती है कि इस समस्याका उन्मूलन हिंसासे हो नहीं सकता। वैरसे वैर मिट नहीं सकता। श्री कोहिलीने कई साल पहले ही सरकारको सुझाव दिया था कि फोड़ेका आपरेशन तो हो चुका है, मरहम-पट्टी बाकी है और वह वह हो सकती है किसी सन्तके वचनों और प्रयत्नोंके द्वारा ही। आत्मबलसे ही वैर-विरोधकी भावना मिट सकती है। इसके लिए आचार्य विनोबा भावेको बुलाया जाय!

●

स्वराज्यके बाद

सन् १८५७ में पहली बार भारतने आजादीके लिए सिर उठाया, सशस्त्र क्रान्तिका रास्ता अपनाया, पर ब्रिटिश संगीनोंने उसे कुचल दिया। हिंसाने हिंसाको दबा दिया। उस दौरानमें चम्बलके बेहड़ोंने आजादीके दीवाने ताँतिया टोपेको १८ महीनेतक शरण दी थी। बादमें सशस्त्र क्रान्तिके पुजारी पण्डित गेंदालाल दीक्षितने इन बेहड़ोंमें अंग्रेजी राज्यको उखाड़ फेंकनेके लिए निजबा, पंचमसिंह और डूँगर बटोही जैसे बागियोंको भी तैयार कर लिया था, पर इन सब दीवानोंकी तड़फड़ाहट तत्काल कोई असर न ला सकी।

असर लायी गांधीकी अहिंसा।

सन् १९४७ में हिन्दुस्तान आजाद हो गया।

अंग्रेज अपनी अमलदारी भारतीयोंको सौंपकर इंग्लैण्डके लिए रवाना हो गये।

हमने अहिंसाके शस्त्रसे आजादी पायी तो जरूर, पर आज चौदह सालके बाद भी हम अहिंसापर अपना विश्वास जमा नहीं पाये हैं। पुलिस और फौज, बन्दूक और तोप आज भी हमारी शान्ति-रक्षाका साधन बनी हुई है!

× × ×

चम्बलके बेहड़ोंमें आज भी हमारे सैकड़ों भाई छिपे फिरते हैं। लोग उन्हें 'डाकू' कहते हैं, वे अपनेको 'बागी' कहते हैं।

पुलिस उनकी समाप्तिके लिए प्रयत्नशील है जी-जानसे। पर अंग्रेजी सरकारकी विरासतके तौरपर गाली और गोली ही उसकी जेबमें है।

नतीजा सामने है—पुराने बागी धीरे-धीरे कम होते चलते हैं, नये बागी उगते आते हैं।

× × ×

मानसिंह, सुल्ताना, पुतली, कल्ला, लाखन आदिके गिरोहोंने जब उत्तर प्रदेश, मध्यभारत और राजस्थानकी सरकारोंकी नाकमें दम कर दी, तो फरवरी १९५३ में श्री शान्तिप्रसाद डी० आई० जी० की अध्यक्षतामें तीनों सरकारोंने मिलकर एक संयुक्त मोरचा कायम किया। जुलाई '५५ में श्री इसलाम अहमद ने यह कमान सँभाली। ढाई सालतक यह अभियान चला। ३१ जनवरी, १९५६ में यह संयुक्त मोरचा ढीला किया गया।

सरकारी विज्ञप्ति कहती है कि इस मोरचे द्वारा सन् १९५४ के अन्ततक ६ बदनाम गिरोह समाप्त कर दिये गये। सुल्तानाका गिरोह सन् १९५३ के आरम्भमें समाप्त हुआ और अगस्त १९५५ में मानसिंह और उसके बेटे सूबेदारसिंहका सफाया कर दिया गया। मानसिंहका गिरोह १०० हत्याओं और १००० डकैतियोंके लिए जिम्मेदार माना गया था। संयुक्त मोरचेमें ८३ बार पुलिस और डाकुओंकी भिड़न्त हुई, जिसमें ७४ डाकू मारे गये। पुलिसके ६१ ज्वान खेत रहे।

× × ×

अभी उस दिन अम्बाहमें मध्यप्रदेशके डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल पुलिस एच० एस० कोहिलीने बताया कि हमने जो डाकू-अभियान चला रखा है, उसके द्वारा १६ मेंसे १३ गिरोह समाप्त कर दिये गये हैं।

स्पष्ट है कि इस समस्याको सुलझानेमें पुलिस अपनी पूरी ताकतसे लगी है, पर वह भी इस बातको महसूस करती है कि इस समस्याका उन्मूलन हिंसासे हो नहीं सकता। वैरसे वैर मिट नहीं सकता। श्री कोहिलीने कई साल पहले ही सरकारको सुझाव दिया था कि फोड़ेका आपरेशन तो हो चुका है, मरहम-पट्टी बाकी है और वह वह हो सकती है किसी सन्तके वचनों और प्रयत्नोंके द्वारा ही। आत्मबलसे ही वैर-विरोधकी भावना मिट सकती है। इसके लिए आचार्य विनोबा भावेको बुलाया जाय !

●

अहिंसाकी दिशामें : ६ :

जो तोकूँ काँटा बुवै ताहि बोउ तू फूल !

केवल यही एक ऐसा रास्ता है, जिससे वैर और विरोध, राग और द्वेष, हिंसा और क्रोधपर विजय प्राप्त की जा सकती है। हिंसा तो फेल ही होनेवाली है, अहिंसा कभी फेल होती ही नहीं। हाँ, यह बात दूसरी है कि हिंसाका नतीजा आनन-फानन दिखाई देता है और अहिंसाका चमत्कार समय लेता है।

भगवान् बुद्धके अनुसार क्रोधको अक्रोधसे, बुराईको भलाईसे, कंजूसीको दानसे और झूठको सचसे ही जीता जा सकता है :

अक्कोधेन जिने कोधं, असाधुं साधुना जिने।
जिने कदरियं दानेन सच्चेन अलिकवादिनं॥

× × ×

कोहिली साहबका सुझाव मध्यप्रदेशकी सरकारको तीन साल पहले मिल गया था, पर विनोबाको इसका पता चला १५ मई '६० को, जब डी० आई० जी० साहब बाबाको पुलिस कर्मचारियोंके बीच बोलनेके लिए आग्रहपूर्वक लिवा ले गये।

सवाल है कि विनोबाने चम्बलके बेहड़ोंमें आनेकी बात सोची कैसे ? इतिहासने यह नया मोड़ लिया कैसे ?

उसकी भी अपनी कहानी है :

भिण्ड और मुरैना जिलोंमें बहुत दिनोंसे आतंकका राज है। डाकू, मुखबिर, पुलिस—सबके सब जनतापर छाये रहते हैं। भेंड़ जिसके हाथ लगती है, वही उसे कपट लेता है। सर्वत्र त्राहि-त्राहि मची रहती है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी, डॉक्टर सुशीला नायर और मेजर जनरल यदुनाथ सिंह सन् '५९ में जब भिण्ड पधारे, तो स्थानीय कांग्रेस कमेटीने उनसे प्रार्थना की कि डाकुओंकी समस्या पुलिसके माध्यमसे हल होनेवाली नहीं। पुलिस गोली चलाकर डाकुओंका खातमा कर सकती है, पर उनका निर्मूलन नहीं कर सकती। हिंसाके तरीकेसे यह समस्या सुलझायी नहीं जा सकती। गालियों और गोलियोंसे राग-द्वेष, वैर-विरोधकी आग बुझायी नहीं जा सकती। इसे तो अहिंसाके रास्ते ही सुलझाया जा सकता है। इसके लिए शान्ति-अभियान चलना चाहिए। वर्ना, यह मर्ज लाइलाज है।

× × ×

उसके बाद लँगड़े भाईने कश्मीरकी दौड़ लगायी। भिण्ड जिला कांग्रेसके भूतपूर्व अध्यक्ष श्री हरिसेवक मिश्र—जिन्हें बाबा प्रेमसे 'लँगड़ा भाई' कहकर पुकारते हैं—६ जुलाई १९५९ को गांधी स्मारक निधिके श्री प्रेमनारायण शर्माके साथ कश्मीरके लिए रवाना हुए। पठानकोटमें पता लगा कि कश्मीरमें तो इन दिनों बाढ़का प्रकोप है। चार दिन प्रतीक्षा करके ये लोग हवाई जहाजसे श्रीनगर पहुँचे। फिर गांधी आश्रमके श्री रामसुमेरभाईके साथ गुलमर्ग पहुँचकर उन्होंने बाबासे भेंट की।

हरिसेवकभाई तीन दिन वहाँ ठहरे और ८-९ घण्टे बाबासे बातें करते रहे। उन्होंने भिण्ड और मुरैनाकी, पूरी चम्बल घाटीकी दयनीय स्थिति बाबाको समझायी और जोरदार आग्रह किया कि बाबा, आप इस क्षेत्रमें पधारिये। आपके आगमनसे यह समस्या निश्चय ही सुलझ सकेगी।

बाबाने उन्हें कोई आश्वासन नहीं दिया, केवल इतना ही कहा : 'विचार करूँगा। उधरका कार्यक्रम बना, तो आऊँगा।'

× × ×

उसके बाद आया तहसीलदार सिंहका पत्र। मानसिंहके पुत्र तहसीलदार सिंहने नैनी जेलसे विनोबाको लिखा कि 'मुझे फाँसीकी सजा

हुई है। फाँसीपर लटकनेके पहले मेरी बड़ी इच्छा है कि आपके दर्शन करूँ। यदि ऐसा सम्भव न हो, तो आप अपने किसी प्रतिनिधिको ही मेरे पास भेज दें। मुझे आपसे कुछ विशेष बातें करनी हैं।'

बाबाने मेजर जनरल यदुनाथ सिंहको तहसीलदार सिंहसे मिलनेके लिए भेजा।

× × ×

और इसके बादसे चम्बलके बेहड़ोंमें बाबाका शान्ति-मिशन दौड़ने लगा। जनरल साहब और उनके कुछ अन्य साथी इस दौड़धूपमें लग गये कि मानसिंह और रूपाके गिरोहके बागी बाबाके समक्ष आत्म-समर्पण कर दें। बन सके तो और भी गिरोहोंके।

बाबाने भी मंजूर कर लिया कि वे चम्बल घाटीका दौरा करेंगे, सबको प्रेमका सन्देश देंगे और इन गुमराह भाइयोंको समझायेंगे कि 'तुमने अभीतक जो गलत काम किये हैं, उन्हें छोड़ दो और सच्चे दिलसे पश्चात्ताप करो। भगवान् तुम्हारा भला करेगा!'

डायरीके पन्नोंसे

धर्मक्षेत्रे भिण्डक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
पुलिसाः डाकवश्चैव किमकुर्वत संजय ?

—विनोबा

अब लौं नसानी अब ना नसैहों।
रामकृपा भवनिसा सिरानी
जागे पुनि ना डसैहों॥
पायो रामनाम चिन्तामनि
उर कर तें न खसैहों॥

वह बेचारा सुखुआ !

काशी
२६ अप्रैल '६०

"क्या बताऊँ भाईजी, आप लोगोंसे पहले मुलाकात हो गयी होती, तो मैं क्यों गलत रास्तेपर चला जाता !·····"

कालेपानीकी सजा पाया हुआ सुखुआ नामका एक लम्बा-तड़ंगा ज्वान पैरमें डण्डा-बेड़ी डाले मेरे बगलमें बैठा आपबीती सुना रहा था।

बात है आजसे २८-३० साल पहलेकी।

सन् '३०-'३२ की गांधीकी आँधीने जब मुझे कॉलेजसे छुड़ाकर जेलके सीखचोंमें बन्द कर दिया, तो सबसे पहली बार मेरा उन लोगोंसे रात-दिनका सम्पर्क आया, जिन्हें लोग अपराधी, चोर, डाकू, बदमाश कहा करते हैं।

"अब तो वापस लौटनेका सवाल है नहीं। लग गया गलत रास्तेपर, अब तो यह जिन्दगी है और जेल है। अपने कुकर्मोंका फल भोग रहा हूँ, भोगूँगा और भोगते-भोगते शायद किसी दिन जेलकी चहार-दीवारीके भीतर यह देह गल-गलकर ढेर हो जायगी।·····"

कितने ही डाकों, कत्लों आदिके जुर्मोंमें सुखुआको पचासों सालकी कड़ी कैदकी सजा मिली थी। एकाध बार वह जेलसे भाग भी चुका था। धोखेसे सोते समय किसी मुखबिरने उसे गिरफ्तार करा दिया था। अब जीवनमें उसे कोई रस नहीं था। राजनीतिक कैदियोंको जब उसने जेलमें आते देखा, देशभक्तिकी बात कुछ-कुछ उसकी समझमें आने लगी, तो वह हाथ मल-मलकर अफसोस करने लगा : "काश, आप लोगोंसे पहले मुलाकात हो जाती, तो मैं क्यों गलत रास्तेपर चला जाता ! मेरा यह लम्बा-तड़ंगा शरीर देशकी गुलामीकी बेड़ियाँ तोड़नेके काम आता !"

× × ×

सन् '४१-'४२ की नजरबन्दीमें भी जेलमें जिन डाकुओंसे मेरा सम्पर्क आया, उनकी बातोंसे भी लगा कि ये भाई गुमराह हो गये, गलत रास्तेपर चले गये और जब उधर चले गये, तो वापस लौटनेका सवाल ही कहाँ उठता है ? एक बार जिसकी पीठपर डाकू, चोर, बदमाशका ठप्पा लगा, सो लगा ! फिर न तो समाज ही उसे अच्छी दृष्टिसे देख सकता है, न पुलिस ही। काली सूचीमें उसका नाम दर्ज हुआ, सो हुआ। वह चाहे न चाहे, अपराध करे न करे, उसके चरित्रपर लगा कलंकका टीका छूट कहाँ पाता है ?

× × ×

इधर जब गुजरातके महाराज—रविशंकर व्यासको पढ़ने-परखनेका मौका हाथ लगा, तो मेरा यह विश्वास पक्का हो गया कि यदि उचित रीतिसे इन लोगोंको हाथमें लिया जाय, इनके मानसमें जलती दिव्य ज्योतिको उकसाया जाय, तो ये गुमराह भाई भी मानवताके प्रकाश-स्तम्भ बन सकते हैं और जरूर बन सकते हैं। रविशंकर महाराजने इस क्षेत्रमें अपना जीवन होमकर असंख्य भाई-बहनोंको समाजका काँटा बननेसे बचाया है और उनके तमसाच्छन्न जीवनमें सत्य, ईमानदारी और श्रम-निष्ठाका दिव्य प्रकाश फैलानेमें सफलता प्राप्त की है।

× × ×

आज चुन्नीभाई कह रहे थे कि विनोबा शीघ्र ही चम्बलके बेहड़ोंमें जानेवाले हैं और वहाँके बदनाम डाकू भाइयोंकी समस्या सुलझानेवाले हैं। अच्छा हो, आप इस दौरानमें उनके साथ रहें।

पदयात्रामें जानेका निश्चय

काशी
२८ अप्रैल '६०

आज भाई सिद्धराज ढड्ढाने बुलाया था।

बोले : "बँगलोरसे वल्लभस्वामीने लिखा है कि 'अप्रैलके अन्तिम पखवारेमें बाबाकी रिपोर्टिंग तो फातमी साहब कर रहे हैं, मईके अन्तिम पखवारेमें लवणम्‌ने आनेको कहा है। बीचके लिए किसीको भेजना है।' आप इधर बीमारीसे उठे हैं, जा सकेंगे क्या ?"

मैंने कहा : "जा सकूँगा। चुन्नीभाईसे परसों बात भी हुई थी।"

मार्चभर मैं बिस्तरपर था। खाँसी और बुखारने बुरी भाँति पस्त कर दिया था। थोड़ा-सा भी चलनेमें थकावट महसूस होती थी, पर बाबाके साथ पदयात्राका आकर्षण मुझे खींच रहा था और दूसरा आकर्षण था इस बातका कि पता नहीं, चम्बलके बेहड़ोंमें बाबाकी अहिंसा क्या जादू बिखेरे !

मैंने 'हाँ' भर दी।

सिद्धराजभाई बोले : "तो कर दूँ वल्लभस्वामीको तार ?"

मैंने कहा : "जरूर।"

"तो आप कब रवाना होंगे ?"

मैं बोला : "३० अप्रैलको।"

बाबा सबका : सब बाबाके !

हाथरस
१ मई '६०

कल शामको 'अपर इण्डिया' पकड़नेको जब वाराणसी कैण्टपर पहुँचा, तो टिकटकी खिड़कीपर इतना लम्बा 'क्यू' लगा था कि गांधी स्मारक निधिके कमलाभाई अगर मेरा भी टिकट न खरीद लाते, तो शायद मुझे गाड़ी ही छोड़नी पड़ जाती। ट्रेनमें भीड़ थी। किसी तरह सीटपर ही बैठे-बैठे रात काटी।

सुबह कमलाभाई तो टूँडलामें दूसरी गाड़ी पकड़कर आगरा चल दिये, मैं आगे बढ़ा। हाथरस जंकशनपर उतरा, तो पता चला कि शहर यहाँसे छह मील दूर है। मुझे हाथरस किला जाना चाहिए। वहाँके लिए ट्रेन छूटनेमें देर थी। इसलिए सोचा कि इक्के-ताँगेसे ही क्यों न चला चलूँ। शहर पहुँचकर खादी भण्डारसे पता लगाऊँगा कि बाबाका पड़ाव कहाँ है। पर, उसके लिए परेशान नहीं होना पड़ा। शहरसे पहले ही राजपुराके कस्तूरबा सेवा-केन्द्रकी सर्वोदय-साहित्यकी मोटर और विनोबा पदयात्री-दलके स्वागतका बड़ा-सा साइनबोर्ड दिखाई पड़ा। वहींपर मैं उतर गया।

उत्तर प्रदेशके और बाहरके भी अनेक मित्रों और साथियोंके दर्शन हुए। नहाते समय जयदेवभाई मिले। बाबाको प्रणाम करने गया, तो बाळभाई मुस्कराकर बोले : "रिपोर्टिंग ?"

थोड़ी देरमें गोविन्दन भी आ गये। मैंने पूछा : "तुम भाई, कैसे ?"

बोले : "वल्लभस्वामीका तार मिला कि मईके पहले पखवारेकी बाबाकी रिपोर्टिंगके लिए पहुँचो !"

मैंने कहा : "यह खूब ! मैं भी तो इसीलिए आया ! अच्छा है—
खूब गुजरेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो !"

× × ×

तीन बजे बाबा रोजकी भाँति उत्तर प्रदेशके कार्यकर्ताओंके बीच बोले। आज उन्होंने तत्त्वज्ञान छोड़कर व्यवहारकी चर्चा की और बुजुर्गोंको समझाया कि हमारे आन्दोलनमें बहुतसे नौजवान आये हैं, जिन्हें कि अपने यहाँ बनाये रखनेकी जिम्मेदारी हमारी है।

× × ×

"दे दो अब भूमि-अधिकार !"

दुखायलभाईके इस गीतसे आज ५॥ बजे सायंकालीन प्रार्थना-सभा आरम्भ हुई।

बाबाने कहा कि लोग हमसे पूछते हैं कि 'बाबा, भूदानमें आपको जो ४५ लाख एकड़ जमीन मिली है, उसे आप कबतक बाँट पायेंगे ?' बाबा पूछता है कि बाबा तो जमीन बाँटेगा, आप सिर्फ तमाशा देखेंगे ? आप स्तुति-निन्दा करेंगे ? यह गलत है। आप सभी लोग तो बाबाके सेवक हैं। बाबा सबका है, सब बाबाके। कांग्रेसवाले हों या कम्युनिस्ट, हिन्दू हों या मुसलमान, जैन हों या ईसाई—सबके सब बाबाके सेवक हैं। पंथभेद, पक्षभेद, पार्टीभेद, भाषाभेद—ऐसा कोई भेद, हमारे यहाँ नहीं है। सब लोग बाबाके कार्यकर्ता हैं। सबपर बाबाकी हुकूमत है और यह हुकूमत है—प्रेमकी !

× × ×

फातमी साहब और गोविन्दनके साथ आठ बजे स्टेशनकी ओर घूमने निकल गया। लौटकर खुले मैदानमें हम लोगोंने बिस्तर फैलाये। कुछ देर गपें चलती रहीं। फिर सबने यह सोचकर जल्दी आँखें मूँद लीं कि सुबह ३॥ बजे ही—उठि चलना परभात रे ! ●

स्त्रियाँ प्रखर बनें !

चन्दबारा
२ मई '६०

ब्राह्ममुहूर्तमें 'श्री रमारमण गोविन्द हरि'का नाम लेकर बाबा रोज चल पड़ते हैं। प्रातःकालीन प्रार्थना इन दिनों गाँवसे बाहर निकलकर खुले मैदानमें चलते-चलते होती है और उसके कुछ देर बाद चलता है जंगम विद्यापीठका पहला कार्यक्रम—मुलाकातें !

एक विद्यार्थीने अहिंसाकी चर्चा करते हुए पूछा : 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति'—ऐसा क्यों कहा जाता है !

बाबाने उसे समझाया कि डॉक्टर रोगीके अंगोंकी चीरफाड़ करता है, पर उसका लक्ष्य यही रहता है कि रोगीका कष्ट दूर हो। देखनेमें उसका कार्य हिंसाका-सा लगता है, पर वह हिंसा नहीं, अहिंसा है। इस प्रकारकी हिंसा यदि 'वैदिकी हिंसा' हो, तब तो उसे अहिंसा माना जा सकता है; पर वैदिकी हिंसाके नामपर अपने स्वार्थके लिए हिंसा करना और उसे हिंसा न मानना गलत है।

× × ×

बाबा जबतक हाथ-मुँह धोने गये, तबतक दुखायलजीकी खँजड़ी गमक उठी :

मेहनतपर मेहनत ही टिकेगी,
मेहनतकी बाजार लगेगी !···
श्यामकी बंसी बोल रही है;
जनता आँखें खोल रही है !···

बाबाको आते देखा, तो दुखायलजीने जनतासे नारा लगवाया : "बोलो यज्ञ भगवान्‌की जय !"

"यज्ञ भगवान्‌की जय !"

बाबाने यहींसे सूत्र पकड़कर चन्दवाराकी जनतासे पूछा : "तुमने 'यज्ञ भगवान्‌की जय'का मतलब भी समझा है या यों ही नारा लगा दिया ? इस यज्ञमें स्वारथ होमना पड़ता है। पड़ोसीको, दुःखीको अपनेमेंसे हिस्सा देना पड़ता है। गाँवमें अगर दो सौ आदमी जमीनके मालिक हैं, तो हमें दो सौ दान-पत्र मिलने चाहिए। बूँद-बूँद दोगे, तो ५ मिनटमें कुल जमीन तर हो जायगी। सबको मिलकर यह काम करना है और इस गाँवमें ग्राम-स्वराज्यका नमूना खड़ा करना है।

सायंकालीन प्रार्थना सभामें बाबाने सत्य, प्रेम और करुणाकी व्याख्या करते हुए इस बातपर जोर दिया कि 'सत्याग्रही'को 'सत्यग्राही' भी बनना चाहिए। अपने पास तो सत्य हो ही, सामनेवालेके पास जो सत्य हो, उसे भी ग्रहण करना चाहिए।

बाबा बोले कि सत्याग्रह किसीके 'खिलाफ' नहीं, किसीके 'साथ' होना चाहिए। जिसके साथ सत्याग्रह हो, उसके लिए सोलह आने प्रेम हो। करुणाका अर्थ है—'खोजना'। हमसे जो ज्यादा दुःखी हो, उसे खोजकर हम उसके प्रति प्रेम प्रकट करें। पानी नीचेकी ओर दौड़ता है। हम भी अपनेसे दुःखीको खोजकर उसका दुःख मिटायें। सत्य, प्रेम, करुणा—इन तीन गुणोंको यदि हम प्राप्त कर लें, तो बड़ा काम बनेगा।

सचमुच !

मथुराके किसे प्रेरणा नहीं मिलती ?

साद़ाबाद (मथुरा)
३ मई '६०

आज अपराह्णमें नवाब साहबकी कोठीके विशाल हालमें उत्तर प्रदेशके कार्यकर्ताओंके बीच बोलते समय बाबा गद्‌गद हो उठे। मथुरा और मथुराके प्यारे गोपाल कृष्णकी यादसे उनका हृदय भर आया। टप-टप आँसू टपकने लगे। बोले :

हिन्दुस्तानमें ऐसा कौन-सा हिन्दू है, जिसे मथुराके नामसे प्रेरणा नहीं मिलती ? पाँच हजार सालसे भारत 'गोपाल कृष्ण'··'गोपाल कृष्ण'की रट ही लगाये है। इसकी इतनी महिमा है कि इसे लेकर दक्षिणवालोंने एक स्वतन्त्र स्थान बनाया—मदुराई। दक्षिण भारतमें, मदुरामें भगवान् कृष्णके इतने भक्त निकले कि उसीसे रामानुजकी परम्परा फूट पड़ी। दक्षिणवाले उत्तरकी मथुराको 'बड़ी मदुराई' कहते हैं। भक्तिकी धारा उधरसे इधर आयी। यह सारी प्रेरणा मथुराके नामसे मिलती है। हमें आश्चर्य होगा कि अगर उस मथुरासे हमारे कार्यकर्ताओंको प्रेरणा न मिले !

कान्ताबहन और हरविलासबहनकी ओर देखकर बाबा बोले : ये दो लड़कियाँ गुजरातभरमें घूमती हैं। घर-बार, नौकरी-चाकरी, माता-पिता, सब छोड़कर आयी हैं और गुजरातके देहातोंमें घूम-घूमकर 'भूमि-पुत्र'के ग्राहक बनाती हैं। तो क्या इनमें त्यागकी भावना कम है ? इधर ये जो जवान बैठे हैं, इन्होंने भी माता-पिता छोड़े, नौकरी छोड़ी, घर-बार छोड़ा और गाँव-गाँव भटक रहे हैं। इससे अधिक कुशल और कामलायक परिवार हमें मिल नहीं सकता। इससे बढ़कर और क्या चाहिए !

× × ×

सायंकालीन प्रार्थनामें कुछ गेरुआ वस्त्रधारी साधुओंको देखकर बाबाको बाबा राघवदासकी याद आयी और उन्होंने साधुओंसे जोरदार अपील की कि वे भूदानका काम उठा लें।

कहा : इसमें उन्हें बड़ा मजा आयेगा। मुँहमें नाम, हाथमें काम, दिलमें राम। वाणी, हाथ, चित्त—तीनोंमें राम। संन्यासियोंके शिरोमणि शंकराचार्यने माँग की : 'भूतदयां विस्तारय'। अद्वैत-विचारमें प्राणि-मात्रमें कोई फर्क नहीं माना जाता। यह बात जीवनमें कैसे आयेगी ? भूतदयाके विस्तारसे ही। भूदानका काम भूतदयाके विस्तारका ही तो काम है। साधु-समाज इसे उठा ले, तो वह एकदम उन्नत हो जायगा। इससे रामानुज, शंकर, तुलसीकी इज्जत बढ़ेगी।

दक्षिण-यात्राकी चर्चा करते हुए बाबा बोले : "मैसूरमें रामानुजके मठमें मैं गया था। गद्दीपर विराजमान वृद्ध महापुरुषने बड़े प्यारसे हमारा स्वागत किया और कहा कि 'हम जवान होते, तो जरूर आपके काममें लगते।' उन्होंने भूदानको आशीर्वाद दिया। जामवन्तने हनुमान्‌से कहा : मैं जवान होता, तो समुद्र पार कर जाता, पर तू क्यों चुप साधे बैठा है ?—'का चुप साधि रहेउ बलवाना' ?"

पर हमारे तो असंख्य हनुमान् चुप ही साधे बैठे हैं ! ●

दूसरोंके लिए जीना सीखो !

खन्दौली (आगरा)
४ मई '६०

सुबह चलते-चलते पुकार हुई दीवान शत्रुघ्न सिंहकी। भारतके सबसे पहले ग्रामदानी गाँव मंगरौठके प्रेरणापुंज दीवान साहबकी।

दीवान साहब कल ही आ गये थे और उन्होंने मुझे एक लम्बा पत्र दिखाया, जो उन्होंने बाबाके पास भिजवा दिया था। उसमें उन्होंने मंगरौठमें बैठनेका अपना निश्चय प्रकट करते हुए गाँवकी समस्याएँ उपस्थित की थीं। मैंने कल ही उनसे कह दिया था कि आप मंगरौठमें बैठ जायँ और राजनीतिसे हाथ जोड़ लें, तो मंगरौठकी कायापलट होते देर न लगेगी। आपसी लड़ाई-झगड़े और फितूर भी वहाँ बैठनेपर धीरे-धीरे शान्त हो जायँगे।

बाबाने भी दीवान साहबसे यही कहा।

बोले : अब तो आप ६० के हो गये। अब सब झमेला छोड़कर मंगरौठमें बैठ जाइये जमकर। याद रखिये—क्षमा वीरस्य भूषणम् ! पुरुषार्थ और पराक्रमकी शोभा है—क्षमा। सबसे प्रेम करिये। दूसरेसे वहीं-तक बात करिये, जहाँतक उससे मेल बैठता है। विरोधकी बात उठाइये ही नहीं। ऐसा व्यवहार करेंगे, तो सालभरमें सब ठीक हो जायगा। एककी ताकत १० है, दूसरेकी ८। दोनों आपसमें भिड़ जाते हैं। नतीजा यह होता है कि देशको १० – ८ = २ का लाभ मिलता है। दोनों मिल-कर रहें, तो १० + ८ = १८ का लाभ देशको मिलेगा।

"जो आज्ञा !"

× × ×

कोई ७ बजे बाबाने आगरा जिलेकी सीमामें प्रवेश किया। सीमापर आगरा जिला कांग्रेसके अध्यक्ष शिवप्रसाद गुप्त, नगरनिगमके अध्यक्ष शम्भूनाथ चतुर्वेदी तथा अनेक सर्वोदय-प्रेमी लोगोंकी भीड़ने बाबाका स्वागत किया। जिला और पुलिसके अधिकारी भी उपस्थित थे। स्कूलोंके छात्र पंक्तिबद्ध होकर 'जय जगत्'के नारे लगा रहे थे।

आजका पड़ाव एक स्थानपर नहीं है। बाबा प्राइमरी स्कूलमें ठहराये गये हैं, हम लोग इधर-उधर।

प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने दिलोंकी एकतापर बड़ा जोर दिया। कहा : विचारोंमें भले ही भिन्नता रहे, पर हमारे दिलोंमें एकता रहनी चाहिए।

सायंकालीन प्रार्थनामें बाबाने कहा कि आज इंग्लैण्डके एक भाईने हमसे पूछा कि इंग्लैण्ड जैसे देशमें, जहाँ न तो भूमि-समस्या है और न यहाँके अर्थमें गरीबी है, वहाँ आपके आन्दोलनका क्या उपयोग किया जा सकता है? मैंने उसे समझाया कि जिन देशोंपर भूमि-समस्या लागू नहीं होती, उन्हें समझना चाहिए कि सर्वोदयका उद्देश्य उससे कहीं बड़ा है। उसका बुनियादी उसूल है—हम सब दूसरोंके लिए जीना सीखें। अपने सुखका हिस्सा हम दूसरोंको दें। सुखी राष्ट्र अपनेसे दुःखी राष्ट्रोंको अपने सुखका हिस्सा समर्पण करें।

मिस माथेर इंग्लैण्डसे अपने पिताके साथ विश्वके विभिन्न अंचलोंकी यात्रा करनेके लिए जीपपर निकली है। दो-तीन दिनसे हमारे साथ चल रही है। आज माथेर साहबको पेचिश हो गयी है। परेशान हैं बाप-बेटी दोनों। गोविन्दनकी तबीयत भी खराब है। डॉक्टर ललित उन्हें आगरा लिवा ले गये हैं। कई दिनसे बड़ा खराब पानी पीनेको मिल रहा है हम लोगोंको। बेचारे विदेशियोंके लिए तो और भी मुसीबत! ●

राम जाने डाकू कौन है !

आगरा
५ मई '६०

सुबह हम लोग निपट-निपटाकर जब बिस्तर लेकर सामानके पड़ावपर पहुँचे, तो पता चला कि बाबा कोई २५ मिनट पहले निकल चुके हैं। बिस्तर वहीं छोड़ हम लोग सरपट आगे बढ़े। पर यह थोड़ा-सा अन्तर पार करनेमें हमें कई मील लग गये। मार्गन कभी-कभी मौजमें आकर नाचता-कूदता मेहरोत्राके साथ कदम मिलाकर लड़ाईके गीत गाता। ब्रिटिश सेनाका सैनिक रह चुका है वह बरसों। अपने पुराने गीत वह पूरी लयके साथ गाता :

"लायड जार्ज नोज माई फादर
फादर नोज लायड जार्ज
लायड जार्ज नोज माई फादर..."

× × ×

आगरा ज्यों-ज्यों निकट आने लगा, त्यों-त्यों दर्शनार्थी भीड़ अधिकाधिक उमड़ने लगी। बाबा नाश्तेके लिए एक जगह रुके, तो हम लोग आगे निकल गये। मार्गनको आगे जाकर बाबाके फोटो भी लेने थे। जमुना पार कर शहरमें प्रवेश करनेपर एक जगह भीड़में मिस माथेर हमें मिल गयी, खादीके रंग-बिरंगे परिधानमें। उसे लस्सी पिलाकर हम लोग आगे बढ़े, तो विनोबाके साथ हजारोंकी भीड़का वह रेला आया कि कोई इधर गया, कोई उधर !

× × ×

बेलनगंज, भैरोनाला, जीवनमण्डी, विजयनगर कोलोनी होते हुए हम लोग विश्वविद्यालयके छात्रावासमें पहुँचे। यहाँ हमारे तीन दिनके निवास-का प्रबन्ध है।

हाथ-पैर धोकर बाबा मंचपर आये और एकत्र भीड़को सम्बुद्ध करते हुए बोले : इससे पहले मैं दो बार आगरा आ चुका हूँ । ८।। सालसे हमारी पद-यात्रा चल रही है । इसकी हमें कोई थकान नहीं महसूस हो रही है ।

भूदानमें तो सारा काम प्रेमसे होता है । जो काम नैतिक आन्दोलन और प्रेमसे बनेगा, वह कानूनसे बन ही नहीं सकता । भूदानका रास्ता प्रेमका रास्ता है और वह हमेशा खुला रहेगा ।

बाबाने सबसे अपील की कि लोग इस प्रेमके आन्दोलनमें हाथ बँटायें । इसीमें जीवनका मजा है । भगवान्‌ने हमें जो चोला दिया है, उसे सार्थक करना चाहिए ।

× × ×

दोपहरमें उत्तर प्रदेशके कार्यकर्ता एकत्र हुए, तो करणभाईने बाबासे प्रार्थना की कि उत्तर प्रदेशके अनेक प्रमुख कार्यकर्ता आज यहाँ उपस्थित हैं । आप हमें आदेश दीजिये कि हम लोग किस प्रकार कार्य करें ।

बाबाने कहा कि आज देशमें अखिल-भारतीय-सेवकत्व विकसित करनेकी आवश्यकता है । कारगर अखिल-भारतीय-सेवकत्व उन्हींका हो सकता है, जो कोई संदेश लेकर जायँ । पुराने जमानेमें दयानन्द, रामकृष्ण, लोकमान्य घूमे । जिसके पास जितना गहरा पैगाम था, उसका उतना ही गहरा असर पड़ा ।

× × ×

अपराह्नकी मुलाकातोंमें जान माथेर और उनकी बेटी मिस मेरीकी मुलाकातमें अहिंसाकी अच्छी चर्चा हुई ।

मिस मेरी इंग्लैण्डमें मजदूरिनका जीवन बिता चुकी है । उसने कहा कि कोई दुर्व्यवहार करता, तो मैं शान्त रहती । उसका अच्छा असर पड़नेके बजाय अकसर ऐसा ही अनुभव मिलता रहा कि लोगोंका दुर्व्यवहार और बढ़ता ही जाता है । शान्त रहनेसे लोग मानते हैं कि

यह दब्बू है और इसे चाहे जितना सतानेमें कोई डर नहीं है। तो व्यक्तिगत जीवनमें अहिंसाका प्रयोग कैसे किया जाय ?

बाबाने उसे समझाया कि उसके लिए अहिंसामें पूरी श्रद्धा रखनी पड़ेगी और अन्यायको शान्तिपूर्वक सहन करनेका साहस रखना होगा। हमें अत्याचारका बदला अत्याचारसे नहीं, पत्थरका बदला पत्थरसे नहीं देना है। ऐसा लग सकता है कि हमारी हार हो रही है, पर हताश और दुःखी होनेकी जरूरत नहीं। हम दृढ़तासे डटे रहेंगे, तो हमारी विजय होगी ही। हाँ, हममें इतनी दृढ़ता रहनी चाहिए कि यदि प्राणोंका भी उत्सर्ग करना पड़े, तो हम अहिंसाके पालनके लिए प्रसन्नतापूर्वक प्राणोंका विसर्जन कर दें। ईसाने क्रूसपर लटक करके ही तो यह महत्ता प्राप्त की है !

मेरीने पूछा : स्त्री-पुरुषमें आप क्या भेद करते हैं और अपने जीवनको सम्पूर्ण बनानेके लिए तथा विश्वमें अपने जीवनका लक्ष्य पूरा करनेके लिए स्त्रियाँ क्या करें ?

बाबाने कहा कि आध्यात्मिक दृष्टिसे, आन्तरिक दृष्टिसे स्त्री और पुरुषमें कोई भेद नहीं। बाह्य दृष्टिसे थोड़ा अन्तर है। मातापर पारिवारिक जिम्मेदारी भी रहती है, सामाजिक जिम्मेदारी भी। स्त्रियोंको आगे आकर अहिंसाके क्षेत्रमें काम करना चाहिए। उन्हें सेनामें नहीं भरती होना चाहिए। उन्हें मातृत्वकी भावनाका विकास करना चाहिए। वे युद्धमें सहायिका न बनें, बल्कि उसे रोकनेका काम करें और प्रेमका विस्तार करें। तभी उनके जीवनका लक्ष्य पूरा होगा। इसीमें उनके मातृत्वका गौरव है। हमारे यहाँ जननीको 'स्वर्गादपि गरीयसी' कहा गया है। उस गौरवकी उन्हें रक्षा करनी चाहिए।

× × ×

विभिन्न पार्टियोंका एक प्रतिनिधिमण्डल बाबासे मिला। उनमें कोई प्रजा-सोशलिस्ट पार्टीका था, कोई सोशलिस्ट पार्टीका; कोई जनसंघका था, कोई और किसी पार्टीका।

इन लोगोंने पुलिसपर यह आरोप लगाया कि बाह-क्षेत्रमें पुलिसके जुल्मोंके कारण ही लोग डाकू बननेको विवश हुए हैं। जनता पुलिससे भी पीड़ित है, डाकुओंसे भी। जो लोग पुलिसके जुल्मोंका विरोध करते हैं, उन्हें तरह-तरहसे फँसानेकी कोशिश की जाती है। सार्वजनिक कार्यकर्ताओं-पर डंडे बरसाये जाते हैं। शहरमें भी पुलिसका आतंक छाया रहता है।

बाबाने कहा कि आपको अगर पुलिसके व्यवहारसे शिकायत है, तो आप मुख्य मन्त्रीसे कहिये, पुलिस-मन्त्रीसे कहिये।

"पर वे लोग तो हमारी बातें सुनते ही नहीं !"

बाबा : "सुनेंगे क्यों नहीं ? हाँ, आपकी शिकायतोंके पीछे कोई राजनीतिक उद्देश्य नहीं होना चाहिए। ऐसा नहीं होगा, तो वे लोग जरूर ही आपकी बात सुनेंगे।

× × ×

और शामकी सार्वजनिक सभा ?

सबसे पहले नगरप्रमुख शम्भूनाथ चतुर्वेदीने महापालिकाकी ओरसे बाबाका अभिनन्दन किया। मंचपर ढेबरभाईके साथ कितने ही संसद्-सदस्य और कमिश्नर, कलक्टर तथा अन्य अधिकारी बैठे थे।

पालीवाल पार्कमें ३० हजारसे अधिककी भीड़में ऊँचे मंचपरसे बाबाने घोषणा की कि आजकी दुनियामें सियासत और मजहबोंके दिन लद गये। अब तो विज्ञान और आत्मज्ञानके समन्वयके दिन आये हैं। आज विज्ञान पुकार-पुकारकर कह रहा है कि अगर तुमने 'मेरे'-'तेरे'का भेद नहीं मिटाया, तो तुम खुद मिट जाओगे।

बाबाने आगरासे यह माँग की कि वह ब्रह्मविद्याके आधारपर निष्काम सेवा करनेवाले, पचास सेवक उन्हें दे। बोले : आगराके लिए मेरा आकर्षण ताजमहलके लिए नहीं है, बल्कि इसलिए है कि यहाँसे मुझे 'मुनिजी'—मित्तलजी जैसा कार्यकर्ता मिला है।

चम्बल-क्षेत्रकी अपनी यात्राकी चर्चा करते हुए बाबाने कहा :

अब हम भिण्ड-मुरैनाकी तरफ जा रहे हैं। आज सबेरे किसीने हमसे

पूछा कि "आप डाकू-क्षेत्रमें जा रहे हैं?" हमने कहा कि 'जी न, हम सज्जनोंके क्षेत्रमें जा रहे हैं, डाकुओंके क्षेत्रमें नहीं।' भिण्ड-मुरैना क्षेत्र भी अन्य क्षेत्रोंकी भाँति सज्जनोंका क्षेत्र है। डाकू कौन है और कौन नहीं है, इसका फैसला करनेवाला तो परमेश्वर है। कुछ लोग दुनियामें 'डाकू' कहे जाते हैं। यह जरूरी नहीं कि केवल वे ही डाकू हों। परमेश्वरकी निगाहमें दूसरे लोग अधिक गुनहगार साबित हो सकते हैं। हम कोई मसला हल करने नहीं जा रहे हैं। हम तो सज्जनोंकी सेवाके लिए, ईश्वरके सेवकके नाते घूम रहे हैं। एक दिन ऐसा आयेगा कि हमारा ही मसला हल हो जायगा!

काशीको सर्वोदय-क्षेत्र बनाइये !

आगरा
६ मई '६०

भावुकोंकी कल्पना-लहरीका अनुपम प्रतीक है ताजमहल। कवि और कलाकार न्योछावर हैं प्रेमकी इस उज्ज्वल और पवित्र समाधिपर ! संगमरमरकी यह अनोखी रचना विश्वके सप्त आश्चर्योंमें अपना स्थान बना बैठी है, तो इसमें आश्चर्य ही क्या ?

ऊषाकी मनोरम वेला, यमुनाका पावन पट और प्रेमी युगलकी श्वेत संगमरमरवाली ये अनोखी समाधियाँ ! सब लोग भावविभोर थे। बाबाने दोनोंकी समाधियोंपर शान्ति-पाठ किया।

ताजका दर्शन कर बाबा निकले, तो थोड़ी ही दूरपर शाहजहाँ पार्कमें उन्हें करना था आध्यात्मिक मित्र-मण्डलका उद्घाटन। अच्छी भीड़ थी। घासकी कालीनपर हम लोग बैठ गये और बाबाके मुखसे अध्यात्मकी मनोरम चर्चा सुनने लगे।

बाबाने कहा : अध्यात्मकी सच्ची कसौटी है—सम्पूर्ण सृष्टिपर विश्वास करना। जो व्यक्ति सृष्टिपर विश्वास करेगा, उसके मनकी गाँठें स्वतः खुल जायँगी और तभी उसके हृदयमें भगवान्‌का प्रवेश होगा।

वहाँसे निकलकर बाबा तेजीसे आगे बढ़ गये और रास्तेमें बेलनगंजके चौराहेपर सर्वोदय-साहित्य मण्डलका उद्घाटन करके निवासपर चले आये। हम लोग कुछ पीछे पड़ गये थे, फिर भी दूकानपर पहुँचनेपर खण्डेलवाल साहबने बड़े प्रेमसे हमें सुगन्धित शर्बत पिलाया ही !

मध्याह्नमें उत्तर प्रदेशके कार्यकर्ताओंकी बैठक हुई। आजकी बैठकमें केन्द्रीय मंत्री बी० एन० दातार, दिल्ली विश्वविद्यालयके उपकुलपति

डॉक्टर वी० के० आर० वी० राव, मलकानी साहब, विचित्रभाई आदि भी उपस्थित थे।

बाबाने कहा : मैं चाहता हूँ कि हर प्रदेशमें एकाध क्षेत्र सर्वोदयका क्षेत्र बनानेकी कोशिश हो। वहाँपर शोषण-मुक्ति और शासन-मुक्तिकी कोशिश की जाय। सरकारके मुख्य-मुख्य कर्तव्य वहाँपर न रहें। झगड़े, शराब, नशा न रहे। पुलिस, अदालत आदिकी जरूरत न रहे। चुनावमें संघर्ष न होता हो। मुझे उत्तर प्रदेशका क्षेत्र चुनना हो, तो मैं काशी शहर और बनारस जिलेका क्षेत्र चुनूँगा।

काशी-प्रवासकी अपनी स्मृतियाँ सुनाते हुए बाबाने कहा कि काशीमें हमें 'स्वच्छ काशी'का और 'शराबबन्दी'का आन्दोलन उठाना चाहिए, जो कि बुनियादी काम है। सारे वैधानिक काम करनेपर भी यदि काशीमें शराबबन्दी न हो, तो हमें सत्याग्रह करना चाहिए।

× × ×

तीसरे पहरसे शामतक चम्बल घाटी क्षेत्रके दौरे और वहाँकी बागी-समस्याके सम्बन्धमें सम्पूर्णानन्दजी, बी० एन० दातार, श्रीमन्नारायण, डॉक्टर वी० के० आर० वी० राव, मेजर जनरल यदुनाथसिंह जैसे विशिष्ट लोगोंसे बाबाकी महत्त्वपूर्ण वार्ता होती रही।

× × ×

हाँ, आज बाबासे एक बड़ी मजेदार मुलाकात हुई!

आगराके आर्चबिशप—बड़े पादरी—आये, दूसरे पादरीके साथ। बाबासे पूछने लगे : "हम आपके भूदानकी क्या सेवा करें?"

बाबा : 'अपने पड़ोसीको अपनी ही तरह प्यार करो—' इस उपदेशके अनुसार एर्नाकुलममें तो आर्चबिशपने भूदानमें हमारा हाथ बँटाया है, आप भी हाथ बँटाइये।

आर्चबिशप : हमारे पास तो जमीन है नहीं बाबा। हम भूदानमें क्या दें? आप बताइये कि किस अन्य उपायसे हम आपका सहयोग करें?

ईसाई-सम्प्रदाय आपके आन्दोलनमें दिलचस्पी रखता है। मेरा कर्तव्य है कि मैं उसमें भरपूर सहयोग करूँ। आदेश दीजिये।

बाबा : ईसाई लोग मुझसे आदेश-उपदेश चाहते हैं! मैं तो इतना ही कहूँगा कि Practise more, Preach less. 'कहो कम, करो ज्यादा।' ईसाकी यह बात याद रखो—'सूईके छेदसे ऊँटका प्रवेश हो सकता है, पर धनवान् व्यक्तिका स्वर्गमें प्रवेश नहीं हो सकता।'

आर्चबिशप : Short and Sweet (संक्षेप और मधुर) !

और तभी बाबाकी नजर आर्चबिशपके हाथकी सोनेकी बड़ी अँगूठी-पर पड़ी। उन्होंने उसे हाथसे पकड़ लिया।

बहुत सकपकाये बेचारे आर्चबिशप! उन्हें लगा कि ली अब विनोबाने उनकी अँगूठी!

बाबाने कहा : यह अँगूठी तो बड़ी कीमती है!

आर्चबिशप सफाई-सी देते हुए बोले : यह धार्मिक प्रतीक है बाबा।

बाबाने मुस्कराकर कहा : धार्मिक प्रतीक होता है लकड़ीका क्रूस। इस सोनेको लेकर स्वर्गमें कैसे प्रवेश हो सकेगा?

इतना कहकर बाबाने आर्चबिशपका हाथ छोड़ दिया।

जान बची लाखों पाये!

वे तुरत 'नमस्ते' कर बाहर निकले और अपनी कारमें बैठकर उड़नछू हो गये!

भगवान् तो तन नहीं, मन देखते हैं !

आगरा
७ मई '६०

आज सवेरेसे ही सभाओं, सम्मेलनोंकी धूम मची है। सबसे पहले प्रादेशिक गांधी-स्मारक-निधिके कार्यकर्ता बाबाके पास एकत्र हुए। करणभाईने बताया कि हमारे २९ ग्राम-सेवा केन्द्र हैं, ६ तत्त्व-प्रचार-केन्द्र हैं; ६ ग्राम-निर्माण-केन्द्र हैं, ७ नयी तालीम केन्द्र हैं। कुल १४८ सेवक हैं सारे प्रदेशमें। प्रमुख कार्यकर्ताओंका उन्होंने बाबासे परिचय कराया।

बाबा बोले कि रामचन्द्रनजीने सेवाग्राममें कहा था कि शान्ति-सेनाकी जिम्मेवारी गांधी-निधिके कार्यकर्ताओंको उठानी चाहिए। मैं मानता हूँ कि गांधी-निधिके ये सारे कार्यकर्ता शान्ति-सैनिक ही हैं।

लोक-सेवकों और शान्ति-सैनिकोंके बीच बोलते हुए बाबाने आज कहा कि शान्ति-सेनाके मामलेमें अभीतक हमारे यहाँ अव्यवस्था चलती रही है। अब यह काम निर्मलाबहनको सौंपा है। उसका काम होगा कि वह सब शान्ति-सैनिकोंका ठीकसे रजिस्टर रखे और सबसे सम्पर्क स्थापित करे।

बाबाने यह इच्छा प्रकट की कि उत्तर प्रदेशके शान्ति-सैनिकोंकी बड़ी तादाद काशीमें चली जाय।

× × ×

मध्याह्नमें उत्तर प्रदेशके कार्यकर्ताओंके बीच बोलते हुए बाबाने कहा कि आप लोगोंके बीच आज हमारी यह आखिरी चर्चा है। मैं आज आपसे एक विशेष बात कहना चाहता हूँ और वह यह कि शान्ति-सैनिककी यही पहचान है और इस बातकी वह प्रतिज्ञा करता है कि उसे जहाँ भी बुलाया जायगा, वहाँपर अपना सब कुछ छोड़कर, घर, सार्व-जनिक काम आदि सब छोड़कर, जानेके लिए वह तैयार है। इस

एक बातमें दूसरे लोक-सेवकों से उसमें फर्क है । बाकी बातें समान हैं । इस तरह शान्ति-सैनिकका कार्य दुहरा रहेगा । हमेशाके लिए वह सेवा-सैनिक होगा और साथ-साथ शान्ति-सैनिक भी ।

अहिंसाकी पद्धति बताते हुए बाबाने कहा कि अहिंसामें सारे काम स्वेच्छासे किये जाते हैं । स्वेच्छासे आज्ञा-पालन कठिन हो जाता है, लेकिन स्वेच्छा भी हो और आज्ञा-पालन भी हो, ऐसा कठिन काम सफलताके साथ हमें करना है, तभी हिंसाकी जगह अहिंसा आ सकेगी ।

× × ×

शामको शोषणकी चर्चा करते हुए बाबाने कहा : पता नहीं कि डाकू कौन है ? डाकू भी शोषण करता है, हम भी तरह-तरहसे शोषण करते हैं । भगवान् हमें भी 'डाकू'की उपाधि दे सकता है । हमारा समाज इतना दुःखी है और मैं ४ पौंड दूधका दही लेता हूँ ! हिन्दुस्तानमें हर आदमी पीछे ७॥ तोले दूधका औसत है । मेरे कारण २० मनुष्योंको दूध नहीं मिल पाता । हमारी करनीपर भगवान् तौले, तो हम शायद बड़ेसे बड़े गुनहगार साबित हों, पर वह हमारे मनकी वासना देखे, तो मैं पूरे दावेसे कह सकता हूँ कि मैं किसीका रत्तीभर भी शोषण नहीं करना चाहता ।

एक बहनकी चर्चा करते हुए बाबाने कहा : एक दरिद्रकी पत्नी बीमार थी । मरनेका मौका आया, तो डॉक्टरने कह दिया कि अब यह 'जायगी' । मैंने उससे कहा : "तुम्हें भगवान् बुला रहे हैं, ऐसा दीखता है । हम सभी जानेवाले हैं । कोई आज जायगा, कोई कल ।"

बोली : "ये सब लोग मुझे ठग रहे थे । अच्छा हुआ, आपने सही बात बता दी !"

उसकी आँखोंमें आँसू आ गये ।

पूछा : "कोई इच्छा है तुम्हारी ?"

वह बोली : "हाँ ! मेरी दो इच्छाएँ हैं ।"

"क्या-क्या ?"

"पतिका क्या होगा ? मैं जा रही हूँ । वह दूसरी शादी जरूर करे ।"

जवान लड़की, जवान पति। दिलकी कितनी उदार! मुझपर उसकी बातका बड़ा असर पड़ा। मैंने कहा : "तुमने इसे शादीकी इजाजत दी, बड़ा अच्छा किया।"

"और तुम क्या चाहती हो?"

"मेरे हाथसे कुछ दान करा दें।"

एक रुपया उसके हाथमें दिया गया। उसने दान कर दिया। बोली : "अब मुझे समाधान हो गया!"

बाबा बोले : कौन जाने उसके दिलकी! भगवान् ही जानेंगे।

उसके बाद वेश्या और साधुका रामकृष्ण परमहंसका दृष्टान्त सुनाते हुए बाबाने कहा : आमने-सामने रहनेवाले दोनों एक ही दिन मर गये। वैकुण्ठका विमान पहुँचा वेश्याके घर, यमदूत पहुँचे साधुको लेने। लोगोंको लगा, शायद पता गलत हो गया। अक्सर ही तो डाककी गड़बड़ीसे चिट्ठी कहींकी कहीं जा पहुँचती है! भला ऐसा भी कहीं हो सकता है कि रात-दिन भजन करनेवालेको यमपुर जाना पड़े और रात-दिन व्यभिचारमें फँसी रहनेवाली वेश्याको स्वर्ग मिले? साधुको भी अचम्भा हुआ। उसकी शिकायतपर यमदूत बोले : "नीचे देखिये, गल्तीकी बात नहीं है। शरीरसे जिसने पाप किया, उसके शरीरकी गति वैसी ही हो रही है। गीध-कौए उसे नोच रहे हैं। पर वेश्या होनेपर भी हृदयसे वह पश्चात्ताप करती थी! मनसे वह अपनेको धिक्कारती रहती थी : 'कितना धिक्कारने योग्य है मेरा जीवन! सामनेवाले साधुका जीवन कैसा पवित्र है!' और आप शरीरसे पाप नहीं करते थे। देखिये, आपके शरीरकी कैसी पूजा हो रही है! कैसे बाजे-गाजेके साथ लोग आपका शव ले जा रहे हैं! पर मनसे तो आप हमेशा यही सोचा करते थे कि 'दरअसल जीवनका आनन्द तो यह वेश्या ही भोग रही है!' भगवान् तो मनकी गति देखते हैं और वैसा ही फल देते हैं!"

बाबा माने बापकी इस्टेट

बमरौली कटारा
८ मई '६०

सुबह बाबा जब यात्रापर निकलनेको हुए, तो एक सेठजीने बड़ा हंगामा मचा दिया। माथेपर चन्दनका टीका लगाये बगलमें बहियोंका लाल बस्ता दाबे वे बड़े प्रेम-विभोर होकर कुछ गा रहे थे और बाबाके चरणोंपर बार-बार लोट रहे थे।

सेठजीपर लोग तरह-तरहकी फ़बतियाँ कस रहे थे। कोई कुछ कह रहा था, कोई कुछ। इस बातपर ज्यादातर लोग सहमत थे कि उनका कोई 'स्क्रू' ढीला है! साथी बोले : आगराके लिए यह कोई नयी बात है? शफी साहब कल ही तो सुना रहे थे कि कुछ दिन पहले पण्डित जवाहरलाल तशरीफ़ लाये, तो उन्होंने सोचा कि पागलखानेका भी मुआइना कर लिया जाय। वहाँ गये, तो सुपरिण्टेण्डेण्टने अपना सबसे आला नमूना उनके सामने पेश किया। पण्डितजीने उससे पूछा : "मुझे पहचानते हो?" बोला : "मैं तो आपको जानता नहीं।" पण्डितजीने कहा : "मेरा नाम है—जवाहरलाल नेहरू।" पागल मुसकराया और फिर गम्भीर होकर बोला : "कोई बात नहीं! कोई बात नहीं! यहाँ आपकी दवा ठीक ढंगसे हो जायगी। मैं जब यहाँ आया था, तो मैं भी कहा करता था कि मैं महात्मा गांधी हूँ!"

× × ×

आज हम फिर यमुनाके किनारे-किनारे ताजमहलकी ओर बढ़े। उसकी बगलसे जानेवाली सड़कपर हमें जाना था। आगराके अनेक नागरिक हमें ताजके पासतक पहुँचा गये। उसके बाद हमारी टोली छोटी हो गयी। हाँ, एक नयी जमात हमारे साथ-साथ अवश्य चलने लगी और

वह थी पत्रकारोंकी। उन्हें तो 'सेन्सेशन' चाहिए, सनसनीदार मसाला चाहिए, फिर उसके लिए तोपके मुँहड़ेपर भी जाना पड़े, तो हर्ज क्या !

× × ×

वीरोंकी यह बाट है भाई, कायरका नहिं काम रे,
कायरका नहिं काम रे !...

खँजड़ीपर कपिलदेवका अभी यह गीत चल ही रहा था कि बाबा मंचपर आ गये।

गाँववालोंसे बाबा बोले : हम कोई उद्देश्य लेकर यहाँ नहीं आये। हम तो परमेश्वरकी तरफ दौड़े जा रहे हैं। नदी चलती है, रास्तेमें काम होता चलता है। आप हमारा जो उपयोग करना चाहें, कर लें।

× × ×

सायंकालीन प्रार्थना-प्रवचनमें बाबाने अपनी पदयात्राकी चर्चा करते हुए कहा कि नौ सालसे हमारी यात्रा चल रही है पैदल-पैदल। बाबा तो बहती गंगा बन गया है। गरीब-अमीर सबको उसका उपयोग है।

ईसा और बुद्धकी पदयात्राकी चर्चा करते हुए बाबाने कहा : ईसा घूमते रहे, बुद्ध घूमते रहे। वेश्या, भंगी, शराबी, धन्धेसे गिरे लोग—जो भी उनसे मिलने आया, उसके साथ उन्होंने प्रेमसे बातचीत की। सबकी सेवा की। करुणाकी भावनासे ही वे घूमते थे। बाबा भी उसी भावनासे घूम रहा है। किसीको भी बाबाके पास आनेकी मनाही नहीं। बच्चा हो, बूढ़ा हो; भाई हो, बहन हो; पापी हो, पुण्यात्मा हो; डाकू हो, पुलिसवाला हो—कोई भी बाबाके पास आ सकता है। बाबा माने बापकी इस्टेट। ऐसा मानकर बाबाका पूरा उपयोग कर लो।

बयरु न कर काहू सन कोई !

डोकी
९ मई '६०

आजके प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने गाँववालोंको समझाया कि वे लोग मिल-जुलकर सोचें कि वे क्या करें, जिससे उनकी और उनके गाँवकी तरक्की हो।

बाबा बोले : सुना है, इधर कुछ डाके भी पड़ते हैं। लोग हैरान हो जाते हैं। जनताको डाकुओंसे बचानेके लिए पुलिस आती है। उसके दोनों हाथ भारी पड़ते हैं। गाँवके जो भी मसले हों, सबको मिलकर तय करने चाहिए। आपको यह निश्चय करना चाहिए कि हम गाँवके लिए जियेंगे, गाँवके लिए मरेंगे। आज हम आपके गाँवमें हैं। हमसे जो भी बात करना चाहे, दिल खोलकर बात कर सकता है।

सायंकालीन प्रार्थना-प्रवचनमें सर्वोदयकी व्याख्या करते हुए बाबाने प्रेम और निर्वैरकी मन्दाकिनी ही मानो प्रवाहित कर दी। रामराज्यका वर्णन करते-करते उन्होंने तुलसीकी एक पंक्तिका इतना भावविभोर होकर कीर्तन किया-कराया कि लोग गद्‌गद हो उठे। भावुक कान्ताबहन तो सिसक-सिसककर रो ही पड़ी। घण्टों बादतक वह रोती रही।

वह चौपाई थी :

बयरु न कर काहू सन कोई।
राम प्रताप बिषमता खोई॥

बाबाने कहा : यह सामने गाड़ी आप देख रहे हैं। यह पुस्तकोंसे भरी हुई है। ये किताबें सर्वोदयकी किताबें कहलाती हैं। सर्वोदय माने क्या ? सर्वका उदय—सर्वका भला, सबका भला।

एक भाई आया। कहने लगा कि हमको पुलिस सता रही है। दूसरेने डाकुओंकी शिकायत की। तीसरेने चकबन्दीकी शिकायत की। ये तीनों सही भी हो सकती हैं और गलत भी हो सकती हैं। मैं आपके हाथमें एक कुंजी देना चाहता हूँ।

ताला कुंजी हमें गुरु दीन्हों।
जब चाहों तब खोलों किवरवा॥

वह सर्वोदयकी कुंजी है। अगर यह कुंजी पासमें है, तो सबका भला होगा, कोई परेशान नहीं करेगा।

कैसे काम करती है यह कुंजी? यह उँगलियोंकी तरह काम करती है। उँगलियाँ मिल-जुलकर काम करती हैं। पाँच हैं बेचारी, पाण्डवोंकी तरह। मिल-जुलकर काम करती हैं, तो लाखों काम हो जाते हैं। चक्की पीसना, पानी खींचना, रसोई पकाना, फल काटना, खाना खाना, कपड़े धोना—सारे काम इन पाँचसे होते हैं। लिखनेवालोंकी तीन उँगलियाँ काम करती हैं। लेकिन बाकी दो उँगलियाँ काट दी जायँ, तो फिर कैसे लिखना होगा? **'मिल-जुलकर काम करो, यह है सर्वोदयकी कुंजी।'**

सर्वोदयकी सबसे बड़ी किताब है रामायण। रामकी कथा रोज शामको होनी चाहिए। फिर गाँवमें किसको दुःख है और किसको सुख है, यह सोचना चाहिए। तब आप दुःखी नहीं होगे। रामजी जिसके साथ हैं, उसे कोई कुछ नहीं कर सकेगा। रामका बल मिलेगा, अगर आप नित्य कथा सुनेंगे। नहीं तो जो आयेगा सो 'काटेगा, कूटेगा, पीटेगा।'

वीर वह—जो न तो डरे, न डराये !

फतेहाबाद
१० मई '६०

सोचै सोचि न होवई जे सोची लखवार ।

कल शामको फुर्सत देखकर मैंने बाबासे 'जपुजी'की वार्ता छेड़ दी । 'भाईजी' राधाकृष्ण बजाज चाहते थे कि मैं इस प्रवासमें बाबाके साथ बैठकर 'जपुजी'का काम पूरा कर डालूँ, पर अभी तो बाबाको फुर्सत ही कहाँ है ? सादाबादमें भाईजीने जब यह प्रसंग छेड़ा था, तो बाबाने कहा था कि 'मैंने हर काम पूरा कर डालनेका कोई ठेका ले रखा है क्या ?'

"बाळ, लाना तो वह जपुजीवाली फाइल ।" और बाबा गुनगुनाने लगे :

सोचै सोचि न होवई जे सोची लखवार ।
चुप्पै चुप्प न होवई जे लाइ रहा लिवतार ॥
भुखिआ भुख न उत्तरी जे बंना पुरीआ भार ।
सहस सिआणपा लख होहि त इक्क न चलै नालि ॥
किव सचिआरा होइऐ किव कूड़ै तुट्टै पालि ।
हुकमि रजाई चलणा 'नानक' लिखिआ नालि ॥

मैंने कहा कि 'सोचै सोचि न होवई जे सोची लखवार'—इस कड़ीका अर्थ किसीने ऐसा किया है कि शरीरको बाहरी पवित्रतासे आन्तरिक पवित्रता नहीं आती, फिर कोई लाख बार क्यों न बाहरी पवित्रता करे । 'सोच'का अर्थ उसने 'शौच' किया है । मुझे भी ऐसा अर्थ जँचता है । परन्तु आपने 'सोच'का अर्थ 'सोचना', चिन्तन करना लिया है और कहा है कि चिन्तन करनेसे सत्य समझमें नहीं आता, भले ही लाखों बार उसका चिन्तन किया जाय ।

[illegible] जाजुजीकी गाइड ले आये। उसे उलट-पुलटकर बाबा बोले : "मैंने कई टीकाएँ देखी हैं। उन्हें अच्छी तरह तौला है और फिर अपना फैसला दिया है !"

चम्बल घाटीमें आतंकका राज है। सब लोग भयसे पीड़ित हैं। कोई डाकुओंसे डरता है, कोई पुलिससे। कोई डाकुओंके मुखबिरोंसे डरता है, कोई पुलिसके मुखबिरोंसे। सबकी जान साँसतमें रहती है। पता नहीं कल कौन आकर हमला कर दे ! कब कौन आकर लूट ले जाय ! तमाशा यह है कि बन्दूक रखते हुए भी लोग काँपते रहते हैं !

बाबाने प्रवेश-प्रवचनमें कहा :

अभी आपने एक भजन सुना—'वीरोंकी यह बाट रे भाई, कायरका नहिं काम रे !' इसका मतलब समझे ? यह बताता है कि वीरोंका एक मार्ग होता है, एक रास्ता होता है, उसपर कायर नहीं चल सकते।

वीर कौन है ? वीर वह है, जो न तो किसीसे डरता है और न किसीको डराता है। शेर 'जंगलका राजा' कहलाता है। वह राजा कैसे हुआ ? इसलिए कि वह जंगलके जानवरोंको खा जाता है ! जो प्रजाको खा जाय, वह राजा ? राजा सो खाजा ? नहीं, यह बात गलत है। राजा तो वह है, जो सबकी सेवा करता है।

शेरको 'वीर' कहेंगे ? हिरनके सामने, गायके सामने वह शूर है; गोलीके सामने, टार्चके सामने कायर ! बिल्ली चूहेके आगे शेर है, कुत्तेके आगे कायर। वह डरती है, क्योंकि कुत्तेके पास उससे तेज नाखून हैं, उससे तेज दाँत हैं।

शेरको वीर मानना गलत है। सच्चा वीर तो वह है, जो किसीसे डरता नहीं, किसीको डराता नहीं; किसीसे दबता नहीं, किसीको दबाता नहीं। जो लोग बेरहमीसे दूसरोंको कत्ल कर सकते हैं, वे हैं क्रूर। यहाँ एक ओर हैं क्रूर, दूसरी ओर हैं कायर। वीर न क्रूर होता है, न कायर।

कायरका लक्षण क्या है ? कायर डरता रहता है और मौका पाते

ही दूसरोंको डराता है। वह क्रूर बन जाता है। वह खून भी करा सकता है, पर खुद बचना चाहता है। कायर क्रूर बनता है, क्रूर कायर बनता है। दोनों एक हैं। जैसे ठंड लगनेसे घी जम जाता है और आँच लगनेसे पिघल जाता है।

लोगोंको लूट-खसोटका डर रहता है। क्यों ? इसीसे कि वे ताला-कुंजी लगाकर धन-सम्पत्ति रखते हैं। इसे गरीबोंको बाँट दो। सारा डर छूट जायगा।

× × ×

स्कूलके पिछवाड़ेके मैदानमें सायंकालीन सभा हुई। फतेहाबादके नागरिकोंकी ओरसे बाबाको ३०१) की थैली भेट की गयी, तो बाबा बताने लगे दानकी महत्ता, देनेकी महत्ता। बोले : हम यह पैसा सर्वोदय मण्डलको दे देते हैं। हम तो खाली हाथ आये हैं और खाली हाथ ही जायँगे। हम तो चाहते हैं प्रेम और करुणाका विस्तार हो। हम रोज देते रहें, अपनी सम्पत्ति बाँटते रहें, तो न डाके पड़ेंगे, न पुलिस आयेगी। अदालत, वकील, पुलिस—किसीका काम नहीं रहेगा। देना जारी रहेगा, तो समाज निर्भय बनेगा। तेलंगानामें बुरा हाल था। रातको कम्युनिस्ट लूटते थे, दिनको पुलिस। हमने वहाँवालोंको समझाया कि प्रेमसे गरीबोंको जमीन बाँट दो। भूदान शुरू हो गया और लोगोंका भय मिट गया। भयके रहते या तो कायरता रहेगी या क्रूरता, वीरता नहीं रहेगी। आपमें डर नहीं रहना चाहिए, प्रेम रहना चाहिए।

× × ×

यों तो महीनोंसे इस क्षेत्रमें बागियोंके बीच विनोबाका प्रेमका सन्देश फैलाया जा रहा है, पर इधर पिछले पखवाड़ेसे शान्ति-सैनिकोंका प्रयास बड़ी तेजीसे चल रहा है। चम्बलके बेहड़ोंमें जीपें दौड़ रही हैं, साइकिलें दौड़ रही हैं और दिन-रातका कोई खयाल किये बिना विनोबाके सन्देश-वाहक बागियों और उनके सम्बन्धियोंसे मिल-मिलकर उन्हें समझा रहे हैं

कि चलो बाबाके पास, अपना भी जीवन सार्थक करो और बाबाकी यात्रा भी सफल बनाओ।

आज अपराह्णसे उसकी पहली फलश्रुति प्रकट हुई : रामऔतार सिंहके रूपमें।

मैला-सा कुर्ता-धोती पहने, मूँछें ऐंठे लगभग तीस सालका एक जवान बाबाके चरणोंपर आ गिरा : "बाबा, अबतक मैं गलत रास्तेपर था। अब कभी ऐसी गलती न करूँगा।"

× × ×

"बागी आया! बागी आया!!"—फतेहाबादमें चारों ओर शोर मच गया। लोग दौड़े जूनियर हाईस्कूलकी ओर। सारा बरामदा, आस-पासका लॉन आदमियोंसे खचाखच भर गया।

रात्रिकालीन प्रार्थनाके लिए बरामदेके सामनेवाले लॉनमें दरी बिछायी गयी। बाबा आकर बैठे, तो जनरल यदुनाथ सिंह एक सज्जनको बाबाके पास लाकर बोले : "बाबा, ये हैं इसलाम अहमद, डी० आई० जी० पुलिस।"

बाबा कुछ देर उनसे बातें करते रहे। इसके बाद वे प्रणाम करके चले गये।

रामऔतार दूसरे कोनेपर बैठा था। उसे देखनेके लिए भीड़ उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थी। प्रार्थनाके बाद भीड़से अनुरोध किया गया कि वह अब अपने घर जाय। बाबा अब सोयेंगे।

डर छोड़ो, डाकूको प्यार करो !

अन्नौटा
११ मई '६०

फतेहाबादतक तो ऐसा नहीं लगा था कि हम किसी विशिष्ट प्रदेशमें घूम रहे हैं, पर आज सवेरेसे ही ऐसा लग रहा है, मानो हम आ गये अब चम्बलके बेहड़ोंमें।

सड़कके आसपास कृत्रिम पेड़ोंकी संख्या घट रही है, प्रकृतिकी ऊबड़-खाबड़ काया, ऊँची-नीची जमीन, कहीं पतले-लम्बे झुरमुट, कहीं घनी छाया देखकर आँखोंको लगता है कि अब हम सामान्य क्षेत्रको छोड़कर आगे बढ़ रहे हैं।

और यह आ गयी उतंगन नदी। चम्बलकी यह सहेली है तो छोटी, पर है बड़ी खोटी ! बरसातमें बड़ा उग्ररूप धारण करती है यह। उस समय इसे पार करना कठिन होता है। और यह तो है ही कि जहाँ कुछ कठिनाई है, जहाँ किसी साहसकी अपेक्षा है, वहीं 'साहसी' लोग अपना डेरा जमाते हैं।

आजसे एक दशक पहलेतक इधरका क्षेत्र सर्वसाधारणके लिए 'वर्जित'-सा था। न अच्छे रास्ते, न अच्छी सड़कें। सन् १९५३ में पहली बार इस उपेक्षित क्षेत्रकी ओर हमारी प्रादेशिक सरकारकी कृपादृष्टि गयी। इधर सड़कें खुलीं और ब्लाक डेवलपमेण्टका कुछ काम शुरू हुआ। तभी इस उतंगन नदीपर स्थायी अंकुश लगाने और भीतरी क्षेत्रमें हर समय पहुँचनेके लिए मजबूत और पक्का पुल बनानेमें हाथ लगा। मार्च '५५ में बाबू सम्पूर्णानन्दने इस पुलका उद्घाटन किया।

हमने देखा कि नदी तो बहुत छोटी-सी है, पुल बहुत बड़ा है। साफ

है कि अभी यह उसका वामन रूप है। थोड़े ही दिनों बाद वह तीन डगमें आसपासकी सारी धरती अपनी गोदमें समेट लेनेवाली है।

'उतंगन' नाम सुनकर बाबा बोले : "उतंगन इसका नाम नहीं लगता। नाम इसका रहा होगा 'उत्तम गङ्गा'। बिगड़ते-बिगड़ते उतंगन हो गया।"

पुल काफी ऊँचाईपर है। लम्बी पेशबन्दी करनी पड़ी है। सड़कको धीरे-धीरे उठाकर इतनी ऊँचाईतक लाना पड़ा है। सूर्योदयकी सुहावनी वेलामें अभी हमने पुल पार किया ही था कि उसके किनारेसे ही नीचे उतरना पड़ा। नदी किनारे वृक्षोंके झुरमुटके पास ही तो आज हमारा डेरा है।

प्रवेश-प्रवचनमें निष्काम सेवकोंकी अपनी माँगपर जोर देते हुए बाबाने कहा : एक भाई हैं ५६ सालके। मैंने उनसे पूछा : "आपको घर-बारसे एकदम मुक्ति मिल गयी है ?" बोले : "हाँ।" कोई आदमी इस उम्रमें घर-बारसे मुक्त होकर निष्काम सेवाके लिए बाहर नहीं निकलेगा, तो फिर यमराज उसे धक्का देकर निकाल देगा। इसलिए लज्जत इसीमें है कि पहले ही निकल जाय। बाबा तो बचपनमें ही घरसे निकल पड़ा। इधर वह नौ सालसे लगातार घूम ही रहा है। किसी भी तरहका कोई बन्धन नहीं है उसपर। १८ से २५ सालकी उम्रमें, जवानीमें घरका बन्धन बड़ा जोर मारता है। उसकेबाद ४०, ४५, ५० की उम्रमें। ५० के ऊपरवालोंको तो गृहस्थी छोड़कर निष्काम सेवामें लग ही जाना चाहिए।

दोपहरमें आँधीने अपनी रंगत दिखायी। वृक्षोंके झुरमुटमें हम लोग पत्तलें लेकर जीमने बैठे, तो बालू तो दाल-भातमें घुलने ही लगी, किसी-किसीकी पत्तलें उलट देनेमें भी आँधीको सफलता मिल गयी।

खा-पीकर जब लेटनेको आँखें मूँदीं, तो आँधीने हमारे खुले तम्बूपर इतने जोरका हमला किया कि रस्सियाँ खूँटा तुड़ाकर भागीं और तम्बू धराशायी हो गया। कोशिश तो हम लोगोंने बहुत की कि किसी तरह रस्सियोंको फिर कस-कसाकर तम्बू ठीक कर लें, पर हमें सफलता नहीं मिली।

लाचार, खुले मुसाफिरखानेमें ही हम लोग पड़ रहे। वृक्षोंकी छाया

हमारी थोड़ी-बहुत रक्षा कर रही थी, पर तपन तो अपना पूरा रंग दिखा ही रही थी।

अपराह्णमें कुछ भाई और बहनें बाबासे मिलने आयीं। जबसे बाबा इधर आये हैं, तबसे वे बार-बार सभाओंमें घोषणा करते हैं कि कोई भी भाई उनसे आकर मिल सकता है और खुले दिलसे बात कर सकता है। न तो पुलिस उसके रास्तेमें कोई अड़ंगा लगायेगी, न और कोई। इसका असर पड़ रहा है।

आजका तम्बू तो एकदम खुली जगह है। इसलिए लोगोंको आनेकी और भी आजादी है।

एक भाई बड़े शंकित और भयभीत-से थे। बाबाने उनसे पूछा : क्या बात है भाई ?

बोले : गाँवमें दो सौ आदमियोंकी बस्ती है और सब मेरे दुश्मन हैं।

बाबा : तब तुम रहते कैसे हो ?

'रहता हूँ, पुलिसके सहारे।'

बाबा : गाँवके दो सौके दो सौ आदमी तुम्हारे खिलाफ हैं ! यह तो अचम्भेकी बात है। कोई भी तुम्हारा साथ नहीं देता ?

'नहीं, बाबा !'

बाबा : 'तुम्हारे पास जमीन कितनी है ?'

'जमीन तो काफी है। दूसरोंसे ज्यादा है।'

बाबा : 'गाँवमें किसीपर आफत-मुसीबत आती है, तो तुम मदद करने जाते हो ?'

'नहीं बाबा। कैसे जाऊँ ? हिम्मत ही नहीं पड़ती !'

बाबा : 'पुलिस तुम्हें कबतक बचायेगी ?'

'अब तो उसीका सहारा है बाबा !'

बाबा : गलत बात। डर छोड़ो, सबको प्यार करो। तब काम बनेगा।

× × ×

सायंकालीन प्रार्थना सभामें बाबाने कहा :

आज इस छोटेसे प्रदेशमें १५ हजार पुलिस पड़ी है। कहते हैं डाकुओंके गिरोह हैं यहाँ। ये डाकू क्या भगवान्ने पैदा किये हैं? डाकूके दो नाकें होती हैं क्या? चार हाथ, चार पैर होते हैं क्या? हमारी तरह ही एक नाकवाले, दो हाथवाले, दो पैरवाले आदमीको 'डाकू' कहना ठीक है क्या? कोई आदमी डाकू पैदा नहीं होता। हम दूसरोंको लूटते हैं, चूसते हैं, कंजूस बनते हैं, दूसरोंकी पर्वाह नहीं करते, निठुर होकर जीवन बिताते हैं। उसीका यह नतीजा है।

धुलिया जेलमें कई चोर-डाकू कहे जानेवाले कैदियोंने सुपरिण्टेण्डेण्टसे माँग की कि विनोबा राजनीतिक कैदियोंको जैसे गीता और धर्मकी बात समझाते हैं, वैसे ही हमें समझायें। सुपरिण्टेण्डेण्टने हमसे कहा। हमने उन्हें एक घण्टेकी छुट्टी दिलायी और उन्हें उपदेश देने गये। उन्होंने हमें माला पहनायी, दण्डवत की। हम उन्हें धर्मकी बात सुनाते रहे। भगवान्का वर्णन सुनकर उनमेंसे कुछकी आँखोंसे आँसू आने लगे। उनमें कुछ फाँसीके भी कैदी थे। हमने देखा कि उनमें बड़े अच्छे लोग हैं।

हम डाकूपर प्यार करें, रहम करें, हिम्मत करें और सारा गाँव एक बना लें, तो सारे मसले अपने-आप हल हो जायँ।

× × ×

धाँय! धाँय!!

रातमें दूर कहीं गोलीकी आवाज सुन पड़ी। जनरल साहब और हममेंसे कुछ भाई इधर-उधर बेहड़ोंमें कुछ देर भटकते रहे, पर कुछ ठीक पता न चल सका कि बात क्या है? लोगोंको शक हुआ कि कहीं ऐसा तो नहीं कि कोई गुमराह भाई बाबासे मिलने आ रहा हो और किसीने उसका पीछा किया हो!

पर्देकी बात पर्देमें ही रह गयी!

डाकू तुम्हारा छठा भाई

पिनहट (आगरा)
१२ मई '६०

स्थानीय विद्यालयके पश्चिमवाले दालानमें कुर्सीपर बैठकर बाबाका प्रवेश-प्रवचन हुआ। डाकू-समस्यापर बोलते हुए बाबा बोले :

लोग कहते हैं कि बाबा डाकू-क्षेत्रमें जा रहा है! बाबा पूछता है कि क्या यह डाकुओंके बापका क्षेत्र है? इधर डाकू, उधर पुलिस। दोनों बेकारोंकी जमातें। एक-दूसरेके लिए तैनात हैं। वैसी ही बेकारोंकी तीसरी जमात है मुखबिरोंकी। मालदार अपना माल पकड़े रखता है। अपनी रक्षाके लिए वह पुलिसको बुलाता है। पुलिस उसके रक्षणके लिए है, तुम्हारे भक्षणके लिए। वह किसीको मारती है, किसीको पीटती है, किसीको टोकती है। कहती है कि हम तो कानूनके बचावके लिए ऐसा करते हैं! कितने शर्मकी बात है कि तुम अपने-आप अपना रक्षण नहीं कर सकते! पुलिसकी मददसे जीनेके बजाय तो मर जाना लाख दर्जे अच्छा!

मैं नहीं मानता कि डाकुओंकी कोई समस्या है। हमने मिलकियत बना रखी है। उसीकी यह सारी खुराफात है। मिलकियत ढीली करिये। भगवान्‌की जमीन, भगवान्‌की सम्पत्ति सबको बाँट दीजिये। मिलकर प्रेमसे रहिये, तो यह समस्या अपने-आप हल हो जायगी।

असली डाकू तो धन-संग्रह है। वह जो बाहर खड़ा है, वह तो हमारा प्यारा भाई है। पाण्डव पाँच नहीं, छह थे। छठे भाईको वे भूल गये। इसीसे वे सब फेल हो गये। इसीसे महाभारत हुआ। डाकू तुम्हारा छठा भाई है। उसके लिए अपना दरवाजा खोल दो। प्रेमसे उसे अपने साथ लो। उसे अपनाओ।

× × ×

बाबाके निवासके लिए स्कूलमें व्यवस्था हुई। हम सबके लिए थोड़ी दूरपर नये बने क्वार्टरोंमें। हमारे बगलके क्वार्टरमें जनरल साहब और उनका दल ठहरा।

आज दोपहरमें इतना निकट होनेके कारण मैंने पहली बार देखा कि जनरल साहब मसहरीके भीतर बैठकर ध्यानावस्थित हैं और सामने है श्रीकृष्ण भगवान्‌का एक मनोहर चित्र। घण्टों पूजा करके ही वे रोज भोजन करते हैं, फिर कितना ही वक्त क्यों न हो जाय! तभी यह समझमें आया कि क्यों कश्मीरके लोग इन्हें 'भगत जनरल' कहते रहे हैं। लड़ाईके दौरानमें कश्मीरके मोरचेपर यह नया ब्रिगेडियर 'पूजा'का समय होते ही अपने तम्बूमें अन्तर्धान हो जाता था, फिर तम्बूपर गोले ही क्यों न बरसते रहें!

× × ×

तीसरे पहर बाबाके निवासके बाहर मैंने एक गोरे नौजवानको चक्कर काटते देखा। पूछा, तो उसने कहा कि मैं हूँ वाटसन सिम्स, दिल्ली स्थित अमेरिकाके असोशियेटेड प्रेस ब्यूरोका प्रधान। चाहता हूँ, आचार्य विनोबा भावेसे मुलाकात करना।

'आपने अपने प्रश्न लिख रखे हैं क्या?'—मैंने पूछा।

'हाँ'—कहकर उसने एक छोटासा कागज दिया मुझे।

बाबासे उसकी मुलाकात करा दी।

'कबसे हैं आप भारतमें?' बाबाने पूछा।

'दो सालसे।'

'हिन्दी सीखी है कुछ?'

'मामूली-सी।'

'जरा जोरसे बोलियेगा। मैं ऊँचा सुनता हूँ'—कहकर बाबाने सिम्स-से मुसकराते हुए कहा: 'आपके प्रश्न बहुत अच्छे हैं।'

सिम्सका पहला सवाल था भूदान और उसकी सफलताके सम्बन्धमें।

बाबाने कहा: भूदानमें मुझे आशातीत सफलता प्राप्त हुई है। इसमें

सबसे प्रमुख बात है हृदय-परिवर्तनकी। बाहरी बातोंको मैं उतना महत्त्व नहीं देता। आन्तरिक भावनापर ही मेरा जोर रहता है। मैंने पाया है कि लोगोंके हृदय बदल रहे हैं, पुराने गलत मूल्य बदल रहे हैं। इस दिशामें जितना अधिक काम हुआ है, उसकी मैंने कभी अपेक्षा नहीं की थी। सरकार अपने भूमि-सुधार और 'सीलिंग'से अधिकसे अधिक १० लाख एकड़ प्राप्तिकी आशा रखती है। उससे कहीं अधिक जमीन मुझे पहले ही मिल चुकी है।

सिम्सका दूसरा और तीसरा सवाल था—आप कबतक भूदानमें लगे रहेंगे और आपकी यह पदयात्रा कबतक चलती रहेगी ?

बाबा बोले : अनिश्चित कालतक चलती रहेगी मेरी यात्रा। भगवान् जबतक चाहेगा, तबतक वह चलेगी। मैं तो उसके हाथकी कठपुतली हूँ। जबतक वह नचायेगा, नाचूँगा।

Your's not to Question why,
Your's but to do and die !

सिम्सका अन्तिम प्रश्न था—विश्व-शान्तिके विषयमें।

बाबाने कहा : मैं तो बहुत आशावादी हूँ विश्व-शान्तिके सम्बन्धमें। हमारे सामने दो ही रास्ते हैं—या तो हम विश्व-शान्ति स्थापित करें अथवा अपने हाथों अपना सर्वनाश कर लें। विश्व-शान्तिमें सबसे बाधक यदि कोई बात है, तो वह यही कि हम एक-दूसरेपर विश्वास नहीं करते। डंका तो सभी पीटते हैं विश्व-शान्तिका, पर भीतरसे लोगोंका परस्पर विश्वास नहीं है। न आइसनहावरका क्रुश्चेवपर पूरा विश्वास है, न क्रुश्चेवका आइसनहावरपर। यह अविश्वास हटे, तो विश्व-शान्तिमें क्या देर है ?

सिम्स प्रणाम करके चलने लगा, तो बाबाने पूछा : आपकी उम्र ?

'३८ साल।'

'Very young !' (बहुत कम उम्र है अभी !) कहकर बाबाने मुसकरा दिया !

× × ×

सायंकालीन प्रार्थना सभामें बाबाने कहा कि आज एक अमेरिकन भाई मुझसे पूछ रहा था : 'बाबा, आप कबतक चलते रहेंगे ?' मैंने उससे कहा कि जबतक भगवान् चलायेंगे, चलता रहूँगा। भगवान्की प्रेरणासे ही यह यात्रा चल रही है। इसीलिए इस बुढ़ापेमें भी बाबाको उसकी कोई थकान महसूस नहीं होती।

इसके बाद बाबाने अपना प्रेम-सन्देश बिखेरते हुए कहा :

लोग कहते हैं कि यहाँके लोग पुलिस, डाकू, मुखबिर आदिसे बुरी तरह तंग आ गये हैं। फिर भी मैं देखता हूँ कि यहाँ हजारोंकी तादादमें लोग इकट्ठे हैं, जिन्दा हैं। याद रखना चाहिए कि भगवान् जबतक चाहेंगे, तबतक हम जिन्दा रहेंगे। हमें कोई नहीं मार सकता। हमें डर है ही नहीं। हमारे चारों ओर, आगे-पीछे, इधर-उधर, ऊपर-नीचे हमारी रक्षाके लिए भगवान् मौजूद है; बशर्तें कि हम भगवान्की भक्ति करें और सही राहपर चलें। भगवान्ने जैसे प्रह्लादकी रक्षा की, वैसे ही वह हमारी भी रक्षा करेगा। सोचना चाहिए कि हमारा रक्षक तो भगवान् है। वह रक्षा करेगा तो रक्षा होगी। वह रक्षा नहीं करेगा, तो हमें कौन बचा सकता है ? पुलिस बेचारी क्या करेगी ? पुलिसके रहनेसे लोगोंका डर घटता नहीं, बढ़ता ही है। यह डर कब कम होगा ? तभी, जब हम भगवान्पर श्रद्धा करेंगे और एक-दूसरेसे प्रेम करेंगे।

सरकार हमपर विश्वास करती है, इसीसे उसने बाबाको यहाँ कुछ सहूलियतें दे रखी हैं। कोई भी आदमी निधड़क बाबाके पास आ सकता है और बाबाके हाथोंमें अपनेको सौंप सकता है। पुलिस उसे सतायेगी नहीं। ऐसा सरकारने इसीलिए कर रखा है कि वह भी मानती है कि यहाँकी समस्या दण्डसे नहीं, प्रेमसे ही सुलझ सकती है।

शामको स्कूलके बाहरके लॉनमें बाबा बैठे थे, तो करणभाईने श्री कौशलकिशोरसे मिलाते हुए कहा : 'बाबा, ये हैं यहाँके कलेक्टर के० किशोर !'

कुछ देर बाद डॉक्टर ललितने अपने हाथके कते सूतका एक थान

बाबाको भेंट किया। 'गीता-प्रवचन' पर हस्ताक्षर करानेके लिए लोग आते रहे। रामऔतारने भी 'गीता-प्रवचन' लिया। बाबा हस्ताक्षर करने लगे, तो कहा गया : 'बाबा, यह अपने 'औतार'की पुस्तक है।'

'हाँ ?' कहकर बाबाने प्रेमसे औतारका नाम भी उसपर लिख दिया !

× × ×

आज भोजनमें 'स्पेशल'की भरमार थी। दोपहरमें भी, शामको भी। आखिरी पड़ाव है न यह उत्तर प्रदेशका !

चारों ओर मेला-सा लगा है। बाबा कल मध्य प्रदेशमें प्रवेश कर रहे हैं। उन्हें विदा करनेके लिए उत्तर प्रदेशके तमाम कार्यकर्ता आकर जुट गये हैं।

× × ×

कलेक्टर साहबकी सहपाठिनी श्रीमती शकुन्तला ललित अपने पति डॉक्टर ललितके साथ इतने दिनोंसे रात-दिन जी-तोड़ मेहनत कर रही हैं। स्वागतकी व्यवस्थामें ही नहीं, बागियोंके और उनके सगे-सम्बन्धियोंके बीच भी खूब दौड़ रही हैं। रात्रिकालीन प्रार्थनाके पहले मुझसे बोलीं : 'मेरी समझमें नहीं आता कि कलसे मैं करूँगी क्या ?'

बारातकी बिदाईके बादकी निष्क्रियताका मुझे अनुभव है; इसलिए सोते समय भी मेरे कानोंमें उनका यह वाक्य गूँजता रहा :

'कलसे मैं करूँगी क्या ?'

डाकुओंकी पटरी बदल दो, बस !

रछेड़ (मुरैना)
मध्यप्रदेश
१३ मई '६०

पिनहटसे चम्बलके उसेदघाटतकका यह रास्ता !

ब्राह्ममुहूर्तमें रेगिस्तानी जहाजोंपर अपना सामान लादकर जैसे ही हम आगे बढ़े, वैसे ही पता चला कि आज ऊँट देवताओंकी कृपापर हमें क्यों आश्रित होना पड़ा है । अजी, यहाँ मोटर, जीप आदि सवारियोंकी दाल गलनेकी गुंजाइश ही कहाँ है ? इन ऊबड़-खाबड़, ऊँचे-नीचे, टेढ़े-मेढ़े चम्बलके खारोंमें मोटर या बैलगाड़ीकी तो बात ही क्या, दो आदमी भी एक लाइनमें डबल मार्च नहीं कर सकते । कहीं सैकड़ों फुट ऊपर, कहीं सैकड़ों फुट नीचे जाना पड़ता है, तो कहीं दायें घूमना पड़ता है, कहीं बायें । जीवनकी पगडंडी भी तो शायद इतनी टेढ़ी-मेढ़ी, ऊँची-नीची न होगी ! और फिर साथमें है यह दादा धर्माधिकारीके शब्दोंमें—'शिवजीकी बारात ।' और आज तो उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान—सबका संगम हो रहा है । बिदाई और स्वागतके लिए स्त्री और पुरुष, बालक और वृद्ध, छोटे और बड़े सभी लोग आतुर हैं । ये भावनाओंकी लहरें चम्बलकी लहरोंसे कम तेज नहीं हैं !

× × ×

घाटपर यह क्या झगड़ा हो रहा है ?

पता लगा कि श्रद्धा और प्रेमकी रस्साकशी चल रही है, घाटके चौधरी और केवटके बीच । दो नावें तैयार हैं बाबाको पार ले जानेके लिए । चौधरीकी नाव है पुरानी, केवटकी नाव एकदम नयी । जबसे उसने सुना कि विनोबा बाबा इस घाटसे चम्बल पार करनेवाले हैं, तभीसे

वह जुट गया एक नयी नाव तैयार करनेमें। वह अड़ा है इस बातपर कि बाबाके चरणोंसे उसकी नावका उद्घाटन हो और उधर चौधरी इस बातकी जिदपर है कि घाट मेरा है, यह सेहरा मेरे माथेपर बँधना चाहिए !

पर विनोबा तो लड़ाते नहीं, मिलाते हैं; तोड़ते नहीं, जोड़ते हैं। चौधरी और केवट दोनोंको यह बात समझायी गयी। फैसला हुआ कि दोनों मिलकर बाबाकी अभ्यर्थना करें, दोनों नावें एकमें जोड़ दी जायँ, दोनों ही बाबाके चरण-स्पर्शसे निहाल हो जायँ। बाबा एकसे होकर दूसरी नावपर चले जायँ।

× × ×

ऊषाकी मनोरम वेला है। घाटपर दोनों नावें लगी हैं। बाबा और हम सब सहयात्री उनके साथ एक नावसे चढ़कर दूसरीपर जा रहे हैं। दोनों नावें भरते ही नाविक रस्सा खोल देते हैं और नावें चल पड़ती हैं। इधर भी गगनभेदी नारे लग रहे हैं और उधरकी बालूमें खड़ी भारी भीड़में भी !

नावें चल रही हैं चम्बलके वक्षपर। कपिलदेव और रामचन्द्र मेहरोत्रा आदि हमारे नौजवानोंकी खँजड़ी बोल रही है :

हिम्मतसे पतवार सँभालो
फिर क्या दूर किनारा !
माँझी, फिर क्या दूर किनारा !!

इधर हमारे बगलमें उत्तर प्रदेशकी महिलाएँ, विद्यावती राठौर और उनकी सहेलियाँ राम और केवटके प्रसंगका गीत पूरी लयके साथ गा रही हैं :

मेरी छोटी सी है नाव। तुम्हरे जादू भरे पाँव !!
मोहे डर लागे राम। कैसे चढ़ाऊँ तुम्हें नावमें ?
प्रभु कैसे चढ़ाऊँ तुम्हें नावमें ?

नावमें पूजापाठ और हवन भी चल रहा है। सुगन्धित धूम्रसे सारा

वातावरण गमक रहा है। शंखध्वनि हो रही है। रोलीका टीका सबके मस्तकपर लगाया जा रहा है।

चम्बलके वक्षस्थलपर नावें भी घूम-घूमकर क्रीड़ा कर रही हैं। सब लोग एक विचित्र भावनामें डूबे हुए हैं।

और अब आ रहा है दूसरा किनारा। ऋषितुल्य दाढ़ीवाले हमारे दादाभाई घुटनोंतक जलमें पहलेसे खड़े हैं बाबाको उतारनेके लिए। एक-एक कर सब लोग पानीमें कूद-कूदकर आगे बढ़ रहे हैं। बालूके रुपहले फर्शपर स्वागतार्थियोंकी भारी भीड़ है। इसमें मिनिस्टर भी हैं, मास्टर भी; दीक्षित भी हैं, तिवारी भी; पुलिस अधिकारी भी हैं, साधारण कर्मचारी भी; कार्यकर्ता भी हैं, पत्रकार भी; कांग्रेसवाले भी हैं, कम्युनिट भी; प्रजा-सोशलिट भी हैं, सोशलिस्ट भी।

× × ×

बाबा बालूपर बैठ गये। आसपास वृत्ताकारमें सभी लोग बैठ गये। पीछे कुछ लोग खड़े हो गये। दादाभाईने सूतकी गुण्डीसे बाबाका स्वागत करते हुए कहा : आपका हमारे प्रदेशमें पदार्पण हो रहा है, यह हमारे लिए बड़ी प्रसन्नताकी बात है। हमारी शक्ति अत्यन्त सीमित है, फिर भी आप जिस उद्देश्यको लेकर विचरण कर रहे हैं, उसकी पूर्तिका यथाशक्ति प्रयत्न करेंगे। भगवान् हमें बल दे!

बाबा भावनाओंमें डूब-से गये। बोले : यमुना पार करके मैंने अभी चम्बल भी पार कर ली। शायद कभी ब्रह्मपुत्र भी पार कर लूँ। ये नदियाँ माताएँ हैं। भारतकी एकता और प्रेमकी प्रतीक हैं। उत्तरसे दक्षिणतक, पूर्वसे पश्चिमतक गंगा, यमुना, महानदी, सोनभद्र, चम्बल आदि प्रेम और करुणाका प्रवाह फैला रही हैं। अखण्ड गतिसे बह रही हैं। उनसे हमें अखण्ड यात्राकी प्रेरणा मिलती है। भक्तिमें भी ऐसी ही अखण्डता, ऐसा ही सातत्य रहना चाहिए। **जिसकी भक्तिमें सातत्य नहीं, वह भक्तिमें खरा नहीं उतरता। जीवनमें अखण्ड आमरण सेवा चलती रहे, तभी जीवनकी सार्थकता है। सातत्य ही भक्तिकी कसौटी है।** सेवा करते-

करते ही जब यात्रामें बाबाका शरीर गिरे, तब उसके जीवनकी सार्थकता है। आप लोग भी बाबाके लिए ऐसी प्रार्थना करिये !

गाँवमें पहुँचनेपर बाबा हाथ-पैर धोने गये, तबतक मैदानमें आयोजित सभामें दीवानभाईका यह गीत शुरू हो गया :

गरीबोंकी हकतलफी करना सरासर,
शरारत नहीं है तो फिर और क्या है ?
मुहब्बतके पैगामको ठुकरा देना,
कयामत नहीं है तो फिर और क्या है ?
किसीकी अमानतको खुद खाते रहना,
खयानत नहीं है तो फिर और क्या है ?

बाबाने आते ही कहा कि आज काफी देर हो चुकी है। सब लोग धूपमें बैठे हैं। इसलिए मैं दो-चार मङ्गल शब्द ही कहूँगा।

बाबा बोले :

भिण्ड-मुरेनाके दोनों जिलोंसे बहुत ज्यादा लोग फौजमें भरती होते हैं और देशके लिए अपनी जान खतरेमें डालते हैं। इसके अलावा ये जिले इस बातके लिए भी मशहूर हैं कि यहाँ डाकू वगैरह होते हैं। हमारे दिलमें डाकूके लिए बड़ा प्यार है। हम मानते हैं कि वे बहादुर हैं, सिर्फ उनकी गाड़ी गलत पटरीपर चली गयी है। वैसे वे दिलके सीधे और सरल होते हैं। डाकुओंका परिवर्तन अच्छे साधुओंमें, सिपाहियोंमें और काश्तकारोंमें हो सकता है। वे अच्छे सेवक भी बन सकते हैं। यों वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारोंका काम कर सकते हैं। उनका हृदय-परिवर्तन बहुत आसान है। सिर्फ उनकी पटरी बदलनेकी ही जरूरत है। ऐसे लोगोंको प्यारसे जीतना बहुत सरल है। शहरोंके 'डाई हार्ड' लोगोंको, अन्ततक झगड़नेवाले लोगोंको जीतना बहुत देरका काम है।

हम यहाँपर सज्जनोंसे मुलाकातके लिए आये हैं। उनमें कुछ डाकू भी

हो सकते हैं। डाकू तो दिल्लीमें भी हैं, जो सफाईके साथ डाका डालते हैं। हम तो प्रेम और निर्भयताका सन्देश देने आये हैं।

× × ×

चनेकी घुँघनीका नाश्ता करके उत्तर प्रदेशके अनेक भाई यहाँसे विदा हो गये। कुछ लोग दोपहरमें भोजनके बाद चले गये।

हथियारबन्द पुलिस यहाँ हमारे चारों ओर जमी है! पुलिसके उच्च अधिकारी भी हैं। एकाध अधिकारी बाबासे मिलकर यहाँसे चले भी गये हैं! पर पुलिसकी इस पेशबन्दीसे यहाँके वातावरणमें कुछ अजीब-सी भावनाएँ और आशंकाएँ फैली हुई हैं। उत्तर प्रदेशसे यहाँका वातावरण कुछ बदला-सा लगता है।

× × ×

सायंकालीन प्रवचनमें बाबाने कहा :

मैं सारे भारतमें सज्जनोंकी संगतिके लिए घूम रहा हूँ। इसीलिए मैं यहाँ भी आया हूँ। मैं सज्जनोंकी मण्डली बनाना चाहता हूँ। हमें ऐसे सेवक चाहिए, जो इन्सानकी सेवा इन्सानके नाते ही करें।

यहाँ भिण्ड जिलेमें बहुत ज्यादा जमीन नहीं है, यह जानता हूँ। इतनी घनी बस्ती मध्यप्रदेशमें और कहीं नहीं है, पर जितनी भी जमीन है, उसमेंसे कुछ हिस्सा प्यारसे भूमिहीनोंको देना चाहिए।

आज तीन बातोंको प्रगति देनेकी आवश्यकता है : पहली है निष्काम सेवा, दूसरी है भूदानका कार्यक्रम और तीसरी है डाकू-समस्याका हल।

डाकुओंकी समस्या डरपोकोंकी समस्या है, कंजूसोंकी समस्या है, इन्द्रिय-निग्रहकी समस्या है। इसलिए सवाल है मनपर काबू रखनेका और दिलको उदार बनानेका। एक तो इन्द्रियोंपर अंकुश रखनेका शिक्षण हो, दूसरे दानकी प्रवृत्ति बढ़े और तीसरे हम निर्भय बनें। निर्भयता आत्माके आधारपर हो। हममें यह धारणा दृढ़ होनी चाहिए कि गिरेगा तो शरीर गिरेगा। छातीपर गोली झेलनेकी हिम्मत चाहिए।

रक्षकसे हमारी रक्षा कौन करेगा ?

अम्बाह

१४ मई '६०

आजका यह पड़ाव अम्बाह बड़ा-सा गाँव है, तहसीलका सदर मुकाम। सिन्धिया सरकारके जमानेमें फौजकी भरतीका काम यहाँपर धड़ल्लेसे हुआ करता था। गाँवकी दीवालोंपर जगह-जगह भूदान और ग्रामदानके सन्देश लिखे हैं : 'धन और धरती प्रेमसे बाँटेंगे', 'ग्रामदान सफल हो !', 'भूदान-यज्ञ अमर हो।'

बाबाकी नजर इन सन्देशोंपर पड़ी। प्रवेश-प्रवचनमें उन्होंने कहा :

केवल दीवालोंपर हमारा सन्देश लिख लेनेसे काम न चलेगा। उसे छातीपर लिखना होगा। मैं मर जाऊँगा, तो मेरी हड्डियाँ बोलेंगी कि 'जमीनकी मिलकियत रहनेवाली नहीं है।' धन और धरतीकी मिलकियत विचारके विरुद्ध है, परम्पराके विरुद्ध है, ईश्वरके विरुद्ध है। जो कोई इसे नहीं समझेगा, वह मार भी खायेगा, हार भी खायेगा।

आज विज्ञानकी ताकत बढ़ी है, उसके साथ विचारकी ताकत भी बढ़ी है। स्पेनसे पत्र आया है कि 'हम आपके भूदानके कामका यश चाहते हैं।' कहाँ भारत, कहाँ स्पेन ! यह विचारकी शक्ति है। भूदानका प्रभाव दुनियामें क्रान्ति ला सकता है।

प्रेमसे धन-धरती बाँटोगे, तो सब लोग बचेंगे। यह मसला न कानूनसे हल होगा, न सरकारसे। कत्लका रास्ता तो इन्सान और इन्सानियत दोनोंको मिटा देगा। बचता है करुणाका रास्ता। उसीसे कल्याण है।

× × ×

थोड़ी देरमें दीक्षित साहब बाबाको ग्रामरक्षा समितियोंके अधिकारियों

और प्रतिनिधियोंके सम्मेलनमें लिवा ले गये। बन्दूकोंकी सलामी दागकर अहिंसाके इस पुजारीका स्वागत किया गया !

विशेषाधिकारी देशबन्धु अधिकारीने एक अभिनन्दन-पत्र भेंट किया।

बाबा इस समय बोलनेके 'मूड'में नहीं थे। बोले : थोड़ी देर पहले मैं बोल चुका हूँ, शामको फिर बोलूँगा। ग्रामके लोग रक्षाकी जिम्मेदारी उठा रहे हैं, इसपर विचार करनेके बाद शामको मैं कुछ कहूँगा। अभी मुझे इतना ही कहना है कि हमें डाकुओंको भी अपना भाई मानना चाहिए। इन्सान-इन्सानमें कोई फर्क नहीं करना चाहिए। सुमति-कुमति सबके उर रहहीं—ऐसा मानकर सबके दिल एक करनेकी कोशिश करनी चाहिए।

× × ×

शामको प्रार्थना सभामें बाबा बोले :

यहाँ ग्रामरक्षा-दल बने हैं। उन्हें शस्त्र भी दिये गये हैं। यदि ये ग्रामरक्षामें समर्थ होते हैं, तो पुलिसका काम आसान बनता है। इसलिए यह प्रयास प्रशंसनीय है। मगर प्रश्न यह है कि हाथमें शस्त्र लेकर हम प्रयत्न करेंगे, तो सफलता मिलेगी ? गाँवके लोग भी पुलिस द्वारा नहीं, अपने ही जवानों द्वारा अपनी रक्षाकी व्यवस्था करें। पर यहाँ एक विचारणीय बात यह है कि देशको बाहरी हमलेसे बचानेके लिए हम सेना बनाते हैं। मगर सेनाके हमलेसे बचनेके लिए हम क्या करेंगे ? रक्षकोंसे हमारी रक्षा कैसे होगी ?

यहाँ कहा जाता है कि डाकू नष्ट कर दिये गये। फिर ये दूसरे कहाँसे आ गये ? डाकू तो नष्ट हुए, मगर डाकूवृत्ति नष्ट नहीं हुई। अहिरावण-के शरीरसे रक्तकी जितनी बूँदें गिरती थीं, उतने ही अहिरावण खड़े हो जाते थे। इसलिए शस्त्र द्वारा डाकुओंको नष्ट करनेका तरीका ठीक नहीं है।

ग्राम-रक्षक दल यहाँकी समस्याका कायमी उपाय नहीं है। यह तो सिर दुखनेपर बेंथल लगा लेना हुआ। कायमी उपाय यह है कि हम

हिम्मत रखें, डरें नहीं। अपने पास परिग्रह न रखें, माल न रखें। उसे सबमें बाँट दें। आपसमें लड़ना बन्द कर दें और मिल-जुलकर प्रेमसे रहें। जबतक हम लड़ना जानते हैं, तबतक न पुलिस हमारी रक्षा करेगी, न ग्रामरक्षा-दल।

× × ×

आज शामको डॉक्टर काटजू बाबासे मिलनेके लिए पधारे। जनरल साहबने उनके आनेके पहले ही जंडेली 'आर्डर' दे दिया—'सब लोग बाहर चले जायँ। यहाँ भीतर कोई नहीं रहेगा।' एक फोटोग्राफर बहुत गिड़गिड़ाया, तो उससे कहा कि 'जैसे ही वार्ता शुरू हो, तुम दूरसे फोटो लेकर तुरत बाहर चले जाना!'

× × ×

भोजन करके हम लोग खुले मैदानमें ऊँचेपर जाकर लेटे। देरतक आपसमें इस बातपर चर्चा चलती रही कि देखें, काटजू साहबकी वार्ताके बाद मध्यप्रदेशकी पुलिसका कैसा रुख रहता है! कलसे बाबाके आसपास पुलिसको देखकर लोगोंमें एक अजीब-सी भावना है। ऐसी अफवाहें भी सुननेको मिल रही हैं कि बहुतसे बागी आत्म-समर्पणके लिए या बाबासे चर्चा करनेके लिए उनके पास आना चाहते हैं, पर पुलिसके कारण नहीं आ पाते! हाँ, बाबाका तो साफ कहना है कि जो व्यक्ति आत्म-समर्पणके लिए प्रस्तुत हैं, उनके लिए डरनेका प्रश्न ही कहाँ उठता है? पुलिसके रहने न रहनेसे उसमें क्या फर्क पड़ता है?

पर लोकमानस इतना निर्भय अभी बन कहाँ पाया है?

पुलिसका काम योग जैसा कठिन

अम्बाह
१५ मई '६०

रोजके अनुसार आज सवेरे हम लोग निकल पड़े ब्राह्ममुहूर्तमें।

जंगम विद्यापीठ चालू हो गया।

एक भाईने पूछा : बाबा, मैं सोने-चाँदीका काम करता हूँ। मेरी चित्तशुद्धि कैसे हो?

बाबा : आखा भगत बनो भाई, आखा भगत! सोने-चाँदीका व्यापार भी शुद्ध होकर किया जा सकता है। व्यापारमें शुद्ध बनो, तो चित्त भी शुद्ध हो जायगा। क्या-क्या अशुद्धि चलती है तुम्हारे व्यापारमें?

'खोटे मालको खरा बताते हैं। अच्छा माल निकालकर रद्दी माल मिला देते हैं। कुछ काट-कपट भी कर लेते हैं।'

बाबा : ये सब तरीके गलत हैं। इनमें चोरी है, असत्य है। ये सब छोड़ दो। ईमानदारीसे अपना काम करो। यह ठीक है कि उससे तुम्हारी आमदनी घट जायगी; पेट भरेगा, पेटी नहीं। पर चित्तशुद्धिका उपाय यही है।

× × ×

एक वृद्ध सज्जन बाबासे बोले : बाबा, मैं रामायणका भक्त हूँ। 'सीय-राममय सब जग जानी।' चौपाई मैं रटता रहता हूँ, पर अभीतक भक्ति नहीं आयी—'मैं जानी हरिपद रति नाहीं।' संसार मैंने छोड़ रखा है, फिर भी चित्त शुद्ध नहीं हो पाया। आप मुझे बताइये कि आत्मविद्या क्या है?

बाबा : आत्मविद्या तो यही है कि मेरे भीतर जो आत्मा है, वही सबके

भीतर है। 'सीयराममय सब जग जानी' वाली आपकी बात ठीक है। आप निष्काम सेवामें जुट जाइये। आपकी चित्तशुद्धि हो जायगी।

× × ×

इन्दौरके भावनाप्रवण साधनाशील प्रोफेसर बिल्लोरेने अपने जीवनके कुछ आध्यात्मिक अनुभव सुनाये। बाबाने उनकी सराहना करते हुए उनके बालबच्चोंका हालचाल पूछा। सब सुनकर बाबा बोले : आपकी पत्नीकी बीमारीने मेरी चिन्ता बढ़ा दी!

× × ×

प्रभाकरजी बापू और विनोबाके उन सेवकोंमें हैं, जो बाहरसे ही नहीं, भीतरसे भी उनके अनुगामी हैं। आज आन्ध्रके कार्यकी जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि तेनाली, बेजवाड़ा और गुन्तूरमें २० हजार सर्वोदय-पात्र चल रहे हैं, जिनसे तीन-चार हजार रुपयेकी मासिक आय है और हमारे ६० कार्यकर्ता जनाधारित हैं। इनमें ४० तो बहनें ही हैं। ये लोग ४ घण्टे सर्वोदय-पात्रका और ४ घण्टे लोक-सेवाका काम करते हैं। लोक-सेवाके काम ये हैं : रिक्शावालोंके लिए रात्रि पाठशाला, बहनोंको अम्बर-चरखा और हिन्दी सिखाना, बालवाड़ियाँ चलाना और नगरपालिकाके सफाईके काममें मदद करना।

बाबा बोले : खुशीकी बात है कि आपके यहाँ इस तरह संगठित रूपमें काम हो रहा है। आप अपने ६० मेंसे १० कार्यकर्ता मेरे बुलानेपर कहीं भी भेज सकते हैं। दूसरे प्रदेशोंमें ऐसा संगठन नहीं है, इससे मुझे रुक जाना पड़ता है। कश्मीर-प्रवासके समय मैं सोचता था कि देशकी सीमा-तक जाऊँ, तिब्बततक जाऊँ। पण्डितजी और चाऊ एन लाई मुझे वहाँ जाने दे सकते थे, पर मैंने सोचा कि मैं वहाँ जाऊँ, तो किसके बूतेपर जाऊँ? शान्ति-सेनाकी, अहिंसाकी ऐसी कोई ताकत अभी हम खड़ी ही कहाँ कर पाये हैं? अभी कल ही तो डॉक्टर काटजूसे बात हुई। मैंने उनसे कहा कि पुलिसके इन्तजामकी मुझे कोई जरूरत नहीं है। आपको जहाँ जरूरी लगे, वहाँ आप उसका इन्तजाम करिये, पर मेरे आसपास-

से पुलिस हटा लीजिये। गनीमत हुई कि उन्होंने यह नहीं पूछ दिया कि आपको कुछ हो जायगा, तो उसके लिए कौन जिम्मेदार होगा ? ऐसा पूछते, तो मैं उन्हें कौन-सी ताकत दिखा देता ? हम जबतक सामूहिक शक्ति खड़ी नहीं करेंगे, तबतक अहिंसा व्यापक नहीं हो सकेगी। सर्वोदय-पात्र और सम्पत्तिदानपर आधार रखनेवाले शान्ति-सैनिकोंपर ही, आम लोगोंकी स्वेच्छा-सम्मतिपर ही अहिंसाकी शक्ति खड़ी हो सकती है।

× × ×

दोपहरके बाद सम्मेलनोंका ताँता-सा लग गया। पहले बेसिक ट्रेनिंग-के शिक्षणार्थियोंका; फिर मुरेनाकी पञ्चायतोंके पञ्चों और कार्यकर्ताओंका, उसके बाद पुलिसवालोंका।

बाबाने बुनियादी तालीमके शिक्षणार्थियोंसे कहा : कर्म और ज्ञानका समन्वय ही नयी तालीम है। भारतके उद्धारका एकमात्र यही उपाय है। देशमें आज तरह-तरहके भेद और झगड़े चल रहे हैं। उन्हें दूर करनेकी जिम्मेदारी नयी तालीमवालोंपर है। आपको बुनियादी क्रान्तिकी प्रक्रियाका ज्ञान होना चाहिए। उसके लिए आपको सर्वोदय-साहित्यका अध्ययन करना चाहिए।

× × ×

पंचों और पंचायतोंके कार्यकर्ताओंके सम्मेलनमें बाबाने इस बातपर जोर दिया कि उन्हें निर्भयता और प्रेमके रास्तेसे ग्राम-स्वराज्यकी स्थापना करनी चाहिए। बाबाने कहा :

कहते हैं कि इस जिलेमें डाकू-समस्या है। दिल्ली, बम्बई, लखनऊ, भोपालमें भी तो डाकू-समस्या है। पुलिस और बन्दूकोंसे यह मसला हल होनेवाला नहीं, और न ग्राम-रक्षा-दलसे। यह तो प्रेमसे ही हल होगा। धन और धरती प्रेमसे बाँटनेसे सुलझेगा। पंचायतोंको चाहिए कि कुल जमीन गाँवकी बनाकर प्रेमसे सबको बाँट दें, मालिक-मजदूरका भेद मिटा दें और ग्राममें ग्राम-स्वराज्य कायम करें। डाकू भी तो अपने ही आदमी हैं। उनके घरवालोंका क्या कसूर है ? सबसे प्रेम करें।

दुखियोंका दुख मिटायें। वैर-विरोध मिटायें। इसका एक ही तरीका है—प्रेम।

× × ×

पुलिसवालोंका सम्मेलन थोड़ी दूरपर था। पुलिसके डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल कोहिली साहब बाबाको वहाँ ले गये।

बाबाका स्वागत करते हुए कोहिली साहबने कहा कि आजसे तीन साल पहले भिण्ड, मुरेना, दतिया, ग्वालियर आदिमें डाकुओंका बड़ा आतंक फैला था। तय हुआ कि पूरी ताकत लगाकर डाकुओंको खतम किया जाय। हम १६ मेंसे १३ गिरोह खतम करनेमें सफल हुए। समाजके सुन्दर शरीरपर उठे हुए इस फोड़ेका आपरेशन तो हमने कर डाला, पर इससे समस्या हल नहीं होती। समाजका यह दुःख कैसे मिटे, इसपर सुझाव माँगे गये, तो मैंने तीन साल पहले ही यह सुझाव दिया था कि इसके लिए आचार्य विनोबा भावेके दलको बुलाया जाय। आत्मबलसे वैर-विरोधकी भावना मिट सकती है। किसी महात्माके अच्छे वचनोंसे ही इस फोड़ेकी मरहम-पट्टी हो सकती है। तीन सालके बाद अब मेरा ख्वाब पूरा हुआ। हमारा आपका निशाना एक है। आप हमें उपदेश दीजिये, जिससे हमें प्रेरणा मिले और हम ठीक रास्तेपर चल सकें।

बाबा बोले :

करीब तीन माह हुए, हम पंजाबमें थे। वहाँ फिल्लोरमें अनेक प्रान्तोंके पुलिस-कर्मचारियोंको प्रशिक्षणके लिए इकट्ठा किया गया था। उनके सामने मुझे बोलनेका मौका मिला था। उसके पहले भी पुलिसके सामने बोलनेके मौके मिले हैं। आज एक खास प्रसंग है। यहाँ डाकुओंकी समस्या है। इसलिए पुलिस काफी तादादमें तैनात है। बरसोंसे यह व्यवस्था चल रही है।

अभी यहाँके अधिकारी (डी० आई० जी० पुलिस) ने एक बात कही, जो मुझे मालूम नहीं थी। आजसे तीन साल पहले उन्होंने बाबाको यहाँ बुलानेका सुझाव सरकारको दिया था। यह बड़ी बात है। क्षत्रियोंने

सत्पुरुषोंकी मदद सदा अपने काममें ली है। अधिकारी महोदयके भाषणसे

आज इसकी स्मृति जाग उठी।

पुलिसका काम कठिन है। पुलिसवालोंको अपना दिल रखना है नरम, और हाथसे सख्त काम करना है। पुलिससे संतोंका काम आसान है। सन्तका दिल नरम रहता है, तो हाथ भी नरम ही रहते हैं। पुलिसको इसके साथ मर्यादाका ख्याल भी रखना होता है। फौजका काम इतना बड़ा नहीं है। उससे कोई नहीं पूछेगा कि विरोधीपर इतना सख्त हमला क्यों किया? उसका जीतनाभर काफी है। मगर जहाँ पाँच सेर ताकत लगानेकी जरूरत है, वहाँ पुलिस साढ़े पाँच सेर ताकतका उपयोग नहीं कर सकती। इसके लिए उसे सफाई देनी होगी। योग-साधनाके समान यह कठिन काम है। अन्तरमें नरम, ऊपर सख्ती और बुद्धिमें मर्यादाका ध्यान। माँ-बाप अपने बच्चोंको ताड़ना देते समय ऐसा ही करते हैं। दण्ड, ताड़ना ज्यादा न हो, अन्दरसे बहुत प्यार हो। नागरिकोंकी खिदमतमें अपनी जानको जोखिममें डालनेके लिए सदा तैयार रहना, लोक-पीड़कोंके साथ सख्तीसे बरतना और उसमें भी ज्यादती न होने देना—यह तो योगीका-सा काम है।

पुलिससे मैं तो चाहूँगा कि उसका दिमाग समत्वयुक्त हो। उसमें क्षोभ कभी न रहे। पुलिसवाले हिसाबसे काम करें, दिमाग हमेशा सम-तोल रखें। हमेशा बंदूक चलाना ही उनका काम नहीं है, औरोंकी रक्षाके लिए मर मिटना भी उनका काम है। इसलिए पुलिसको साधुपुरुषका और वीरपुरुषका, दोनोंका काम करना होता है। सिर्फ ३२ इञ्च छातीकी चौड़ाई देख लेनेसे काम नहीं चलेगा। चौड़ाईके साथ उतनी गहराई भी चाहिए। किस मौकेपर क्या करना, इसकी समझ भी चाहिए।

मेरा जो मिशन है, उसमें आप मेरी मदद किस प्रकार करेंगे? एक तो जहाँ-जहाँ मैं जाऊँ, मेरे साथ घूमें नहीं। जो भी मेरे पास आयें, निर्भीक होकर खुले तौरपर आ सकें। जब उन्हें आपके हाथमें सौंपा जाय, तो आप उनसे सख्ती न बरतें। कोई वधके लायक है, तो न्यायाधीश उसे

फाँसी देगा ही। फिर दयाकी दरख्वास्तपर राष्ट्रपति भले ही उसे माफ कर दे। जिसे पश्चात्ताप होगा, वह दण्डसे नहीं बचना चाहेगा। किसीको माफ करनेवाला तो भगवान् है। भगवान् पापका दण्ड तौल-तौलकर देता है, पर पुण्यका फल बेतौल देता है। इनाममें उदार और सजामें कंजूस। इसी रीतिका प्रयोग पुलिसको करना है।

आपका और मेरा काम एक-सा है। आपको ऐसा बनना है: पहले मक्खन, पीछे भी मक्खन, बीचमें कठोर। बहुत ठण्डा होनेपर मक्खन कुछ सख्त बनेगा। पर आखिर पत्थर तो बन नहीं सकता। पुलिसकी शक्ति अग्निकी नहीं, बरफकी शक्ति हो।

आपको गीता, रामायण, गुरु ग्रन्थसाहिबका अध्ययन करना चाहिए। हमें सोचना है—"मैं सेवक सचराचर रूपराशि भगवंत।" आप सब रामजीके सैनिक हैं। आपको सत्यनिष्ठा और मर्यादाका पालन करना चाहिए। आपका काम कठिन है। कदम-कदमपर आपकी परीक्षा होगी। प्रभु करे, आप देशके सच्चे सेवक साबित हों!

मुझे डाकू भी प्यारे हैं, पुलिसवाले भी !

पोरसा
१६ मई '६०

'मनका निग्रह कैसे हो ?'

आज ब्राह्ममुहूर्तमें हमारे एक नौजवान साथीने बाबासे छेड़ दिया यही प्रश्न ।

बाबा बोले : 'मनीराम'को काबूमें करनेकी बात है तो टेढ़ी, लेकिन अभ्याससे उसे काबूमें किया जा सकता है ।

'कैसे बाबा ?'

विनोद करते हुए बाबा बोले : 'मनी' (Money) को छोड़ दो, रामको पकड़ लो । 'मनी' माने पैसा, रुपया, माया । मायाको छोड़ो, रामको पकड़ो ।

'रामको कैसे पकड़ें बाबा ?'

बाबा : रामको हर जगह देखो । पर्वत दिखा तो सोच लिया : 'स्थावराणां हिमालयः' । भगवान् कहते हैं कि 'स्थावरोंमें मैं हिमालय हूँ ।' नदी दिखी तो सोच लिया : 'स्रोतसामस्मि जाह्नवी !' भगवान् कहते हैं कि 'नदियोंमें मैं गगा हूँ ।' मतलब—होते-होते यह स्थिति आ जाय कि जहँ जहँ जाऊँ सोई परिकरमा, जो कछु करूँ सो पूजा ! सर्वत्र राम दीखना चाहिए । सारा काम रामकी पूजा बन जाना चाहिए ।

साधो सहज समाधि भली ।......

अपराह्णमें कई भाई-बहनें बाबासे मिलीं । उन्होंने अपनी दुःखगाथाएँ बाबाको सुनायीं ।

तभी एक मजेदार घटना घटी ।

कलश और पात्र लेकर एक भाई बाबाके कमरेमें आ डटे। बोले : 'महाराज, मुझे आपका चरण-तीर्थ चाहिए।'

बाबा तो हैरान !

चरण छूनेवालोंसे तो रोज ही उनका साबिका पड़ता है। लाख मना करनेपर भी कहाँ मानते हैं लोग ! पर इस अन्धविह्वलको क्या कहा जाय, जो बार-बार इनकार करनेपर भी कहता है : 'नहीं महाराज, मैं तो चरण-तीर्थ लिये बिना हटूँगा नहीं यहाँसे।'

और तब शंकराचार्य आ विराजे बाबाके स्मृतिपटपर। उनका मोह-मुद्गर याद पड़ा :

भगवद्गीता किञ्चिदधीता
गंगाजललवकणिका पीता।
सकृदपि यस्य मुरारिसमर्चा
तस्य यमः किं कुरुते चर्चाम् ॥

यदि श्रीमद्भगवद्गीताका थोड़ा भी हो ज्ञान।
गंगाजल-कण लेशमात्र भी किया जिन्होंने पान ॥
एक बार जिनसे अर्चित हों मुररिपु कमलाकान्त।
उन जीवोंकी चर्चा करता नहीं कदापि कृतान्त ॥

'देखो भाई, हमारा 'गीता-प्रवचन' लेकर उसका अध्ययन करो और चम्बल-नर्मदाका जल पी लो। असंख्य सन्तोंकी चरण-रज पड़ती है इन नदियोंमें। सबसे उत्तम चरण-तीर्थ है गंगाजल। गंगा न सही नर्मदा, नर्मदा न सही चम्बल !'

इतना समझानेपर ये भाई माने और यों बाबाके शब्दोंमें 'बड़ी बला टली !'

× × ×

तीसरे पहर चि० गौतम अपनी पेटी सँभालने लगा, तभी मुझे लगा कि यह 'मिशन'पर जा रहा है कहीं ! शायद दो-एक दिन बाद लौटेगा।

गर्मी तेज है इन दिनों। शामको हलकी-सी फुहारें आकर थोड़ी-सी तरावट दे गयीं।

सामनेके खुले मैदानमें सायंकालीन सभा हुई। तेलंगानाकी नौ साल पहलेकी स्थितिसे चम्बल घाटीकी वर्तमान स्थितिकी तुलना करते हुए बाबाने कहा :

पाकिस्तान बननेके बादकी दुःख-गाथाएँ, तेलंगानाके दुःख और यहाँ डाकुओंकी समस्याएँ—इन सारे दुःखोंको सुनते-सुनते हमारा दिल निठुर बन गया। यह सब सुन-सुनकर अब हमारी आँखोंमें आँसू नहीं आते। भगवान्‌का ध्यान करते हैं या महापुरुषोंकी याद करते हैं, तो आँसू आते हैं; मगर इन दुःखोंको सुनकर नहीं। बात यह है कि यहाँ आँसू बहानेसे काम नहीं चल सकता। किसीको रोते देखकर खुद भी रोने लगना तो वैसा ही हुआ, जैसे किसीको डूबते देखकर खुद डूब जाना। हम दुःखियोंके आँसू पोंछ सकें, तब तो कोई बात है।

चार-पाँच दिन पहले हमने उन बहनोंकी कहानियाँ सुनीं, जिनके पति या भाइयोंको डाकुओंने मार डाला। आज उन बहनोंकी कहानी सुनी, जिनके पति या भाइयोंको पुलिसने मार डाला। कुछ ऐसी बेवाओंके किस्से भी सामने आये, जिनकी जमीन रिश्तेदारोंने छीन ली। जमीनकी समस्या हर जगह है। यहाँ भी है।

भिण्ड-मुरेनाके लोग बहादुर हैं। महादजी सिंधियाकी फौजमें ज्यादासे ज्यादा सैनिक यहींके थे। यहाँके लोगोंने अपना पुराना धन्धा चालू किया है। बन्दूक बनाना और उसका उपयोग करना। आज भी यहाँ बहादुर लोग हैं। वे सीधे-सादे और दिलके सरल हैं। इनसे मुझे प्यार है। बत्तीस इञ्च चौड़ी छातीवाले पुलिसके लोग भी तंग-हृदयके नहीं हो सकते। ये लोग गरीब भी होते हैं। अधिकतर तुलसीदासजीकी रामायणको नियमित रूपसे पढ़नेवाले होते हैं। कुल मिलाकर दोनों (पुलिस और डाकू) सरल-हृदय हैं। पर तकलीफ दोनों देते हैं। असलमें यहाँके दुःख इन्सानों द्वारा ही पैदा किये गये हैं। इनको तो हम मिल-जुलकर ही खतम कर सकते हैं।

यदि किसी बेवाकी जमीन उसके रिश्तेदारने दबा ली है, तो गाँवके लोग उसे जमीन दे दें। दिल जब बड़ा होता है, तो मसले बड़ी आसानीसे हल हो जाते हैं। ये हवाई बातें नहीं हैं। तेलंगानाके लोगोंने बारह हजार एकड़ जमीन दो माहमें दी। वे भी तो मनुष्य ही हैं। कोई देवता नहीं हैं। सरकार जो चीज नहीं कर सकती, दान उसे कर सकता है।

पैदा होते वक्त सब एक-से होते हैं। जन्मसे डाकू पैदा नहीं होते। डाकू तो बनाये जाते हैं। मुझे तो डाकू भी प्यारे हैं, पुलिसवाले भी प्यारे हैं। जमीनवाले भी और बेजमीन लोग भी। मैं तो आपके बीचमें श्रद्धासे घूम रहा हूँ। पुलिससे मैंने कहा कि 'तुम लोग मेरे साथ-साथ घूमते रहोगे, तो कैसे काम चलेगा ?' मेरी बात मानकर पुलिसवाले चले गये। आज लोग बेधड़क मेरे पास आये और उन्होंने अपने कष्टोंकी चर्चा की।

ऐसा शख्स अभीतक नहीं जनमा, जिसने जिन्दगीभर कभी कोई गलत काम न किया हो। डाकुओंने गलत काम किये। पुलिसने भी किये होंगे। और लोगोंने भी किये होंगे। इसलिए क्षमा करना धर्म हो जाता है। जब बच्चा गलती करता है, तो माता उसे थप्पड़ लगाती है। किन्तु वह थप्पड़ प्यारसे खाली नहीं होता।

तीन बागी बाबाके चरणोंमें

नगरा (मुरेना)
१७ मई '६०

आँखोंकी नीरव भिक्षामें
आँसूके मिटते दागोंमें,
ओठोंकी हँसती पीड़ामें
आहोंके बिखरे त्यागोंमें,
कन-कनमें बिखरा है निर्मम !
मेरे मानसका सूनापन !!

ओह, कितनी करुण है लाखन सिंहके इस ऊँचे-नीचे, ऊबड़-खाबड़ गाँवकी कहानी ! जिसे देखिये, उसके चेहरेपर महादेवीजीकी ये पंक्तियाँ उभरी आ रही हैं । जिस गाँवमें तेईस माताओंके लाल लुट गये, बीसों सधवाओंका कुंकुम पुछ गया, पचासों बच्चे बिना बापके हो गये, पचीसोंके भाई दुनियासे मिट गये, पचीसों वृद्ध बेसहारे हो गये, उस गाँवकी हृदय-द्रावक कहानी किसे द्रवित न कर देगी ? राग-द्वेष और प्रतिशोधकी बहती धारामें इस गाँवका जो सर्वनाश हुआ है, उसकी कल्पनासे ही रोंगटे सिहर उठते हैं । इनमें कुछ भाइयोंको डाकुओंकी गोलीने भून दिया है, कुछको पुलिसकी गोलियोंने !

परिणाम ?

जिधर देखिये : रुदन और हाहाकार ही दीख पड़ता है । माताओं और बहनोंको जैसे ही पता चलता है कि ये गांधी-विनोबावाले उनके घरपर आये हैं, वैसे ही क्रन्दन और आर्तनादसे कान फटने लगते हैं ! पीडितोंके जिन दरवाजोंको हमने खटखटाया, सर्वत्र यही सुननेको मिला : कोई माँ

निपूती बनी बैठी है, कोई युवती चूड़ियाँ फोड़ बैठी है ! कोई बच्चा पिताके लिए रो रहा है, कोई बहन भाईके लिए आँसू बहा रही है !

पशुता और दानवताका नंगा नाच होता रहा है इस गाँवमें ! आतंक तो यहाँकी ईंट-ईंटपर छाया हुआ है।

× × ×

स्कूलकी छोटी-सी इमारतमें बाबा ठहरे हैं, इधर-उधर तम्बुओंमें हम लोग। बगलमें ही एक मकानमें पुलिसका एक दस्ता कायमी तौरपर पड़ा है। डाकू-अभियानकी स्पेशल पुलिसका चौथा बटालियन जोन है यह। उसका बड़ा साहब है—क्विन्स।

प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने कहा :

यहाँपर आपके छोटे गाँवमें पुलिसका दस्ता पड़ा है। इसका खर्चा कौन देगा ? आप कहेंगे कि सरकार देगी; पर सरकार तो आपसे ही लेकर न देगी ? हम क्या गाय-भैंस या भेड़ें हैं, जो हमारे लिए गड़रियेकी जरूरत हो ? हम आपसमें मिल-जुलकर नहीं रह सकते क्या ?

कहते हैं कि यहाँ डाकू-समस्या है। डाकू कोई हमसे अलग हैं ? हम उन्हें समझा नहीं सकते ? उनके मनमें डाकेकी बात आती क्यों है ? कुछ असन्तोष होगा। उसे हम मिटा नहीं सकते क्या ? उन्हें समझाकर हम गलत रास्तेसे सही रास्तेपर नहीं ला सकते क्या ? प्रेमसे हम बात करें, उन्हें समझायें, तो डाकू-समस्या जरूर मिट सकती है।

डाकू बेहड़ोंमें मारे-मारे फिरते हैं। ऐसी जिन्दगीमें भला किसीको मजा आयेगा ? एक बार कोई गलत रास्तेपर चला जाता है, तो उसे कायमके लिए उसीपर चलना पड़ता है। छिपता है, हमला भी करता है, खानेको नहीं रहता, तो डाका भी डाल लेता है।

आप हिम्मत रखिये, डाकुओंको प्रेमसे समझाइये कि भाई, तुम गलत रास्तेपर चले गये। उसके लिए पश्चात्ताप करो। अबतक गन्दे रहे, अब नहा डालो।

समाज यह तय कर ले कि हम इन गुमराह भाइयोंको ज्यादा सतायेंगे नहीं, सरकार भी सोचे कि जो लोग अपना गुनाह कबूल करते हैं, उनके साथ सख्तीसे न बरते। पुलिस उनके साथ बुरा व्यवहार न करे। इस तरह प्रेम और सद्भावसे यह समस्या जरूर सुलझ सकती है।

× × ×

गाँवमें तीन भाई प्रभावशाली हैं। तीनों बुजुर्ग, वयोवृद्ध। हम लोग दोपहरमें तीनोंसे अलग-अलग बातें करते रहे। तीनों तीनोंसे डरते हैं। किसीका किसीपर विश्वास नहीं। रग-रगमें पारस्परिक मत्सर और द्वेष भरा पड़ा है। आजका नहीं, बरसोंका। तीनों एक-दूसरेपर लांछन लगाते हैं। तीनोंने एक-एक पार्टी पकड़ रखी है। एक कहता है कि ग्वालियर महाराजके जमानेमें मैं अवैध व्यापार करता था जरूर, यहाँसे नाजायज माल इटावा पहुँचाया करता था, पर वह जो मेरा दुश्मन है, वह तो आज भी चोरी करता है, जानवरोंको छिपाकर बेचता है और उससे हजारों रुपये पैदा करता है! दूसरा कहता है, हम तो मिलनेको तैयार हैं, पर वह तो हमसे दुश्मनी मानता है। उसका कोई भी नुकसान होता है, तो वह यही मानता है कि हमने ही करा दिया। हम मर जायँ और तब उसका कोई नुकसान हो, तब भी वह यही कहेगा कि जिन्दा था, तब तो सताता ही रहा, मरकर भी सता रहा है!

एक भाई पुलिसके सायेमें ही अपना जीवन बिताता है। बन्दूक ही उसकी सहचरी है। सैकड़ों बीघे जमीन परती पड़ी है उसकी। कोई जोतने-की हिम्मत नहीं करता, क्योंकि बागियोंका डर है। जो जोतेगा, उसे बागी गोलीसे उड़ा देगा! दुश्मनीका कैसा वीभत्स चित्र!

× × ×

बबूलकी विरल छायामें बैठे हम लोग अभी बात ही कर रहे थे कि शोर मचा—'बागी आया! बागी आया!!' भीड़ दौड़ी चारों ओरसे।

हमने देखा कि एक नौजवान साफा बाँधे बन्दूक लिये, कारतूस डाले बाबाकी ओर बढ़ रहा है। भीड़ चारों ओरसे घेरे है उसे।

तभी यह भी देखा कि बन्दूकधारी दो नौजवान जीपसे आये और बाबासे एकान्तमें थोड़ी देर बात करके फिर जीपसे रवाना हो गये। लोगोंने कहा : 'ये भी बागी हैं !'

× × ×

बागियोंकी दर्शनार्थी भीड़ बढ़ने लगी और जोरसे बढ़ने लगी। पता चला कि तीन बागी भाई आये हैं बाबाके पास आत्मसमर्पणके लिए।

फोटोग्राफरोंके कैमरे 'क्लिक' कर उठे। तीनों बड़ी हँसी-खुशीसे फोटो खिंचा रहे थे।

× × ×

सायंकालीन प्रार्थनाके लिए बाबा जब मंचपर पहुँचे, तो पातीराम, श्रीकिशन और मोहरमन : तीन बागी भाइयोंने शस्त्र-समर्पण करते हुए बाबाके चरण स्पर्श किये और कहा : **'अबतक हमने जो गलत काम किये हैं, उनका हमें दुःख है। आइन्दा हम कोई गलत काम न करेंगे !'**

प्रार्थना-प्रवचनमें बाबाने कहा :

बड़ी दुःखदायी कहानी है इस गाँवकी। यहाँ बीस-पचीस लोग मारे गये। कुछ बागियोंने मारे, कुछ पुलिसने। जिन्होंने इस तरह मनुष्योंकी हत्या की, उन्हें उस समय कैसा लगा होगा, हम नहीं कह सकते। जो मरे, वे तो एक तरहसे छूट गये। उनमें कुछ दोषी होंगे, कुछ निर्दोष। भगवान्की निगाहमें वे कैसे हैं, वही जानें। मगर मारनेवाले हर हालतमें यहाँ दोषी ही माने जायेंगे। जो मर गये, उनके घरवालोंकी हालत क्या होती होगी ? वे माताएँ जिनके बच्चे गये, वे बहनें जिनके पति गये, वे बच्चे जिनके पिता गये, उनकी क्या दशा होगी ? एक दिन जाना तो सबको है। कोई आगे जाता है, कोई पीछे। पर जब लोग इस तरह मारे जाते हैं, तो मनुष्यका दिल उसे बर्दाश्त नहीं कर पाता।

इस गाँवकी बदकिस्मतीसे यहाँ तीन-तीन पार्टियाँ और उनके एक-एक नेता हैं। तीनों बुजुर्ग हैं। कहा जाता है कि उनमेंसे एक कांग्रेसी हैं, एक सोशलिस्ट हैं और एक सरकारके साथ हैं। जो कुछ यहाँ हुआ, वह

सब इन्हींका पैदा किया हुआ है। हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि ये पार्टियाँ कभी ऐसा नहीं कह सकतीं कि तुम गलत काम करो। तेलंगानाके एक गाँवमें रहनेवाले दो भाई एक-दूसरेके कट्टर दुश्मन थे। दोनोंके पास बड़ी-बड़ी जमीनें थीं। एक कांग्रेसमें शामिल हो गया, दूसरा कम्युनिस्ट बन गया। फिर आधा गाँव एक भाईकी तरफ हो गया और आधा दूसरे भाईकी तरफ। मैंने दोनोंको बुलाकर प्यारसे समझाया। भगवान्‌ने हमारी वाणीमें ताकत दी। आम सभामें दोनों भाई गले मिले और उनका झगड़ा खतम हो गया।

इसी तरहका किस्सा यहाँ भी है। यहाँके तीनों नेता तीन अलग-अलग पार्टियोंका नाम ले-लेकर लड़ते हैं। ऐसा मनुष्य मैंने अभीतक नहीं देखा, जिसे अन्दरसे दुर्जनता भाती हो। इनको भी नहीं भाती होगी। पर कहींसे शैतान दिलपर हावी हो जाता है और इन्सानसे न होने लायक काम होने लगते हैं। जब इन झगड़नेवालोंको भगवान् उठा लेते हैं, तो उनके लड़के-बच्चे उनकी टेकको पकड़ लेते हैं और फिर पुश्त-दर-पुश्त ये झगड़े चलते रहते हैं।

हमें खुशी है कि यहाँके लोगोंमें कुछ परिवर्तन आ रहा है। आपने देखा, तीन भाई अभी यहाँ आये हैं। इनके पहले एक और भाई हमसे मिले थे। वे २८ बरसके हैं। ब्राह्मण हैं। बातें करते हुए रो पड़े। उन्होंने कहा : 'मेरे गलत कामोंके कारण सरकार यदि मुझे सजा देती है, तो मैं सह सकता हूँ। मगर मेरे कारण मेरे भाइयोंको और रिश्तेदारोंको जो तकलीफ दी जाती है, वह बर्दाश्त नहीं होती।' बाबा भी चाहता है कि इस भाईसे जो गलत काम हुआ है, उसके लिए उसे उचित सजा मिले; मगर उसके रिश्तेदार परेशान न किये जायँ। क्षमा करनेवाला तो परमात्मा है। यहाँ दण्डसे बचे, तो वहाँ परमात्मासे क्षमा नहीं मिलेगी। भगवान्‌से अधिक दयावान् और कौन है? यदि इन भाइयोंको सच्चा पश्चात्ताप है, तो उन्हें भगवान्‌से प्रार्थना करनी चाहिए कि 'जैसा हमने अभीतक किया है, वैसा हम फिर नहीं करेंगे।'

हम तो ईश्वरकी प्रेरणासे ही काम करते हैं। अखबारोंमें हमारे बारेमें तरह-तरहकी बातें छपती हैं। लोग पूछते हैं कि 'बाबाका मिशन सफल होगा या नहीं?' मगर यह बाबाका मिशन है ही नहीं। भगवान्‌का मिशन है। सफल होता है या असफल, इसकी परवाह मैं क्यों करूँ? मेरा मिशन तो तब सफल होगा, जब मेरे दिलमें सत्य, प्रेम और करुणा इतनी भर जाय कि शरीर टूटकर गिर जाय। यहाँ जो वाकया बना, उसका असर मेरे दिलपर इतना अधिक है कि मेरे लिए बोलना कठिन हो रहा है। भगवान्‌का हम उपकार मानते हैं कि जिसने इनका हृदय परिवर्तित किया और इन्हें ऐसी सद्‌बुद्धि दी। मैं इस गाँवके तीनों मुखियोंसे अपील करता हूँ कि झगड़े मिटाओ, नहीं तो सारा गाँव मिट जायगा।

× × ×

कई भाइयोंपर निगरानी है पुलिसकी। उन्हें हाजिरी देनी पड़ती है। एक भाई चाहता था कि बाबाको कुछ आपबीती सुनाये। हमने दिनमें कई बार उससे मिलकर कहा : 'तुम निधड़क होकर बाबासे मिलो।' पर उसकी हिम्मत नहीं पड़ी, सो नहीं ही पड़ी। शामको हमने उससे फिर पूछा : 'क्यों भाई, तुम आये नहीं मिलने?'

बहुत सकपकाता-सा बोला : कैसे आता? कल 'साहब' (पुलिस अधिकारी) पूछेगा कि 'क्यों, तुम बाबासे मिलने गया था?' तो क्या जवाब दूँगा?

हायरे, आतंक!

दागगीरी काहेको की ?

कनेश (भिण्ड)
१८ मई '६०

"संकल्प : सेवा : समर्पण : समाधि !

प्रातःकाल संकल्प करो कि दिनभर सेवा करूँगा, सत्कार्य करूँगा।

दिनभर सेवा करो।

सायंकालके समय दिनभरकी सेवा प्रभुको समर्पण कर दो : 'लो नाथ, भला-बुरा सब तुम्हारा !'

रात्रिको आँखें मूँदते ही समाधिमें चले जाओ।"

मुरैना जिलेकी सीमा पार करके हमने जैसे ही भिण्ड जिलेकी सीमामें प्रवेश किया और उदोतगढ़ ग्राममें पहुँचे, वैसे ही बाबा परशुराम, हरेकृष्ण जाधव भूता, बाबूराम शुक्ल, रघुबीर सिंह कुशवाहा, हरसेवक मिश्र, बटेश्वरदयाल शर्मा, काशी गुप्त, लक्ष्मीनारायण गुप्त और भिण्ड जिलेके अनेक व्यक्तियोंने बाबाका स्वागत किया, तभी स्वागतार्थी भीड़को बाबाने जीवनका यह अनुपम सूत्र भेंट कर दिया।

सार्थक हो उठे हमारा जीवन, जिस दिनसे हम इसे अपना लें !

× × ×

आज रास्तेमें बाबा एक डाकूके दामादसे बातें करते आये। उसने पुलिसके उत्पीड़नसे त्रस्त होकर दो बच्चोंवाली अपनी युवती पत्नी छोड़ रखी है। पत्नी जबसे छोड़ी, तबसे डाकू लोग उसे तंग करने लगे। बेचारेके लिए 'इधर कुआँ है, उधर खाई !' बाबाने उसे बहुत धिक्कारा। प्रवेश-प्रवचनमें भी बाबाने उसकी चर्चा की।

बोले :

ऊपरसे देखते हैं, तो मनुष्यके जीवनमें खाना, पीना, बीमारी, बुढ़ापा,

मृत्यु—यही सब दीख पड़ता है। पशुओंमें भी करीब-करीब ऐसा ही है। फिर भी, दुःखीसे दुःखी मनुष्य भी सुखी जानवर बनना नहीं चाहेगा। खाना, पीना और मामूली इन्द्रिय-सुख ही यदि सब कुछ होता, तो शायद मनुष्य ऐसा पसन्द करता। पर मनुष्यमें जानवरोंसे कुछ अलग चीज है। और वह है मानवता, इन्सानियत। हमदर्द दिल मनुष्यको भगवान्‌की अमूल्य देन है। आसपासकी सृष्टिकी सेवा और स्रष्टाके दर्शन-के लिए स्थूल सुखोंके त्यागकी हविस मनुष्यकी अपनी चीज है। जिसमें वह जितनी ज्यादा होगी, उतना ही ज्यादा उसका समाधान होगा।

आज एक भाई बात कर रहे थे। वे शादीशुदा हैं। दो बच्चे भी हैं। उनकी पत्नी डाकूकी लड़की है। पुलिस उन्हें तंग करती है। सताना है तो डाकूको सताओ, डाकूके रिश्तेदारोंको क्यों? पुलिस कहती है: 'रिश्तेदारोंको सतायेंगे, तो डाकू ठिकाने आयेंगे।' बाल-बच्चोंको तकलीफ देनेसे डाकूका दिल पिघलता है। एक तरफसे यह बात बेजा लगती है, दूसरी तरफसे माकूल। पुलिसवाले पश्चात्तापकी बात थोड़े ही करेंगे! उनके पास तो पकड़नेका यही साधन है। मनुष्यको पकड़ना चाहते हैं, इसलिए उसका कान पकड़ते हैं। खुद उसे पीटनेसे जितनी तकलीफ नहीं होती, उससे ज्यादा तकलीफ उसकी पत्नी या उसके बच्चोंको पीटनेसे होती है। यह धक्का देनेवाला उपचार—Shock Treatment—पुलिस काममें लाती है।

इस भाईने पुलिसकी तकलीफसे बचनेको अपनी पत्नीसे कहा: "तू यहाँसे जा।" जिस पत्नीको लड़के-बच्चे हो गये, उसे उसने अपने यहाँसे भेज दिया! वह बेचारी चली गयी। स्पष्ट है कि उसका यह कार्य अधर्मका है। वह कहता है: "अब मुझे डाकू तंग करते हैं।" मैंने उससे कहा कि "मुझे खुशी है कि डाकू तुम्हें तंग करते हैं।" वह बेचारा दो चक्कियोंमें पिसा जा रहा है। मैंने उससे कहा: "आखिर क्या करोगे? जाकर चम्बलमें कूद पड़ो। तैरना आता है, तो पत्थर बाँधकर कूदो। नहीं तो गंगाजीमें कूदो।" वह मेरा इशारा समझ गया।

तकलीफसे बचनेको मनुष्य जब अपना धर्म छोड़ता है, तो वह अपनी मानवता छोड़ता है। गृहस्थ-आश्रमका धर्म है, इन्द्रिय-निग्रह, अतिथि-सेवा और ऐसी ही बहुत-सी बातें। तकलीफके कारण पत्नीको छोड़ दिया, यह तो पशुत्व हो गया। पत्नी क्या केवल भोग-विलासके लिए ही होती है? यहाँ तो गृहस्थाश्रम ही मिट गया। मनुष्यता ही जाती रही। मानव-जीवनमें मानवता, हमदर्दी, संयम, भक्ति होनी ही चाहिए। नहीं तो पशु और मानवमें फर्क ही क्या रहा?

कई बड़े सत्पुरुषोंके ऐसे ही किस्से हैं। डाकुओंमें भी कई महापुरुष हो गये हैं। नामदेवके बारेमें कहा जाता है कि वह लोगोंको लूटता था, डाका डालता था। एक रोज वह किसी धर्मशालामें बैठा था। वहाँ एक आदमी रो-रो करके दूसरेको सुना रहा था कि वह बड़े दुःखमें है। उसने कहा कि 'वह नामा डाकू है न! उसने मुझे खूब सताया है, मेरी पत्नीको खूब तकलीफ दी है!' नामदेव बैठकर सुन रहा था। उसकी मानवता छू गयी। उसने सोचा कि मैं ही इसके दुःखका कारण हूँ। उसे बड़ा पश्चात्ताप हुआ। शेरको कभी ऐसा सदमा नहीं होता। उसमें इन्सानियतका माद्दा होता ही नहीं। बूढ़ा होनेपर, अशक्त होनेपर भले ही वह सोचता हो—'हे भगवन्! मैंने जिन्दगीभर दुश्मन ही बनाये!' ज्ञानदेवने लिखा है कि शेर अपनी भूखसे पीड़ित होकर कभी-कभी खुद ही अपना हाथ चबाने लगता है। मनुष्यमें यह बात नहीं है।

मानवताका स्पर्श होनेपर दुर्जन एक क्षणमें सज्जन बन सकता है। मैं पूरे विश्वाससे मानता हूँ कि यहाँ लोगोंको मानवताका स्पर्श होगा, ऊपरसे ढकना हट जायगा और भीतरका प्रकाश बाहर आ जायगा। यह सज्जनोंका क्षेत्र, सन्तोंका क्षेत्र जाहिर होगा। अनेक सत्पुरुषोंका उदय यहाँ हो रहा है। हम हमदर्दी और श्रद्धासे काम करें। यह क्षेत्र निश्चय ही साधु-क्षेत्र घोषित हो सकता है। इनको सीधी राह बतानेकी जरूरत है।

मंचपर अपने पास बैठे परशुराम बाबाकी ओर देखते हुए बाबा

बोले : इन स्वामीजी महाराजका यही धन्धा होना चाहिए। बताइये न महाराज इन्हें सीधी राह !

× × ×

दोपहरमें बाबा गाँवकी परिक्रमाको निकले। कई घरोंमें हम लोग गये। जगह-जगह डाकुओंके अत्याचारोंकी कहानी सुननेको मिली। लोगोंने बताया कि हमसे इतने-इतने हजार रुपये माँगे गये, हम नहीं दे पाये, तो हमारे भाई-भतीजे गोलियोंसे भून दिये गये ! एक कच्चे मकानकी दीवालोंमें कई जगह हमें गोलियोंके निशान देखनेको मिले।

× × ×

तम्बूमें हम बैठे ही थे कि चारों ओर शोर मचा : "पण्डित आये, पण्डिताइन आयीं।" कोई कह रहा था 'लच्छी पण्डित आये', कोई कह रहा था 'लच्छी महराज आये !' कोई कह रहा था बड़ा खतरनाक और चालाक बागी है यह !' मिनटोंमें हजारोंकी भीड़ बाबाके निवासके आस-पास जुट गयी।

जाकर देखा, तो दरवाजेपर रामऔतार पूरी मुस्तैदीसे खड़ा भीड़को 'कण्ट्रोल' कर रहा है। वह तो अब 'बाबाका स्वयंसेवक' न बन गया है ! खादीकी सफेद टोपी, कुरता और पाजामा पहनकर मूँछोंपर ताव देता हुआ वह बड़ी शानके साथ बाबाकी पानीवाली थैली कन्धेपर लटकाकर रोज चलता है।

'क्या है रामऔतार ?'

बोला : पासके खड़ीत गाँवके लच्छी पण्डित आये हैं बाबाके पास। पाँच हजारका इनाम है इनपर ! इनके साथ इनके गिरोहका परभू भी आया है।

भीतर पहुँचा। देखा, बाबाकी मेजके सामने कुरता धोती टोपी पहने एक प्रौढ़ व्यक्ति बड़े नम्र भावसे बैठा बात कर रहा है। उसके परिवारकी स्त्रियाँ भी हैं। वह बता रहा है : यह मेरी माँ है, यह मेरी पत्नी है, यह मेरी बच्ची !

छोटीसी नन्हीं बच्ची—गोरी-गोरी, भोली-भोली, प्यारी-प्यारी !

अच्युतभाई कुरान शरीफ लिये बगलमें बैठे थे। मैं भी उधर ही जम गया और लगा बड़ी उत्सुकतासे लच्छीकी बातें सुनने।

'कैसे आ गये तुम यहाँ ?' बाबाने पूछा।

लच्छी बोला : 'बाबा, मैं बम्बईमें था। अखबारोंमें रोज पढ़ता था कि विनोबा बाबा आये हैं हमारे चम्बलके बेहड़ोंमें और वे गाँव-गाँव बागियोंको समझाते फिर रहे हैं कि तुमने अबतक बहुत गलत काम किये, यह ठीक नहीं। यह गलत रास्ता छोड़ दो। अपनी गलती कबूल करो, तो तुम्हारा अगला जनम तो सुधर जायगा, यह जनम बिगड़ा, सो बिगड़ा !'

बाबा : 'फिर क्या हुआ ?'

लच्छी : 'फिर मुझे भीतरसे ऐसी प्रेरणा हुई कि मैं चलूँ और बाबाके चरणोंमें गिरकर अपने कामोंके लिए पश्चात्ताप करूँ। इसीसे मैं चला आया।'

'रेलसे आये तुम ?'

'हाँ बाबा, रेलसे ही आया। पहले मैंने सोचा कि आपको तार कर दूँ, पर बादमें मेरा इरादा बदल गया। सोचा, शायद मेरा तार पुलिसके हाथ लग जाय और मैं आपके पास पहुँचनेके पहले ही पकड़ लिया जाऊँ। इसीसे मैंने तार नहीं किया। बीचमें मुझे एकाध दिन बुखार भी हो गया।'

'बम्बईमें तुम पकड़े नहीं गये ?'

'बम्बईमें लाखोंकी भीड़में किसीको पकड़ पाना कोई मामूली बात है बाबा ! एक दफा मेरे नामसे कोई दूसरा आदमी पकड़ा गया था, पर यहाँ लानेपर पता चला कि यह तो लच्छी है नहीं, कोई दूसरा है। तब उसे छोड़ दिया गया।'

'बम्बईमें तुम्हारा खर्च कैसे चलता था ?'

लच्छी मानो आसमानसे गिरा ! बोला : 'फिर बागगीरी काहेको की थी बाबा ?'

'बागगीरी' बाबा नहीं समझ पाये, तो मैंने बताया : बाबा, बागगीरीका मतलब है डकैती। ये लोग अपने-आपको बागी कहते हैं और अपने पेशेको—'बागगीरी !'

'कभी आया, चार-छह हजार रुपया ले गया, फिर चला गया बम्बई !'

× × ×

आज नगराके तीनों मुखियोंको हमने यहाँ बुलाया था। बाबाके पास तीनोंको ले गया। बाबाने तीनोंको मिल जानेके लिए समझाया और कहा कि अपनी-अपनी जमीनका छठा हिस्सा मुझे दे दो। देनेके नामपर तीनों बगलें झाँकने लगे। किसी तरह एक भाई बहुत थोड़ी जमीन देनेको तैयार हो गया। मैंने दानपत्रपर उसके हस्ताक्षर ले लिये, इस आशामें कि शायद आगे चलकर इस सत्वृक्षमें नयी कोपलें फूटें।

× × ×

सायंकालीन प्रार्थनाके समय बाबाका हृदय भरा हुआ था। बहुत थोड़ा बोले वे। कहने लगे : आज मेरा दिल परमेश्वरके पास पहुँच गया है। यहाँ जो कुछ चल रहा है, उसके पीछे ईश्वरकी इच्छा ही काम कर रही है। आज जो भाई आये, वे परमेश्वरके भेजे हुए ही आये हैं। हमारा कोई साथी भी उनके पास नहीं पहुँचा था। ईश्वरने प्रेरणा दी और वे यहाँ चले आये ! ढाई हजार सालसे हम अंगुलीमालकी कहानी सुनते आ रहे हैं। आजका युग कलयुग माना जाता है, पर कल्युगमें भी ऐसी कहानियाँ बन रही हैं, यह ईश्वरकी ही कृपा है !

आज तें हमाई नयीं ज़िन्दगी है रहीं है !

कदोरा
१९ मई '६०

'This is Mansingh-Roopa Gang. They have surrendered their hearts, not only their arms.' (यह है मानसिंह-रूपाका गिरोह। उन्होंने अपने हृदय भी समर्पित कर दिये हैं, केवल हथियार ही नहीं !)

रातके पौने चार बजे पत्रकारोंको दिया गया जनरल यदुनाथ सिंहका यह उत्तर हमारे चारों ओर गूँज उठा।

लुक्काके नेतृत्वमें रूपाके ११ साथियोंका यह गिरोह रातके गहन अन्धकारमें ही कनेरा आ गया था। बाबा उस समय ब्रह्मलोककी सैर कर रहे थे। सुबह जब वे जागे, तो ये सब भाई जाकर बाबाके चरणोंमें गिर पड़े। बाबाने उनसे सामूहिक रूपसे भी बातें कीं, एक-एक करके भी।

और इसमें लगी देरी।

इसलिए निश्चित समयसे कहीं ९० मिनट बाद हम लोग 'श्री रमा-रमण गोविन्द हरि' कहकर यात्रापर निकल सके।

× × ×

और कनेरासे कदोरातककी दस मीलकी यह यात्रा !

बाबा चल रहे हैं, हम लोग चल रहे हैं और बाबाके नये दोस्त—बागी भाई चल रहे हैं—नौ-नौ बन्दूकोंके साथ, कारतूसोंके साथ ! इनमें सात बन्दूकें थ्री नाट थ्री—३०३—की हैं, एक १२ बोरकी है और एक बन्दूक ऐसी है, जिसमें दूरबीन भी लगी है। हमारे साथ पुलिस चल रही है, खुफिया पुलिस चल रही है, कोहिली साहब चल रहे हैं, विश्वनाथ सिंह चल रहे हैं, क्विन्स साहब चल रहे हैं, जिला मजिस्ट्रेट टायटस साहब
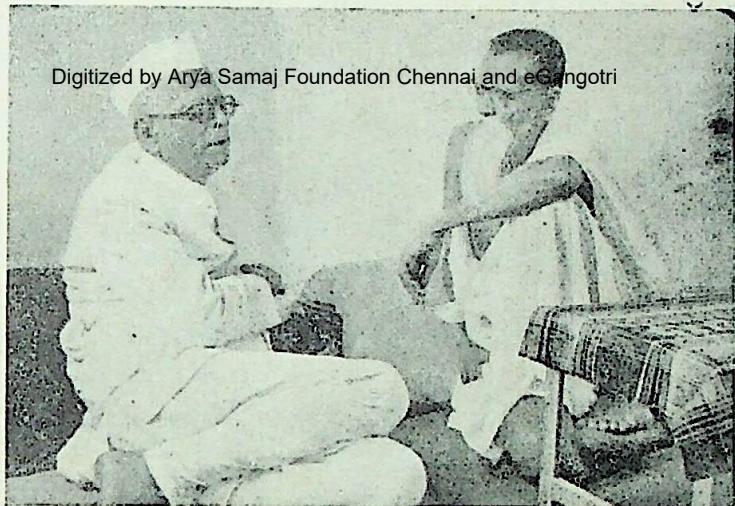
विनोबा मध्यप्रदेशके गवर्नर श्री पाटस्करसे बात करते हुए
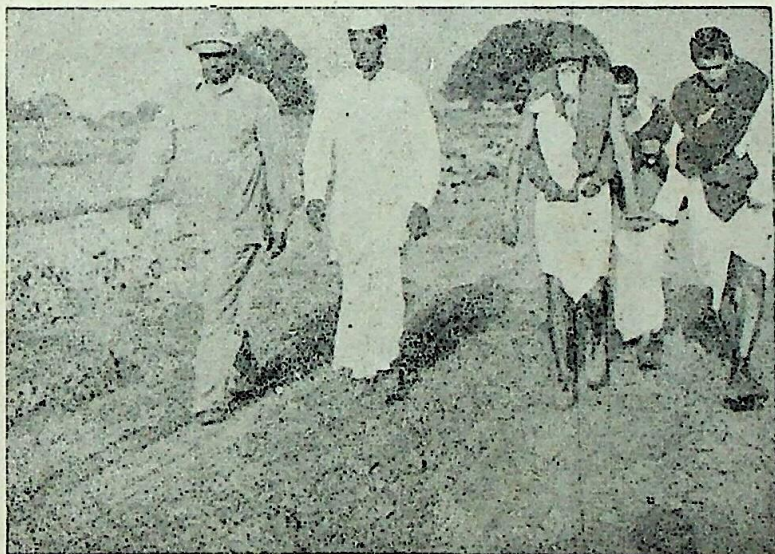
श्री यदुनाथ सिंह लच्छीसे बात करते हुए

मानसिंह–रूपा गिरोह : समर्पणके पहले
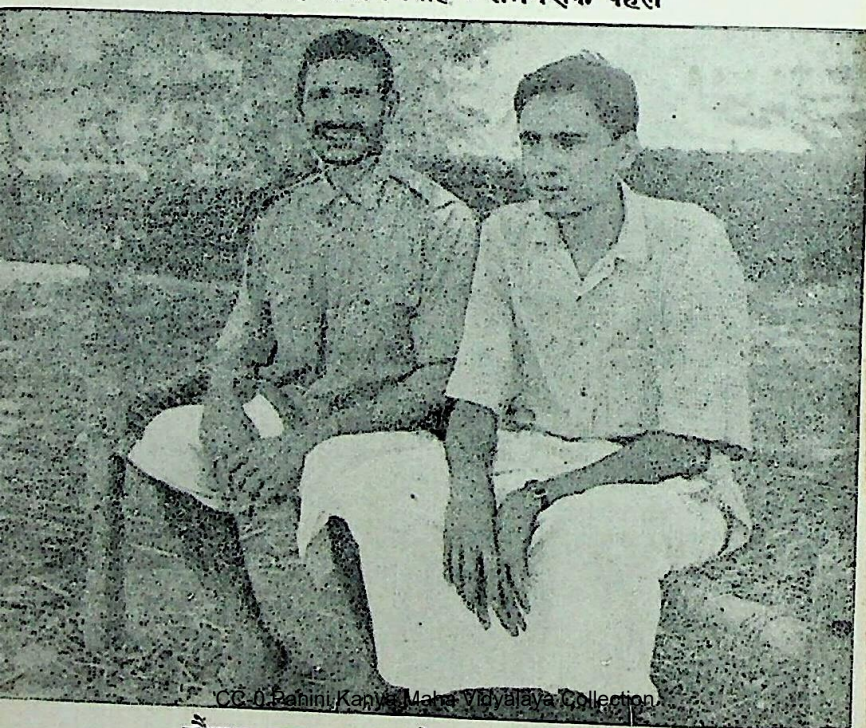
गौतम बजाज लुक्का से बात करते हुए

चल रहे हैं, पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट पाहूजा साहब चल रहे हैं ! और साथ ही साथ चल रहा है सरकारी अधिकारियों द्वारा बुलाया गया बैंड।

दर्शनार्थी भीड़का तो कहना ही क्या !

×　　　×　　　×

गौतम रातको ही लौट आया था जनरल साहब और इन बागियोंके साथ। कान्ताबहन उससे खोद-खोदकर पूछ रही थी दो-तीन दिनकी उसकी ऐतिहासिक यात्राका वर्णन।

मैं पास पहुँचा, तो मैंने कहा : गौतम, अपनी मौसीको ही सारा हाल-चाल बतायेगा कि मुझे भी ?

कान्ताबहनको उसने 'मौसी' बना रखा है !

बोला : आपको क्यों नहीं बताऊँगा ? आप पूछते चलिये, मैं बताता चलूँ !

और फिर मैंने उसे उलझा लिया सवालोंमें।

मैं : उस दिन तुम्हारे शान्ति-मिशनमें कौन-कौन गया था तुम्हारे साथ ?

गौतम : जनरल साहब, कदम, खेम और मैं।

मैं : कहाँपर भेंट हुई इन लोगोंसे ?

गौतम : खिपौना गाँवके पास। वहीं ठहरे हम लोग दो-तीन दिन। मानसिंह जिस नीमके नीचे बैठते थे, उसीके नीचे हम लोग भी बैठे !

मैं : कैसा स्वागत किया गया तुम्हारा ?

गौतम : अतिथि-सत्कार उन्होंने बहुत अच्छा किया। बड़े प्रेम और आदरसे हमें रखा। सब लोग चम्बल नहाने गये, वहाँ खूब ककड़ियाँ खिलायीं। भोजनका भी अच्छा इन्तजाम किया।

मैं : तुमपर विश्वास कैसे जमा ?

गौतम : शुरूमें तो हमपर उनका विश्वास नहीं था, पलभरको भी वे बन्दूक कन्धेपरसे नहीं उतारते थे। लालटेनकी रोशनीमें बार-बार चेहरे देखते थे। जब उन्होंने ठीकसे हमें पहचान लिया, तब हमपर उनका

विश्वास बैठा। फिर तो उनसे जमकर दोस्ती हो गयी। हृदय उँड़ेलकर रखने लगे हमारे सामने।

मैं : प्रेम और शान्तिके सन्देशका उनपर कैसा असर हुआ ?

गौतम : वे तो बाग-बाग थे बाबाका प्रेम-सन्देश सुनकर। सभी लोग कहते थे कि आजतक हमारे पास तरह-तरहके लोग आये। पर जो भी लोग आये, वे सब हमें जूते मारनेवाले ही आये, डंडेसे ही हमसे बात करनेवाले आये ! प्रेमकी बात तो कभी किसीने हमसे की ही नहीं ! जो आया, सतानेवाला ही आया ! जनरल साहब पहले आदमी हैं, जिन्होंने हमें आकर प्रेमसे समझाया कि तुम लोग गलत रास्तेपर चले गये हो, अब छोड़ो इसे और अपने कियेके लिए पश्चात्ताप करो। उनकी बात हमें जँच गयी और हमने तय कर लिया कि हम यह गलत रास्ता छोड़ देंगे। इसके पहले तो हमने कभी सोचा भी नहीं था कि जिन्दगीमें हमारी बन्दूक कभी हमारे कंधेसे नीचे उतरेगी भी !

मैं : तुमने इन लोगोंके छिपनेके स्थान देखे ? कहाँ और कैसे छिपते थे ये लोग ?

गौतम : वे सब इन्होंने हमें दिखाये। बेहड़ोंमें, गुफाओंमें ये कैसे रहते हैं, कैसा जीवन बिताते हैं, इसका इन्होंने पूरा परिचय दिया। इनके संदेशवाहक किस तरह ऊँचेपर बैठकर पुलिसकी गतिविधि बताते रहते हैं, कैसे पहरा देते हैं—इसका इन्होंने नाटक करके भी दिखाया। पुलिस और अपने दुश्मनोंसे ये कैसे लोहा लेते हैं, कैसे मोरचाबन्दी करते हैं और छोटी जगहसे भी कैसे पार हो जाते हैं, इसका भी इन्होंने रिहर्सल करके दिखाया। यह सब देखनेके लिए हम ऊँटपर चढ़कर और पैदल चलकर गये थे।

मैं : जनरल साहब जब पहली बार इन लोगोंसे मिले, तबका हाल-चाल इन लोगोंने बताया ?

गौतम : हाँ, तभीसे तो ये बाबाके भक्त बने हैं। उस दफा जनरल

साह्वसे उन्होंने किस तरह बात की, उसका भी उन्होंने नाटक करके बताया। मैंने उसका भी फोटो लिया है।

मैं : ये लोग बागी क्यों और कैसे बने, इस बारेमें तुमने इनसे पूछा ?

गौतम : हाँ, पूछा। इनमेंसे ज्यादातर क्या, प्रायः सभी लोग बड़े स्वाभिमानी हैं। इन्हें किसीकी बात बर्दाश्त नहीं होती। प्रेमसे इनसे चाहे जो कुछ करा लीजिये, पर डाँट-डपटकर या रोब दिखाकर कोई कुछ कराना चाहे, तो ये कभी न करेंगे। आपसी दुश्मनी और पुलिसका दुर्व्यवहार इनमेंसे अधिकांश लोगोंके बागी बननेका कारण है। अभी भी कह रहे थे कि समर्पण तो हम करेंगे ही, पर पुलिस हमारी बेइज्जती न करे, इस बातका आप लोग जरा खयाल रखियेगा।

मैं : अहिंसाकी बात अभी पूरी तरह इनके गले उतर नहीं पायी क्या ?

गौतम : बहुत कुछ उतर गयी है। उसीका यह नतीजा है कि जब दो-तीन बागियोंके रिश्तेदारोंने कहा कि अगर पुलिसने या जेलवालोंने हमारे भाइयोंकी बेइजती की, तो हम बागी बन जायेंगे और बेइजती करनेवालोंको गोलीसे उड़ा देंगे, तब एक बागीने अपने भाईको डाँटकर कहा : 'तुम ऐसा कहते हो, तो तुम मेरे भाई नहीं, दुश्मन हो !'

मैं : अपने नेताका ये लोग कैसा सम्मान करते हैं ?

गौतम : बहुत ज्यादा। नेताकी बात इनके लिए ब्रह्मवाक्य है। नेता जो कह दे, सो करनेके लिए ये लोग तैयार रहते हैं। नेताका अपमान इनकी बर्दाश्तके बाहर है। उसके लिए ये जान लेने-देनेपर उतारू हो जाते हैं !

मैं : बन्दूक चलानेका इन्हें अच्छा अभ्यास होगा ?

गौतम : अच्छा ही नहीं, बहुत अच्छा। पक्के निशानेबाज हैं। कुछ लोग तो शब्दवेधी हैं। कहीं आवाज सुनते हैं, तो ऐसा निशाना मारते हैं कि एकदम सटीक बैठता है। मजाल क्या, जो कभी निशाना चूक जाय ! बन्दूकके तरह-तरहके उपयोग इन्होंने हमें करके दिखाये।

मैं : इनमें तो कुछ लोग गलेमें माला भी डाले हैं, बन्दूक भी। यह केर-बेरका कैसा संग है ?

गौतम : इनमें प्रायः सभी धर्मालु हैं। कई बागी तो जपकी निश्चित संख्या पूरी किये बिना खाना नहीं खाते। रोज रामायण, गीता, भागवत पढ़ते हैं। उसपर बड़ी श्रद्धा रखते हैं। दिलके भी उदार हैं। जो पैसा लूटकर लाते हैं, उसमेंसे गरीबोंकी खुले दिलसे मदद करते हैं।

मैं : नैतिक आचरणका कोई 'कोड' भी है इनका ?

गौतम : हाँ। ये शराब नहीं पीते, जुआ नहीं खेलते, मांस नहीं खाते। गरीबोंको नहीं लूटते। मालदारोंपर ही डाका डालते हैं। स्त्रियोंकी बेइज्जती नहीं करते।

× × ×

कान्ताबहनका सहज नारी-हृदय !

वह यह जाननेको आकुल हो उठी कि ये लोग रात-दिन बेहड़ोंमें मारे-मारे फिरते हैं, इनके दिलोंमें अपने बाल-बच्चोंके लिए कोई ममता रहती है या नहीं ? बरसों ये घर नहीं जाते, तो क्या इनके मनमें यह भाव नहीं उठता कि कभी घर जाकर बच्चोंके साथ खेलें-कूदें, उन्हें प्यार करें ?

'पूछूँ यह सवाल ?'

मैंने कहा : पूछनेमें क्या हर्ज है !

हम लोग लुक्काके आसपास घिर गये। कान्ताने पूछा : भाई, आप लोग बरसों अपने घर और परिवारसे दूर रहते हैं, आपका जी नहीं होता कि बाल-बच्चोंसे मिलें, उन्हें प्यार करें, उन्हें गोदीमें खिलायें ?

लुक्काने कहा : बहन, बन-बेहड़ोंमें बरसों रहते-रहते हम लोगों का जी कुछ कड़ा हो जाता है। बच्चोंकी ममता हमें ज्यादा नहीं सताती। उनसे बार-बार मिलनेकी इच्छा कम होती है। साल-दो सालमें कभी मुलाकात हो पाती है !

बात आगे चलती, पर भीड़ उत्तरोत्तर बढ़ती चल रही है। लुक्काको

देखनेकी उत्सुकता लोगोंकी सबसे ज्यादा है। मीलोंसे लोग दौड़ते चले आ रहे हैं।

× × ×

कन्धोंपर बन्दूक लटकाये ये बागी मुक्तहस्त हो हमारे साथ घूम रहे हैं, यह दृश्य लोगोंके लिए तो अनोखा है ही; पुलिसके लिए भी अभूतपूर्व है। जिन्दगीमें शायद कभी उसने कल्पना भी न की होगी कि जिन इश्तहारी डाकुओंसे हमारी मुलाकात गोलियोंसे ही होती या हो सकती है, उनसे हम आज हाथ मिलायेंगे !

आश्चर्य ! महान् आश्चर्य !!

देखनेवाले चकित हैं, हैरान हैं ! यह हो क्या रहा है ?

और तभी मैंने विद्यारामको कहते सुना : **'आज तें हमाई नई जिन्दगी है रही है !'** ('आजसे हमारा नया जीवन हो रहा है !')

सचमुच !

× × ×

कदोरा पहुँचते-पहुँचते काफी दिन चढ़ आया।

पड़ावपर पहुँचते ही कोहिली साहब बाबाके पास पहुँचे और बड़ी नम्रतापूर्वक बोले : बाबा, मैं आपको 'कांग्रेचुलेट' करता हूँ ! बधाई देता हूँ !

बाबा मुसकरा दिये !

अधिकारियोंने बागियोंसे हाथ मिलाये।

आज ही इस बातका पता चला कि नगरामें जीपसे जो दो बन्दूकधारी बागी बाबासे मिलने आये थे, वे इन्हींमेंसे थे—भगवानसिंह और तेजसिंह।

× × ×

प्रवेश-प्रवचन बहुत छोटा-सा था। बाबा बोले :

कनेरासे रवाना होनेमें हमें देर लगी। ये जो हमारे ग्यारह बागी भाई आये हैं, उनसे जरा दिल खोलकर बातें करनी थीं। उन्होंने हमसे कहा कि हमें 'डाकू' न कहिये, 'बागी' कहिये। मैंने कहा, ठीक है, तुम भी

बागी, हम भी बागी। मैं आपका दोस्त हूँ। बगावत बुरी चीज नहीं है। मैं भी बगावतका काम करता हूँ। पर मेरी बगावत तुमसे जरा भिन्न है। समाजसे छुआछूत मिटाना, बे-जमीनोंको जमीन दिलाना, ऊँच-नीच-का भेद मिटानेको अमीरी और गरीबीको खत्म करना—यह है मेरी बगावत। बगावत आत्माकी ताकतके साथ होनी चाहिए। ऐसा होनेपर समाजमें न तो डाकू रहेंगे, न पुलिस। सारे समाजमें प्रेम और शान्ति फैलेगी। स्वस्थ समाज बनेगा। हमें ऐसा ही निडर समाज बनाना होगा। वह शस्त्रोंसे नहीं बनेगा। हथियारसे मसले हल नहीं होंगे। ये भाई हमारे पास विश्वास रखकर ही आये हैं। विश्वास ही एक ऐसी चीज है, जिससे दुश्मन भी दोस्त बन जाता है। विज्ञानके इस युगमें विश्वास, प्रेम, करुणा और निर्भयतासे ही मसले हल होंगे।

पुलिसवाले हमारे पास आये थे। उन्होंने कहा कि हम आपसे बोध लेने आये हैं। ठीक ही तो है। जिनको हम तनख्वाह देते हैं, उनको क्या हम बोध नहीं देंगे? हमने उनके बीच भी भाषण किया। उनसे भी हमने कहा कि अब बन्दूक, तलवारका जमाना गया।

× × ×

खुली धूपमें ही भोजनकी व्यवस्था थी। हमारी पंगतमें बैठकर जीमनेका बागी भाइयोंके जीवनमें यह पहला अवसर था। कुछ लोग कतरा भी रहे थे—'साधुका अन्न कैसे खायें?' 'यह तो जनता-जनार्दनकी भिक्षा है', यह समझानेपर किसी तरह वे राजी हुए। बोले: इस तरह पत्तलोंपर बैठकर खानेका मौका न जाने कितने सालों बाद मिला है हमें। बेहड़ोंमें तो हम हाथपर रोटी रखकर ही पा लेते रहे हैं!

हमारा रूखा-सूखा भोजन उन्हें रुचा तो नहीं, पर उन्होंने उसे पा लिया। लुक्का मुझसे कह रहा था: 'मुझे तो घी चाहिए खूब, और कुछ रहे, चाहे न रहे!' पर यहाँ हमें घी कहाँ मयस्सर!

बहनोंने पूछ दिया बागियोंसे: 'बेहड़की आजादी छोड़कर आपने यह आत्मसमर्पण और फिर जेलकी जिन्दगी क्यों कबूल कर ली?'

बोले : 'तावमें आकर गलतीसे हम लोग इस रास्तेपर चल तो गये बहन, लेकिन जबसे बाबाका सन्देश हमारे कानोंमें पड़ा, तबसे हमें लगने लगा कि यह रास्ता ठीक नहीं। लोगोंको मारना, सताना, लूटना अच्छी बात नहीं है। हर समय हमसे दूसरोंको खतरा रहता है, हमको दूसरोंसे खतरा रहता है। न चैनकी नींद है, न चैनकी रोटी। भला यह भी कोई जिन्दगी है ? हमने सोचा कि बाबाके चलते हमें अपना जीवन सुधारनेका यह मौका मिला है, तो क्यों न हम अपनी गलती कबूल करके अपने पापोंका फल भोग डालें ?'

× × ×

रोज ५॥ बजेसे सायंकालीन सभा होती है, पर आज १५ मिनट पहले ही उसका आयोजन किया गया। दोपहरसे ही दूर-दूरसे लोग आकर धूपमें बुरी तरह तप रहे हैं। वे सब जल्दी ही अपने घर लौट जा सकें, इसलिए कुछ जल्दी ही सभा करनेकी बात सोची गयी।

हमारे तम्बुओंके पूर्वमें ऊँचे मंचपर बाबाका आसन लगाया गया है। सामनेके खेतोंमें २॥-३ हजारकी भीड़ इकट्ठी है। हम लोग मंचके नीचे बैठे हैं। बागी भाई अपनी बन्दूकों और कारतूसों आदिके साथ हमारे बगलमें।

सभामें शुरूमें कुछ शोर मच रहा था, बहुतसे लोग खड़े थे। उन्हें बैठानेके बाद बाबाका प्रवचन शुरू हुआ। बाबा बोले :

आप जानते हैं कि नौ सालसे हम पैदल यात्रा कर रहे हैं। अब आपके प्रदेशमें आये हैं। यहाँ परमेश्वरकी कृपासे एक बहुत बड़ा काम हो रहा है। यहाँपर मेरे जैसे ये इन्सान, जिन्हें लोग 'डाकू' कहते हैं, पर जिनके भीतर भगवान्की ज्योति जल रही है, अपने किये कर्मोंका पश्चात्ताप कर रहे हैं। वे प्यारसे अपने शस्त्र सुपुर्द कर रहे हैं। यह बहुत बड़ी बात है।

बरसोंसे यहाँ पुलिस तैनात है और अपने ढंगसे 'जैसेको तैसा' न्यायसे मसले हल करना चाहती है। एक तरफसे डाकू, दूसरी तरफसे पुलिस।

जनता बीचमें पिस रही है। इस तरह मसले हल नहीं हो सकते। वे तो प्रेमसे ही हल होंगे।।

हमारे ये प्यारे भाई गुमराह हो गये। राह भूल गये, भटक गये। सुबहका भूला शामको लौट आये, तो 'भूला' नहीं कहा जाता। सब लोग परमेश्वरकी सन्तान हैं। अभी कल बम्बईसे एक भाई आया। उसपर ५०००) इनाम था। उसकी छोटी-सी खूबसूरत बच्चीको देखकर हमारे दिलमें प्यार पैदा हुआ। उस भाईका दिल भी परमेश्वरकी कृपासे नरम हुआ। कभी न कभी मनुष्यके दिलमें पलट होता ही है।

भगवान्ने मनुष्यको तीन अनमोल देनें दी हैं : एक देन है—बोलनेकी। जानवरोंको यह देन नहीं। प्रेमसे हम सत्य बोलें। रामजीका नाम लें। दूसरी देन है—हाथ! हाथ बन्दरको भी है, पर वह तोड़ना और उखाड़ना ही जानता है, बोना नहीं। हम हाथसे तरह-तरहके सेवाके काम करें। 'हाथ दिये कर दान रे!' दुखियोंको बचानेके लिए, दूसरोंकी मददके लिए ये हाथ हैं। भगवान्की तीसरी और सबसे बड़ी देन है—हमदर्द दिल। सदाके लिए कोई निष्ठुर नहीं हो सकता। भगवान्ने सख्त दिल किसीको नहीं दिया। हम सबके साथ हमदर्दी करें।

आप लोग गाँव-गाँवमें बाबाका यह सन्देश पहुँचा दीजिये कि हमारे गुमराह भाई बेखटके बाबाके पास चले आयें, और अपने-आपको भगवान्को सौंप दें। पुलिस उन्हें कोई तकलीफ नहीं देगी। इन भाइयोंके बाल-बच्चोंकी मदद करना आपका काम है। बेचारे बच्चोंका क्या कसूर?

× × ×

प्रवचनके बाद तीन मिनट मौन प्रार्थना।
उसके बाद दो मिनट रामधुन!

राजा राम राम राम!
सीता राम राम राम!!

× × ×
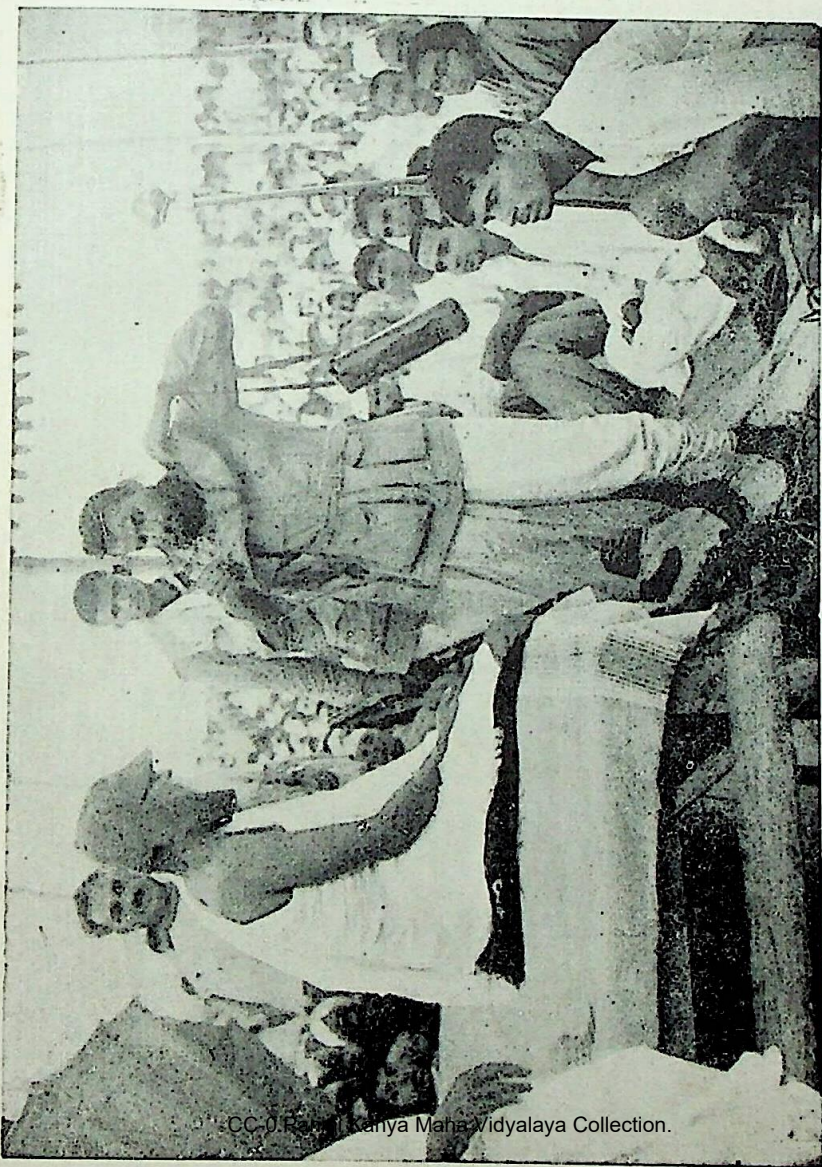
बागी विद्याराम आत्म-समर्पण करते हुए
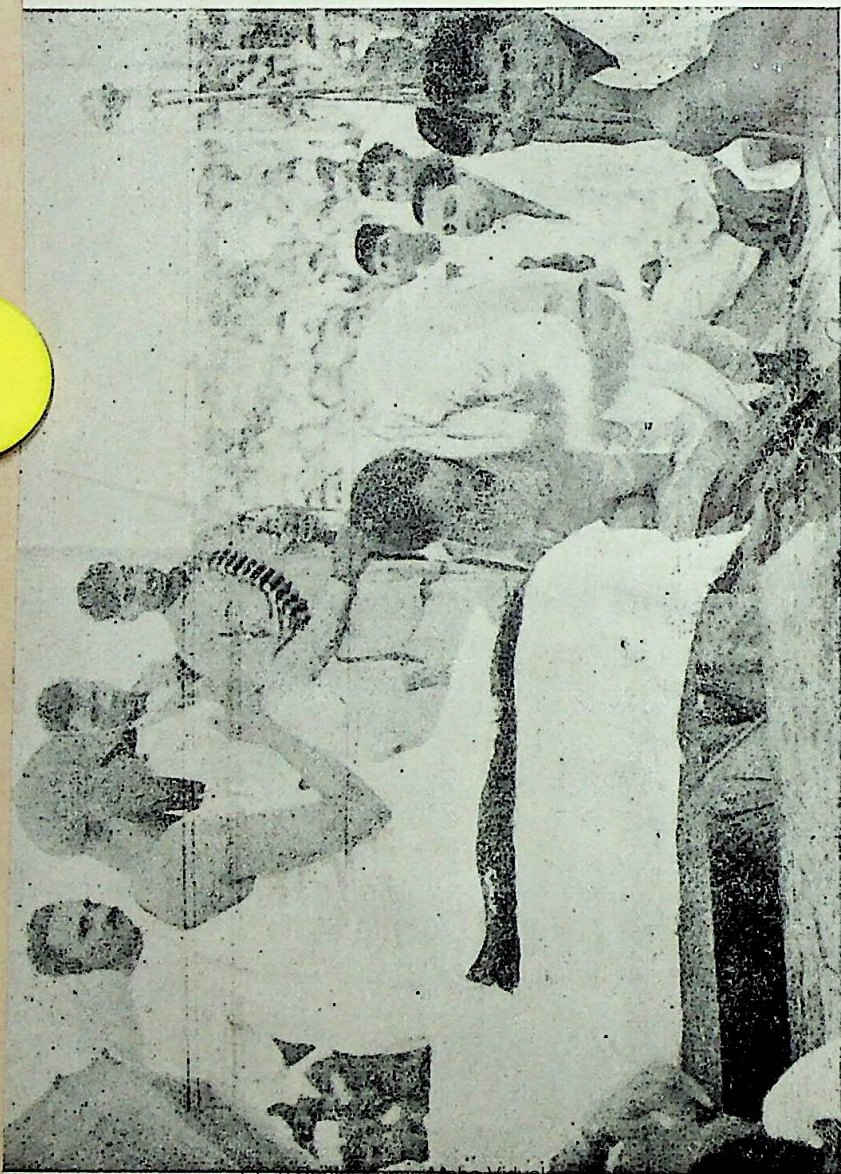
अहिंसा के चरणों में हिंसा का आत्म-समर्पण

"राजाराम राम राम !" की धुनमें सारा वातावरण राममय हो उठा ।

तभी जनरल यदुनाथ सिंह ग्यारहों बागी भाइयोंको कतारसे लेकर बाबाके चरणोंकी ओर बढ़े और उन्होंने इशारा किया लुक्काको ।

लुक्का आगे बढ़ा । अपनी बन्दूक उतारकर उसने बाबाके चरणोंके नीचे रख दी और उनके चरण छूकर कहा : बाबा, हमसे बहुत गलती हुई ! आइन्दा ऐसा गलत काम न करेंगे !

तेजसिंह, भगवानसिंह, कन्हई, विद्याराम, भूपसिंह, दुर्जन, डरेलाल, मटरे, जंगजीत, रामसनेही—सब एकके बाद एक आते गये, बन्दूक, कारतूस उतारकर रखते गये और बाबाका चरण-स्पर्श कर कहते गये कि हम आइन्दा कोई गलत काम न करेंगे !

शस्त्र-समर्पणकी इस प्रक्रियाको सारी जनता, सारे अधिकारी, सारी पुलिस मन्त्रमुग्ध-सी होकर देख रही थी । सभामें ऐसी शान्ति कि सूई भी गिरे तो खटके !

केवल केमरोंकी 'क्लिक'की ही आवाज इस निस्तब्धताको भंग करती थी ! फिल्मोंकी रील इस अभूतपूर्व दृश्यको कैद करती जा रही थी, दर्शकोंकी आँखें तो एक ही बात कह रही थीं :

ख्वाब था जो कुछ कि देखा
जो सुना अफसाना था !

× × ×

बाबा मंचसे उठकर निवासकी ओर बढ़े, तभी जनरल साहबके इशारेसे बागियोंने मंचपर खड़े होकर दर्शनार्थी भीड़को हाथ जोड़े और अपने-अपने नाम बताकर उसकी उत्सुकता शान्त की । कुछ पत्रकारोंने उनसे हाथ भी मिलाये ।

पुलिस सभी बन्दूकों और कारतूसोंको बगलके तम्बूमें ले जाकर नोट करने लगी कि कितने और कौन-कौनसे शस्त्रोंका समर्पण हुआ है ।

कुछ देर उस तम्बूके भीतर खड़े होकर मैं भी यह तमाशा देखता रहा।

दूरबीनवाली बन्दूक सबके लिए खिलौना थी, बड़ी उत्सुकतासे सभी देख रहे थे उसकी ओर। शायद १७ हजारके करीब है दाम उसका !

× × ×

डाकू तो जीवनमें बहुत देखे हैं, बन्दूकें भी देखी हैं, पर बन्दूकधारी डाकू—बीस-बीस हजार रुपयेके इश्तहारी डाकू—इस तरह बन्दूकोंका त्याग करके अपना गलत जीवन छोड़नेकी प्रतिज्ञा करें, ऐसा तो आज ही देखा ! पलभरके लिए भी जिन बन्दूकोंको ये लोग अपने कन्धेसे नहीं उतारते थे, उन्हें वे सदाके लिए खोलकर बाबाके चरणोंपर मुसकराते हुए अर्पण कर रहे थे, ऐसा अहिंसाका जादू तो आज ही देखा ! यों तो उस दिन नगरामें पातीरामके बन्दूक समर्पण करनेपर भी एक अद्भुत भावनासे अभिभूत हो उठा था, पर इस दृश्यका तो असर ही दूसरा था—

गिरा अनयन, नयन बिनु बानी !

लगा कि सचमुच सही है इनका यह कहना :

'आज तें हमाई नयी जिन्दगी है रही है !'

क़सूर बन्दूकका, सजा आदमीको !

सुरपुरा
२० मई '६०

कदोरासे सुरपुराके रास्तेके बीच पड़ा परतापपुरा, बागी विद्यारामका गाँव। वहाँ चल रहा है भारत-सेवक-समाजका शिविर।

सञ्चालकोंके अनुरोधपर बाबा वहाँ थोड़ी देर रुक गये और शिविरार्थियोंसे बोले कि भारत-सेवक-समाजको हम अपना ही समाज मानते हैं। हमारी ही भाँति वह भी इन्सानकी सेवा इन्सानके नाते करता है। पर उसे इतना ध्यान रखना चाहिए कि पहले कौन सेवा की जाय।

× × ×

प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने एक गेरुआ वस्त्रधारीको सामने देखकर इस बातपर जोर दिया कि साधुओंको तमोगुणी जीवन त्यागकर समाज और देशकी बुराइयाँ मिटानेमें मदद करनी चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे कश्मीरसे कन्याकुमारीतक सच्चा मानव-धर्म फैलायें।

दोष लाठी या बन्दूकका है, पर सजा मिलती है आदमीको, यह बताते हुए बाबाने कहा :

यह सैनिकोंका क्षेत्र है। इसलिए जब किसीको चिढ़ आती है, तो गोली चल जाती है और आपसमें लड़नेवाले मर जाते हैं या घायल होते हैं। फिर कहा जाता है कि अमुक आदमीने कत्ल किया। मगर सच तो यह है कि बन्दूकने कत्ल किया। मेरे जैसे शख्सको गुस्सा आये तो वह क्या करेगा ? हाथमें लाठीतक नहीं है। ज्यादा हुआ तो जोरसे बोल देगा। मगर जिसके हाथमें लाठी है, वह गुस्सेमें दूसरेका सिर तोड़ देगा और बन्दूक है, तो दूसरेकी जान ले डालेगा। गुस्सा तीनोंको है, मगर एकके गुस्सेसे किसीको नुकसान नहीं पहुँचा, दूसरेसे सामनेवाला व्यक्ति

घायल हुआ और तीसरेने प्राण ही ले लिया। इसलिए दोष असलमें लाठी और बन्दूकका है, मगर सजा आदमीको मिलती है।

यहाँपर बागियोंकी ऐसी जमात है, जिसके हाथमें तो राइफल है, पर गलेमें माला है। आप कहेंगे कि ऐसा कैसा भगवान्? पर भगवान् तो पानी जैसा है, वह सबकी प्यास बुझाता है— चाहे गाय पानी पीये, चाहे शेर। इन बागियोंके गलेमें भगवान् माला बनकर रहता है। ऐसा न होता, तो वे यहाँ आते कैसे?

× × ×

आज रामदयाल, बदनसिंह और करणसिंह—इन तीन बागियोंने बाबाके चरणोंमें आत्मसमर्पण किया।

दर्शनार्थियोंकी भीड़ टूटी पड़ रही है। बाबासे भी ज्यादा बागियोंको देखनेके लिए लोग उत्सुक हैं। इसलिए बाबाके प्रवचनके बाद बागियोंको मंचपर खड़ा करना पड़ता है। सब लोग अपना नाम, गाँव बताते जाते हैं और जनताको प्रणाम करते जाते हैं!

× × ×

दोपहरमें पानी लेने गया रहँटपर। रहँटवालेने तभी बैल खोल लिये और चल दिया। पानी आना रुक गया। केवल मेरा लोटा भर पाया। अच्युतभाईका लोटा भी ले गया था। वह खाली रह गया।

मैं चलने लगा, तो कुछ बच्चोंने देखा कि एक लोटा खाली रहा जाता है। सहानुभूतिमें बोले : आप रुकिये, हम रहँट चलाते हैं।

अब वे रह गये बैलकी जगह। पर कुआँ गहरा, बालटियोंकी पाँत लम्बी और मशीन भारी। न खिंच सका वह जुँआ उनसे।

तभी एक लड़केने मशीनके पास आकर रहँटकी लोहेकी अटक ही खींच दी, जिससे बालटियोंकी पूरी माला ही उलटी घूम गयी और बैलों-वाला जुँआ बड़ी तेजीसे उल्टा घूमने लगा।

जुँएकी चोट खाकर एक लड़का औंधा जा गिरा एक खाईपर। खाईपर थी काँटोंकी बाड़ और कँटीली बबूलकी शाखा।

मैं दौड़ा उसे बचाने। चारों ओर काँटोंसे बुरी तरह विंध गया था बेचारा। लोहूलुहान भी हो रहा था। अकेले निकालना मुश्किल था। तभी एक और भाई आ गये। हम दोनोंने किसी तरह उसे निकाल पाया। हाथ और पैरमें कई जगह लोहूलुहान हो गया था वह !

इधर मैं उस लड़केको निकाल रहा था, उधर वह जुँआ पूरी तेजीसे घूम रहा था। वह बार-बार आकर टकराने लगा मेरे दाहिने पैरमें। हर बार आता, तो घाव कर जाता। मेरा पैर भी लोहूलुहान हो गया। धोकर देखा, तो काफी गहरा गड्ढा-सा हो गया था नसपर।

रहँटवालेने यह सब देखा, तो लौट पड़ा और लड़कोंको डाँटता-फटकारता हुआ 'अटक' ठीक करके चला गया। लड़के भगे जान बचाकर।

× × ×

घायल पैर लेकर लौटा तम्बूमें। साथियोंको चिन्ता हुई मरहम-पट्टी-की, मगर वहाँ क्या रखा था ? 'अभावे शालिचूर्णम्' थोड़ा-सा सिन्दूर मँगाकर उसपर लगाया और पट्टी बाँध दी, पर रक्तका बहना बहुत देरतक जारी रहा।

× × ×

बागियोंको देखनेके लिए जनताका जो हुजूम है, उसके मारे बागियों-की तो है ही, हम लोगोंकी भी नाकमें दम है। वह जो सामने 'महाशयजी' हैं दाढ़ीवाले, उन्हें देखकर किसीने कह दिया : 'वह देखो, एक बागी वह बैठा है।' फिर क्या था ? चारों ओरसे तम्बूके दरवाजे घिर गये। साँसतक लेनेमें कठिनाई होने लगी।

लुक्का और उसके साथी दूसरे तम्बूमें थे। बुरी तरह लोग घेरे थे उन्हें। तीसरे पहर वह आकर बोला : 'इससे तो हम जेल भेज दिये जाते, तो अच्छा था ! पलभर भी सोनेको नहीं मिल पाता।'

उसे बगलमें एक तरफ लेटा दिया और भीड़को भगा दिया, तब कहीं उसे आँख मूँदनेका मौका मिल पाया।

कह दिया उसने : मेरी जरूरत पड़े, तभी जगाना; वर्ना नहीं।

× × ×

आज दिनमें बाबाका बागियोंके साथ फोटो खींचा गया। सायं-कालीन प्रवचनमें उन्होंने कहा :

अब ये लोग हमारी जमातमें, साधु-समाजमें आ गये। हम और ये एक हो गये। हमारा समाज एक हो गया। हमें भी आनन्द हुआ, इन्हें भी।

आज एक अम्मा आयी थी। वह अपने दुःखकी कहानी हमें सुनाने लगी। उसके दो लड़के फरार हैं। वह चाहती है कि उन्हें मेरे सुपुर्द कर दे। सच्ची राहपर वह उन्हें लौटाना चाहती है। पुलिसवाले कहते हैं कि यह समस्या डण्डेसे ही सुलझ सकती है। लेकिन बाबा तो डण्डा रखता नहीं। फिर यह क्या है? यह हवा कैसे बदल रही है? यह प्रेमकी ताकत है। प्रेमसे ही सारा मामला सुलझेगा।

लोग हजारोंकी तादादमें यहाँ आ रहे हैं। क्यों? अपने छिपे भाइयों-को देखने। इनके कोई दो नाकें या रावणकी तरह १० सिर हैं? हमारी ही तरह ये भी मामूली इन्सान हैं। **इन्सान जब अपने-आपको भूल जाता है, तो ऐसे बदतर काम कर सकता है कि जानवरसे भी नीचे जा सकता है। ऊँचा चढ़े, तो इतना ऊँचा चढ़ सकता है, जितना देवता भी नहीं चढ़ सकता।** नर-देह ऐसी देह है, जिससे मनुष्य परमेश्वरको पा सकता है। ये बागी भाई क्यों न साधु बनें? जोरदार इंजन है, पटरी बदलने-भरकी देर है!

बाबा, कछू कहे जाउ !

उदोतपुरा
२१ मई '६०

उदोतपुरा है सड़कके उस पार, हमारे तम्बू लगे हैं इस पार। नीमोंके लम्बे बगीचेमें तम्बुओंकी कतार लगी है।

उदोतपुरामें मानसिंहकी ससुराल है। उसकी चर्चा करते हुए प्रवेश-प्रवचनमें बाबा बोले :

कश्मीरमें जब हम थे, तब यहाँके लोगोंका बुलावा आया। यहाँके नेता और डाकू कहलानेवाले भाई दोनोंकी ही ओरसे। हमने सोचा : देखें, परमेश्वरकी इच्छा होगी, तो कुछ काम होगा। भगवान्का नाम लेकर हमने इस क्षेत्रमें प्रवेश किया है।

हमसे कहा गया कि इस गाँवमें भाई मानसिंहके घरवाले हैं। मानसिंह तो मर गये, हम भी कभी जानेवाले हैं। पर जो यहाँ प्यार हासिल करके गया, वही इन्सानकी जिन्दगी जिया। एक दिन तो सबको ही मरना है, पर जिसके उपकारको दुनिया याद करे, वही इन्सानकी जिन्दगी जिया। नाते-रिश्तेका कोई महत्त्व नहीं।

यहाँ भाई-भाई आपसमें लड़ते हैं। गाँव-गाँवमें दो टोलियाँ बन जाती हैं। एक डाकुओंकी ओर मिल जाती है, दूसरी पुलिसकी ओर। किसीको शान्ति नहीं मिलती। कहते हैं, यह तो क्षत्रिय-धर्म है। मगर जानते भी हो कि क्या है क्षत्रियका धर्म? बन्दूक रखनेसे ही क्या कोई क्षत्रिय हो जाता है? तोप देखी, तो भाग गये। यानी बलवान् शस्त्रके सामने भागना और कमजोर शस्त्रवालेपर हमला करना—यह कोई बहादुरी है? बहादुर वह है, जो आत्माके बलसे लड़ता है, जो बेधड़क होकर

छातीपर वार झेलता है। हथियारसे दबाकर पैसा वसूल करनेमें बहादुरी नहीं है।

आज एक भाई हमारे पास आकर रो रहा था। उसे बागियोंने धमकी दी है कि दो हजार रुपये दो, नहीं तो मार डालेंगे। वह कहता है कि 'पैसे तो हैं नहीं, कहाँसे दूँ ?' मैंने कहा : 'पैसा पासमें हो, तब भी डरकर पैसा देना ठीक नहीं। एक दिन मरना तो है ही।'

एक बागी बम्बईसे आया है। मैंने उससे पूछा : 'वहाँ तुम्हारा खर्च कैसे चलता था ?' इस प्रश्नपर उसने मुझे मूरख समझा होगा। बोला : "आखिर डाका किसलिए डालते थे ? एक दिन कमाकर लाते थे और तीन महीने बैठकर खाते थे।" धिक्कार है ऐसी जिन्दगीको !

बहादुर वह है, जो सबको प्यार करता है। हमें कोई डराकर देखे। रातमें या दिनमें कभी भी, कहीं भी हमें अकेले बुलाकर पिस्तौल दिखाओ और फिर देखो कि बाबा डरता है या नहीं। डरानेवाला मेरा ही तो रूप है। फिर कौन किसे डरायेगा ? बचपनमें हम अपनी छायासे डरा करते थे। हम छोटे थे और छाया बहुत लम्बी। हम मुँह हिलाते, तो वह भी मुँह हिलाती थी। हम उँगली हिलाते, तो वह भी उँगली हिलाती थी और हम डरते थे। माँने समझाया कि "तू उससे डरता क्यों है ? वह तो तेरी हुक्मबरदार है। तू बैठेगा, तो वह भी बैठ जायगी। तू खड़ा होगा, तो वह भी खड़ी हो जायगी।" दुनिया जो है, वह हमारी ही तो छाया है। हमारे दिलमें अगर द्वेष है, तो बाहर दुश्मन हैं और दिलमें प्यार भरा है, तो बाहर सब दोस्त ही दोस्त हैं।

आज कुछ बहनें हमारे पास आयीं। उनमेंसे दो-एक बहनोंके पति और लड़कोंको डाकुओंने मार डाला था। और दूसरी बहनोंके भाई और लड़कोंको पुलिसने। अब सजा किसको हुई ? बच्चोंको और पत्नी-को। बाल-बच्चे पैदा भी करना और उन्हें सब तरहसे तकलीफ हो, ऐसा आचरण भी करना, यह भी कोई इन्सानकी जिन्दगी है ?

× × ×

साथियोंने भूताजीसे कहा कि मेरे पैरमें चोट है, मरहम-पट्टी करा दें, तो अच्छा । वे जीपमें बैठाकर ले गये भिण्ड और अपने चिरंजीवको भेज दिया मेरे साथ अस्पताल। उन्होंने पट्टी बँधवा दी, एक इंजेक्शन भी लगवा दिया ।

लौटकर जीपसे उतर ही रहा था कि देखा कि खुली धूपमें हरा टोपा लगाये बाबा जा रहे हैं गाँवकी ओर। दौड़कर साथ हो लिया । दो-चार अन्तेवासी थे साथमें । और लोग पीछे ही रोक दिये गये ।

हम लोग पहुँचे मानसिंहकी ससुरालमें । उनकी ६० वर्षीया जर्जर पत्नी रुक्मिणीदेवी और उनकी बेटी आदिने बाहर बैठकमें आकर बाबाको प्रणाम किया । फिर बाबा चल दिये भीतर ।

ओह, क्या करुण दृश्य था वह !

आँसू ! क्रन्दन !! सिसकी !!!

चारों ओर दीनता, दरिद्रता और दुर्भाग्यका भीषण हाहाकार !

बड़ी-बूढ़ी स्त्रियाँ, बच्चियाँ—सबकी सब रो रही थीं। करुणाका सागर मानो हिलोरें ले रहा था। मानसिंहकी पत्नीने रोते-रोते बताया कि हम बरसोंसे पड़ी हैं मायकेमें। ये लोग भी साधारण स्थितिके हैं। हमारे लम्बे परिवारका बोझ कैसे सँभालें, और कबतक सँभालें ? हमसे बार-बार कहते हैं जानेको ! पर हम जायँ भी तो कहाँ ? हमारी सारी जमीन परती पड़ी है। घरपर पुलिसका डेरा जमा है। बेटेको फाँसीकी सजा सुना दी गयी है। बेटीको दामादने छोड़ रखा है ! एक-एक मुसीबत है बाबा ! कहीं कोई कूल-किनारा नहीं।...

पतोहू, बेटी सभी रो-रोकर बताने लगीं अपनी दुर्दशाका हाल !

उनकी देहाती भाषा समझनेमें बाबाको दिक्कत हो रही थी। कुछ मैं समझाता था, कुछ कुँआरी बहन ।

सारे परिवारने चारों ओरसे बाबाको घेर लिया। वृद्धा और पतोहूने बाबाके चरण पकड़ लिये । कोई हाथ पकड़े था, कोई पैर। सहानुभूतिसे बाबा विचलित-से हो रहे थे। बार-बार सान्त्वना दे रहे थे, पर शोकाकुल

परिवारको कोई ढाढ़स नहीं बँध रहा था। बाबा समझाकर चलनेको हुए, तो वृद्धाने कसकर बाबाके पैर पकड़ लिये। बोली : बाबा, कछू कहे जाउ !

तहसीलदार सिंहकी बहन मुझसे गिड़गिड़ाकर बोली : लला, बाबा तें कछू कहवाय देउ !

मैंने बताया बाबाको कि ये लोग आपसे कुछ आश्वासन माँगती हैं। कहती हैं कि कुछ कहे जाइये। पर बाबा क्या कहें ? क्या आश्वासन दें ? बोले : भगवान्‌पर भरोसा रखो। वह जो कुछ करता है, अच्छा करता है !

कान्ता, हरविलास—दोनों द्रवित थीं। कुँआरी बहनकी तो आँसुओंसे आँखें ही लाल हो रही थीं। मुँहसे बोली नहीं निकल पा रही थी !

कोई पौन घण्टा लगा हमें वहाँ। लौटते समय ११-१२ सालका एक बालक मिला रास्तेमें। लोगोंने कहा : बाबा, यह लुक्काका बेटा है !

'हाँ ?' कहकर बाबा उससे अपने तम्बूतक स्नेहपूर्वक बातें करते आये : 'कहाँ पढ़ते हो ?', 'किस दर्जेमें पढ़ते हो ?', 'क्या पढ़ते हो ?' आदि।

× × ×

आत्मसमर्पण करनेवाले बागी भाई कल जेल भेज दिये जानेवाले हैं, इसलिए मैंने सोचा कि आज इनसे कुछ बातें कर लूँ और मुख्य रूपसे इस बातको जाननेकी चेष्टा करूँ कि आखिर ये बागी बने क्यों ?

तमाशबीन भीड़के मारे एक जगह बैठकर निश्चिन्ततापूर्वक इन लोगोंसे बात करना कठिन है। यह देखकर मैंने शर्माजीसे कहा कि एक जीपका इन्तजाम करिये, हम लोग कहीं दूर चलकर बात करें। इतनी भीड़के रहते तो इनसे कुछ बात करना असम्भव है।

तीसरे पहर हम लोग जीपसे निकल पड़े।

रास्तेमें एक भाईने हमारे बारेमें लुक्कासे पूछा : 'कौन हैं ये लोग ?'

बोला : 'अपने 'दोस्त' ही हैं। हम लोगोंसे कुछ बातें करनेके लिए

ले चल रहे हैं !' एक भाईको प्यास लगी, तो गये कुँआरी नदीपर पानी पिलाने। वहाँसे लौटकर सड़कसे कुछ दूर पेड़ोंकी छायामें बैठकर हम लोग इन भाइयोंसे बातें करते रहे।

सायंकालीन प्रार्थनाका समय हो रहा है, यह सोचकर हम लोग लौटे, तो देखा कि बाबाका प्रवचन समाप्तिपर है।

महावीरभाई बोले : आज बाबा बहुत अच्छा बोले।

मैंने पूछा : क्या बोले ?

यही कि दोष हथियारोंका है, सजा इन्सानको मिलती है ! पाँच बातें बतायीं उन्होंने—हाथकी एक-एक उँगली गिनकर :

१. निर्भयता रखो।

२. सबसे प्रेम रखो।

३. जो कसूर बन पड़ा हो, उसे कबूल करो।

४. न्याय दो, पर क्षमाके साथ।

५. भगवान्का नाम निरन्तर लेते रहो।

× × ×

हमारी बातें अधूरी ही रह गयी थीं, इसलिए हम लोग फिर जीपसे पुरानी जगहपर जा पहुँचे और कुछ देरतक बातें करते रहे। फिर लौटकर आ गये पड़ावपर। खा-पीकर हम सब निद्रादेवीकी गोदमें जा पड़े।

●

रखियाँ बँधा लो भइया !

भिण्ड
२२ मई '६०

तीन मीलका रास्ता—उदोतपुरासे भिण्ड !

आज पड़ावसे ही अच्छी भीड़ हम लोगोंके साथ लग गयी और ज्यों-ज्यों भिण्डकी ओर हम बढ़ने लगे, त्यों-त्यों जन-समुद्र उमड़ने लगा। शहरके पास पहुँचते-पहुँचते तो स्वागतार्थियोंकी भीड़का वह रेला आया कि लाख कोशिशोंके बावजूद हम लोग बाबासे बहुत दूर पड़ गये !

× × ×

५॥ बजे हम लोग पड़ावपर पहुँच गये। प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने कहा कि लोग कहते हैं कि भिण्ड-मुरेनामें डाकुओंका मसला है। मैं कहता हूँ कि यह डाकुओंका नहीं, सज्जनोंका क्षेत्र है, साधुओंका क्षेत्र है। डाकुओंकी समस्या मनुष्यकी पैदा की हुई है। मनुष्य ही इसे प्रेम और हमदर्दीसे सुलझा सकता है।

× × ×

८ बजे भिण्ड जिलेकी ग्रामरक्षा समितियोंका सम्मेलन हुआ। उसमें बोलते हुए बाबाने कहा कि शस्त्रोंसे शस्त्रोंकी समस्या हल नहीं हो सकती। हम लोग द्वन्द्व-युद्धसे चलकर लाठी, तलवार, बन्दूकसे होते हुए अब बमतक पहुँच गये हैं, फिर भी समस्या हल नहीं हो सकी। इतिहास बताता है कि शस्त्रसे जो हारे, उन्होंने और जोरदार शस्त्र बनाकर विजेता-को हराया। पुलिसकी बन्दूकने कुछ डाकू खतम कर दिये हैं, कुछ पैदा भी कर दिये हैं। ग्राम-रक्षादलसे भी यह मसला हल नहीं होगा। ग्राम-रक्षक ही कहीं भक्षक बन जायँ तो ? इसकी एक ही दवा है कि गाँवको एक बनाओ और ग्राम-रक्षादलके बजाय शान्ति-सेना बनाओ। जहाँ

शस्त्र रहता है, वहाँ शान्ति नहीं रहती। यह प्रेमकी ही शक्ति है कि बागियोंने अपने शस्त्रोंका समर्पण कर दिया है। आप सबको प्रेमकी ताकत बढ़ानी चाहिए।

× × ×

सायंकालीन प्रार्थना सभामें मध्यप्रदेशके गवर्नर पाटस्कर साहब भी मंचपर थे। बाबाने बहुतोंपर थोड़ोंका राज और थोड़ोंका बहुतोंपर राज बुरा बताते हुए उनसे पूछा : क्यों पाटस्कर साहब, किसी मुलजिमको तीन जज कहते हैं फाँसी दी जाय और दो कहते हैं फाँसी न दी जाय, तो तीनकी बात मानकर उसे फाँसी दे दी जाती है न ?

पाटस्कर साहब बोले : हाँ, ऐसा हो सकता है।

बाबाने कहा : पाटस्कर साहब कहते हैं कि ऐसा हो सकता है। कानूनदाँ हैं ये। तो, इस तरह थोड़ोंपर बड़ोंकी मर्जी लादनेका जो तरीका है, वह बेवकूफीसे भरा है, फिर भी आज यही चलता है !

लोकशाहीके दोष बताते हुए बाबाने कहा कि विपत्ति आनेपर सारी सत्ता राष्ट्रपतिको सौंप देते हैं, इसका मतलब क्या है ? यही न कि सामान्य कालमें हम लायक हैं, विपत्ति-कालमें हम नालायक हैं। तब 'हुकुमशाही' चलती है। इसलिए सर्वोदय कहता है : पंच बोले परमेश्वर।

डाकू-समस्यापर बोलते हुए बाबाने कहा : कौन डाकू है, कौन नहीं, यह तो राम जाने। हमें क्या पता कि दिल्लीमें डाकू ज्यादा हैं कि भिण्ड-मुरेनामें ? हम तो मानते हैं कि 'सुमति कुमति सबके उर रहहीं।' किसीको कायमके लिए बुरा मानना गलत है। हम 'डाकू' कहलानेवाले भाइयोंको भाईके नाते प्यारसे अपनाने आये हैं। पाटस्कर साहबकी सरकारने, काटजू साहबने, डी० आई० जी० साहबने हमारे पास आये हुए बागी भाइयोंको हमारे साथ चार दिन खुले तौरपर घूमने दिया और उन्हें सत्संगका मौका दिया, इसके लिए हम मध्यप्रदेशकी सरकारका अभिनन्दन करते हैं। शस्त्रोंसे कभी डाकूविहीन मही हो नहीं सकती। कल

रेडियोवालोंसे भी मैंने यही कहा था कि अन्तरकी निष्ठासे, सत्य, प्रेम और करुणासे इस कलयुगमें भी अच्छा असर पड़ता है। पहले भी इसपर मेरा विश्वास था, पर अब तो वह पक्का हो गया।

× × ×

और वह रक्षा-बन्धनका प्रसंग ?

बहनों और भाइयोंके बिछोहका करुण प्रसंग !

डाकुओंको बाबा 'दोस्त' कहते हैं। चार-पाँच दिन हमारे साथ रहकर आज विनोबाके ये १८-२० नये 'दोस्त' जेल जा रहे हैं। हमारे यात्री-दलकी बहनोंने प्रार्थना की कि 'इन भाइयोंकी बिदाईके मौकेपर हम इन्हें राखी बाँधना चाहती हैं।' बाबाने मंजूरी दे दी।

सायंकालीन सभाके कुछ पहले रोली, अक्षत और भिण्डके प्रसिद्ध केसरिया पेड़ों तथा खादीकी रंगीन राखियोंसे भरा थाल लेकर जब सुमति-बहन मंचके पास आयी, तभी रक्षाबन्धनका यह आयोजन मुझे बड़ा ही अद्भुत और हृदयस्पर्शी लगा। पर थोड़ी ही देरमें वह उस थालको लौटा ले गयी। पता चला कि विदाईका समारोह सार्वजनिक सभामें नहीं होगा, वह होगा रात्रिकालीन प्रार्थनाके समय।

× × ×

तीन घण्टे बाद ?

रातके पौने आठ बज रहे हैं। छात्रावासकी विशाल छतपर नक्षत्रोंकी छायामें हम सब बैठे हैं। अन्तेवासी, अतिथि और दर्शक।

बाबाकी चौकीके बगलमें एक ओर लम्बी जाजम बिछी है। उसपर एक किनारे बहनें बैठी हैं, बगलमें बागी भाई। हम सब दूसरी ओर। एक ओर लालटेन रखी है बहुत मन्द करके, बाबाकी ओर आड़ लगाकर, ताकि बाबाकी आँखें चकमकायें नहीं !

प्रार्थनाके पूर्व बागी भाइयोंकी ओरसे माँग हुई : बाबा, हम कीर्तन करना चाहते हैं।

बाबाने कहा : ठीक है, पहले कीर्तन कर लो। बादमें प्रार्थना।

गलेमें कण्ठी पहने दाढ़ीवाले बाबा—विद्याराम—ने खड़े होकर कीर्तन आरम्भ किया :

रघुपति राघव राजाराम ।
पतित पावन सीताराम ॥

हम सब ताली बजा-बजाकर दुहराने लगे : रघुपति राघव राजाराम ।···

विद्यारामने कीर्तनमें पूरी राम-कथा गा डाली ।

दसरथके घर जाये राम । जनक सुतासे ब्याहे राम ।
अवधपुरी है उनका धाम ॥ पतित०

पितु आज्ञा मानी इक छनमें । चौदह बरस बसे प्रभु बनमें ।
चित्रकूटपर किया मुकाम ॥ पतित०

राम प्रवरषन गिरिपर छाये । बालि अनुज सुग्रीव मिलाये ।
पवन-तनय किया सेवा-काम ॥ पतित०

भगत विभीषन शरनमें आये । लंकपुरीके राजा बनाये ।
रावनको भेजा निज धाम ॥ पतित०

रामनामसे मुख मति मोड़ो । प्रीति सदा तुम प्रभुसे जोड़ो ।
'विद्याराम' भज पूरन काम ॥ पतित०

कीर्तनके उपरान्त प्रतिदिनकी भाँति स्थितप्रज्ञके श्लोकोंका पाठ हुआ, पर आजका वातावरण मानो प्रत्येकको पुकार-पुकारकर कह रहा था : "देखो, तुम सबको, दुःखेषु अनुद्विग्नमनाः बनना है, सुखेषु विगतस्पृहः !"

'बाबाका आशीर्वाद लो, चलो : लुक्का !' मेजर जनरल यदुनाथ सिंहने अपनी जंडेली आवाजमें पुकारा ।

लुक्का उठा, बाबाको प्रणाम किया : 'बाबा, आशीर्वाद दो ।'

बाबा बोले : 'सद्भावना रखना । भगवान्में भक्ति रखना । ठीक है न ?'

"हाँ बाबा !"

कान्ताबहनने लुक्काके माथेपर टीका किया, हरविलासबहनने राखी बाँधी ।

कैमरेने उस अन्धकारमें 'फ्लैश' मारा और उस क्षणको अपनी प्लेटपर कैद कर लिया।

× × ×

तेजसिंह और भगवानसिंह, भूपसिंह और कन्हई, विद्याराम और डरेलाल, मटरे और जंगजीत, रामसनेही और दुर्जन, पातीराम और श्रीकिशन, लच्छी और परभू, मोहरमन और बदनसिंह, रामदयाल और करनसिंह—सबके नाम एक-एक करके पुकारे गये।

सब बाबाको आ-आकर प्रणाम करते, बाबा सबसे कहते :

'सद्भावना रखना। भगवान्में भक्ति रखना। ठीक है न ?'

सब कहते : 'हाँ।'

कान्ताबहन टीका करती, हरविलासबहन राखी बाँधती।

दुर्जनसिंह जब प्रणाम करने लगे, तो बाबाने उनसे कहा : 'देखो, आजसे तुम 'दुर्जनसिंह' नहीं रहे। अब तुम 'सज्जनसिंह' हो गये। ठीक है न ?'

"हाँ बाबा।"

× × ×

रक्षाबन्धनके पुनीत पर्वपर बहनें टीका करती हैं, प्रसाद खिलाती हैं, राखी बाँधती हैं। भाई उन्हें प्रणाम करता है और कुछ-न-कुछ दक्षिणा देता है।

पर इन बागी भाइयोंके पास इन धर्मकी बहनोंको देनेके लिए था ही क्या ? वे प्रणाम करके प्रसाद लेकर बैठ जाते।

तभी हमने देखा कि हरविलासबहनको प्रणाम करनेके साथ एक भाई जेबसे नोट निकालकर दे रहा है।

"नहीं भाई नहीं। हमें नहीं चाहिए ये रुपये।"

"ऐसा नहीं हो सकता। आपने हमें राखी बाँधी है। ये रुपये तो आपको लेने ही होंगे।"

बादमें पता चला कि ये छह रुपये उसने जेलमें बीड़ी पीनेके लिए

मानसिंह–रूपा गिरोह के बागी : समर्पण के बाद

अलविदा :: भिंड जेलके लिए :: २२ मई '६०
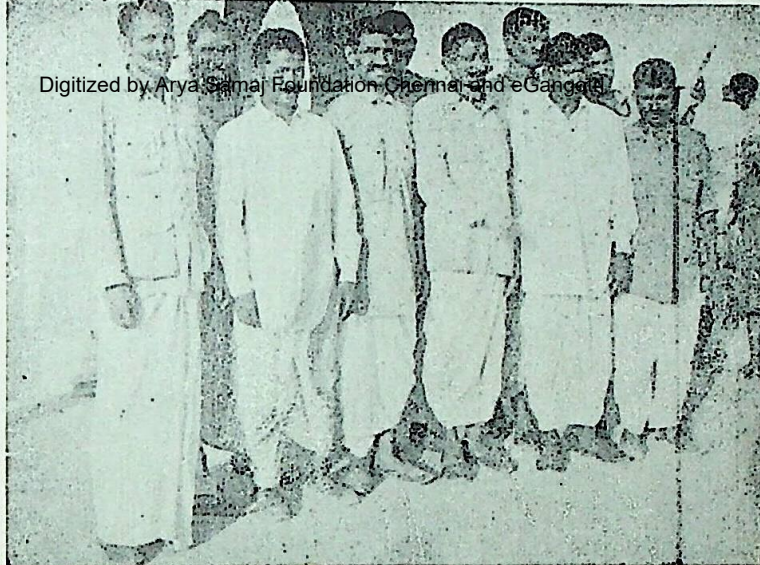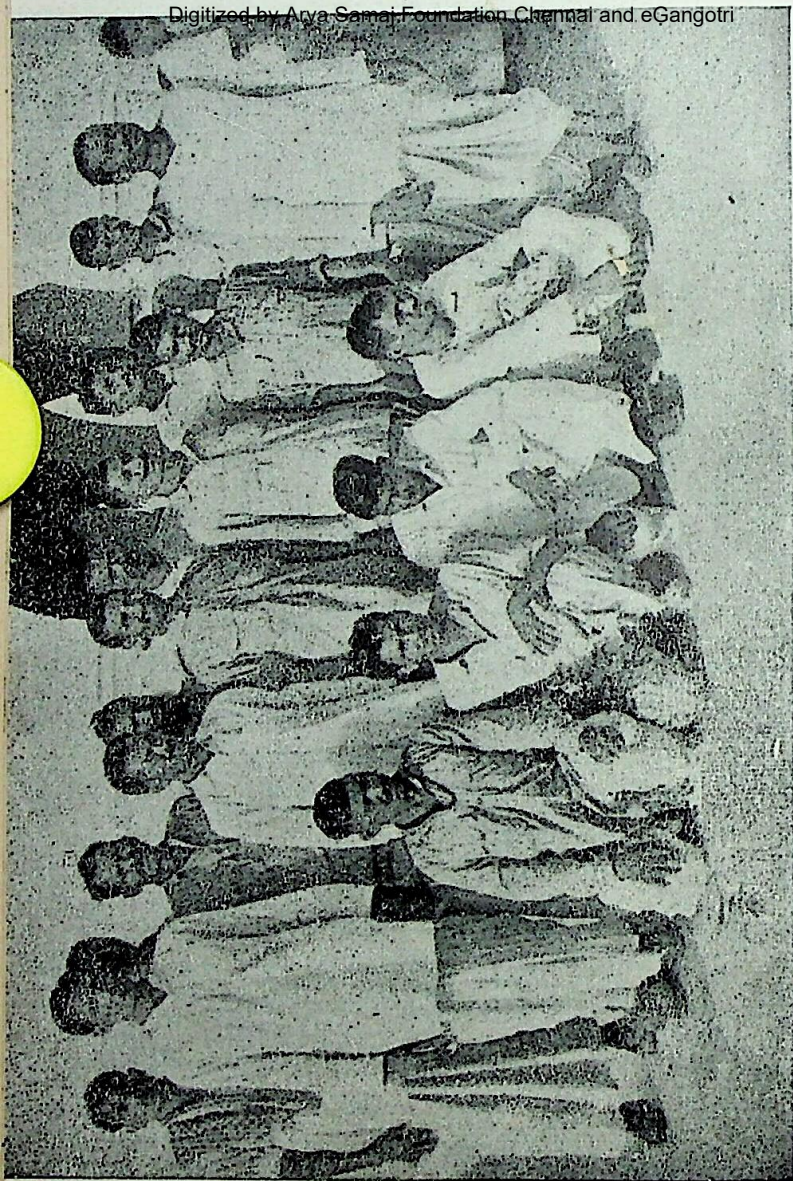
छिपाकर रख छोड़े थे। पर भ्रातृत्वके उद्रेकने उसे विवश किया कि वह इन्हें बहनोंके चरणोंपर उत्सर्ग कर दे।

× × ×

हाँ, लुक्काने बाबासे यह भी माँग की कि 'बाबा, हमें नेहरूजीका दर्शन मिले।'

बाबाने कहा : 'ठीक है। पण्डितजीका फोटो इन्हें दिला देना भाई।'

लुक्का बोला : 'नहीं बाबा, फोटो तो हमारे पास है।'

बाबा : 'तब कैसे दर्शन चाहते हो ?'

लुक्का : 'वैसे ही, जैसे हमें आपके दर्शन मिले। उन्हें हम पुरुषोत्तम भगवान् मानते हैं।'

बाबा ऐसा आश्वासन भला कैसे देते ? हाँ, उन्होंने जनरल यदुनाथ सिंहकी ओर देखकर कहा : 'जनरल साहब, इस भाईकी बात पण्डितजी-तक पहुँचा देना।'

जनरल साहब बोले : पण्डितजीने कहा है कि जरूरी हुआ, तो वे भी इन लोगोंसे मिलेंगे !

जेलमें भगवान्‌की पूजा कर सकनेकी सुविधाकी माँग ये बागी पहले ही कर चुके थे। इस बातका उन्हें आश्वासन मिल चुका है।

× × ×

और इसके बाद आयी बागियोंकी बिदाईकी बेला !

अन्तेवासियोंसे, बहनोंसे, भाइयोंसे बागी लोग मिल रहे थे, अपने घर-वालोंको उन्होंने जान-बूझकर इस समय नहीं बुलाया था। फिर भी बिदाईका समाँ बेटीकी बिदाईका समाँ बन गया ! सबकी आँखें छलछला रही थीं ! बागियोंकी आँखें तो गंगा-जमुना बन रही थीं। सबको लगता था, मानो हम अपने ही घरवालोंसे आज बिदाई ले रहे हैं ! प्रेम और करुणाका सागर मानो हिलोरें ले रहा था।

पुलिसकी खुली गाड़ीमें सब बागी बैठ गये मुक्तहस्त। करणसिंहका वारण्ट नहीं था और रामऔतारपर मध्यप्रदेशकी सरकारका नहीं, उत्तर

प्रदेशकी सरकारका वारण्ट है, इसलिए यहाँकी पुलिस उन्हें नहीं ले गयी। जनरल यदुनाथ सिंह इन लोगोंको जेलतक पहुँचाने गये। कान्ता और हरविलासबहन भी साथ चली गयीं।

मोटरें जबतक आँखोंसे ओझल न हो गयीं, हम लोग खड़े-खड़े यह करुण दृश्य देखते रहे।

× × ×

सामने श्रीमती शकुन्तला ललितको देखकर मैंने पूछा : 'शोभना कहाँ है ?'

आँखोंमें गुबार भरे वे बोलीं : 'वह भी तो गाड़ीपर बैठकर जेल चली गयी है। सलिल भी गया है।'

'छह सालकी उस छोटी बच्चीको आपने नाहक ही भेज दिया ! कहीं बारह बजेतक ये लोग लौटेंगे। तबतक सो न जायगी वह ? बमरौली कटाराके पड़ावपर उस दिन मेरी गोदमें वह आठके बाद ही सो गयी थी।'

'क्या करती मैं ? वह मानी ही नहीं ! मचल गयी जानेको।'

बहुत रात गये लोग लौटे। कान्ता तो यों ही भावुक लड़की ! हरविलास भी। बागियोंकी आत्मीयता दोनोंको बुरी तरह छू गयी। एक भाई उनसे कहने लगा : 'हमने जो पाप किये हैं, उनका फल तो हम भोगेंगे ही, पर तुम सबने हमपर जो इतना प्रेम बरसाया, उसे तो हम जिन्दगीभर भूल नहीं सकते। तुम भी बहन, हमें कभी-कभी याद कर लेना। हमें चिट्ठी डालती रहना। बाबाके हाल-चाल देती रहना। जेलसे अगर छूटनेका कभी दिन आया, तो हम भी बाबाका ही काम करेंगे।......'

बम्बईके कॉलेजोंकी ये स्नातिकाएँ जब सोचतीं कि इन चार-पाँच दिनोंके भीतर इन बागी भाइयोंने उनके साथ जैसा सम्मानपूर्ण और आत्मीयतासे भरा व्यवहार किया, उसकी क्या कभी उन 'सभ्य' और

'प्रतिष्ठित' कहे जानेवाले तरुणोंसे भी अपेक्षा की जा सकती थी, जो उनके साथ पढ़ते थे और जिनसे उन्हें पग-पगपर सतर्क रहना पड़ता था ?

तब तो उन 'सफेदपोश डाकुओं'से ये 'बदनाम डाकू' ही लाख दर्जे भले, जिन्होंने बाबाके आगे हथियार डालकर खुले दिलसे कह दिया : 'बाबा, हमसे बड़ी गल्ती हुई। अब आइन्दा हम कभी ऐसा गलत काम नहीं करेंगे।'

× × ×

और शोभना ललित ? वह छोटी बच्ची !

अपने पिता डॉक्टर ललितसे आकर बोली : बाबूजी, जब ये लोग जेलके फाटकमें घुस रहे थे, तो सब मेरे पैर छू रहे थे ! कलेक्टर साहब चकराते थे कि ये इतने बड़े-बड़े आदमी मेरी जैसी छोटी बच्चीके पैर क्यों छू रहे हैं ? तेजसिंह जब भीतर जाने लगा, तो मैंने कहा : 'तुम घर जल्दी आना !' उसकी आँखोंमें आँसू भर आये। बोला : 'अच्छा बहन !' ●

सरकारी अधिकारी बाबाकी जमातके

भिण्ड

२३ मई '६०

'मेरा शरीर माँके दूधपर जितना पला है, उससे कहीं अधिक मेरा हृदय और बुद्धि, दोनों गीताके दूधसे पोषित हुए हैं'—ऐसा कहनेवाले बाबासे जब कोई गीताकी बात छेड़ देता है, तो वे गद्गद हो उठते हैं।

आज भिण्डके गीताप्रेमी भाई ब्राह्मवेलामें ही बाबाके चरणोंमें आ उपस्थित हुए। बाबाने उनसे कहा कि ग्रन्थ हमारे लिए हैं, हम ग्रन्थोंके लिए नहीं हैं। मनुष्यको व्यापक आत्मनिष्ठा रखनी चाहिए और अच्छी चीज हर जगहसे लेनेकी आदत डालनी चाहिए।

गीतापर अपना प्रवचन समाप्त कर बाबा नीचे उतरे और तुरत जिला जेलके लिए चल पड़े। हम सब भी उनके पीछे चल दिये। जेलके फाटकके भीतर केवल पाँच आदमियोंके प्रवेशके लिए कहा गया था। शेष लोग बाहर ही रुक गये।

जेलके भीतर बाबाने सभी कैदियोंके बीच प्रवचन किया। कल जेल भेजे गये बागी लोग भी उनमें शामिल थे।

बाबाने अपने जेल-जीवनकी चर्चा करते हुए बागी कैदियोंसे कहा :

हमारी जिन्दगीके करीब पाँच साल जेलमें बीते। सन् १९२३ में, १९३२ में, १९४० में और १९४२ में, चार दफा मिलकर पाँच साल हुए। हमें जेल-जीवनका पूरा अनुभव है। हिन्दुस्तानभरमें जानेवाली कई पुस्तकें जेलमें पैदा हुईं। 'गीता-प्रवचन', जो कि सारे भारतकी भाषाओंमें और सारे भारतमें जा रही है, कैदियोंके सामने किये गये भाषणोंका संग्रह है। और भी दो-तीन किताबें हमारी वहाँसे निकली हैं।

हम जेलका कुल काम पूरा करते थे। हम साथियोंसे कहते थे कि हम अपनी इच्छासे जेलमें आये हैं और हमने कानून भंग किया है। इसकी सजा खुशीसे कबूल की है। इसलिए जेलके सब नियमोंका इच्छासे पालन करना है। हममेंसे कुछ लोगोंको सादी सजा मिली थी। हमने समझाया कि बगैर काम किये खाना हमारा धर्म नहीं है। हम समाज-पर भाररूप क्यों बनें? तो हमने जेलवालोंसे काम माँग लिया। जेलमें करीब ८०० लोग थे। सब लोग बड़े प्रेम और श्रद्धासे काम करते थे। हमें जो रोटियाँ मिलती थीं, कच्ची बनती थीं। तो उसका भी ठेका हमने ले लिया। हमारे ८-१० आदमी रसोड़ेमें काम करने लगे। और दूसरे कैदी तो थे ही। सारी चीजें सुन्दर बनने लगीं। अब भी पुराने कुछ कैदी मित्र मिलते हैं, तो कहते हैं: 'वैसो दाल कभी नहीं खायी।'

जब हम जेलमें जाते हैं, तो वही हमारा महल है, आश्रम है, ऐसा समझकर भक्तिभावसे हम काम करते हैं। जेलमें सफाई तो रखते ही हैं। कल रातमें हम जहाँ सोये थे, उससे यह जेल अधिक स्वच्छ है।

जेलके सभी कैदी हमारे साथी हैं, सब एक हैं, सब भगवद्भक्त हैं, ऐसा मानें। कोई विशेष हैं, ऐसा न मानें। **आप पश्चात्ताप करके यहाँ आये हैं। बड़े प्रेमसे बहनोंने आपको राखी बाँधी और यहाँ भेजा है। अब आपको नम्र वाणी ही बोलनी चाहिए। गाली-गलौज न हो। दूसरे लोगोंको लगे कि ये राह भूल गये थे, पर अब ठीक रास्तेपर आ गये हैं। पूरे जोरसे इस राहपर चलिये।**

बाहर जो आपके बालबच्चे हैं, सगे-सम्बन्धी हैं, उनकी चिंता भगवान्पर सौंप दें। **यहाँके कलेक्टर वगैरह सरकारी अफसरोंने कानूनको बाजूमें रखकर आपको सत्संगतिका मौका दिया, यह बड़ी बात है।**

हम आशा करते हैं कि आपमेंसे भगवद्भक्त निकलेंगे। **"अपि चेत् सुदुराचारो भजते मां अनन्यभाक्। साधुरेव स मन्तव्यः"**—ऐसा गीताने कहा है। जो मेरी अनन्यभक्ति करता है, वह पापी हो, तो भी साधु बन जाता है। यह भगवद्गीताका बड़ा भारी आश्वासन है। इसीके बलपर

हम जीते हैं। "पापोऽहं पापकर्माऽहं"—ऐसा हम कहते हैं। सबसे कम-बेशी पाप होता है। आपमें और हममें कोई फरक नहीं है।

गुस्सा मूल चीज है। हाथमें जो औजार होता है, उसीके रूपमें वह जाहिर होता है। मेरे जैसा आदमी गुस्सा करता है, तो जोरसे बोलता है, जिससे सामनेवालेका दिल दुखता है। जिसके हाथमें डंडा है, उसे गुस्सा आता है, तो सामनेवालेका सिर फूटता है। जिसके पास बन्दूक और गोली है, वह गुस्सा करता है, तो सामनेवाला मरता है। सबमें कसूर एक ही—गुस्सा। सरकारके दरबारमें चाहे अलग-अलग गुनाह हों, लेकिन भगवान्‌के दरबारमें एक ही होगा। परिणाम जो कम-ज्यादा होता है, वह तो औजारोंके कारण। सारा दोष औजारोंका है। ऐसे औजारोंका इस्तेमाल इस तरहकी भावना बना देता है, जिससे जल्दी गुस्सा आ जाता है। औजारोंका गुनाह मनुष्यपर क्यों लादते हैं?

आप, हम, ये दूसरे सारे कैदी सब भाई हैं। भाईके नाते ही मैं आपसे मिलने आया हूँ।

× × ×

यह बड़ी खुशीकी बात है कि यहाँके सजन-क्षेत्रमें यहाँकी सभी राजनीतिक पार्टियाँ—कांग्रेस, सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट—कन्धेसे कन्धा मिलाकर काम कर रही हैं। आज सुबह पौने नौ बजे सभी दलोंके कार्यकर्ताओंकी बैठक हुई। बाबा बोले: यहाँपर अभी जो थोड़ा-सा काम हुआ, उसके मूलमें ईश्वरका इशारा है। यहाँकी सभी पार्टियाँ मिलकर हमारी मदद कर रही हैं, यह बड़ी खुशीकी बात है। काम वही होता है, जिसके लिए सबके मनमें चाहत होती है। आप लोगोंमें मिल-जुलकर काम करनेकी जो भावना पैदा हुई है, वह आगे भी जारी रहनी चाहिए। आपसमें मंथन करिये, घर्षण नहीं। मंथनसे नवनीत निकलता है, घर्षणसे आग। हम सबको यह ध्यान रखना चाहिए कि हम संयत होकर टीका करें। जो लोग अपनी जबानपर अंकुश नहीं रखते, उनके शब्दकी कोई कीमत नहीं होती।

आज दिनमें कान्तीबहनने सर्वोदय-साहित्य बेचनेमें कमाल किया। यों तो वह रोज ही हर पड़ावपर साहित्यकी अच्छी बिक्री कर डालती है; २५), ५०), १००) का साहित्य तो बेच ही डालती है, पर आज तो उसने १२५०) का साहित्य बेचा ! भूताजीको पकड़कर उनकी सहायतासे उसने आज यात्राकी बिक्रीका रिकार्ड ही तोड़ डाला !

× × ×

शामको तीन बजे एक विस्तृत हालमें सरकारी—माल और न्याय-विभागके अधिकारियोंका एक सम्मेलन हुआ। रेवेन्यू कमिश्नर चटर्जीने बाबाका स्वागत करते हुए कहा कि आपने शान्ति और प्रेम द्वारा हृदय-परिवर्तनका जो दृष्टान्त उपस्थित किया है, उसे देखकर हम लोग मन्त्र-मुग्ध हो उठे हैं। आप हम लोगोंका मार्गदर्शन करिये।

बाबा बोले :

यहाँ जो काम बना, उसका सारा श्रेय किसी एकको देना हो, तो भगवान्‌को देना चाहिए। मैं तो निमित्तमात्र हूँ। इसका ज्यादासे ज्यादा श्रेय डाकुओंको देना चाहिए, जिन्होंने सामूहिक रूपसे अपनी जिन्दगी बदलनेकी हिम्मत की। जो लोग इन भाइयोंको समझाने गये, उन्हें भी श्रेय मिलना चाहिए। बचा हुआ श्रेय पुलिस अधिकारियों और सरकारको है, जिसने इन लोगोंको चार दिन हमारे साथ रहने दिया। पुलिस और दूसरे अधिकारियोंका रुख यदि अनुकूल रहेगा, तो यह समस्या शान्तिसे हल होगी।

यहाँ एक नैतिक शक्तिके आजमानेका प्रयोग हो रहा है। सन्त पुरुषोंके जीवनमें ऐसे परिवर्तनकी कहानियाँ आती हैं, पर सामूहिक रूप-से हृदय-परिवर्तनकी यह नयी बात है। हथियार छोड़कर दीक्षा लेकर गुप्त रूपसे कहीं दूर चले जाने और भगवान्‌का नाम लेते रहनेकी व्यक्तिगत घटनाएँ पुराने जमानेमें होती रही हैं। पर यहाँ तो अपने कृत्योंके दण्ड भोगनेकी पूरी तैयारीके साथ एक जमातने आत्म-समर्पण किया है। विशेष श्रद्धा होनेसे ही ऐसा सम्भव है। यहाँ बैठी गुजराती बहनोंने रक्षाबन्धन

करके उन्हें भाई बना लिया है । वे हमारे भाई बन गये हैं । यह कोई छोटी बात नहीं है । यह अहिंसाकी प्रक्रिया है ।

अभीतक यहाँ हिंसाकी प्रक्रिया चलती रही है । उसका अपना एक 'टेकनीक' है, शास्त्र है । जैसे, लोगोंको मुखबिर बनाना । डाकुओंकी भी एक 'मोरैलिटी' होती है । उनका भी एक नीति-शास्त्र होता है । हिंसाके 'टेकनीक'में किसीको पकड़कर, माफी देकर, पैसे देकर, फोड़ा जाता है, उसे 'डीमोरैलाइज' किया जाता है, उसे नैतिक स्तरसे गिराकर वचन-भंगके लिए, विश्वासघातके लिए राजी किया जाता है !

हँसते-हँसते दगा देनेका, हिंसाका शास्त्र दुनियामें चल रहा है । उसपर किताबें हैं । उसकी ट्रेनिंग दी जाती है । अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें बातें तो बड़ी-बड़ी होती हैं, पर विश्वास रहता है सबका दण्डशक्तिपर ही ।

यहाँके अधिकारियोंने अहिंसापर और सत्संगपर भरोसा रखकर चार दिन डाकुओंको खुला घूमने दिया । उन्होंने सोचा कि यह अहिंसक परिवर्तनकी प्रक्रिया है, इसे मौका देना चाहिए । छिपकर किसीका परिवर्तन कर लेनेसे, संन्यासी बना देनेसे क्या ? तारीफ है खुलेआम परिवर्तन करनेमें । आपने उसका मौका दिया, यह बड़ी बात है ।

सोचनेकी बात है कि गलती कहाँ है ? अभी एक बागी भाई घर-वालोंसे मिलने गया । पता चलते ही मुखबिर अपनी बन्दूकें लेकर उसके पीछे पड़े । किसी तरह जान बचाकर, भागकर वह मेरे पास आया और उसने अपनी कहानी सुनायी । आप अगर मुखबिरोंको बन्दूकोंकी खैरात जारी रखेंगे, तो अच्छा वातावरण कैसे बनेगा ? आपको समस्याके मूलमें पहुँचना चाहिए । जमीन और झगड़े डाकू-समस्याके मूलमें हैं । गरीब आदमी सताया जाता है, वह बन्दूक ले लेता है । आप गरीबोंकी तरफ ध्यान दीजिये । डाकुओंकी जब्त जमीनें उनके घरवालोंको लौटाइये, उनकी मदद करिये । मुखबिरोंको समझाइये कि अब आपका काम खतम हुआ । सामान्य नागरिक बनिये । बन्दूकवालोंसे कहिये, बन्दूक छोड़िये, लाठी लीजिये । लाठीवालोंसे कहिये, लाठी भी छोड़ दीजिये । इस तरह

धीरे-धीरे सारा वातावरण अहिंसाकी ओर, प्रेमकी ओर ले जाइये। सुरक्षाकी व्यवस्था आप करिये, ग्राम-रक्षकों को शान्ति-सैनिक बनाइये। जिन परिवारोंको डाकुओंने लूटा है, उनकी मदद करिये। इस तरह सहानुभूतिका रुख आप रखें, तो घाव भरनेमें बड़ी मदद मिलेगी।

मैं जब सरकारी अधिकारियोंसे बोलता हूँ, तो मुझे लगता है कि वे सब मेरी ही जमातके हैं। बाबा यह बात कहता है, तो आपको आश्चर्य लगता है, पर बात ऐसी ही है। आप मेरी ही जमातके हैं। आप भी जनताके सेवक हैं। जनतासे आपको पैसा मिलता है। कमी इतनी ही है कि जनताको आपपर इतना भरोसा नहीं जमा कि वह आपके सामने प्यारसे अपना दिल खोल सके। आप उससे पूरी सहानुभूति रखें, तो आपपर उसका विश्वास जमते देर न लगे।

सर्वोदय पक्षमुक्त समाज है। लोग कहते हैं कि आपकी बहुत छोटी-सी जमात है, पर बाबा तो कहता है कि बाबाकी जमात तो सबसे बड़ी है। बाबा जो बनाना चाहता है, सो आप पहले ही बन चुके। आप पक्षमुक्त हैं। आप मेरे समाजके हैं। आपको तनख्वाह लेनी है सरकारसे और काम करना है मेरा। आप पक्षमुक्त रहें और दुःखीपर अन्याय न करें, तो आप सर्वोदयके ही कार्यकर्ता हैं। अभी यहाँपर जो नैतिक वातावरण बना है, उसका उपयोग करना, उसे आगे बढ़ाना आपका काम है।

× × ×

सरकारी अधिकारियोंका सम्मेलन समाप्त होते ही सादा और सशस्त्र पुलिसके जवान और अधिकारी उसी हॉलमें एकत्र हो गये। कमिश्नर साहबने बाबाका स्वागत करते हुए बाबासे मार्गदर्शनकी प्रार्थना की।

बाबा बोले :

हम तो बहुत फख्र करते हैं पुलिसपर। जेलमें पुलिसवालोंके साथ हमारा परिचय हुआ। तब मुझे पता चला कि पुलिसमें अच्छे सज्जन और धार्मिक लोग होते हैं।

आज सुबह हम बागी भाइयोंसे मिलने जेलमें गये थे। उनका पेशा पापका था। डाका डालते थे, फिर भी उनमें भक्ति-भावना है। कल जब वे जेल जाने लगे, तो उन्होंने माँग की कि जेलमें हमें पूजा-पाठकी मनाही न रहे। जिन भाइयोंका जीवन पापमें गया, उनमें ऐसा भाव! वैसा ही भाव पुलिसमें है। ठीक मार्गदर्शन मिले, तो पुलिस बहुत अच्छा काम करेगी।

फिल्लौरमें कई प्रान्तोंके पुलिसवालोंका शिविर हुआ था। वहाँ मैं आधे घण्टे बोला। मेरा व्याख्यान सुनते-सुनते कुछ भाइयोंकी आँखोंसे आँसू बहने लगे। पुलिसका काम जनताकी रक्षा करना है और उसके लिए अपनी जान खतरेमें डालना है। यह बात उन्हें समझायी, तो उनकी आँखोंसे आँसू टपकने लगे।

पुलिसका दिल होना चाहिए—पहले मक्खन, पीछे मक्खन, बीचमें जाड़ेका-सा मक्खन। उसके अन्दर दयाकी भावना भरी रहनी चाहिए।

पुलिसवाले अपने कर्तव्यका पालन करें। उनका जीवन नियमित हो। खानेमें, पीनेमें, सोनेमें, काममें जब्त हो, संयम हो। आलस कतई न रहे। आपको नित्य रामायण, गीता जैसी धर्मकी पुस्तकें पढ़नी चाहिए। दिल आपका नरम रहे, मौकेपर सख्त। अभी इस क्षेत्रमें कठोरसे कठोर दिलवाले डाकू शस्त्र छोड़कर नरम बन गये! उन्होंने आत्म-समर्पण कर दिया। हर इन्सानके अन्दर सद्भावना होती है। याद रखिये कि हर इन्सानके भीतर परमेश्वरकी ज्योति जलती रहती है। कभी-कभी उसपर पर्दा पड़ जाता है, पर वह कभी बुझती नहीं। पर्दा हटते ही वह चमक पड़ती है। ऐसा सोचकर हर इन्सानके प्रति हमदर्दी रखिये, हरएकको प्यार करिये!

× × ×

चम्बल घाटीमें शान्ति-सेनाका काम तीव्र गतिसे चलना चाहिए, इस बातपर आज काफी विचार-विमर्श होता रहा। बैठकमें सर्व-सेवा-संघके मन्त्री पूर्णचन्द्र जैन भी उपस्थित थे। फिर बाबाकी सम्मतिसे सक्रियरूपसे

इस क्षेत्रमें काम करनेवाले दस व्यक्तियोंकी एक कमेटी बनी, जिसमें कुँआरीबहन भी हैं। कमेटीके सदस्य हैं :

स्वामी कृष्णस्वरूप, लल्लूदादा, महावीर सिंह, भगवत सिंह, बाबा परशुराम, लक्ष्मीचन्द वैश्य, श्रीराम गुप्त, केशव सिंह, राजेन्द्रकुमारी, हेमदेव शर्मा (संयोजक)।

सायंकालीन प्रवचनमें इसकी चर्चा करते हुए बाबाने कहा :

भिण्ड जिलेमें हम आठ-दस दिन और रहेंगे। यहाँपर शान्ति-सेनाका काम करनेके लिए दस मनुष्योंकी एक कमेटी बनी है, जिसमें एक बहन भी है। हमारे जानेके बाद भी यह कमेटी यहाँ काम करती रहेगी। सब लोगोंको सर्वोदय-पात्र, सम्पत्ति-दान आदिमें सहयोग करना चाहिए। हम चाहते हैं कि यह क्षेत्र, जो आज 'डाकू-क्षेत्र' नामसे पुकारा जाता है, वह 'साधु-क्षेत्र' (सज्जन-क्षेत्र) घोषित हो।

यहाँपर डाकुओंकी समस्याके साथ डाकुओंसे पीड़ितोंकी समस्या भी है। पुलिसवालोंकी समस्या है। मुखबिरोंकी समस्या है। जगह-जगह लोग पीड़ित हैं, कोई एकसे है, कोई दूसरेसे। हम सबका दुःख निवारण करना चाहते हैं। हम सबसे मिलते हैं। हम समाजको तोड़ते नहीं, जोड़ते हैं। हमें इस काममें सबकी मदद मिलनी चाहिए।

सामुदायिक इच्छा-शक्तिका यहाँ प्रयोग हो सकता है। पुलिस, सर्वोदय-कार्यकर्ता और जनता तीनोंको मिलकर यहाँ प्यारसे काम करना चाहिए, जिससे सारा क्षेत्र सर्वोदय-क्षेत्र बन जाय और हम कहें : "धर्म-क्षेत्रे, भिण्डक्षेत्रे।" इस तरह यह जिला अब नये रूपमें प्रसिद्ध हो।

× × ×

बाबाका आजका प्रवचन हरिजन-समस्यापर विशेष रूपसे केन्द्रित था। एक भाईने उनसे कहा था कि हरिजनोंके बारेमें कुछ कहिये। बाबा बोले :

मैंने तो शुरूसे अपनेको हरिजन ही माना है और वे सभी काम अपनाये हैं, जो उन्हें करने पड़ते हैं। हरिजनोंसे एकरूप होनेके लिए

ये तीन काम मैंने खास तौरसे वर्षों किये हैं : (१) भंगी-काम, (२) चमड़ेका काम और (३) बुनाई ।

और यह भू-दान क्यों ? तेलंगानामें घूमते समय हरिजनोंने हमसे जमीनकी माँग की । उन्होंने अस्सी एकड़ माँगी, हमें सौ एकड़ मिली । तबसे भू-दानका जो काम शुरू हुआ, वह आजतक चलता ही चला जा रहा है । हमने नियम बनाया है कि भूमिहीनोंको जो जमीन बाँटी जाय, उसमें कमसे कम एक-तिहाई हरिजनोंको मिलनी चाहिए ।

हमारा यह नियम है कि जिस मन्दिरमें हरिजन नहीं जा सकते, उस मन्दिरमें हम नहीं जाते । बिहारके देवघरमें इसी कारण हमपर मार पड़ी । हरिजनोंकी सेवामें हमने एक कान समर्पण कर दिया ! पुरीमें हमने जगन्नाथजीके मन्दिरमें प्रवेश माँगा । हमारे साथ एक फ्रेंच बहन भी थी । मन्दिरवालोंने उसके साथ हमें प्रवेश देनेसे इनकार किया, इसलिए हम बिना दर्शन किये ही लौट आये । पंढरपुरमें मैंने कहा कि मुझे विठोबाका दर्शन मेरी शर्तपर मिले, तभी मैं दर्शन करने जाऊँगा । मन्दिरके पुजारी तैयार हो गये । उन्होंने पत्रिका लिखकर दी कि 'आप जैसे महाभागवत भगवान्‌के दर्शनको अवश्य पधारें । आपके सब साथियोंका स्वागत है ।' हमारी एक जर्मन लड़की, जिसे हमने 'हेमा' नाम दिया है, हमारी एक मुस्लिम लड़की, जिसका काम फातमा है और एक पारसी लड़की, जिसका नाम गुलबहन है, इन सबको साथ लेकर हम मन्दिरमें गये और हम सबने बड़े प्यारसे भगवान्‌को आलिंगन दिया ।

अगर कोई कहे कि यह शख्स हरिजनोंको भूला होगा, तो मैं कहूँगा कि फिर हरिजनोंको याद रखनेवाला दूसरा कोई नहीं होगा । सर्वोदयमें अन्त्योदय होता ही है । लेकिन हमें यह पसन्द नहीं कि हरिजनोंकी अलगसे सेवा की जाय । "यह आया रे हरिजन-सेवक !" ऐसे बँटे हुए, कटे हुए सेवकसे हमारा काम नहीं चलेगा ! हम किसी एक टुकड़ेकी नहीं, पूरे समाजकी सेवा करते हैं ।

× × ×

कलसे बहुत गहन क्षेत्रमें जाना है, बहुत ही ऊबड़-खाबड़ रास्तेसे जाना है, इसलिए आज बाबाने बड़ी कड़ाईसे अन्तेवासियोंकी छँटनी की :

सुमति तुम जाओ, कान्ता हरविलास तुम जाओ, कुसुम तुम जाओ, लवणम् तुम जाओ, गौतम तुम जाओ,···!

फिर नमस्कार, प्रणाम, विदाईका जो दौर चला, वह आधी राततक चलता रहा। मीटिंगोंके लिए आये बाहरके कार्यकर्ता भी ट्रेन, बस, मोटर, जीपके इन्तजारमें सब सड़कपर इकट्ठे हो गये। रामऔतार जब इन सब लोगोंको विदा कर रहा था, तो उसकी आँखें छलछला रही थीं। बहनोंकी विदाईके मौकेपर तो वह रो ही पड़ा!

रातको ८॥ बजे साथियोंको पहुँचाने जब सड़कपर गया, तो देखा कि एक साहब वहींपर जेबी रेडियो खोले सुन रहे हैं समाचार। हम लोगोंने भी उन्हें घेर लिया।

अरे, यह तो हवामें बाबा बोल रहे हैं :

"मध्यप्रदेशके डकैतीग्रस्त क्षेत्रमें मेरे शान्ति-अभियानमें जो कुछ हुआ, वह एकदम अप्रत्याशित था। आध्यात्मिक जगत्में अहिंसा एक सबल शक्ति है। महात्मा गांधीने राजनीतिक क्षेत्रमें उसका उपयोग किया। पिछले ९ सालसे सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रमें इसका उपयोग किया जा रहा है। 'डाकू-क्षेत्र' कहे जानेवाले इस क्षेत्रमें इस बार इसके प्रयोगपर मुझे जैसा अनुभव हुआ, वैसा इससे पहले कभी नहीं हुआ था। कठोर हृदय पिघल गये हैं और सारा वातावरण भगवदीय भावनासे ओतप्रोत हो गया है। जिन लोगोंने डकैतीको अपने जीवनका पेशा बना लिया था, वे पश्चात्तापकी भावनासे आये और उन्होंने अपने पुराने तौर-तरीके एकदम बदल दिये। ऐसा जान पड़ता है कि भगवान्ने उनके हृदयमें पैठकर दैवी चमत्कार प्रकट कर दिया है। मैं तो उस जगदीश्वरके प्रति केवल कृतज्ञता ही प्रकट कर सकता हूँ, जिसपर विश्वास रखकर मैं सत्य, प्रेम और करुणाके मार्गपर चलनेका प्रयत्न कर रहा हूँ!"

मनई नाँय, पौहे आँय !

कचोंगरा
२४ मई '६०

दीनन दुख हरन देव संतन हितकारी !

यह भजन अभी बिल्लोरेजीने समाप्त किया ही था कि बाबाने कचोंगराके निवासियोंको सम्बोधित करते हुए कहा कि इधर वीर, उधर साधु—इन दोनोंके बीचमें डाकू पैदा हो गये। साधुका गुण है सरल हृदय। वीरका गुण है मरनेकी तैयारी। डाकुओंमें हमें दोनों गुण मिलते हैं। उनसे हमारी दोस्ती हो गयी।

कहते-कहते बाबा भाव-विभोर हो उठे। बोले : पिछले दस-बारह दिनोंके भीतर जो घटनाएँ घटी हैं, उन्होंने हमारे दिलको अन्दरसे नरम बना दिया है। हमने देखा कि कैसे परमेश्वरकी ज्योति सबके अन्दर जल रही है। पहले मैं इल्मुल-यकीन था, अब अयनुल-यकीन बन गया हूँ। पहले किताबोंमें बात पढ़ी थी, अब मुझे अहिंसाका साक्षात्कार हो गया। मुझे तीन दफा ऐसा सामूहिक साक्षात्कार हुआ। पहली दफा पोचमपल्लीमें, दूसरी दफा बिहारमें और तीसरी दफा यहाँ। व्यक्तिगत साक्षात्कार तो बहुत हुए।

× × ×

तीन-तीन बार अहिंसाका सामूहिक साक्षात्कार !!!

कैसी अद्भुत घटना !

× × ×

कुँआरी नदीसे नहाकर अभी हम लोग लौटे ही थे कि देखा, बाबा तैयार हैं ऐंती जानेके लिए। नदीके उस पार थोड़ी दूरपर है यह गाँव—लाखन सिंहके भाई फिरंगी सिंहकी ससुराल।

खिली धूपमें गये हम लोग। बाबा रोजकी तरह अपना हरा टोपा सिरपर लगाये थे। गाँवके भीतर एक जगह बाबाके बैठनेके लिए दरी बिछी थी। वहीं हम लोग बैठ गये।

बाबा बोले : **प्रेमका सन्देश फैलानेके लिए हम ९ सालसे घूम रहे** हैं। गरीबोंके लिए हम जमीन माँगते हैं। अबतक हमें ४५ लाख एकड़ जमीन मिली है, जिसमें कोई ९ लाख गरीबोंको बाँट भी दी गयी है। प्रेमसे जमीन माँगनेका काम इससे पहले कभी नहीं हुआ। इसकी हवा चल पड़ी, लोगोंने प्रेमसे जमीन दी।

सात-आठ महीने हुए। मानसिंहके बेटे तहसीलदार सिंहने जेलसे हमें चिट्ठी लिखी कि फाँसीके पहले हम आपका दर्शन करना चाहते हैं। तब हम कश्मीरमें थे। हमने इन जनरल साहबको भेजा। उनके कहनेसे हम यहाँ आये हैं और प्रेमकी बात लोगोंको समझा रहे हैं कि बागी भाई हमारे पास आयें। उन्हें न्याय मिलेगा, उनके साथ सख्ती न होगी। बाल-बच्चोंको तकलीफ न होगी।

परमेश्वरकी कृपा है कि २० आदमी हमारे पास आये। उन्होंने बन्दूकें रख दीं। बालबच्चोंसे मिले। परसों हमने उन्हें जेल पहुँचा दिया। उन्हें कामोंका फल तो मिलेगा, लेकिन वे परमेश्वरकी क्षमाके अधिकारी बनेंगे।

एक राह खुली है। हम चाहते हैं कि जो भी भूले-भटके भाई हैं, वे हमारे पास आ जायँ। हम उनका स्वागत करते हैं। उन्हें न्याय दिलानेकी हम कोशिश करेंगे। आप हमारा यह सन्देशा ऐसे भाइयोंके पास पहुँचा दें, इसीलिए हम आपके पास आये हैं।

× × ×

'बाबा, ये हैं बाबूसिंह, फिरंगी सिंहके साले।'—जनरल साहबने एक भाईका परिचय दिया।

'इनकी बहन वगैरह हैं न ?' बाबाने पूछा।

'हाँ, हैं।'

बाबाने उनसे मिलनेकी इच्छा प्रकट की। बगलमें ही उनका घर है। बाबा उठकर चले। दो-एक भाई उनके साथ हो लिये।

फिरंगी सिंहकी पत्नी और उनके मायकेकी कई स्त्रियाँ बरोठेमें आ गयीं। बाबाको सबने प्रणाम किया। बाबाने पूछा : क्या हालचाल है तुम्हारा ?'

'क्या कहें बाबा ? दुःखका कोई पार है ?'

'तो तुम कहो न उनसे कि हाजिर हो जायँ।'

'कहती हैं बाबा, पर कहीं मानते हैं हमारी बात ? हमने कितनी दफा उनसे कहा कि 'हाजिर हो जाव। हम सब कुटत-पिटत हैं ! बाल-बच्चनका बड़ी तकलीफ है' !'

बाबाने सत्याग्रहकी सलाह दी : 'क्यों नहीं तुम लोग सत्याग्रह करतीं ?'

आँखोंमें आँसू भरकर बोली : कहते हैं, मरना है तो मर न जा ! कल मरती हो, तो आज मर जा। नहीं तो ला हम तुझे गोली मारकर ढेर कर दें !

तबतक एक बहन बोली : बाबा, मनई नाँय, पौहे आँय !

बाबा नहीं समझ पाये। मैंने बताया : बाबा, यह कह रही है कि 'ये लोग मनुष्य नहीं, पशु हैं !'

जनरल साहब : यह लाखन सिंहकी भतीजी है बाबा ! मलखान सिंहकी बेटी।

बाबाने कहा : देखो, हमें तो सबसे हमदर्दी है। जिनको पुलिस सताती है, उनसे भी हमदर्दी है, जिन्हें डाकू सताते हैं, उनसे भी हमदर्दी है। आदमी-आदमी, बच्चे-बच्चे हैं तो सब एक ही न ? तकलीफ तो सबको न होती है !

'हाँ, बाबा।'

बाबा बोले : तो अपने घरवालोंतक हमारा यह संदेशा पहुँचा दो

कि गलत रास्ता छोड़ दो, प्रेमसे ही यह मसला हल होगा। भगवान् उन्हें सद्बुद्धि दे !

कच्चोंगरा लौटे, तो जनरल साहब एक मकानके सामने आकर बोले : बाबा, यह है ज्वालासिंहकी ससुराल।

'उनकी पत्नी है यहाँ ?' बाबाने पूछा।

'हाँ बाबा, यहीं है।'

'तो चलो भीतर।'

बाबा भीतर गये। जमीनपर बैठ गये। ज्वालासिंहकी सद्यःविधवा पत्नी आकर बाबाके चरणोंपर गिरी और जबतक हम लोग वहाँ रहे, रोती ही रही। बाबा उसे दिलासा देते रहे।

'कितने बच्चे हैं तुम्हारे ?'

'पाँच।'

भीतरसे कोई सालभरका एक बच्चा ले आया। उसने कहा कि बाबा, यह है सबसे छोटा बच्चा !

शोकसंतप्ता विधवासे बाबाने पूछा : भगवान्का नाम लेती हो ?

उसने सिर हिलाया।

बाबा बोले : भगवान्की याद करती रहो। उनका नाम लेती रहो। वे ही सब पार करेंगे।

दो सप्ताह हुए, एक पुलिस-मुठभेड़में ज्वालासिंहका देहान्त हो गया है। दाहिना हाथ माना जाता था वह लाखन सिंहका।

दो-तीन मिनटके लिए बाबा प्रह्लाद बागीके घर भी रुके और उन्होंने घरवालोंसे कहा कि आप लोग उन्हें समझाइये कि वे गलत रास्ता छोड़ दें और गलतियोंका प्रायश्चित्त कर डालें। भगवान् उनका भला करेगा।

× × ×

आज सायंकालीन सभाके समय वर्षा आरम्भ हो गयी। बाबा मंचसे उतरकर खुले मैदानमें आ गये और बरसते पानीमें श्रोताओंके बीच खड़े

होकर बहुत देरतक ताली बजा-बजाकर कीर्तन करते-कराते रहे—रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम। उसके बाद उन्होंने कहा :

यहाँ जमीनके साथ एक बात और निकली है—बागियोंकी। कुछको बागियोंने कतल किया है, कुछको पुलिसने। मेरे पास कुछ विधवा बहनें आयीं। उन्होंने कहा कि हमारे पति और बेटोंको डाकुओंने मार दिया। दूसरी तरफ और कुछ बहनें रोती आयीं, उन्होंने कहा कि पुलिसवालों ने और मुखबिरोंने हमारे घरवालोंको मार दिया है। तो हमने सोचा कि चलो, इन सब लोगोंसे कुछ प्रेमकी बातें करें। हमारे प्रेमका सन्देश सुनकर बीस लोग आये। उन्होंने अपने हथियार हमें दे दिये। वे चार दिन हमारे साथ घूमे। भिण्डमें हमने उन्हें जेलमें पहुँचा दिया।

उन्हें पूरा न्याय मिले, इसकी कोशिश की जायगी। बाबा आपके लिए, देशकी भलाईके लिए तथा धर्मके लिए यह काम कर रहा है। बाबा सबको अपना भाई मानता है। वह चाहता है कि कोई दुःखी न रहे।

पैंसठ सालकी उम्रमें बाबा साढ़े नौ मील पैदल चलकर यहाँ आया और पासके गाँवमें बागियोंके रिश्तेदारोंसे मिलनेके लिए दोपहरके ग्यारह बजे गया और साढ़े बारह बजे लौटा। यह सब किसलिए? इसीलिए कि दुर्जन सज्जन बनें, डर हट जाय और आपसमें प्रेम बढ़े। प्यार, धर्म और भक्तिकी बात समझानेको बाबा गाँव-गाँव घूम रहा है। वह चाहता है कि हर जगह सुख और आनन्द बढ़े। हरएकका दिल उदार बने। सब लोग यह मानें कि गाँववाले सबके सब मेरे हैं, मेरे परिवारके हैं। एक भी आदमी दुःखी हो, तो हम उसका दुःख आपसमें बाँट लें। ●

तय करो—"युद्ध-पर्व समाप्तम् !"

स्योंढा
२५ मई '६०

'इटावाके रमेश !'

बाळभाईने परिचय देते हुए कहा : बाबा, बी० एस-सी० की परीक्षा दी है इन्होंने। कुछ दिन रहना चाहते हैं आपके साथ।

रमेशका हाथ पकड़ते हुए पूछा बाबाने : 'कौन-कौनसे विषय हैं तुम्हारे ?'

रमेश : फिजिक्स, कैमिस्ट्री और गणित।

बाबा : अच्छा, गणित भी ? भगवान्‌के बाद मैं दूसरा नम्बर देता हूँ गणितको। तुम गणितको कापियोंतक ही महदूद रखते हो कि जीवनमें भी उतारते हो ? गणितके विद्यार्थीका तो हर काम नपा-तुला होना चाहिए—खाना-पीना, उठना-बैठना, चलना-फिरना, सोना-जागना, बात-व्यवहार सब। वह रत्तीभर भी कोई चीज फिजूल खर्च न करेगा—पानीतक नहीं।

रमेश : बाबा, मैं चाहता हूँ कि कुछ दिन आपके साथ रहूँ।

बाबा : कितने दिनतक ?

रमेश : पचीस सालकी उम्रतक।

कुछ कौतूहल हुआ बाबाको। पूछा : अभी क्या उम्र है तुम्हारी ?

रमेश : अभी तो मैं उन्नीसका हूँ।

बाबा : तो छह बरस ही क्यों रे भाई ? रहना तो मिनटभर या जिन्दगीभर।

रमेश : रहना तो जिन्दगीभर चाहता हूँ, पर शायद आप तैयार न हों, इसलिए, छह बरस ही कहे।

बाबा : तो छह ही क्यों कहे ? सात क्यों नहीं ? पचीसकी उम्रमें शादी करके अलग हो जाना चाहता है क्या ?

रमेश : शादी तो बाबा, तीन साल पहले ही हो चुकी है ।

बाबा : तो मेरे साथ अकेले रहोगे या पत्नीके साथ ?

रमेश : अकेला ही रहूँगा बाबा ।

बाबा : और विवाहके समय अग्निको साक्षी देकर जो प्रतिज्ञा की है जीवनभर साथ न छोड़नेकी, उसका क्या होगा ?

रमेश : शादी तो मेरी जबरन कर दी गयी बाबा । मैं तो चाहता ही नहीं था, पर मेरे बाप और भाईने कहा कि शादी न करोगे, तो पढ़ाईका खर्च बन्द कर देंगे ।

बाबा : ऐसा क्यों ?

रमेश : मेरी पत्नी डाकूकी बेटी है । उसके बापने मेरे घरवालोंको डराया, धमकाया और कहा कि लड़का शादी न करे, तो उसकी पढ़ाईका खर्च बन्द कर दो ।

बाबा : मेरे साथ रहनेमें उस डाकूका डर नहीं है तुम्हें ?

रमेश : अब तो वह मर गया है बाबा । अब उसका क्या डर ? मैं तो आपके साथ रहकर देश-सेवा करना चाहता हूँ । पत्नीके साथ नहीं रहना चाहता ।

बाबा : तो उस बेचारी लड़कीका क्या होगा ? शादी तो अब हो चुकी । अब तो प्रेमसे उसे निबाहना ही है । भाईके दोषकी सजा उस लड़कीको क्यों देते हो ? तुम दोनोंको साथ-साथ देश-सेवा करनी चाहिए।

रमेश : बाबा, वह बिलकुल नहीं समझती । उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर है ।

बाबा : उसे कभी समझाया भी है ?

रमेश : हाँ बाबा, समझाया है ।

बाबा : अच्छा, अब जाकर फिर समझाना । कहना, बाबाने तुझे भी

बुलाया है, मुझे भी। अबकी बार आना, तो उसे साथ लेकर आना। कुछ दिन दोनों मेरे साथ रहना। फिर आगेकी बात सोचेंगे।

रमेश : आपके पैर छू लूँ बाबा ?

बाबा : अरे, जब हाथ पकड़ लिया, तो पैर छूनेकी जरूरत ही क्या रही ? अच्छा जाओ, सद्बुद्धि रखो !

× × ×

खूब ऊबड़-खाबड़ था आज सबेरेका रास्ता। ऊँची-नीची कँकरीली-पथरीली सँकरी गैल। जगह-जगह धूल उड़ती। कई-कई आदमियोंका साथ चलना तो दरकिनार, दो आदमियोंका भी साथ-साथ चल पाना मुश्किल था।

रमेशके साथ बाबाकी मनोरंजक वार्ता चल रही थी, तो हम लोग पीछे-पीछे कूदते-फादते चल रहे थे। थोड़ी देर बाद ऊँचे-नीचे टीलोंके बीच एक खुला खेत मिला। बाबाने चलना छोड़ वहाँ आसन जमा दिया। हम लोग बैठ गये चारों ओरसे उन्हें घेरकर।

बाबा कुछ देर शान्त रहे, फिर उनके मुखसे झरने लगे ये अमृत-कण :

सारा तमाशा मनका है। एक मिसाल लें। दो बेटे हैं, दो बाप। एकका बेटा मर गया, उसे पता नहीं। वह आनन्दमें है। दूसरेका बेटा है तो जिन्दा, पर उसे गलत खबर मिली है कि वह मर गया। अब वह दुःखी है। निष्कर्ष क्या निकला ? यही कि शोकका सम्बन्ध घटनासे नहीं, मनसे है। घटनासे होता, तो मरे हुए बेटेका बाप सुखी क्यों होता, जीवित बेटेका बाप दुःखी क्यों होता ? तो सुख-दुःखकी प्राथमिक जिम्मेदारी है मनपर।

दुनियामें तरह-तरहकी घटनाएँ घटती हैं। उनकी जानकारी मिलते ही हम खुश होने लगते हैं, दुःखी होने लगते हैं। पुराने जमानेमें ऐसा कुछ न होता। तीन सौ साल पहले बड़ीसे बड़ी घटनाएँ घट जातीं, पर हमें उनका कोई पता ही नहीं लगता था। आज तो किसी घटनाका एकदम पता लग जाता है और पता लगते ही मन चंचल हो उठता है।

यह ठीक नहीं। क्षोभ होनेसे अनावश्यक वेदना होती है। उससे कोई फायदा नहीं।

हाँ, अब एक बात अवश्य देखनेमें आ रही है। आजकल लोग खाना खाते जाते हैं और खून, फाँसी और विनाशकी खबरें पढ़ते जाते हैं। उनके दिलोंपर कोई खास असर नहीं होता। यह सब देखकर मुझे लगता है कि मानव-समाज अब स्थितप्रज्ञ बननेकी तैयारीमें है। ऐसी खबरोंसे मन धीरे-धीरे वेदनाशून्य बनता जायगा। पहले ऐसी खबरोंसे मनमें क्षोभ बढ़ता है, उससे दुःख बढ़ता है। पर आगे चलकर मनुष्य सोचने लगेगा कि व्यर्थकी जानकारी हासिल करनेसे क्या लाभ है ? मेरा तो ख्याल है कि विज्ञानकी वृद्धिके साथ-साथ मनुष्य सादगीसे रहना सीखेगा। विज्ञान जितना बढ़ेगा, आदमीकी जिन्दगी उतनी ही सादी बनेगी और आध्यात्मिक वृत्ति बढ़ेगी।

× × ×

स्योंडा पहुँचते-पहुँचते कुछ धूप हो गयी। तीन-चार साल पहले इस गाँवमें डाकू-पुलिस भिड़न्त हुई थी। दोनों तरफसे गोली चली। मरा तो कोई नहीं, पर गाँववालोंकी बड़ी फजीहत हुई। मारपीट, फसलकी बर्बादी आदि।

नहानेके लिए हम लोग जब नदीपर गये, तब गाँवमें इस घटनाका पता लगाया। लोगोंने बताया कि बागी लोग अचानक ही कहींसे आ गये। गाँववालोंसे पूछा : 'क्यों, पुलिस तो नहीं है ?' वे बोले : 'नहीं, पुलिस नहीं है।' इधर अचानक पुलिस आ गयी। उसने पूछा : 'क्यों, बागी तो नहीं हैं ?' लोग बोले : 'नहीं, बागी यहाँ नहीं हैं।'

गाँववालोंको न पुलिसका पता था, न बागियोंका। संयोगकी बात कि उसी समय अचानक पुलिस भी आ गयी, बागी भी। दोनोंकी मुठभेड़ हो गयी। गाँववाले पिस गये बीचमें। बागियोंने समझा—ये लोग पुलिसको छिपाये थे ! पुलिसवालोंने समझा—ये लोग डाकुओंको छिपाये थे !

बादमें दोनोंने गाँवको सताया। पुलिसने एक सिरेसे दूसरे सिरेतक लोगोंको बुला-बुलाकर पीटा। खड़ी ज्वार भी काटकर फेंक देनेका आदेश दे डाला। डाकुओंने अपने ढंगसे गाँववालोंको सताया।

× × ×

आज हमारा पड़ाव गाँवके बाहर है एक मन्दिरमें। मन्दिरके बड़े बगीचेमें कई तम्बू लगे हैं। पूर्वमें बाबा ठहरे हैं, पश्चिमके तम्बूमें हम लोग। बाहर भी कुछ तम्बू हैं। उधर पुलिसके लोग पड़े हैं।

प्रवेश-प्रवचनमें नदियोंका महत्त्व बताते हुए बाबाने कहा : नदियोंके किनारे पवित्र माने जाते हैं! होने तो चाहिए थे यहाँ ज्ञानी, पर होते हैं डाकू! व्रजभूमिमें आपसमें लड़नेवाले यादव पैदा हो गये हैं। यहाँ कोई लाल टोपी लगाये हैं, कोई सफेद। कोई नंगे सिर हैं, कोई फेंटा बाँधे। ये मुख्तलिफ जमातें हिन्दुस्तानका वैभव हैं। ये सब आपसमें मिल जायँ, तो काम चले। सा रे ग म प ध नी—इन सातों स्वरोंकी सुसंगति होनी चाहिए। हम देखते हैं कि इधर पुलिस है, उधर डाकू। इधर इनके मुखबिर हैं, उधर उनके। इधर ग्राम-रक्षादल है, उधर गाँववाले। इस तरह मुख्तलिफ जमातोंमें बँटे रहनेसे देशकी ताकत कैसे बढ़ेगी? अब हम इस क्षेत्रमें आये हैं, तो तुम लोग तय करो कि अब 'युद्ध-पर्व समाप्तम्'! अब यहाँसे 'शान्ति-पर्व' शुरू होना चाहिए।

हमारे पास एक कुंजी है : सर्वोदयकी कुंजी।

ताला कुंजी हमें गुरु दीन्हीं।
जब चाहों तब खोलों किवरवा॥

हमारी कुंजी क्या है? हमारे गुच्छेमें हैं चार तालियाँ :

(१) सबपर प्यार।

(२) हिम्मत, निर्भयता। हम किसीसे डरें नहीं। बन्दूकवाला डरपोक होता है। जहाँ बन्दूक छीनी कि सारी ताकत खत्म।

(३) पश्चात्ताप। जो हुआ सो हुआ, आगे जो कुछ न्याय होगा, उसे हम खुशीसे कबूल करेंगे।

(४) क्षमा। न्यायके साथ थोड़ी क्षमा भी रहनी चाहिए—जैसे दूधके साथ शहद। किसीने अगर हमारे लड़केको मार दिया, तो हम यह न सोचें कि हम भी उसे मारें। इससे द्वेष बढ़ता है। जो दुःख हमें भुगतना पड़ा है, वह दूसरेको न भुगतना पड़े, इसका नाम है क्षमा।

× × ×

नदी थोड़ी दूर है यहाँसे। खूब टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता है खारोंसे हो करके। लौटते समय हम लोग राह भूल गये, थोड़ी दूर भटकना भी पड़ा। आज पता चला कि कैसे चम्बलके खारोंमें लोगोंको छिपना आसान होता है और पकड़ना कठिन!

× × ×

तीसरे पहर आयी खूब जोरकी आँधी, तूफान, वर्षा। हमारा छोटा तम्बू लड़खड़ानेको था, पर एक भाई थामे रहे जोरसे। रस्सियाँ तनने लगीं, खूँटे उखड़ने लगे। लल्लूदादा आ गये तबतक। दौड़े वे बाबाके तम्बूकी तरफ। उस तम्बूका भी बुरा हाल था। उनके पहुँचनेके साथ ही वह गिर पड़ा! ताई पहलेसे बाबाको कह रही थीं बाहर जानेको, पर वे बैठे रहे मुसकराते हुए। बाबाको दबते देख लल्लूदादाने अपना पैर अड़ाकर बीचके भारी बासको थामा और ताईसे कहकर बाबाको जबरन बाहर निकाला। फिर उन्हें मन्दिरके पटे हुए कमरेमें पहुँचाया। पानीने तमाम सामान, कपड़े, कागज-पत्र बुरी तरह भिगा दिये थे। गिरे हुए तम्बूसे उन सबको निकालनेमें हम लोगोंको काफी देर लगी।

× × ×

सायंकालीन प्रवचनमें बाबाने कहा :

आज अभी बारिश पड़ी थी। उसमें हमारा तम्बू गिर गया। हम भी गिर गये। जरा मजा आया। ऐसी घटनाएँ हमारी यात्रामें कभी-कभी घटती ही रहती हैं।

हमारी यह भूदान-यात्रा क्यों चल रही है? सभी जानते हैं कि हम गरीबोंके प्रतिनिधि हैं। हमने भूमिहीनोंके लिए जमीन माँगनेका काम

उठा लिया है। अबतक हमें पैंतालीस लाख एकड़ जमीन मिल चुकी है, जिसमें कोई नौ लाख एकड़ बाँटी जा चुकी है। दान और प्रेमका ही एक तरीका है, जिससे जमीनकी समस्या हल हो सकती है।

हम जानते हैं कि "सुमति-कुमति सबके उर रहहीं"। डाकू हमारे प्यारे मित्र हैं। डाकुओंकी तरफसे ज्यादती हुई है, तो पुलिसकी तरफसे भी कम ज्यादती नहीं हुई। इधर डाकू, उधर पुलिस। जनता दोनोंके बीचमें पिसी जा रही है।

लच्छी नामका मशहूर डाकू हमारे पास आया। तीन सालसे बम्बईमें वह आराम कर रहा था। उसने अखबारमें पढ़ा कि बाबा इधर आया हुआ है। बाबाके आगे शरण जानेसे पुलिस ज्यादती नहीं कर सकेगी। तीस-बत्तीस लाखकी आबादीवाले बम्बईमें उसे कौन पकड़ता ? फिर भी वह बाबाकी शरण आया। और वह लुकमान (लुक्का) ? वह आया, उसकी टोली आयी। भिंडतक हमने उन्हें अपने साथ रखा।

एकने कहा कि 'बाबाने डाकुओंको जेल में भेज दिया, यह ठीक नहीं किया।' बाबा उन्हें अगर जेलमें नहीं रखता, तो क्या करता ? सरकारके कानूनकी अपनी मर्यादा है। उसके खिलाफ तो जाना नहीं है। हम कोशिश करेंगे कि सबको न्याय मिले। मुआफीकी बात नहीं सोचनी चाहिए। यहाँ मुआफी मिलेगी, तो भगवान्‌के यहाँ सजा मिलेगी।

पुलिसने कुछ डाकू खत्म किये, तो कुछ पैदा भी किये। हिंसासे हिंसा ही पैदा होती है। हिंसाका मुकाबला अहिंसासे करना होगा। यह बात सरकारने भी महसूस की। अब तो यह बात फैल गयी है। दूर-दूरसे लोग देखने आते हैं कि हिन्दुस्तानमें यह क्या अजीब बात हो रही है कि बीसों लोग प्यारसे अपने-आपको हमारे सुपुर्द कर देते हैं।

सच्ची बहादुरी सीखो !

पांढरी
२६ मई '६०

भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे।

प्रवेश-प्रवचनमें बाबा बोले : सुना आपने—'भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे !' गरीबोंके लिए, भूमिहीनोंके लिए हम जमीन माँगने निकल पड़े। ४५ लाख एकड़ मिली। सोचते थे, बहुत कम है। पर अब लगता है कि बहुत है। सरकार बहुत करेगी, तो उसे ८-९ लाख एकड़ मिल सकेगी। हम तो उतनी जमीन बाँट भी चुके ! भूदानसे बढ़कर गरीबोंका दुःख बाँटनेका दूसरा रास्ता हमने देखा नहीं। भूदान प्रेम बढ़ाता है, धर्म-भावना बढ़ाता है, ताकत बढ़ाता है।

बागी लोग हमसे मिले। हमने उन्हें समझाया कि छोड़ो यह काम। बोले : 'हम राजी हैं।' उन्होंने अपने हथियार हमें दे दिये। एक बन्दूकमें दूरबीन थी। ऐसे शस्त्रोंसे लैस भाई आये। एक बागी भाई आये बम्बई-से। हमने प्यारसे समझाया। उन्होंने अपने-आपको हमें सौंप दिया। हम ऐसे भाइयोंसे कहते हैं कि तुम भी प्रेमसे जिओ, दूसरोंको भी जीने दो। बागियोंने पुलिस पैदा की, पुलिसने, बागी पैदा किये। अहिरावणके रक्तकी बूँद-बूँदसे राक्षस पैदा हो रहे हैं। जनताको दोनोंसे तकलीफ है ! स्त्रियाँ दुःखी हैं, बच्चे दुःखी हैं। इसलिए यह गलत काम बन्द कर देना चाहिए।

× × ×

लल्लूदादाका गाँव यहाँसे पास ही पड़ता है। आज सोचा था कि उनके गाँवपर हम लोग दिनमें धावा मारेंगे, पर उन्होंने कहा कि वहाँ बूढ़ी माताजीके सिवा और कोई नहीं है। इसलिए नहीं गये। पर शामकी

सभामें देखा कि उनकी पुत्रवधू कमला मेरे बगलमें ही आ बैठी है, माताजी भी हैं, भाभी भी ! यह खूब रहा !

× × ×

दोपहरमें लाखन सिंहकी बहन सोनचिरैया बाबासे मिलने आयी। कुँआरीबहन गयी थीं उसके घर। बाबाने उससे कहा कि सुनते हैं कि तुम्हारा भाई तुम्हारी बात मानता है। उसके पास मेरा यह सन्देशा भेज दो कि बाबा कहता है कि तुम अपना गलत रास्ता छोड़ दो। अपने कियेके लिए पश्चात्ताप करो। भगवान् तुम्हें सद्बुद्धि दे !

कुछ देर हम लोग सोनचिरैयासे बातें करते रहे। दो छोटे-छोटे बच्चे थे उसके साथ—एक नौ सालका, दूसरा चारका। बताया उसने कि बड़ी तंगीसे उसका गुजर-बसर चलता है।

सायंकालीन प्रार्थनामें बाबाने कहा :

वर्षोंसे यहाँ डाकू-समस्या खड़ी है। हमारी निगाहमें कोई डाकू नहीं, भगवान् किसीको डाकू पैदा नहीं करते। लाचारीसे लोग ऐसे कामोंमें लग जाते हैं। वे जगह-जगह भटकते रहते हैं हमारी तरह— "रैन बसेरा कर ले डेरा" !

वे लोग बहादुर तो होते ही हैं, पर गलत राहपर चले जाते हैं और गलत काम कर बैठते हैं। फिर पुलिस पीछे लगती है। फिर उन्हें डाकू ही बने रहना पड़ता है। बन्दूकसे मसला हल होनेवाला नहीं है। बन्दूकके चलते किसीको चैनसे रहनेको नहीं मिलेगा। भय फैलेगा। बहादुर डरपोक बन जायेंगे। बन्दूक हटनी चाहिए। हम सच्ची बहादुरी सिखानेके लिए यहाँ आये हैं। लाठी, तलवार, बन्दूक कोई भी शस्त्र जब हाथमें आता है, तो आदमी डरपोक बन जाता है। सच्ची बहादुरी आत्मासे काम करनेमें है।

बाबाके हाथमें डण्डा भी नहीं रहता। किसी भी जंगल, पहाड़में बाबाको डर नहीं मालूम हुआ। यह कौन-सा बल है ? यह आत्मबल है। जिसके मनमें प्यार है, वह डर नहीं सकता। आत्मा कभी मरती

नहीं। देह तो जानेवाली ही है। जो शख्स इस बातको जानता है, वह बहादुर है। बहादुर आदमी देहसे आत्माको अलग मानता है। लेकिन यहाँपर बन्दूकको बहादुरीका आधार मानते हैं।

हमें सच्ची निर्भयता सीखनी होगी। कोई हमें तभीतक डराता है, जबतक हम डरते हैं।

यहाँका क्षेत्र बहादुरोंका क्षेत्र बन सकता है। बन्दूक उठानेसें निर्भयताका कुछ हिस्सा तो आता ही है, पर उसके छोड़ देनेपर सच्ची बहादुरी आयेगी और तब हम आत्माके बलपर दुर्जनोंसे लड़ सकेंगे। बन्दूकवालोंसे मैं कहता हूँ कि बन्दूक हटाओ। बन्दूक हटानेके लिए निर्भयता चाहिए। उसके लिए ज्ञान चाहिए, विवेक चाहिए और वह विवेक आयेगा सत्संगसे।

"बिनु सत्संग विवेक न होई। राम-कृपा बिनु सुलभ न सोई॥"

× × ×

बाबाके प्रवचनके उपरान्त लल्लूदादाने खचेरेको लाकर बाबाके चरणोंमें उपस्थित किया। बोले: बाबा, ये खचेरे भाई हैं, सिकाटा गाँवके। इनसे एक साधुने कहा कि सम्वत् '१७ से '२० के भीतर एक बाबा इधर आयेगा। वह तुम्हारा उद्धार करेगा। ये मानते हैं कि वह बाबा आप ही हैं!

खचेरेने बाबाको प्रणाम करके कहा: बाबा, अबतक मैं गलत रास्तेपर था। अब कभी कोई गलत काम नहीं करूँगा। आप मेरा उद्धार करिये।

× × ×

सभाके उपरान्त मैं चि० कमला और लल्लूदादाके परिवारको बाबाके पास ले गया प्रणाम कराने। मैंने कहा: बाबा, यह है कमला, दीवान शत्रुघ्नसिंहकी बेटी, लल्लूदादाकी पुत्रवधू। दादाका पुत्र राजेन्द्र था न अपने साथ कई दिन? ये हैं राजेन्द्रकी माँ, ये हैं उसकी दादी!

बागियोंके आत्मसमर्पणको लेकर बाबाके पास बधाईके पत्रों और तारोंका ताँता लग रहा है । अच्युतभाईने दिखाया आज शफी साहबका एक पत्र । ऊपरसे नीचेतक आदर, श्रद्धा और मुहब्बतसे लबरेज !

राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबूका तार है :

"आज सारा राष्ट्र आपके उस कार्यकी ओर आशा और प्रसन्नताकी दृष्टिसे देख रहा है, जिसके द्वारा आप डाकुओंमें उत्तम एवं नैतिक भावना जाग्रत करनेमें सफल हुए हैं, और जिसके द्वारा उन्होंने उत्साहित होकर आत्म-समर्पण किया है ।

"आपके प्रयत्न हम बहुतोंके लिए उस नैतिक भावनाके सफल एवं उत्तम परिणाम हैं, जिनके द्वारा गलत मार्गपर चले हुए व्यक्ति उत्तम मानव बननेको अग्रसर हो रहे हैं । मैं आपके उद्देश्योंकी पूर्ण सफलताकी कामना करता हूँ और आपके प्रति अपनी सद्भावना और सम्मान प्रकट करता हूँ ।"

× × ×

राष्ट्रपतिने मेजर जनरल यदुनाथ सिंहको भी तार भेजा है :

"आप उत्तम मानव बनानेके काममें अग्रसर हो रहे हैं । मैं आपके उद्देश्योंकी पूर्ण सफलताकी कामना करता हूँ एवं आपके प्रति अपनी सद्भावना और सम्मान प्रकट करता हूँ ।"

दोस्तोंके पास बाबाका सन्देश पहुँचाओ !

नयागाँव
२७ मई '६०

"आपके सिरके बाल तो काले हैं, दाढ़ीके बाल कैसे सफेद हो गये बाबा ?"

डॉक्टर सुशीलाका यह प्रश्न सुनकर बाबा मुसकराते हुए बोले : आश्रममें मच्छर बहुत थे। बापूने उनकी दवा निकाली थी : मिट्टीका तेल। हम लोग मिट्टीका तेल चुपड़कर लेटते। उसीका यह नतीजा है !

× × ×

ऊँचे-नीचे, टेढ़े-मेढ़े रास्तेसे होते हुए हम लोग जब यहाँ पहुँचे, तो धूप खिल रही थी। आजका पड़ाव मन्दिरमें है। ठहरनेकी जगह कम है। हम लोगोंने सदर दरवाजेके बगलमें एक तरफ अपना बिस्तर डाल दिया।

प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने कहा : हिन्दुस्तानके गरीबों, अमीरों और मध्यम-वर्गके लोगोंकी एकता बनानेके लिए हम घूम रहे हैं। हम चाहते हैं कि मालिक और मजदूर, छोटे और बड़े मिलकर एक रहें और ग्राम-परिवार बनायें; बीमारोंकी, विधवाओंकी सेवा हो; दुःखियोंका दुःख मिटे और बेकारोंको काम मिले। हम चाहते हैं कि गाँव-गाँवमें ग्राम-स्वराजका नमूना पेश हो। इसके लिए पहला कदम यह है कि जमीन सबको बाँट दी जाय !

इधर जबसे हम चम्बल घाटीमें आये हैं, तबसे यहाँ कहा जा रहा है कि यहाँ डाकू-समस्या है।

धर्मक्षेत्रे भिण्डक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
पुलिसाः डाकवश्चैव किमकुर्वत सञ्जय ?

भिण्ड-क्षेत्रमें पुलिस और डाकू दोनोंमें भिड़न्त हो रही है, दोनोंसे लोग तङ्ग हैं। डाकुओंकी आफतसे बरी करनेके लिए पुलिस आयी। अब उसके कारण भी लोगोंको मुसीबत उठानी पड़ रही है। इससे समस्या उलझती है, सुलझती नहीं।

कुछ बागी भाइयोंने अपने शस्त्र हमें सौंप दिये और अपनेको भी सौंप दिया। चार दिन हमारे साथ घूमते रहे। उसके बाद भिण्डमें वे जेल चले गये। अभी कुछ लोग और बचे हैं। वे भी अगर आ जाते हैं, तो अच्छा होगा। उनमेंसे अगर कुछ लोग यह सोचें कि दो-चार महीना देख लेंगे, उसके बाद जायँगे, तो ऐसा विचार मूर्खताका होगा। विज्ञानके जमानेमें जल्दी करनी चाहिए। पश्चात्ताप धीरे-धीरे नहीं होता। बाबापर विश्वास रखकर जो लोग अभीतक नहीं आये हैं, वे भी आ जायँ!

कल एक भाई आये। उन्होंने अपने-आपको हमारे सुपुर्द कर दिया। उनका कहना था कि एक बाबाने उनसे कहा था कि सत्रहसे बीस संवत्-तक एक बाबा आयेगा, तुमको उस बाबासे मिलना चाहिए और अपनी गलती माफ करानी चाहिए। तो जंगलमें रहनेवाला कोई बाबा हमारा प्रचार कर रहा है, उसे हम जानते भी नहीं! "जागिये रघुनाथ कुँअर पंछी वन बोले!" जंगलके पंछी बाबाका सन्देश पहुँचाते हैं। परमेश्वर ही यह सारा इन्तजाम करता है, लेकिन औजारके तौरपर वह हमारा उपयोग कर लेता है। आप सब लोग हमारे प्रचारक बन जायँ और बाबाका सन्देश बाबाके दोस्तोंके पास पहुँचा दें। परमेश्वरका नाम लेकर हमारे उन भाइयोंको हमारे पास आना चाहिए और अपने किये हुए कामोंके लिए पश्चात्ताप करना चाहिए।

× × ×

इधर आदेश हुआ है कि कोई भी बागी जैसे ही आत्मसमर्पण करे, वैसे ही उसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया जाय। खचेरेको पुलिस गिरफ्तार करके ले जाना चाहती थी, पर वह दो-चार दिन बाबाका

सत्संग करना चाहता था। उच्च अधिकारियोंसे बात की गयी, तो उन्होंने खचेरेको भिण्ड जिलेकी समाप्तितक बाबाके साथ रहनेकी अनुमति दे दी।

डॉक्टर सुशीला नायर आज भिण्ड जेलमें बागी भाइयोंसे मिल आयीं।

× × ×

सायंकालीन प्रार्थना-सभामें बाबाने कहा :

इस क्षेत्रको 'डाकू-क्षेत्र' समझकर पुलिसको सौंप दिया गया है। कुछ बागी भाइयोंने समर्पण किया। यह बहुत बड़ा काम है, लेकिन यह ईश्वरकी लीला है। अभी एक भाईने हमारे पास एक लेख भेजा है, जो उसने सन् १९५३ में एक मासिक पत्रिकामें लिखा था।* उसमें उसने लिखा था कि चम्बल घाटीकी डाकू-समस्या सरकारसे हल नहीं होगी, इसके लिए विनोबाको बुलाया जाय। पुलिसके डी० आई० जी० ने भी तीन साल पहले कहा था कि इसके लिए विनोबाको बुलाया जाय। यह सब ईश्वरकी ही लीला है। मैंने इसमें क्या किया ? यह ईश्वरकी ही इच्छा है। हम अगर इस अहंकारको उठा लें, इसे अगर हम अपनी करामात मान लें, तो डाकू तो स्वर्गमें चले जायेंगे, हम नरकमें।

हमने दस मनुष्योंका एक मण्डल बनाया है। इसमें सब पक्ष-मुक्त लोग हैं। पक्षवाले कार्यकर्ता अच्छा इरादा रखते हुए भी बात बिगाड़ देते हैं और दिल तोड़ देते हैं। हमें दिल तोड़ने नहीं, जोड़ने हैं।

हमारी एक बहन आज भिण्ड जेलमें हो आयी है। जेलमें जो बागी भाई रखे गये हैं, वे बहुत खुश हैं। पढ़नेके लिए उन्होंने वाल्मीकि-रामायण और महाभारत जैसे ग्रन्थ माँगे हैं। ये लोग शस्त्रास्त्र छोड़कर आये हैं और रामायण जैसी किताबें पढ़नेको माँगते हैं! साधारण आदमियोंके चेहरोंसे इनके चेहरोंमें कोई फर्क नहीं लगा। इनके चेहरोंमें कोई क्रूरता नहीं, कोई भयजनक बात नहीं। ये साफ-सुथरे भी दिखाई

---

* 'विक्रम' (उज्जैन), जुलाई १९५३ : सम्पादकीय टिप्पणी।

पड़े । बात इतनी है कि ये गलत राहपर लग गये । पुलिस इनके पीछे पड़ती है, तो ये और पक्के हो जाते हैं ।

वाल्मीकि-रामायणमें एक कहानी है कि रामचन्द्रजी अपना धनुष-बाण हमेशा तैयार रखते थे । तो एक रोज सीताजीने कहा कि मुझे इसमें खतरा दिखाई देता है । खतरा क्या है, यह पूछनेपर सीताजीने एक ऋषिकी कहानी सुनायी । ऋषिकी तपस्यासे इन्द्रको डर लगा । वह क्षत्रिय-का रूप धरकर ऋषिके पास आया और बोला कि 'मेरी यह तलवार जरा रख लीजिये, मैं फिर इसे ले जाऊँगा ।' लेकिन वह फिर लौटकर आया नहीं । गया सो गया ही ! अब उस तलवारको सँभालनेकी जिम्मेदारी उस ऋषिपर आयी । वह जहाँ जाता, तलवारको अपने साथ ले जाता । कोई जानवर उसपर हमला करता, तो तलवारके इस्तेमालकी उसे इच्छा हो जाती । धीरे-धीरे वह हिरन मारने लगा । उसकी तपस्या खत्म हुई और इन्द्रका काम बना । इसलिए मैं कहती हूँ कि हरदम धनुष-बाण चढ़ाये रखनेसे आपकी भी मति पलट सकती है ।

जैसी चीज हाथमें होती है, वैसी ही बुद्धि आती है । बन्दूक हाथमें आती है, तो मारनेकी इच्छा बढ़ती जाती है । जिन लोगोंको 'डाकू' कहा जाता है, उनमें भी बहुत अच्छे आदमी हैं । साढ़े नौ सालकी यात्रामें मुझे कोई दुर्जन नहीं मिला । गुमराह जरूर मिले हैं । अकल खोये हुए लोग मिले हैं । लाचारीसे दुर्जनका वर्ताव करते हैं । यह हालत हमें दुरुस्त करनी चाहिए । हम जब ऊपरसे अभियान करते हैं, तो बात बनती नहीं । बीस शाखाएँ तोड़ते हैं, तो पचीस नयी जम जाती हैं । इसलिए जड़पर ही हमला करके उसे खत्म करना चाहिए ।

इन भाइयोंमें बहादुरी है । जोरदार इंजन है, गलत पटरीपर चला गया है । जरूरत इस बातकी है कि पटरी बदल दी जाय । हमारे दोस्त यह समझ लें कि हमें अपना रवैया बदलना है । वे 'बाबा' के सुपुर्द हो जायँ । आपमेंसे जो लोग हमारे दोस्तोंके दोस्त हैं, वे भी उन्हें समझायें और उनसे हमारी मुलाकात करायें ।

बच्चोंके झगड़ेसे महाभारत !

रेरुआ
२८ मई '६०

बड़े दुःखकी कहानी है आजके गाँवकी ! राग-द्वेष, ईर्ष्या-मत्सरकी क्रीड़ा-भूमि रहा है यह। स्कूलके बच्चोंसे झगड़ा शुरू हुआ, बढ़ा, पनपा और उसने कत्ल और खूनका रूप धारण कर लिया !

एक भाईने यहाँकी कहानी हमें यों सुनायी :

यहाँसे थोड़ी दूरपर एक स्कूल है। गाँवके बच्चे वहाँ पढ़ने जाते थे। गड़ेरियाका एक लड़का तेज था। मास्टर लड़कोंसे सवाल पूछता और जब वे ठीकसे जवाब न दे पाते, तो उस तेज लड़केसे दूसरे लड़कोंको चपतें लगवाया करता !

ब्राह्मण-ठाकुरके लड़के !

भड़क उठे वे धीरे-धीरे ! कुलीनताका उनका 'अहं' फुफकार उठा : यह गड़ेरियाका लड़का हमें चपत लगाता है !

एक दिन स्कूलके रास्तेमें उन्होंने उस बेचारे लड़केका गला चाकूसे रेत दिया !

कसूर मास्टरका, जान गयी लड़केकी !

लड़केका बाप इधर-उधर दौड़ा, जगह-जगह फर्याद की, पर किसीने कोई ध्यान नहीं दिया।

मुकदमा चला, पर जो पकड़े गये, वे छूट गये !

और तब मनाया गया जश्न !

प्रतिशोधकी आग जल उठी। पीड़ित पिता 'बागी' बन बैठा ! बन्दूक हासिल करके उसने दोको भून दिया—चचाको और भतीजेको !

× × ×

प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने कहा : कहते हैं कि इस गाँवमें झगड़ा स्कूलसे शुरू हुआ था। महाभारतकी कुल कहानी बच्चोंके झगड़ोंसे ही शुरू होती है। दुर्योधन, कर्ण, अर्जुनके झगड़े पहले छोटे पैमानेपर शुरू हुए, बादमें वे बढ़ गये !

आज पुलिस, डाकू, मुखबिर, ग्राम-रक्षा-दल – सबके पास बन्दूकें हैं। बन्दूकोंसे मसला हल नहीं हो सकता। उससे गाँवका दुःख नहीं मिट सकता। वह मिटेगा वैरभाव भूलकर एक बननेसे। इसलिए जाति-पाँति, मजहब, पार्टियोंके झगड़ोंको और व्यक्तिगत झगड़ोंको भूल जाओ। गाँवको आग मत लगने दो।

यहाँ डाकुओंकी समस्या कही जाती है—डाकू आखिर करता क्या है ! इस जेबका पैसा उस जेबमें डालता है। डाकू बेकार, पुलिस बेकार-शिरोमणि, अदालतमें एक बेकार बैठा है, जिसे 'न्यायाधीश' कहते हैं। इस तरह चारों ओर बेकारोंकी एक जमात है। पुलिस, जेल, अदालतोंपर लाखों रुपया खर्च किया जाता है। पैदावार बढ़ती नहीं, पैदाइश बढ़ती है, झगड़े बढ़ते हैं। भला इस तरह कहीं शान्ति होगी ? आज अगर कहीं लड़ाई छिड जाय, तो गाँवको कौन बचायेगा ?

इसलिए तुम तय कर लो कि गाँवमें 'स्वराज्य' लाना है। डाकू कोई नहीं। हर कोई पैदा करके खायेगा, बाँट करके खायेगा, मेहनत करके खायेगा। पाँच मिलकर अपना फैसला करेंगे। बाहरका कोई दखल नहीं रहेगा। जो लोग डाकेके गलत रास्तेपर चले गये हैं, वे अपने कामका पश्चात्ताप करें और निर्भय होकर 'बाबा'के पास आ जायँ।

× × ×

तीसरे पहर बाबा निकल पड़े गाँवकी परिक्रमाको। रोकनेपर भी काफी भीड़ साथ लग गयी। दो लड़कोंको पकड़ लिया बाबाने : 'इसी गाँवके हो न ?' बोले : 'हाँ।' 'चलो, हमें ले चलो गाँवमें !'

बाबा एक मकानपर कुछ देर पीड़ित परिवारको सान्त्वना देते रहे।

× × ×

सायंकालीन सभामें बाबाने कहा :

अभी हम इस गाँवकी सैरको गये थे। गाँव बड़ा दुःखी है। हमें भगवान्‌ने सुखमें रखा है। वह परम पिता हमारे सुखकी योजना करता है, लेकिन हम सुखको दुःख बनानेकी कला जानते हैं। पंचमहाभूत हमारी सेवा करते हैं, लेकिन हम उनकी सेवा करना नहीं जानते। साथ ही हम अपने भाइयोंकी सेवा करना भी नहीं जानते। गीतामें कहा है : "परस्परं भावयन्तः।" एक-दूसरेको प्यार करो, एक-दूसरेकी मदद करो। हम उसके बजाय दूसरोंको दुःखी करते जाते हैं। भला ऐसे कैसे काम चलेगा ?

एक भाईने कहा कि कांग्रेसवालोंने एक पर्चा निकाला है, जिसमें दूसरे लोगोंपर शंका प्रकट की है। इस तरहकी शंका करना ठीक नहीं। हम एक-दूसरेके प्रति शंका करेंगे, एक-दूसरेका मत्सर करेंगे, एक-दूसरेसे द्वेष रखेंगे, एक-दूसरेके दोष देखेंगे, तो कैसे काम चलेगा ? हम 'वन्दे मातरम्' तो कहते हैं, 'वन्दे भ्रातरम्' नहीं कहते !

राजनीतिक पार्टीवाले एक-दूसरेपर अविश्वास करना छोड़ दें।

स्वराज्य तो हमें मिला, लेकिन 'स्वराज्य' मिलनेके बाद हमने कौनसा दुर्गुण छोड़ा ? क्या हमने आलस्य छोड़ा ? द्वेष छोड़ा ? छूत-अछूतका भेद छोड़ा ? दुर्गुण जबतक जारी रहेंगे, तबतक हमारा दुःख भी जारी रहेगा। स्वराज्यके हो जानेपर भी आलस्य, संशय, जाति-भेद, झगड़े आदि हमने कायम रखे, तो हमारा काम कैसे चलेगा ?

यहाँका क्षेत्र 'डाकू-क्षेत्र'के नामसे बदनाम है। मैं कहता हूँ कि यह सज्जनोंका क्षेत्र है। आपको चाहिए कि आप सज्जनता जगायें। राष्ट्रपतिने हमारे पास एक प्रेमभरा पत्र भेजा है। उसमें हमारा अभिनन्दन किया है। कुछ भाइयोंने हमारे पास आकर शस्त्रास्त्र अर्पण कर दिये हैं। जब कुछ भाइयोंमें ऐसा परिवर्तन हो सकता है, तो और लोगोंमें सज्जनता क्यों नहीं प्रकट हो सकती ?

समर्पणमें अड़ंगा डालना गलत

रैंउझा
२९ मई '६०

बाबा लोगोंकी महिमा निराली है !

इधर बाबा विनोबा, उधर बाबा परशुराम !

जनरल साहबने कहा : बाबा, महेंदवा गाँवमें परशुराम महाराजका आश्रम है। गाँववालोंने ३० एकड़ जमीन दान की है। वे चाहते हैं कि वहाँपर एक छात्रावास खुले, जहाँ पुलिससे या डाकुओंसे पीड़ित परिवारोंके बच्चोंको निःशुल्क शिक्षा दी जाय।

बाबा : विचार तो अच्छा है।

यदुनाथ सिंह : परशुराम महाराज चाहते हैं कि उस छात्रावासका शिलान्यास आपके कर-कमलोंसे हो।

बाबा : बाबाजीकी ऐसी इच्छा है, तो ठीक है।

जनरल : पर वह हमारे रास्तेसे कुछ तिरछा पड़ता है। यों ही इधरके पड़ाव ज्यादा-ज्यादा दूरपर पड़ते हैं, वहाँ चलेंगे, तो रास्ता और भी लम्बा पड़ जायगा।

बाबा : कोई बात नहीं, बाबाजीकी इच्छा है, तो बाबाको थोड़ा कष्ट ही सही !

× × ×

"मंगलं भगवान् विष्णुः...।"

शिलान्यास करके बाबा बोले :

जो लोग सर्व-संग परित्याग करके निष्काम सेवामें लगे हैं, उनमें हमारे परशुराम बाबा भी हैं। लोक-सेवाका उनका यह स्थान संस्कृतकी

शिक्षा दे रहा है। अध्यात्म-विद्याका प्रचार कर रहा है। उसके साथ विज्ञान और जुड़ जाय, तो सर्वोदयकी पूरी तालीम हो जायगी।

यहाँपर बागी लोगोंके बच्चोंके लिए और बागियोंसे पीड़ित लोगोंके बच्चोंके लिए तालीमका इन्तजाम हो रहा है। परशुराम बाबाके प्रयत्नसे इन बच्चोंके रहनेका और उनकी तालीमका प्रबन्ध हो रहा है, यह बड़ी अच्छी बात है। ऐसे अध्यात्मप्रेमी, अनुभवी, सर्वसंग-परित्यागी सेवक मिल जायँ, तो काम बनते देर न लगे।

बाबाके साथ आश्रमसे निकलने लगा, तो लोगोंने घेर लिया—लस्सी पीनेको। सो भी थोड़ी नहीं, एक बड़ा-सा गिलास भरकर!

इतने अच्छे मीठे दहीकी लस्सी!

याद पड़ा मुझे लहेरियासराय—दरभंगा। ८-१० बरस पहले पण्डित जगन्नाथप्रसाद मिश्रके यहाँ ऐसा ही मीठा दही खानेको मिला था!

× × ×

४ बजे हम लोग निकले और ९॥ पर यहाँ रेंउझा पहुँचे। साढ़े पाँच घण्टे! १४ मीलका ऊँचा-नीचा, ऊबड़-खाबड़ रास्ता।

प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने कहा : हमने इस जिलेकी अपनी यात्रा आठ दिन और बढ़ा दी है, ताकि हमारा प्रेमका सन्देश हमारे मित्रोंके पास अच्छी तरह पहुँच सके। हम चाहते हैं कि जो लोग गलत रास्तेपर चले गये हैं, वे अपनी गलती कबूल कर प्रायश्चित्त कर डालें और यह सारा क्षेत्र साधु-क्षेत्र बन जाय।

× × ×

आज बाबाका भी निवास एक तम्बूमें ही है, हम लोगोंका तो है ही! गाँवके बाहर हमारा डेरा लगा है। नदी किनारेका यह ऊबड़-खाबड़ गाँव बहुत गहन प्रदेशमें है। कौन आता-जाता है इधर! न यहाँ पहुँचनेके लिए सड़कें हैं, न ठीक-ठाक रास्ते ही। लहारकी रानी प्रेमकुमारी, जो हमारी बगलमें ही कुँआरी बहनके साथ ठहरी हैं, कह रही थीं कि चुनावके दिनोंमें भी मैं यहाँ नहीं आयी। प्रान्तीय असेम्बलीकी सदस्या हैं वे।

इतनेसे ही यहाँकी स्थितिका अन्दाज लगाया जा सकता है। वोट माँगनेके लिए लोग कहाँ-कहाँ नहीं पहुँच जाते! फिर भी वे यहाँ नहीं पहुँच सके।

इस गाँवकी कहानी भी बडी दुःखद है। यहाँके १२-१३ आदमी गोलियोंके शिकार बन चुके हैं।

इधर कई दिनोंसे इस क्षेत्रके कई बागी हमारी टोलीके साथ तो कम, पर आसपास आगे-पीछे लगातार चल रहे हैं। बाबाकी बातें उनके कानोंमें सीधे भले न पहुँच पायें, पर प्रकारान्तरसे, दोस्तोंके दोस्तोंकी मार्फत तो पहुँचती ही रहती हैं। यह भी पता चलता है कि उनमेंसे कुछ लोग बाबाके चरणोंमें आत्मसमर्पण करनेको भी तैयार हैं, पर उनके आत्म-समर्पणसे जिनके स्वार्थोंपर आघात होनेकी आशंका है, वे उन्हें बरगला देते हैं। वे सोचते हैं कि यह आदमी बागी बना रहेगा, तो इसकी बदौलत हम अपना स्वार्थ सिद्ध करते रहेंगे, अपनी 'पोजीशन' बनाये रखेंगे, अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखेंगे। भिन्न-भिन्न प्रकारके स्वार्थ हैं—मान-प्रतिष्ठा, धन-दौलत, आतंक आदिके। अगर यह हाजिर हो जाता है, तो हम गये! इसलिए वे तरह-तरहकी भ्रामक बातें करके उन्हें बरगला देते हैं : बाबाके सामने समर्पण करनेसे क्या लाभ? वह तुम्हें माफी तो दिलायेगा नहीं। जेल भेजवा देगा, फिर चाहे फाँसीपर लटको, चाहे कालेपानी जाओ! ऐसी बेवकूफी करनेसे फायदा?...

× × ×

आज सायंकालीन प्रवचनमें बाबाने कहा :

सेवाके लिए जहाँ जरूरत होती है, हम जाते हैं। इसीलिए हम इस बेहड़में घूम रहे हैं। कश्मीर हम गये, पर अमरनाथ नहीं गये। हमारे देवता तो आप ही हैं। भगवान् कहीं कैलास, काशी या किसी गुफामें थोड़े ही रहता है! हम तो मानते हैं कि जितने भी देहधारी हैं, सबमें भगवान्‌का निवास है।

नौ सालसे हम ईश्वरपर श्रद्धा करके चल रहे हैं। हमारा तरीका

सियासी नहीं। हम यह नहीं मानते कि यह हमारा दोस्त है, वह हमारा दुश्मन है। हम तो यही महसूस करते हैं कि हमारा कोई भी दुश्मन नहीं है। सब हमारे परमप्रिय मित्र हैं, सब हमारे भाई हैं। सगे भाइयों-से कम किसीपर हमारा प्रेम नहीं; यह बात दूसरी है कि किसीसे हमारी बातचीत कम हो पाती है, किसीसे ज्यादा। सबपर प्रेम होना ही रूहानियतकी, ब्रह्मविद्याकी चाबी है।

ये बागी भाई बाबाके पास क्यों आये? वे बाबापर विश्वास रखते हैं। बाबाकी दाढ़ीपर विश्वास रखते हैं। वे मानते हैं कि बाबाका सबपर प्यार है। हमने कह दिया है कि बागी आयेंगे, तो हम उन्हें पुलिसके सुपुर्द कर देंगे। हाँ, इस बातकी हम कोशिश करेंगे कि उन्हें न्याय मिले, उनके साथ सख्ती न हो। इतना जानते हुए भी वे आये। एकने हमें लिखा कि हमें माफी मिल जाय, तो हम आ जायँ। पर मैं माफी देने-वाला कौन? मेरा गुनाह करता, तो मैं माफ कर देता। दूसरोंका गुनाह मैं कैसे माफ करूँ?

हमें पता चला है कि कुछ लोग आत्मसमर्पण करना चाहते हैं, पर कुछ लोग उन्हें रोकते हैं। उन लोगोंसे उनका धन्धा चलता है। पकड़ जायेंगे, तो उनका धन्धा कैसे चलेगा? जो लोग बागियोंके आत्मसमर्पण-में रोड़े अटकाते हैं, उनसे मैं कहता हूँ कि तुम समाजको तकलीफ दोगे, तो क्या भगवान्‌से तुम्हें इनाम मिलेगा? ऐसे लोगोंको भगवान् कभी क्षमा न करेगा। वे न तो समाजके हितैषी हैं, न मानवताके!

× × ×

आजके मुलाकातियोंमें बहादुरा बागीकी माँ भी थी। मुखिया आदि भी थे। सबसे बात करनेके बाद बाबाने उससे कहा: माँ, तू यहीं गाँवमें आकर क्यों नहीं रहने लगती?

बोली: बाबा, मैं तो आकर रह सकती हूँ, पर बच्चोंके साथ नहीं। बहुत दुश्मन हैं मेरे इस गाँवमें!

'बनिया तो बना ही है चूसनेके लिए !'

अड़ोखर
३० मई '६०

रास्तेमें बाबा नाश्ता करनेको खड़े हुए, तो मुझे सामने पैरमें पट्टी बाँधे देखकर पूछने लगे : पैरमें क्या हो गया है ?

अच्युतभाईने बताया : बचाने गये एक बच्चेकी जान, घाव लग गया इनके पैरमें। अभीतक ठीक नहीं हो पाया।

'तो साथमें सवारीपर क्यों नहीं चलते ?'

'यह सत्संग फिर कैसे मिले, बाबा ?'

× × ×

खूब भीड़ थी स्वागतके लिए। पिछले दिनों देहाती-ही-देहाती स्वागतार्थी रहते थे, आज पढ़े-लिखे काफी संख्यामें थे; छात्र भी थे, अध्यापक भी।

हाईस्कूलमें हमारा पड़ाव पड़ा।

यह अभागा स्कूल ! गत वर्ष २५ नवम्बरको कुछ बन्दूकधारी बागी आये और रुपया ऐंठनेके लिए यहाँके एक लड़केको जबरन उठा ले गये ! पाँच मास बाद बेचारेकी विकृत लाश ही माँ-बापके पल्ले पड़ी !

× × ×

सुभद्राकुमारी कहती थीं :

मैं बचपनको बुला रही थी, बोल उठी बिटिया मेरी।
नन्दनवन-सी फूल उठी वह छोटी-सी कुटिया मेरी।

बच्चोंको देखकर बाबाका भी वैसा ही हाल हुआ। प्रवेश-प्रवचनमें कहा उन्होंने : बच्चोंके दर्शनसे हमें बड़ी खुशी हो रही है। हम भी कभी बच्चे थे। स्कूल जाते थे, तो हमेशा हमारे सामने देशका चित्र रहता था

कि हमारा देश आजाद नहीं है, इसे आजाद करना होगा। जबतक इसे आजाद नहीं कर लेंगे, तबतक और कोई काम न करेंगे। साथ ही यह भावना भी थी कि चित्त-शुद्धि नहीं रहेगी, तो कोई अच्छा काम नहीं कर सकेंगे। दो ही बातें थीं तब हमारे सामने—चित्तकी शुद्धि बढ़े और देशकी सेवामें जीवन बीते।

हमारी बात सुनकर बच्चोंको लगता होगा कि हम क्या करें? उस समय तो आजादीकी धुन थी, पर आज क्या है? आज हमें आजादी मिल गयी है जरूर, पर दिल और दिमागकी आजादी हमें नहीं मिली। उस आजादीकी हमें बात करनी है। साथ ही कुल दुनियामें अशान्ति मची है, वह शान्ति भी लानी है। देशको सुखी बनानेके लिए जिन गुणोंकी जरूरत है, उन गुणोंको बच्चे सीखें। दुर्गुण छोड़ें। एक होकर मेहनत करें, शान्ति-सेनाका काम करें और विश्व-नागरिक बनें।

बाबाका सामान तो कुछ देरमें आ गया, पर हम लोगोंका सामान नहीं आया सो नहीं ही आया! गनीमत थी कि झोलेमें जाँघिया, गमछा रख लिया था। नहानेका काम चल गया। नहा-खाकर कुछ देर आराम।

शामके प्रवचनमें बाबा बोले :

हमें खुशी है कि पूरा समय देकर काम करनेवाले १० सेवक हमें मिल गये हैं। यह हमारी 'लक्ष्मण समिति' है—तगादा करके आपसे काम करायेगी—जैसे लक्ष्मणको देखते ही सुग्रीव बोला : क्षमा करिये महाराज, हम सब विषयी हैं। हमने वादा तो किया, पर भूल गये।* आप सब भी हमारा काम करनेको राजी हैं, पर विषय-वासनामें, संसारमें फँसे हैं। तगादा करके आपसे काम लेनेवाला आदमी चाहिए।

यहाँका इलाका आतंकग्रस्त है, भयग्रस्त है। डाकूका, पुलिसका आतंक छाया है। जो भी एकका पक्ष लेता है, दूसरा उसका विरोधी बन जाता है।

---

* नाथ विषय सम मद कछु नाहीं। मुनि मन मोह करइ छन माहीं॥
विषय-बस्य सुर नर मुनि स्वामी। मैं पाँवर पसु कपि अति कामी॥

इसका उपाय क्या है ? यही है कि सारा गाँव एक बने, नेक बने। गाँव अपनी जिम्मेदारी उठाये। सबपर अपना प्यार फैलाये। सबकी रायसे चुनाव हो। 'पंच बोले परमेश्वर।' सारे गाँवका एक परिवार बन जाय। भूमिहीनोंको जमीन मिले। दो सालका अनाज अपने खर्चके लिए गाँवमें रखें। सब भाई मिल-जुलकर अपनी समस्या सुलझायें। बहनें सर्वोदय-पात्रका काम उठा लें।

× × ×

सभाके बाद मैंने अच्युतभाईसे कहा : चलिये, हम लोग गाँवमें चलकर उस लड़केके परिवारवालोंसे बात करें, जिसे डाकू उठा ले गये थे !

स्कूल गाँवसे २-३ फर्लांगपर है। पूछते-पूछते हम लोग उस सेठके दरवाजेपर जा पहुँचे। मालूम हुआ कि मारे गये लड़केका पिता तो भिण्डमें रहता है, यहाँ उसके पिताके एक चाचा हैं। हमने कहा : ठीक है, हम उन्हींसे बात करेंगे।

हमारे लिए एक चारपाई बिछा दी गयी। लड़केके बाबासे हमारी बातें हुईं।

बड़ी करुण कहानी सुनायी उन्होंने अपहरणकी।

पिछले नवम्बरकी बात है। शामको तीन बजेका वक्त था। लड़का स्कूलमें पढ़ रहा था। सात डाकू आ गये बन्दूकें लेकर। पाँच डाकू स्कूलके बाहर इधर-उधर दूरपर खड़े हो गये। दो डाकू उस दर्जेमें घुस गये, जिसमें लड़का था। किसीने बता दिया कि यह है सेठका बेटा। उसे पकड़कर वे लोग बाहर खींच ले गये और फिर सातों जने उसे लेकर चल दिये। बगलके गाँववालोंने एक लड़केको इस तरह डाकुओंके हाथमें पड़ा देखा, तो उनमेंसे एक भला आदमी दौड़ा उसे बचानेको। डाकुओंने कहा : जानकी खैर चाहो, तो मत आओ हमारे रास्तेमें। पर वह नहीं माना। डाकुओंने उसे गोलियोंसे भून दिया !

उसके बाद भारी रकमकी माँग की जाने लगी। कभी एक लाख माँगा, कभी पचास हजार। कई महीने चलती रही यह बात। लड़केके

हाथसे ही चिट्ठी लिखवाकर भेजते थे ये लोग। कई बार बापको बुलाया, पर बाप इस डरसे नहीं गया कि बेटा तो फँसा ही है, उसे भी कहीं इसी तरह न फाँस लें।

यह भी देखा गया कि डाकू लोग लड़केके साथ बड़ा दुर्व्यवहार करते थे। खाने-पीनेको भी तंग करते थे। जूतेमें उसे दाल परोसकर दी जाती थी!

लड़केके घरवाले मुँहमाँगी रकम न दे सके और तब ५ महीने बाद डाकुओंने लड़केको मारकर उसकी लाश भिण्ड नगरके खास चौराहेके पास फेंक दी! कलेजा थामकर रह गये सब लोग!

× × ×

लड़केके बाबाने कहा कि बड़ी उम्मीद थी कि जो हुआ सो हुआ, पर अब तो भगवान् कृपा करेंगे, पर सो भी नहीं हुआ। अभी हालमें उस लड़केकी एक बहन हुई है, भाई नहीं!

हम लोग चलने लगे, तो सेठ हमें स्कूलतक पहुँचाने आये। बताया उन्होंने कि इस स्कूलके बनवानेमें उनके परिवारका बड़ा हाथ है। गाँवमें और आसपास सबके साथ उनका अच्छा व्यवहार है। पर क्या किया जाय? बनियाको तो हर कोई चूसता है!

उनके दुःखसे समवेदना प्रकट करते हुए हमने उन्हें बहुत समझाने की कोशिश की कि यह जातिका प्रश्न नहीं है, पैसेका लोभ है, जो ये सारे अनर्थ कराता है। पर वे अपनी ही बात बार-बार दोहराते रहे : आप मानें न मानें, बनिया तो बना ही है—हरएकके चूसनेके लिए! जो भी होता है, बनियाको चूसे बिना नहीं रहता।

सेठकी बात रह-रहकर मेरे कानमें खटकती है :

'बनिया तो बना ही है चूसनेके लिए!'

बुरे कामोंका साफ इजहार करो !

जरसेना
३१ मई '६०

आजका डेरा भी स्कूलमें है। देखा कि रंउझासे चला हुआ हमारा सामान यहाँ पहुँचा हुआ है। कल बैलगाड़ियाँ न मिलीं, तब जीपसे भिण्डका लम्बा चक्कर काटकर ये लोग इधर आये। फिर अड़ोखर जानेकी कोशिश भी की, पर ठीक रास्ता न मिलनेसे थककर यहीं लौट आये।

कदम साहबके पास जेबी रेडियो कल ही देखा था और कुछ समाचार भी सुना था। आज दोपहरमें देरतक सुनता रहा। विनोबा द्वारा महेंदवाके छात्रावासके उद्घाटनका समाचार भी सुननेको मिला।

× × ×

आज अपराह्नमें चम्बलघाटी शान्ति-समितिकी बैठक हुई। संयोजक हेमदेव शर्माने इतने दिनकी प्रगतिका विवरण सुनाया। बताया कि बागियोंके घरवालोंसे और गाँववालोंसे मिलकर यह देखा कि लोग शान्तिकी बात प्रेमसे सुनते हैं। जमीन आबाद करनेको तैयार हैं। पीड़ितोंके बच्चोंसे कोई द्वेष नहीं। सबने अपनी-अपनी रिपोर्ट दी। जनरल साहब बोले : हमसे कोई एक सौ आदमियोंने वादा किया कि हम लाखनसिंहसे आपकी भेंट करा देंगे, पर अभीतक कोई भेंट नहीं करा सका !

× × ×

सायंकालीन सभामें बाबाने कहा :

जिन बागी भाइयोंने समर्पण किया है, उनसे हमने साफ कह दिया था कि तुम्हें न्याय मिलेगा, फिर भी वे आये। उन्हें हमने माफीका कोई आश्वासन नहीं दिया। जिन्होंने कई कत्ल किये, कई डाके डाले, उन्हें

माफीका आश्वासन मिलता, तो उनके आनेकी कोई कीमत नहीं थी। पर इनके समर्पणकी कीमत इसीसे है कि ये लोग न्यायकी बात सुनकर चले आये। एक भाई तो बम्बईसे चलकर आये।

इन लोगोंपर जो आक्षेप लगाये जायँ, उनमेंसे जो सही आक्षेप हों, उन्हें वे साफ जाहिर कर दें। अपने बुरे कामोंका साफ इजहार करें। जो आक्षेप गलत हों, उनसे इनकार करें। तभी उनका पश्चात्ताप सही ठहरेगा। पश्चात्तापके साथ सत्यनिष्ठा होती ही है। सचाईकी यह राह खुल गयी है। हम सबको भी अपनी परीक्षा करनी चाहिए और अपना-अपना दिल साफ कर डालना चाहिए।

यह नित्यानन्द, यह श्रीराम गुप्ता, ऐसे ही कई भाई पूरा समय देकर हमारा शान्तिका, प्रेमका काम करनेवाले हैं। ये लोग घर-घर हमारा सन्देश पहुँचायेंगे। सब लोग अपने दिल साफ कर डालें, वैर-विरोधका भाव निकाल डालें और सचाईपर चलें, तो भिण्डमें क्रान्ति हो जायगी और यह क्षेत्र 'साधु-क्षेत्र' बन जायगा।

× × ×

शामको छतपर बाबा परशुरामकी अध्यक्षतामें शान्ति-समितिकी बैठक हुई। लल्लूदादाने बाबाजीसे मेरा परिचय कराते हुए कहा : बाबा, ये भी हमारे इटावा जिलेके हैं।

जनरल साहब चुटकी लेते हुए बोले : 'नदी उस पारके नहीं, इस पारके !' शायद उन्हें किसीने बता दिया है कि मेरा जन्म लहारमें हुआ है, जहाँ पिताजी उस जमानेमें प्रधानाध्यापक थे।

सारी बन्दूकें लाकर रख दो मेरे पास

वरहद
१ जून '६०

वरहद पहुँचकर जबतक बाबा हाथ-मुँह धोने गये, तबतक एक भाईने गाया :

तू तो राम सुमिर जग लड़वा दे।...

महाराष्ट्रीय होनेके नाते वह हिन्दी भजन अधिक नहीं जानता। इसलिए इस भजनकी समाप्तिपर उसने एक मराठी भजन शुरू किया :

रूप पाहतां लोचनीं सुख झाले हो साजणी ॥
तो हा विठ्ठल बरवा तो हा माधव बरवा
बहुतां सुकृताची जोडी।
म्हणूनी विट्ठलीं आवडीं सर्व सुखाचे आगर।
बाप रखुमा देवी वर ॥

भजन पूरा नहीं हो पाया था, तभी बाबा मंचपर आ गये। भजन अधूरा छोड़कर वह भाई बैठ गया, तो बाबाने उसकी अद्भुत व्याख्या कर डाली। बोले : भिण्डमें पण्ढरपुरका यह भजन! आप लोगोंने समझ नहीं पाया होगा। आइये, आपको इसका अर्थ समझाऊँ। महाराष्ट्रमें कीर्तनके पहले यही भजन गाया जाता है।

आँखोंसे भगवान्‌का रूप देखा, उससे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। रोज हम नया रूप देखते हैं, नये चेहरे। बड़ी प्रसन्नता होती है हमें। इसमें सन्देह नहीं कि हम जो रूप देख रहे हैं, वह भगवान्‌का ही रूप है। पिण्डमें ब्रह्माण्ड है। छोटे-बड़े दोनों एक हैं। मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष—सब उसीका रूप हैं। सेवाके लिए भगवान्‌ने ये तरह-तरहके रूप लिये हैं।

इस गीतके साथ विट्ठल, माधवका नाम लिया जाता है। भगवान्‌के अनन्त नामोंमेंसे कई नाम लेते हैं। यह रूप भगवान्‌का है, ऐसा समझकर भक्ति-भाव पैदा होना चाहिए। ज्ञानेश्वर कहते हैं कि अनन्त पुण्योंका उदय होनेपर ऐसी भावना पैदा होती है कि ये सब रूप भगवान्‌के हैं।

मेरे लिए आप सब भगवान्‌की ही मूर्ति हैं। आप सवाल करेंगे कि एक भगवान् दूसरेको गोली मारता है, तो किसे भगवान् मानें ? इसलिए पहले भगवान्‌की पूजा करते हैं, फिर दर्शन।

यह 'औतार'—हमारे बागियोंकी टोलीका है, मित्रोंकी टोलीका है। इसे खादी पहना दी। थोड़ा साफ-सुथरा कर लिया। अब इसका दर्शन सुन्दर है। बालकको माँ नाक, आँख साफ करके काजल लगा देती है। कैसा सुन्दर लगता है ! भगवान्‌का दर्शन करना है, तो भिण्ड जेलमें जाकर देखो। कैसे साफ-सुथरे हैं वे लोग अब। पहले डाका डालते थे, तब भयंकर रूप था !

तुलसीदास रामायण पढ़ते थे। एक कुष्ठरोगी आकर सुनता। लोग हटाना चाहते, तो तुलसीदास कहते, मत हटाओ। रामायणमें कहीं गलती कर बैठे, तो उस कुष्ठरोगीने बतायी गलती। तब पता चला कि ये तो हनुमान् हैं ! उनका दर्शन हुआ। भगा देते तो फेल हो जाते।

पता नहीं, यहाँ भगवान् किस-किस रूपमें हैं। वे पिस्तौल लेकर आयें और मैं डर जाऊँ, तो मैं फेल ! प्रसन्न होऊँ, प्यार करूँ, कहूँ—बहुत अच्छा ! तो भला चलेगी मुझपर गोली ?

भगवान्‌का रूप पहचाननेकी जरूरत है। उसे सँवारो, सजाओ, प्यार करो, तो यह भिण्ड-क्षेत्र धर्म-क्षेत्र बन जायगा।

× × ×

आज मन्दिरके भीतर और बाहर हमारा पड़ाव है। भीतर पहुँचते ही महादेवी ताईने बताया कि गाँवमें दो पार्टियाँ हैं, तुम लोग कुछ कर सको, तो करो।

दिनभर हम लोग कभी इधरके लोगोंको समझाते रहे, कभी उधरके लोगोंको। सरपंच, पटेल, वकील, ठाकुर, सेठ—कुछ इधर हैं, कुछ उधर। दोनों अपने-अपने पक्षकी बात करते हैं, अपनेको निर्दोष और दूसरेको दोषी बताते हैं। अहंकार, कुलीनता, मत्सर, पदप्रतिष्ठा तो इस वैमनस्यकी जड़ है ही, भारी उत्पातका साधन है—बन्दूक। दोनों पक्षोंके पास बन्दूकें हैं। पग-पगपर उसकी धमकी दी जाती है।

तीसरे पहर एक भाईके घरपर हम लोग चर्चा कर रहे थे, अचानक उसके मुँहसे निकला : आप हमें सिर्फ एक माउजर और १२ बोरकी दो बन्दूकें दिला दीजिये, फिर हम आपसे कुछ न माँगेंगे।

मैंने हँसकर कहा : आप हमसे बन्दूकें माँगते हैं और हम उल्टे आपकी ही बन्दूकें छुड़ाना चाहते हैं !

बोला : फलाँ बागी अभी बाहर है। उससे हमारी दुश्मनी है। वह हाजिर हो जाय, तो हम अपनी बन्दूकें अभी आपको सौंप दें।

× × ×

तीसरे पहर हम लोग इन दोनों दलवालोंको बाबाके पास लाये। अच्युतभाईने स्थिति समझाते हुए कहा कि अच्छा हो, आप दोनोंसे अलग-अलग बातें करें। बाबा बोले : नहीं, मैं दोनोंसे इकट्ठे बात करूँगा।

और क्या बात की बाबाने उनसे ?

यही कहा उन्होंने : तुम लोग अपनी सारी बन्दूकें लाकर रख दो मेरे पास ! ये बन्दूकें ही सारी खुराफातकी जड़ हैं। इनके रहते वैर-विरोध मिट नहीं सकता।

× × ×

आज यहाँ पंचायत-सम्मेलन भी है। उसमें पंचोंको समझाते हुए बाबाने यही बात फिर दोहरायी कि सब लोग मेरे पास बन्दूकें लाकर जमा कर दें, तो सारे टण्टे समाप्त हो जायँ।

बाबाने कहा : पुराने जमानेमें ग्राम-पंचायत होती थी। लोग उसका फैसला मानते थे। इधर स्वराज्यकी सरकारमें फिरसे पंचायतोंकी स्थापना

हो रही है, पर आज 'पाँच बोले परमेश्वर' नहीं है, 'चार बोले परमेश्वर', 'तीन बोले परमेश्वर' हो रहा है। चुनावके कारण गाँवमें आग लग गयी है। तुम्हारी पंचायत तभी ठीक मानी जायगी, जब तुम फैसला करो कि 'पाँच बोले परमेश्वर'—हम सारा फैसला एकमतसे करेंगे।

इस गाँवमें बालि-सुग्रीवका युद्ध चल रहा है। दोनों भाई आपसमें लड़ रहे हैं। हमने उनसे पूछा : 'क्यों भाई, लड़नेमें तुम्हें खूब मजा आता है ?' बोले : 'नहीं बाबा, हम लड़ाईसे तंग आ गये हैं।' हमने पूछा : 'कितनी बस्ती है गाँवकी ?' बोले : पचीस सौ। 'बन्दूकें कितनी हैं ?' 'पचीस-छब्बीस !' हमने कहा : तो फिर जैसे घर-घर चूल्हा है, वैसे घर-घर बन्दूक बढ़ाओ ! कितने शर्मकी बात है कि तुम्हें बन्दूक रखनी पड़ती है !

मैं तुम्हारे 'मजेमें' फर्क नहीं डालना चाहता। लेकिन अगर तुम तंग आ गये हो, तो सारी बन्दूकें लाकर रख दो मेरे सामने !

तुमने ये बन्दूकें क्यों रखीं ? डाकुओंके डरसे ! तुम खुद डाकू बन बैठे ! डाकू तुम्हारे दिलके भीतर आकर बैठ गया ! ये बन्दूकें किसी कामकी नहीं। इसलिए इन्हें आजसे बिलकुल छोड़ दो। रामजीका नाम लो, सारी जमीन गाँवकी बना दो और सब लोग मिल-जुलकर प्रेमसे रहो। आपसका सारा झगड़ा भूल जाओ ! फिर तो तुम्हारा गाँव गोकुल-वृन्दावन बन जायगा।

× × ×

देखना है कि बन्दूक छोड़ देनेकी बात बरहदवालोंको कहाँतक पटती है ! अगर वे ऐसी हिम्मत कर डालें, तो भिण्डमें ही नहीं, सारे भारतमें उनका नाम अमर हो जायगा !

भय मिटेगा—गाँवको एक बनानेसे

छेमका

२ जून '६०

प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने भिण्ड-क्षेत्रमें कार्य करनेकी योजना बताते हुए कहा कि भिण्डका यह क्षेत्र सेवाके लिए बहुत अच्छा क्षेत्र है। छोटा-सा जिला है। मेरे जैसा कोई घुमक्कड़ घूमता रहे, तो महीनेभरमें पूरा चक्कर लगा सकता है। १२ महीनेमें १२ चक्कर। एक दिनमें दो गाँवोंमें जा सकते हैं। सुबह एकमें, शामको दूसरेमें। २५ दिनमें ५० गाँवोंमें घूम सकते हैं। फिर लोग पाँच दिन इकट्ठे बैठकर चर्चा कर लें, अनुभव सुनायें और आगेका काम तय करें। इस तरह ५०० गाँवोंको १० आदमियोंमें बाँटकर काम करें। हर गाँवमें दो-दो, चार-चार सेवक खड़े करें। हमारे ये नित्यानन्द, सर्वोदयानन्द, बाबा परशुराम जैसे साधु प्रयत्न करें, तो इस क्षेत्रको 'साधु-क्षेत्र' बनते देर न लगे। गाँव-गाँव सर्वोदयका संदेश पहुँचाइये और ग्राम-स्वराज्य स्थापित करिये। इससे अशान्ति रुकेगी और जो बागी अभी नहीं आये हैं, वे भी आ जायेंगे।

× × ×

आज डाकबंगलेमें हमारा निवास है। छोटा-सा बंगला है, पर अच्छा है। इसके आसपास कृषि आदिके शिक्षणका कुछ कार्य चलता है। अधूरेसे बने क्वार्टरोंमें हम लोग ठहरे।

तीसरे पहर दो कम्युनिस्ट भाई बाबासे मिलने आये। बातोंके प्रसंगमें उन्होंने कहा : अभी इस इलाकेका भय पूरे तौरसे दूर नहीं हुआ। गाँवोंमें कुछ लोग पुलिससे मिले हैं, कुछ डाकुओंसे और कुछ लोग तो दोनोंसे मिले हैं! अमुक पार्टीवाले डाकुओंको छिपाते हैं। उनसे अपने चुनावका मतलब साधते हैं और लोगोंको डरा-धमकाकर अपना उल्लू सीधा करते

हैं। हमने तो यहाँतक देखा है कि एक आदमीके घरपर नीचे पुलिसवाले ठहरे हैं, ऊपर डाकू। एक ही थालीसे नीचे पूड़ियाँ परोसी जाती हैं पुलिसको, ऊपर परोसी जाती हैं डाकुओंको !

बाबा बोले : इसीलिए तो मैं ग्राम-स्वराज्यपर इतना जोर देता हूँ— न कोई पार्टी रहे, न कोई दल। सब मिल-जुलकर गाँवका परिवार बना लें। न व्यक्तिगत मालिकी रह जाय, न ऊँच-नीच या बड़े-छोटेका भेद। फिर कहाँ रहेगा डाकू, कहाँ रहेगी पुलिस ?

× × ×

एक भाईने शिकायत की कि उसपर डकैतीका मुकदमा चला था, पर उसमें वह निर्दोष छूटा। तबसे उसपर निगरानी कायम है। वह लुहार है। चार-छह रुपयेकी रोज मजदूरी कर सकता है, पर उसपर रोक लगी है। उसने वचन दिया है कि मैं कभी चोरी न करूँगा, फिर भी उसकी निगरानी नहीं छूटती।

बाबाके पैर छूकर बोला : बाबा, मैं वचन देता हूँ कि कभी चोरी न करूँगा ! आप मेरी निगरानी छुड़वा दें।

बाबाने तलाश कराया, तो पुलिसका एक दारोगा मिला। उससे कहा, तो बोला कि बाबा, मुझे इसका अधिकार नहीं। सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब (पुलिस) चाहें तो इसकी निगरानी छूट सकती है।

'अच्छा, देखेंगे !'

× × ×

तभी बाबाको याद पड़ी बरहदकी बात। अच्युतभाईसे बोले : तुम वहाँ फिर गये नहीं, मियाँ ?

"बाबा, उन लोगोंने यहीं आनेको कहा था। नहीं आयेंगे, तो जाकर फिर खटखटाऊँगा। शायद कुछ काम बन जाय।"

× × ×

सायंकालीन सभामें बाबाने कहा :

आज एक भाई बता रहे थे यहाँकी हालत। कह रहे थे कि अभी पूरा

भय नहीं गया। गाँव-गाँवमें पार्टियाँ हैं, पक्ष हैं। कुछ डाकुओंके साथ हैं, कुछ पुलिसके। मैं कहता हूँ कि ऐसा जादू तो है नहीं कि एक शख्सने घूम लिया और बस भय खतम! कुछ लोगोंने पश्चात्ताप किया, शस्त्र डाल दिये। एक हवा बनी। अब यह जरूरी है कि गाँव-गाँव जाकर लोग समझायें। तब जाकर निर्भयता आयेगी।

सारा गाँव एक बने। गाँवका एक परिवार बने। पार्टीबन्दी बिलकुल बन्द हो। ग्राम-समाजमें पार्टीवाला कोई आदमी खड़ा ही न किया जाय। ग्राम-पंचायतोंमें, म्युनिसिपल कारपोरेशनमें पार्टियोंके उम्मेदवार खड़े करनेकी क्या जरूरत है? पार्टीवालोंके कारण जाति-भेद, धर्म-भेद, स्वार्थ-भेद, डाकू-समस्या सबको बढ़ावा मिलता है। इसे मिटाकर गाँवको एक बनाना चाहिए। गाँवको तो पार्टीसे बरी रखिये। इससे डर खतम करनेमें मदद मिलेगी।

इस धर्मक्षेत्रमें तो सब एक हो जाओ। एक होनेके लिए पार्टीकी बात छोड़नी पड़ेगी। ऊपरके लिए भले चुनाव लड़ो, पर गाँवमें क्यों लड़ते-झगड़ते हो? सब मिलकर समाजकी सेवा करो। टुकड़े-टुकड़े करके समाजकी सेवा करनेका कोई मतलब नहीं। गाँवके टुकड़े मत करो। सबको मिलाकर एक बनाओ। टुकड़ोंके रहते गाँव कैसे खड़ा होगा? जो भी पीड़ित हैं, भयग्रस्त हैं, विधवाएँ हैं, अनाथ हैं, बूढ़े हैं, हरिजन हैं, डाकुओंसे पीड़ित हैं, पुलिससे पीड़ित हैं, सबकी सेवा करना हमारा धर्म है। तभी यह भय दूर होगा।

चोरको जेल, तो संग्रहीको भी जेल हो !

तुकेड़ा
३ जून '६०

बम्बईसे फिल्मवाले एक भाई आये हैं। डाकुओंके बारेमें एक फिल्म तैयार कर रहे हैं। आज तुकेड़ाके पड़ावपर पहुँचनेके पहले उन्होंने बाबा-के कितने ही चित्र लिये। रामऔतारके भी।

प्रवेश-प्रवचनके पहले लोकेन्द्रभाईकी खँजड़ी बोल उठी लोकभाषामें :

लगन लागो नीको, हुइगौ ग्रामदान जब ही तें।

बाबा आकर बोले :

आज बम्बईके एक भाईसे बात हो रही थी। डाकुओंका एक फिल्म बनाया जा रहा है। दुनिया जानती है कि डाकुओंका जीवन बुरा है। उनका धन्धा बुरा है, पापका है। उसे अच्छा समझनेवाला तो कोई है नहीं। गृहस्थ जीवन, खेतीवाला जीवन बहुत अच्छा है। डाकुओंका जीवन बहुत बुरा है। यह बात हम सब जानते हैं, तब ऐसे फिल्मका क्या उपयोग ? होना तो यह चाहिए कि समाजको यह बताया जाय कि डाकू बनते कैसे हैं ? समाज ऐसी हालतें पैदा कर देता है, जिससे लोगोंको यह बुरा काम करनेकी प्रेरणा होती है। समाजको जबतक ऐसा एहसास नहीं होगा कि हमारी बुराइयाँ ही इस रूपमें प्रकट हो रही हैं, तबतक यह हालत सुधरनेवाली नहीं।

शहरवाले लोग मानते हैं कि डाकू लोग खूँख्वार होते हैं। इन्हें पुलिस और फौजके जरिये खतम कर देना चाहिए। एक भाईने एक चित्र बनाया है, कार्टून बनाया है, जिसमें बाबाके पीछे-पीछे शेर चला आ रहा है ! डाकूको उसने शेरकी शक्ल दी है। यह खयाल शहरवालोंका है। उनका सारा जीवन पुलिस और फौजके बलपर टिका है, क्योंकि उनका

जीवन शोषणसे भरा पड़ा है। उन्हें सारे बचावोंकी जरूरत पड़ती है: जेल, अदालत, वकील, पुलिस, सेना !

ये सब शहरवाले शान्ति चाहते हैं। मैं भी शान्ति चाहता हूँ। ये लोग समाजकी हालतको ज्यों-का-त्यों कायम रखते हुए चाहते हैं। मैं उसकी बुनियाद बदलकर, क्रान्तिके साथ शान्ति चाहता हूँ।

पुराने समाजके लोग मानते थे कि चोर-डाकू बुरे हैं। धर्म परिपूर्ण होता है—अस्तेय और अपरिग्रहसे। पतञ्जलि, बुद्ध—सबने कहा कि चोरी नहीं करनी चाहिए, पर साथ-साथ यह भी कहा कि संग्रह भी नहीं करना चाहिए। इन लोगोंने एक बातको मान लिया कि चोरी करना बुरा है, पर दूसरी बात नहीं मानी कि संग्रह करना भी बुरा है। उल्टे जिसके पास संग्रह होता है, ज्यादा संग्रह होता है उसे 'सेठ' कहते हैं, आदर देते हैं। संग्रहवालेको तकिया देते हैं, चोरीवालेको जेल। सीधी-सी बात है कि अगर चोरीवालेको जेल देनी है, तो संग्रहवालेको भी जेल देनी चाहिए। एकांगी धर्म कभी नहीं टिक सकता !

भरी दोपहरीमें भूताजीकी जीपसे हम लोग बरहदके लिए रवाना हुए। अच्युतभाई, लल्लूदादा, जगदीशजी और मैं। भूताजीसे हम लोगोंने कहा : 'बाबूजी, आपकी तबीयत अभी ठीक नहीं, चिलचिलाती धूपमें मत चलिये, कुछ देर बाद ही चल सकते हैं।' पर उन्होंने कहा : 'कोई हर्ज नहीं।' गाँवके बाहर हमें उतारकर भूताजी भिण्ड चले गये।

दोनों पक्षवालोंसे हम लोग मिले। कहा : बन्दूकें रहते हुए भी जब तुम लोग डरते हो, तो ऐसी बन्दूकोंसे फायदा ? छोड़ो इस डरको। तमाम बन्दूकें ले चलकर विनोबाके चरणोंमें डाल दो और कह दो कि चारों ओर डाकुओं और बन्दूकोंसे घिरे रहते हुए भी आपके समझानेसे हममें इतना साहस आ गया है कि हम अब बन्दूकें छुयेंगे नहीं।

खूब चली बातें। अन्तमें बात यहाँतक आ गयी कि एकने कहा : हम अपनी सारी बन्दूकें ले आते हैं, उधरवाले भी अपनी सारी बन्दूकें ले आयें।

इधर दो दिनके बीच वह बागी घायल होकर गिरफ्तार हो चुका था, जो यहाँके कुछ लोगोंके लिए आतंकका बड़ा कारण बना था।

दोनों पक्षके तमाम लोग सारी बन्दूकें ले आयें, इसपर टालमटोल चलने लगी। पर दोनों पक्षके एक-एक, दो-दो आदमी तो बन्दूक लेकर हमारे साथ चलनेको एकदम तैयार हो गये।

मैंने कहा : बन्दूक छोड़नेका मतलब यह नहीं कि आप बन्दूकके बदले लाठी उठा लें। उसका मतलब है—हिंसाकी भावना छोड़ देना, परस्पर विरोध समाप्त कर देना। इस तैयारीके साथ आप बन्दूक छोड़ें, तो उसका कोई मतलब भी है। वरना अभी तावमें आकर आपने बन्दूक छोड़ दी और कल आप सोचने लगे कि कैसी बेवकूफी की, तो इससे काम नहीं चलेगा। हम तो चाहेंगे कि बन्दूक छोड़कर आप एकदम निर्भय बन जायँ, एकदम निर्वैर बन जायँ।

हमारी बातें उन्हें जँच तो रही थीं, पर हिम्मत नहीं पड़ रही थी। साथ ही हमें यह भी लगा कि वैर-विरोधकी भावना अभी निर्मूल नहीं हो पायी है। इसलिए ये दाँवपेंच चल रहे हैं।

यह स्थिति देखकर हमने उन लोगोंको यों ही हृदय-मंथनके लिए छोड़ दिया। कह दिया : अगर आप लोगोंके दिल साफ हो जायँ, जीका डर निकल जाय, तो आप लोग अपनी बन्दूकें लेकर मुरार आ जाइये या ग्वालियर। भावावेशमें आकर कोई काम मत करिये।

× × ×

शाम हो रही थी। लल्लूदादा तो 'मिशन'पर कहीं दूसरी जगह निकल गये। हम लोग बससे तुकेड़ा चल दिये। बसमें ही मिल गये शिवहरेजी—पुस्तकोंके तीन भारी बक्सोंके साथ। सर्वोदय-साहित्य लेनेके लिए वे गये थे भिण्ड। उनके साथ नये समाचारपत्रोंका बण्डल भी था। उलटा तो ग्वालियरकी 'हमारी आवाज'में मोटे हेडिंगमें छपा था :

तहसीलदार सिंहको फाँसी न दी जायगी

राष्ट्रपति द्वारा मृत्यु-दण्ड आजन्म कारावासमें परिवर्तित !

सरकार पहले, भगवान् बादमें

बरेठा (ग्वालियर)
४ जून '६०

बहुत छोटा-सा गाँव है यह बरेठा। सुबह बाबाने गाँववालोंसे प्रश्नोत्तर करके यहाँकी स्थितिका तखमीना लगा लिया। ३० घर, २५० आदमी। २ हरिजन—१ चमार, १ धोबी। २ कुएँ। दोनोंपर हरिजन पानी भरते हैं। १०० लड़के, २ मास्टर। ७०-७५ फीसदी हाजिरी और ७० फीसदी पास। अच्छी काश्त। रहँटसे पानी। पासमें छोटी नदी। बेजमीन कोई नहीं। सालभर खेतमें काम। धन्धे कोई नहीं।

प्रभुदयाल पटवारीने बताया : आसपासके ५ गाँवोंमें २०० घर, १६०० एकड़ जमीन। बेजमीन कोई नहीं। कोल्हू १ है। सरसों देकर तेल लेते हैं। चमार जूतेका काम नहीं करता। कोई पार्टी नहीं, कोई झगड़ा नहीं। पानीका साधन हो जाय, बाँध बन जाय, तो फसल बढ़ जाय। बाँधके लिए गाँववाले श्रम करनेको तैयार। व्यसनमें बीड़ी-सिगरेट चलती है, शराब-फराब नहीं! भजन-कीर्तन भी चलता है। कोई तकलीफ नहीं, कोई कष्ट नहीं, कोई माँग नहीं!

कैसा सुन्दर, आत्मतुष्ट ग्राम!

× × ×

आज हम भिण्ड छोड़कर ग्वालियर जिलेमें आ गये। खचेरेको बाबा कल ही पुलिसके सुपुर्द करना चाहते थे शामको, पर सोचा, आज सबेरे ही दे देंगे। सुबह जब कहा, तो कलेक्टर साहब टायटसने और कमिश्नर साहब चटर्जीने कहा : हमारे पास उसका वारण्ट ही नहीं!

लिहाजा वह छोड़ दिया गया। शामको वह बसपर बैठकर चल दिया अपने गाँव।

× × ×

दोपहरमें नदीपर हम लोग नहाने गये। छोटी-सी पथरीली नदी। कहीं तो पानी नाममात्रका, कहीं थोड़ा गहरा। पुलके पास तैरनेके लिए हमें कुछ पानी मिल गया।

नहा-धोकर आये, तो देखा, घर-घर जाकर खाना खानेका प्रबन्ध है। एक-एक, दो-दो अन्तेवासी इधर-उधर बिखर गये। भोजन सादा ही था, पर आदर, श्रद्धा और प्रेमसे सराबोर था। सबके मनमें यही था कि कितना न खिला दें आज हम अपने इन अतिथियोंको!

× × ×

शामकी सभाके पहले पासके गुठीना गाँवके प्यारेलालने अपनी छोटी-सी तुकबन्दी सुनायी :

> अब भारतमें जनमे एक विनोवा बाबा बरदानी।
> नौ बरससे करी पदयातरा जनताने जानी॥
> मिण्ड-मुरैनामें डाकू-समस्या आयके सुलझानी।
> जा टुकड़ामें नहर नायनें बड़ी परेसानी॥…

(नहर नहीं है इधर बड़ी परेशानी है!)

बाबाने अपने प्रवचनमें कहा :

आज किसान-सभाके दो भाई हमसे मिले। अच्छे कार्यकर्ता हैं। कहने लगे कि सीलिंगके कानूनसे गरीबोंको जमीन मिलनेवाली नहीं। मैंने कहा : इसीलिए तो मैं सरकारके पीछे नहीं लगा। आज लोग सरकारको पहले याद करते हैं, भगवान्‌को बादमें। हर कामके लिए सरकारका मुँह ताकते हैं। हर बातका दारोमदार सरकारपर रखनेसे देश निर्वीर्य बनता है। अपने बलपर हमें खड़े होकर अपने मसले आप हल करने चाहिए। अपने-आप अपनी योजना बनाकर चलानी चाहिए और तब सरकारसे मदद माँगनी चाहिए।

गाँव-गाँवको एक बनाओ और ग्राम-स्वराज्यकी नींव डालो। अपनी अन्तर्शक्तिको जगाओ। सब समस्याएँ अपने-आप हल हो जायँगी। ●

पुलिसको सोलह आना श्रेय, बशर्तें कि...!

मुरार
५ जून '६०

आज सवेरेकी भीड़का क्या कहना ! दर्शनार्थियोंका वह रेला आया कि कदम रखना दूभर हो उठा। बृहत्तर ग्वालियरकी सीमापर महापौर शेजवलकर साहबने नगरके पार्षदों, विधायकों आदिके साथ विनोबाका स्वागत किया। अत्यन्त चौड़ी सड़कोंके बावजूद रास्ता पाना मुश्किल हो रहा था। जैसे-तैसे हम लोग मुरार हाईस्कूलके विशाल भवनमें प्रविष्ट हो सके।

प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने कहा :

अभी एक विवाद चल रहा है। कुछ डाकू—बागी—अपने हथियार छोड़कर बाबाके पास आये। पुलिस दावा करती है कि यह सब उसके कई सालके पराक्रमका परिणाम है। इसके लिए पुलिस रुपयेमें १५ आना श्रेय माँगती है। मैं तो पुलिसको १६ आना श्रेय देता हूँ, बशर्ते कि वह यह माने कि वह लोक-सेवाके लिए है।

मैंने अभी उस दिन अम्बाहमें कहा ही था कि पुलिसका काम सत्पुरुषसे कठिन होता है। पुलिसका काम फौजसे भी कठिन है। उसका काम योगीकी तरह कठिन है। मैं तो पुलिसको १६ आना श्रेय देनेको तैयार हूँ, बशर्ते कि पुलिस सेवापरायण हो। मेरा कुछ भी श्रेय नहीं, यह मैं कसम खाकर कहता हूँ। होता, तो मुझपर उसका बोझ होता और रातको नींद न आती। पर मैं तो आठ बजे गिरा, तैसा मरा।

यहाँ लोग पुलिससे डरते हैं। डरनेका सवाल क्या है? मुख्यमन्त्री आपके नौकर हैं और यह पुलिस तो उनके नौकरके नौकरकी नौकर है!

हमें यह एहसास होना चाहिए कि यह हमारा राज है और राज चलाने-वाले हमारे नौकर हैं।

× × ×

दोपहरमें अलग-अलग परिवारोंमें हमारे भोजनकी व्यवस्था थी। जगदीशभाई मुझे, अच्युत भाई और राजकुमारको अपने घर खींच ले गये। वहीं हम लोगोंने स्नान भी किया और तरह-तरहके व्यंजनोंवाला स्वादिष्ट भोजन भी। बाल-बच्चोंसे कुछ देर गपशप भी की।

× × ×

एक भाई अपनी सासके साथ आये बाबाके पास। बोले : आप शिवपुरीकी तरफ जा रहे हैं। हमारे सालेको उधरके बागी लोग उठा ले गये हैं। उसकी १३ सालकी पत्नी घरपर बिलखती है। हमसे उन लोगोंने १३ हजार रुपया माँगा था, हमने किसी तरह जुटाकर दिया भी। पर बादमें उन्होंने रुपया लौटा दिया और लड़केको नहीं छोड़ा।

'पूरा रुपया लौटा दिया ?'

'एक हजार रुपया बीचवाला आदमी खा गया।'

'तो ?'

'आप उधरके बागियोंसे मिलें, तो कह दें कि वे इस लड़केको लौटा दें !'

'मेरी भेट हो, तब न !'

× × ×

सायंकालीन सभा मुरारके भीतर चौकमें हुई। अच्छी भीड़ थी। बाबाने दिल और दिमागकी बात उठाते हुए कहा : आज लोगोंका दिमाग पहलेसे काफी आगे बढ़ गया है, पर दिल बहुत संकुचित है। इसीसे दुनियामें कशमकश है। उसे मिटानेके लिए दिलको बड़ा करना पड़ेगा। कुत्ता ८०० मील ऊपर उड़ जाता है, तो मनुष्यके नीचे बैठे रहनेसे कैसे काम चलेगा ?

पुराने जमानेका तरीका था, चोरी करनेवालेका हाथ तोड़ देना।

आज कोई राजी होगा इसके लिए ? सभी कहेंगे, ऐसा करना तो जिन्दगी-भरके लिए आदमीको बेकार बनाना है। पुराना न्याय-देवता कहता था कि खून करनेवालेको फाँसीपर लटका देना चाहिए। कल ही पढ़ा कि राष्ट्रपतिने फाँसीकी सजा आजीवन कारावासमें बदल दी। पुराने लोग इसे गलत ही बताते। अब तो चोरको सजा देना भी पुरानी बात मानी जा रही है। मेरे सामने कोई केस आये, तो मैं २ साल कैदके बजाय २ एकड़ जमीन दूँगा।

भिण्डमें हमने छोटा-सा प्रयोग किया। उसका भारतपर ही नहीं, बाहर भी असर हो रहा है। सारे विश्वका ध्यान इस ओर खिंच रहा है। जर्मनीसे आज एक पत्र आया है, उसमें लिखा है कि आपको इस काममें यश मिले ! यदि सख्तीसे कुछ डाकुओंको खतम कर दिया होता, तो क्या जर्मनीसे ऐसा पत्र आता ? प्रेम-शक्तिसे डाकुओंका दिल जीतनेसे कुल दुनियापर असर होगा। एटम बमसे भी ज्यादा ताकत है इसमें। इसीलिए इसकी ओर लोगोंका आकर्षण होता है। प्रेम, क्षमा और करुणाकी शक्तिको विकसित करनेसे ही दुनियाके मसले हल होंगे। संतोंने व्यक्तिगत जीवनमें जो शक्ति दिखायी, उसीका हमें समाजीकरण करना है। विज्ञानके युगमें हमारा यह नवीनतम शस्त्र है।

प्रेमके रास्तेसे क्रान्ति

लश्कर

६ जून '६०

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसीवाली रानी थी !

लक्ष्मीबाईकी पुण्य समाधि !

पाषाणकी प्रतिमा है यह या प्रेरणाकी पुञ्ज ?

लश्करमें रहते समय बचपनमें इस समाधिके दर्शन मैंने अनेक बार किये थे, पर आजका तो समाँ ही निराला था। अरुणोदयकी सुहावनी वेलामें बाबा जब मूर्तिके निकट खड़े होकर श्रद्धा-सुमन बिखेर रहे थे, तब मेरे मानस-पटपर उभर रही थीं सुभद्राकुमारी चौहानकी अनमोल कड़ियाँ :

सिंहासन हिल उठे राजवंशोंने भृकुटी तानी थी।
बूढ़े भारतमें भी आयी फिरसे नयी जवानी थी॥
गुमी हुई आजादीकी कीमत सबने पहचानी थी।
दूर फिरंगीको करनेकी सबने मनमें ठानी थी॥
चमक उठी सन सत्तावनमें वह तलवार पुरानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसीवाली रानी थी॥

× × ×

समाधिसे होकर जयेन्द्रगंज, हाईकोर्ट, लोहिया बाजार, नया बाजार होते हुए हम पड़ावपर पहुँचे। हमारा पड़ाव रखा गया है कमला राजा महिला महाविद्यालयमें। पहले बाबाका भी निवास यहीं रखा गया था, पर बादमें बदलकर बगलमें पद्मा विद्यालयमें कर दिया गया— तथागतकी विशाल भावनापूर्ण प्रतिमाके ठीक सामने।

× × ×

प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने विस्तारसे लोकतन्त्रकी खामियाँ बताते हुए कहा कि आज लोकतन्त्रका जो रूप है, वह राजशाहीसे कम खतरनाक नहीं है। मुख्यमंत्रियोंके हाथमें पाँच सालके लिए जितनी सत्ता सौंप दी जाती है, उतनी पुराने बादशाहोंको भी नसीब नहीं थी। आजके सत्ताधारी तबतक गद्दी नहीं छोड़ना चाहते, जबतक कि यमदूत आकर हटा न दे। ऐसे लोकतन्त्रसे काम नहीं चलेगा।

अन्तमें बाबाने माँग की—नकद धर्मकी। कहा कि भिण्ड-क्षेत्रको साधु-क्षेत्र बनाना है। आप सबकी पूरी सहानुभूति चाहिए। वकीलों, व्यापारियों और नागरिकोंको पूरी मदद देनी चाहिए। जिसके पास जो कुछ है—जमीन, सम्पत्ति, बुद्धि, समय—उसमेंसे वह दान करे।

× × ×

सभाके अन्तमें बाबाने वेदनारायणको नमस्कार करते हुए श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा अनूदित ७ खण्डोंमें प्रकाशित चारों वेदोंका उद्घाटन किया। बोले : तर्जुमा कैसा है, यह तो कहना मुश्किल है, पर कहते हैं कि हिन्दीमें चारों वेदोंका यह पहला अनुवाद है। मैं इसका स्वागत करता हूँ।

× × ×

आज पन्ना विद्यालयके सरस्वती भवनमें मध्यप्रदेश चेम्बर ऑफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीने २१५१) की थैली बाबाको भेट की। बाबाने व्यापारियोंके बीच बोलते हुए कहा :

व्यापारियोंके लिए मेरे हृदयमें बड़ा आदर है। हिन्दू-धर्मने व्यापारियोंको जो स्थान दिया है, वह कोई धर्म नहीं दे सकता। कहा है कि ब्राह्मण वेदाध्ययनसे जो मोक्ष प्राप्त कर सकता है, वही मोक्ष निष्काम बुद्धिसे व्यापार करके व्यापारी भी प्राप्त कर सकता है। हिन्दुस्तानके व्यापारी दयालु हैं, अहिंसक हैं, साधु हैं, भोले हैं। शब्दके भी पक्के हैं। फिर वे सर्वोदयमें क्यों नहीं आते ? गांधीजीने जमनालाल बजाजसे कहा : घरका कारबार छोड़कर सर्वोदयके काममें आओ। वे आ गये। उन्होंने व्यापारी बुद्धि सार्वजनिक काममें लगायी।

व्यापारी सर्व-जन-सेवक बनें। उन्हें किसी पार्टीसे नाता नहीं जोड़ना चाहिए। पक्षमुक्त कामको ही मदद करनी चाहिए। दूसरोंके माँगनेपर हिम्मतके साथ 'न' कहना चाहिए।

व्यापारी ही जनताका ज्यादासे ज्यादा लाभ करेंगे। वे अपनेको समाजका अंग मानकर पूरे समाजकी सेवा करें। वे गांधीका 'ट्रस्टीशिप'-का विचार उठा लें। ऐसा करनेसे व्यापारियोंकी इज्जत बढ़ेगी।

देशके निर्माणका बहुत बड़ा काम पड़ा है। व्यापारी उसे उठा लें। व्यापारी आकर कहें कि आप जितनी जमीन हासिल करेंगे, उसके लिए कुआँ हम खुदवा देंगे, उसकी आबादीके लिए मदद हम करेंगे, कार्यकर्ता आप जुटायें, उनका खर्च हम चलायेंगे। सर्वोदयका साहित्य आप तैयार करायें, कम्युनिस्ट-साहित्यकी तरह सस्ता हम बनायेंगे, घर-घर हम पहुँचायेंगे।

व्यापारियोंको 'कस्य स्विद्धनम्' मानकर करुणामूलक साम्यको अपनाना चाहिए, मत्सरमूलक साम्यको नहीं। उन्हें नकद धर्म—सम्पत्ति-दान करना चाहिए।

× × ×

आज अपराह्णमें पन्ना विद्यालयमें ही मध्यप्रदेशका तीसरा सर्वोदय-सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। अध्यक्ष थे भाई पूर्णचन्द्र जैन। उद्घाटन किया गांधी-स्मारक-निधिके मन्त्री जी० रामचन्द्रन्‌ने।

दादाभाईने गतवर्षका लेखा-जोखा देते हुए बताया कि हमारे यहाँ कहने लायक काम नहीं हो पाया। भूदानमें २॥ लाख एकड़ जमीन मिली, जिसमे आधी बँट चुकी। चौथाई जमीन झगड़ेकी है या बेकाम। ५०-६० हजार एकड़ अभी बँटनेको बाकी है।

भाई पाटणकरने गुरुदेव और गांधीके प्रिय शिष्य जी० रामचन्द्रन्‌का आत्मीयतापूर्ण परिचय दिया। उन्होंने हिन्दीमें बोल सकनेमें असमर्थता प्रकट की। कहा : 'मेरे लिए बड़ी शर्मकी बात है यह। बापके पापका

परिहार बच्चे कर रहे हैं।' उन्हें हिन्दीमें मुखरित करनेको खड़े हुए सुरेश रामभाई। मधुर सम्बन्ध भी तो है सुरेशभाईका केरलसे !

रामचन्द्रन् बोले :

पिछले दिनों चम्बलके वेहड़ोंमें जो काम हुआ है, वह अत्यन्त आश्चर्यजनक है। अखबार हमपर तरह-तरहके आक्रमण कर रहे हैं। हमारे बीच एक महर्षि है, जो प्रेमके कानूनको डाकुओंपर आजमा रहा है। बरसों पहले गांधीजीने दक्षिण भारतकी वेश्याओंके बीच जाकर उनका हृदय-परिवर्तन किया था, तो वहाँके अखबारोंने शिकायत की थी कि गांधीजी वेश्याओंको समाजमें ऊँचा स्थान दे रहे हैं। हमारे इस महर्षिपर भी ऐसा ही आरोप लगाया जा रहा है कि विनोबा डाकुओंको 'हीरो' बना रहा है ! एक ओर प्रेमकी रीतिसे क्रान्तिका एक महान् काम हो रहा है, जिसके लिए राष्ट्रपति बधाई भेजते हैं, दूसरी ओर उस महर्षिपर कीचड़ उछाला जा रहा है ! ईसाके साथ भी ऐसा ही सलूक हुआ था। ईसा बोले : 'मैं सही रास्तेपर चलनेवालोंके लिए नहीं, पापियोंके उद्धारके लिए आया हूँ।' विनोबा भी एक ऐसी जमातको बचाने आये हैं, जिसे कोई बचाना नहीं चाहता।

कहा जाता है कि भिण्ड-मुरैनाके क्षेत्रमें सशस्त्र पुलिसके २५,००० जवान तैनात हैं, जो चौबीसों घण्टे डाकुओंका पीछा करनेमें और उन्हें जिन्दा पकड़नेमें या मौतके घाट उतारनेमें लगे रहते हैं। मैं पूछता हूँ कि महात्मा गांधीके इस देशमें खून, घृणा और हिंसा-प्रतिहिंसाका यह चक्र कबतक चलता रहेगा ? गांधीके बाद आज इस देशमें विनोबा ही प्रेमके सबसे बड़े पुजारी हैं। वे भारतके प्रेम और उसकी सचाईके प्रतीक हैं। हमें चाहिए कि हम किसीको अपने इस महर्षिके कामपर कीचड़ उछालनेका मौका न दें। हाँ, गलतियाँ हो सकती हैं, पर वे सक्रिय प्रेमकी गलतियाँ होंगी, सक्रिय घृणाकी नहीं। यदि किसी प्रयोगके मूलमें प्रेमकी प्रधानता होती है, तो गलतियाँ सुधर सकती हैं, पर मूलमें घृणा

हो, तो सुधारकी कोई आशा नहीं। प्रेमके कानूनका यहाँ जो प्रयोग हुआ है, हम उसके पहरेदार बनें।

हमारे प्यारे प्रधानमन्त्री अन्तर्राष्ट्रीय मामलोंमें तो प्रेमकी रीति ही अपनाते हैं, पर देशके आन्तरिक मामलोंमें नहीं। यह द्वन्द्व कबतक चलता रहेगा?

× × ×

भाई पूर्णचन्द्रजीने कहा कि मैं अध्यक्षके रूपमें भाषण करने नहीं बैठा। बाबासे हमें उद्बोधन लेना है। हमें समग्र दृष्टिसे सोचना पड़ेगा, पर आगे बढ़नेकी तड़प और संकल्पके बिना गाड़ी आगे नहीं बढ़ेगी। ये दोनों बातें तो चाहिए ही।

× × ×

सायंकालीन प्रार्थना-सभाके लिए कुछ मिनट बाकी थे, तभी मैंने जगदीशभाईको घसीटा बाजारकी ओर। कुछ कपड़े तार-तार हो रहे थे, पर खादी-भण्डार जाकर देखा, तो बन्द है। उलटे पाँव हम लोग लौटे, तबतक बाबाका प्रवचन आरम्भ हो गया था। बाबा कह रहे थे:

भूदानका काम नौ सालसे चल रहा है। उसकी तरफ सारी दुनियाका ध्यान गया है। जर्मानके मसलेको हल करनेके लिए प्रेम और करुणाका हमारा तरीका नया है। यह भारतीय सभ्यताके अनुकूल है। दुनियाको भास हुआ कि इसमेंसे कुछ निकलेगा। भूदानका तरीका, स्वतन्त्र भारतकी विश्वको एक देन है।

डाकुओंके बीच हमने जो काम किया है, उसमें भले ही हमें सफलता कम मिली है, पर देश-विदेशमें उसकी बड़ी चर्चा है। प्रेमसे बैरको मिटानेका भारतीय तरीका दुनियाके लिए नया है। कल जर्मनीसे पत्र आया है। दुनियाके चिन्तनशील लोग अपनी भाषाओंमें इसपर ग्रन्थ लिख रहे हैं। यह प्रचार मैंने नहीं किया। भारतीय संस्कृतिका सन्देश है कि मैं दुनियाको मैत्रीकी दृष्टिसे देखूँ। वेद भगवान्ने कहा है:

मित्रस्य अहं चक्षुषा ! सन्तोंने इसपर अमल किया। धम्मपदमें आया है कि बुराईको भलाईसे जीतेंगे, क्रोधको अक्रोधसे। हमने इसका थोड़ा-सा प्रयोग किया। दुनियाको लग रहा है कि भारतमें एक नयी कुंजी मिली है। भारतका यह विशेष गुण हमें बढ़ाना है।

× × ×

आगराके शिरोमणिजी मिल गये आज। बोले : मानसिंहकी पत्नी रुक्मिणीदेवीको डॉक्टर ललित भिण्डसे ही अपने साथ ले गये थे। उन्होंने और शान्ति-समितिवालोंने उनके गाँव खेरा राठौरमें जाकर गाँववालोंको समझा-बुझाकर अच्छा वातावरण बनाया और रुक्मिणीदेवीको वहाँ बसा दिया है। उनकी कोई ९०० बीघे जमीनपर भी कब्जा दिला दिया है।

'ब्राह्मणों और ठाकुरोंमें वहाँ जो पुश्तैनी भयंकर अनबन थी, उसका क्या हुआ ?'

'सबसे खुशीकी बात तो यही है कि उन लोगोंकी पुश्तैनी अदावत भी समाप्त हो गयी है। मानसिंहके परिवारकी ओरसे और तल्फीराम तथा नेतरामके परिवारकी ओरसे एक समझौतेपर हस्ताक्षर हो गये हैं, जिसमें दोनोंने भगवान्‌को साक्षी देकर मन, वचन और कर्मसे प्रतिज्ञा की है कि दोनों परस्पर द्वेष और कटु आलोचना छोड़कर आपसमें मेल रखेंगे और हर काममें एक-दूसरेकी सहायता करेंगे। उन्होंने अपने पिछले कामोंके लिए पश्चात्ताप भी प्रकट किया है और भगवान्‌से प्रार्थना की है कि वह दोनों कुटुम्बोंकी रक्षा करे !'

सचमुच, बड़ी खुशीकी बात !

शान्तिवादी भी नाराज, क्रान्तिवादी भी !

लश्कर

७ जून '६०

'स्टडी सर्किल' ने आज सवेरे एक सभाका आयोजन किया। बुद्धि-जीवियोंको अपने सामने पाकर बाबा भावना-विभोर हो उठे। बोले :

बाबाकी कोशिश है कि भारतमें शान्तिके रास्ते क्रान्ति आये। धृतराष्ट्र अक्सर अन्धे होते हैं। वे शान्तिवादी हैं। उनकी इच्छा रहती है कि डाकू-समस्या हल हो, कम्युनिस्ट उपद्रव न करें, विद्यार्थियोंमें असन्तोष न बढ़े, मजदूर शिकायत न करें। वे चाहते हैं शान्ति हो, लेकिन क्रान्ति न हो। उधर क्रान्तिवादी कहता है कि जैसे भी हो, समाजमें क्रान्ति हो, श्मशान-शान्ति किस कामकी ? मेरे जैसा तीसरा व्यक्ति चाहता है कि शान्तिमय क्रान्ति हो। उसे दोनोंकी मार सहनी पड़ती है।

शान्तिवादी कहता है : 'हमें ऐसी क्रान्तिमिश्रित शान्ति नहीं चाहिए।' उसके विचारसे डाकू नीच है। उसके लिए शरण या मरण, दो ही रास्ते हो सकते हैं। शान्तिमें क्रान्तिका भाग आ जानेसे इन शान्तिवादियोंका दबदबा या रोब घटता है, इसलिए वे उसे नापसन्द करते हैं। क्रान्तिवादी कहता है : 'आपके थोड़ा-थोड़ा दान माँगनेसे क्रान्तिकी धारा क्षीण होती है। जोश लानेके बजाय आप उसे कमजोर करते हैं !' जनता शान्ति-वादियोंको 'ढोंगी' और क्रान्तिवादियोंको 'बेवकूफ' समझती है।

केरलमें घूमते समय मैंने कम्युनिस्टोंसे पूछा : 'सीलिंगसे मिलकियत कैसे मिटेगी ?' बोले : 'बात तो आप ठीक ही करते हैं, पर उसमें बहुत देर लगेगी।' मैंने कहा : 'कानूनसे तो निजी मिलकियत और मजबूत होगी। मैं तो निजी मिलकियत मिटा देनेके पक्षमें हूँ।' साफ है कि आज-का कानूनवादी करुणावादीसे बहुत पिछड़ा हुआ है।

शान्तिवादी गड़बड़ीसे घबड़ाता है। वादपर वाद करता चला जाता है। चाहता है कि जैसा चल रहा है, चलता रहे। क्रान्तिवादी किसी भी तरीकेसे क्रान्ति चाहता है। लेकिन बाबा कहता है कि शान्तिके रास्तेसे जब क्रान्ति आयेगी, तभी सच्ची क्रान्ति होगी, अशान्तिके रास्तेसे आनेवाली क्रान्ति झूठी होगी। शान्ति-क्रान्तिसे ही शिक्षित-अशिक्षितका भेद मिटेगा; एकवर्ण समाज बनेगा, जिसमें सब अपनी बुद्धिका विकास करेंगे और सब शरीर-श्रम करेंगे। उसका नाम होगा—'हंसोवर्णः'—हंसवर्ण समाज—नीर-क्षीर विवेक करनेवाला सन्तुलित समाज। ज्ञान और कर्मकी निष्ठाके दो पंखोंवाला यह पक्षी ब्रह्मविद्याकी प्राप्तिके लिए उड़ेगा। वेदमें लिखा है: 'अगस्त्य कुदालीसे खोदता था।' उस उग्र ऋषिने दोनों वर्णोंका पोषण किया। ऐसा श्रमनिष्ठ और ज्ञाननिष्ठ समाज हमें बनाना है। कर्म और ज्ञानके समन्वयसे ही कल्याण होगा। सर्वोदयका यही आदर्श है।

× × ×

मध्यप्रदेशके सर्वोदय-सम्मेलनकी सवेरेकी बैठकमें 'अहिंसाकी खूबी आत्मानुशासनमें है', यह समझाते हुए बाबाने कहा :

सर्वोदय-कार्यकर्ताओंकी संख्या कम भले ही रहे, पर जितने रहें, वे एक देहके विभिन्न अवयवोंकी तरह रहें। हम केवल एक शरीरमें नहीं, सब शरीरोंमें हैं, ऐसी आस्थाका नाम है—ब्रह्मविद्या।

कार्यकर्ताओंमें एकात्मभाव आना चाहिए। वे हर बातमें अपनेको ही प्रमाण न मानें। अहिंसाकी खूबी आत्मानुशासनमें है। अहिंसक कार्यकर्ता अनुशासनका पूरी तरह पालन करे। हम दूसरोंके काजी न बनें। कुछ लोग अपनेको कसोटीपर कसनेके बजाय दूसरोंको कसते रहते हैं। यह दुष्ट वृत्ति है। हमें ऐसी वृत्ति नहीं चाहिए, शुभवृत्ति चाहिए। हमारी वृत्तिमें न्यूनता न रहे, हीनता न आये।

× × ×

चम्बल घाटी शान्ति-समितिकी कल भी बैठक हुई, आज भी। आज वार्ताके समय ही ग्वालियर महाराजके भूतपूर्व कृषिमंत्री पवार साहब

बाबाका दर्शन करने आये। ८० वर्षके हैं वे। ३० बीघा जमीन उन्होंने अर्पण की बाबाको। कुछ पुराने रिकार्ड दिखाते हुए बोले : ४५ साल था मैं महाराजकी सेवामें। बेहड़ कमीशन नियुक्त हुआ था, जिसका अध्यक्ष मैं था, सदस्य थे दो युरोपियन। चम्बलके बेहड़ोंकी हमने जाँच-पड़ताल की थी घोड़ोंपर बैठकर। बुलडोजरोंसे बेहड़ नष्ट होनेवाले नहीं।

शान्ति-समितिकी अबतककी प्रगतिपर बाबाके सामने चर्चा हुई। जनरल साहबकी बात आयी, तो बाबाने कहा : हमारा यह शान्ति-सैनिक पूरे 'मिलिटरी मैन' की तरह काम करता है। कामके लिए न दिन देखता है, न रात। जिस दिन जहाँ पहुँचना होता है, पहुँच ही जाता है। रातको एक बजे आया। चम्बल घाटीमें हमने यह दर्जा लल्लूलालको दे दिया।

हरसेवक मिश्रकी ओर देखते हुए बाबाने कहा : हमें यहाँ खींच लानेका श्रेय है, हमारे कांग्रेसवाले इस लँगड़े भाईको।

वे बोले : बाबा, अपनी जिम्मेदारी निभाऊँगा। आपका भी काम करूँगा, कांग्रेसका भी काम करूँगा।

बाबा : अपनी बहुत अच्छी शान्ति-समिति बनी है। उसके अलावा तमाम पार्टीवाले हैं, भूताजी हैं, और-और लोग हैं। सबके सहयोगसे हमें पूरी मुस्तैदीसे अपना काम चलाना चाहिए। अच्छे शान्ति-सैनिक यहाँ बैठाने चाहिए।

× × ×

अपराह्नमें मध्यप्रदेश सर्वोदय-सम्मेलनकी अन्तिम बैठक हुई। विधान स्वीकृत हुआ। करणभाई रचनात्मक कामको मोड़ देनेके बारेमें बोले।

अन्तमें पूर्णचन्द्रजीने सारी चर्चाका समारोप करते हुए इस बातपर जोर दिया कि चारों ओर अशान्त वातावरणमें हम बिना उत्तेजित हुए अपनेको बलिदान करें। चम्बल घाटी हमारी शान्ति-सेनाकी कसौटी है। बाबा एकके बाद एक नया कार्यक्रम देते चल रहे हैं। हमें समग्र दृष्टिसे काम करना है। सम्मेलनमें हमने जो निर्णय किये हैं, उन्हें पूरी शक्ति लगाकर अमलमें लायें।

पद्मा विद्यालयमें ही महिला सम्मेलन रखा गया था। सारा हाल ठसाठस था। पुरुषोंको बाहर खदेड़ दिया गया। हम लोग भी नीचेसे उठकर ऊपरके स्टेजपर आ गये। बाबा भी ऊपरके स्टेजपर आ बैठे। निष्काम सेविकाओंकी माँग करते हुए बाबा बोले :

प्राचीन कालमें स्त्रियोंकी जो ऊँची स्थिति थी, वह आज नहीं है। जनकको सुलभाके पास ज्ञान लेने जाना पड़ा था। आजकी स्त्रियाँ बच्चों-का पालन-पोषण और घरका काम करती हैं, बाहरके कामोंमें वे पुरुषों जितनी निष्ठा नहीं दिखातीं। उन्हें इस तरफ बढ़ना चाहिए। छोटे बच्चोंकी शालाएँ स्त्रियोंके हाथमें रहनी चाहिए। साथ ही पुरुषोंको अंकुशमें रखनेका काम भी स्त्रियोंको सँभालना चाहिए।

हिंसाको रोकनेका काम स्त्रियाँ करें। गांधीने शराबकी पिकेटिंगके लिए स्त्रियोंको भेजा। कहा : 'ज्यादासे ज्यादा पवित्रको जाना चाहिए बदमाशोंके खिलाफ।' इसी तरह भूदानके काममें भी बीसों स्त्रियाँ आगे आयी हैं। उनकी सच्ची उन्नति तभी होगी, जब उनमें शंकराचार्यकी तरह दो-चार निकलेंगी। वे योगिनी बनें, ब्रह्मवादिनी बनें। हिन्दू-धर्ममें उन्हें कितना ऊँचा स्थान मिला है ! 'मातृदेवो भव' कहा गया है। उनमें बहादुरी ज्यादा होती है।

बहनें ब्रह्मवादिनी बनें, वीर बनें, गहने आदि दोष छोड़ दें, बच्चोंकी तालीम अपने हाथमें लें, समाज-योजनामें हिंसासे पुरुषोंको विरत करें और सर्वोदय-पात्रके द्वारा घर-घरमें सर्वोदयका सन्देश पहुँचायें।

× × ×

रात्रि-प्रार्थनाका समय हुआ, तब बरहदमें मराठी भजन गानेवाले भाई अपनी कीर्तन-मण्डली लेकर आ गये। बाबाके साथ-साथ हम लोग देरतक भक्तिकी गंगामें गोते लगाते रहे !

बाबा, वृज़नसौं मति लेह !

नयागाँव

८ जून '६०

'फाँसीपर चढ़ना होगा, तो खुशीसे चढ़ोगे ?'

रातके चार बजे ग्वालियरसे प्रस्थान करनेके पूर्व जनरल यदुनाथ सिंहने रामऔतारको सम्बोधित करते हुए कहा ।

रामऔतार बोला : 'जी !'

× × ×

नगरसे बाहर खुली सड़कपर पहुँचते ही मेरी पुकार पड़ी ।

बाबाने पूछा : क्यों पूरा दर्शन हुआ न ?

मैं : हाँ बाबा !

बाबा : तुम्हें पता है कि भिण्ड जेलमें क्या हुआ ?

मैं : नहीं बाबा ।

बाबा : आर्म्स ऐक्टका मुकदमा चला था अपने नौ बागी भाइयोंपर । सबने खट-खट मंजूर कर लिया कि 'हाँ, ये बन्दूकें हमारी हैं, ये कारतूस हमारे हैं ।'

मैं : यह तो बहुत बड़ी बात हुई बाबा । सत्यपर प्रतिष्ठित होकर उन्होंने अपना और हम सबका गौरव बढ़ाया ।

बाबा : कहते हैं कि भिण्डके इतिहासमें ३० सालमें यह पहली घटना है । मैंने तो इन लोगोंसे यही कहा कि तुमने जो बुरे काम किये हैं, उनका साफ इजहार करो । तुमपर झूठे आरोप लगें, उनसे इनकार करो । फिर तुम्हें फाँसी भी पड़ना पड़े, तो खुशीसे उसे मंजूर करो, तभी तुम्हारा प्रायश्चित्त पूरा माना जायगा ।

यह सब कहते-कहते बाबा गद्गद हो उठे। विक्टर ह्यूगोके 'ला मिजरेबल्स'की याद आ गयी उन्हें। बोले : लोग कहते हैं कि हृदय-परिवर्तन नहीं होता। पर यह क्या है ? 'ला मिजरेबल्स'में अपराधीके हृदय-परिवर्तनकी बड़ी अद्भुत कहानी है।

'हाँ बाबा, जेलमें मैंने उसे पढ़ा था '३२-'३३ में। पढ़ता जाता था, रोता जाता था। जीन वैलजीन तो हृदय-परिवर्तनके बाद एकदम साधु बन गया, बिलकुल पादरी जैसा !'

'हाँ, पुस्तकके दूसरे अध्यायमें उसके हृदय-परिवर्तनकी कहानी है। मैंने तो मूल फ्रेंचमें ही उसे पढ़ा था। फ्रेंच अच्छी तरह आती नहीं थी। टोह-टोहकर पढ़ता था। पहले संक्षिप्त संस्करण पढ़ा। बादमें पूरा ग्रन्थ देखा। बहुत अच्छा abridge (संक्षेप) किया है।'

'मैंने तो संक्षिप्त संस्करण ही पढा था। दो जिल्दोंमें था। अंग्रेजीमें।'

चर्चा आगे चली, तो मैंने चम्बल-क्षेत्रकी एक समस्याकी ओर बाबा-का ध्यान खींचा। कहा : बाबा, महावीरभाई कह रहे थे कि यहाँ आल्हाका प्रचलन खूब है। आल्हामें लड़ाइयों ही लड़ाइयोंका वर्णन है, जिसके कारण द्वेषकी भावना खूब पनपती है। वह कड़ी क्या है जलेश्वर-भाई जिनके बैरी···?

जलेश्वरभाईने बताया :

जिनके बैरी सुख सों स्वावें,
तिनके जीवनको धिरकार !

'धिक्कार है उनके जीवनको, जिनके बैरी सुखसे सोते हैं !'

'कैसी आग लगानेवाली कड़ी है यह !'—मैंने कहा : 'लोग जब सुनते हैं, तो फड़क उठते हैं। इसके चलते दुश्मनीका यह तार पुश्त-दरपुश्त चलता रहता है।'

बाबा बोले : यह सब बदलना पड़ेगा। हिंसा-द्वेष फैलानेवाली सारी बातोंको बन्द करना पड़ेगा। अच्छे-अच्छे भाव फैलानेवाले प्रेम और क्षमा सिखानेवाले गीतों और भजनोंका प्रचार करना पड़ेगा।

बाबा गुनगुनाने लगे :

बाबा, वृक्षनसों मति लेह।
काटे वाको क्रोध न करही, सींचे न करहि सनेह॥
धूप सहत अपने सिर ऊपर, औरको छाँह करेत।
जो वाको पत्थर चलावे, ताहीको फल देत॥
धन्य-धन्य हे परउपकारी, वृथा मनुषकी देह।
'सूरदास' प्रभु कहँ लगि वरनों हरिजनसे मति लेह॥

शहरसे हम लोग काफी दूर निकल आये थे। जलेश्वरभाईने बाबाको प्रणाम करते हुए कहा : बाबा, अब मैं चलूँगा। रामऔतारको आगरामें अधिकारियोंके सुपुर्द कर दूँगा।

रामऔतारने भी प्रणाम किया।

बाबाने कहा : यह तो इतने दिन हमारे साथ रहकर हमारा स्वयंसेवक बन गया है। अच्छा जाओ, सद्भावना रखना, भगवान्में भक्ति रखना। ठीक है न?

'हाँ, बाबा!'

× × ×

आजका पड़ाव ८ मील बताया गया था। सड़क-सड़कसे आते तो शायद उतना होता, पर लोग ले चले Short Cut से, छोटे रास्तेसे। धूल-धक्कड़से होते हुए जब हम वहाँ पहुँचे, तो बाबा बोले : यह तो अभी पाँच मील ही हुआ। चलो आगे। नहीं ठहरेंगे यहाँ!

उलट पड़े बाबा। गाँववालोंने मनानेकी कोशिश की, पर वायुको बाँध पाता है कोई? दो-एक भाई पीछे रुक गये।

दुबेजी, मैं, खिल्लोरेजी, अच्युतभाई पीछे रह गये थे। दुबेजी चलते-चलते अपने जीवनके मनोरंजक संस्मरण सुनाते रहे।

पड़ावपर पहुँचकर देखा कि डाकबँगला बहुत छोटा है। किसीने बरामदेमें अपना बिस्तर डाला, किसीने पेड़के नीचे। मैंने बगलमें देखा कि एक बरामदा है—तीन तरफसे घिरा। ऊँची-नीची ऊबड़-खाबड़

जमीन। एक किनारे लोहेकी एक कड़ाही रखी थी, दूसरे किनारे लोहेकी दो भारी चद्दरें। सोचा कि चद्दरें जमीनपर बिछा लें। बिस्तर डालनेको ठीक रहेगा।

बिह्लोरेजीको बुलाकर कड़ाहीको एक तरफ रखा। एक चद्दरको नीचे रखने लगा। वह अचानक गिर गयी मेरे बायें पैरपर। आँखोंके आगे अँधेरा-सा छा गया। असहनीय दर्द और सूजन !

रूमाल पानीमें भिगाकर पैरपर बाँधा। वहाँ और क्या रखा था ? ताईने तबतक बुलाया। चोट देखकर बोलीं : इसपर नमकका पानी डालना चाहिए।

वे नमक घोलकर ले आयीं। कोनेमें पड़ा-पड़ा डालता रहा उस पानीको।

थोड़ी देरमें भूताजी आ गये—मृदुला साराभाईको लेकर। साथमें थीं दो बच्चियाँ—वीणा और प्रेरणा—ठीक हमारी चुन्नी-टुन्नीकी तरह। मुझे देखकर पूछने लगे : क्या हाल है पैरका ?

मैंने कहा : बायाँ तो अभी ठीक ही नहीं हुआ, दाहिना भी घायल हो गया बुरी तरह, लोहेकी चद्दर गिरनेसे।

बोले : तो नमकके पानीसे क्या होगा ? चलिये मेरे साथ, डॉक्टरको दिखाऊँ।

चने-गुड़का नाश्ता अभी किया था हमने। साथी लोग भोजनके लिए गये थे। रामचन्द्र मेहरोत्राने मेरा सामान लपेटकर जीपपर रखा।

बाबा लेटे थे। मैंने प्रणाम किया तो जयदेवभाईने कहा : बाबा, भट्टजी जा रहे हैं।

'हाँ ! जय जगत् !'

× × ×

'अब तो हम सज्जन-क्षेत्रसे निकल आये।' बाबाने मुरारमें ही मुझे यह इशारा किया था। मैं ग्वालियरसे ही काशी जानेवाला था। पर

महादेवीताईके कहनेसे दो दिन और रुक गया था। वे भी मेरे साथ काशी चलनेवाली हैं।

'कल मैं आऊँगी ग्वालियर'—कहा ताईने।

मैं सबको प्रणाम कर चल पड़ा जीपसे। मेहरोत्रा भी चल रहा है साथमें।

जीप दौड़ रही है—ऊपर धूप है, सामने सड़क। ३८ दिनका बाबा-का यह सत्संग, इतने मित्र, इतने साथी, चम्बलके ये बेहड़, यहाँकी सारी खट्टी-मीठी स्मृतियाँ एक-एककर नाच रही हैं आँखोंके सामने!

महादेवी वर्माकी कड़ियाँ मानस-पटपर उभर रही हैं :

सखे, यह है मायाका देश,
क्षणिक है मेरा - तेरा संग!
यहाँ मिलता काँटोंमें बन्धु,
सजीला-सा फूलोंका रंग!!
तुम्हें करना विच्छेद सहन,
न भूलो हे प्यारे जीवन!!

काशीसे फिर काशीमें !

काशी
१४ जून '६०

दुनिया गोल है। ३० अप्रैलको निकला, आज लौट पाया डेढ़ मास बाद। काशीसे हाथरस, हाथरससे आगरा, आगरासे ग्वालियर, ग्वालियर-से कानपुर, कानपुरसे काशी !

उस दिन ग्वालियरमें डॉक्टरको सौंपते हुए भूताजी बोले : इन्हें फलाँ-फलाँ इंजेक्शन दे देना और मरहम-पट्टी कर देना अच्छी तरह। एक घण्टेमें भेजता हूँ खाना खिलाकर !

जानेपर डॉक्टरने चोट देख-दाखकर कहा : कोई (Serious) (खतरेकी) बात नहीं। टिंचर लगाकर पूरे पैरको कस दिया और एक टिकिया घोलकर पिला दी। वैसी ही जैसी बिल्लोरेजीने नयागाँवमें खिलायी थी—दर्द बन्द करनेको।

× × ×

दूसरे दिन डॉक्टरके दवाखानेमें बहुत देर इन्तजार करना पड़ा। चि० बाबा भूता ले आया एक ताँगा। मेहरोत्रा भी साथ था। आँखोंसे अशक्त एक बड़े मियाँ थे दूकानकी पहरेदारीपर। बोले : यह डॉक्टर दवाकी गोली भी बेचता है, बन्दूककी गोली भी ! डॉक्टरीसे कहीं ज्यादा लाभ है उसे बन्दूक-कारतूसें बेचनेमें। इसलिए उसे परवाह नहीं रहती डॉक्टरीकी !

टिंचर लगाकर, पट्टी बाँधकर उसने मुझे फिर चलता कर दिया। कलकी गोली फिर खिला दी।

दोपहरमें ताई आ गयी। खा-पीकर बोली : ग्वालियरका किला घूमना है।

ट्रेनको थोड़ी ही देर थी। हम सब जीपसे रवाना हुए। मेहरोत्रा घरपर ही बच्चोंके साथ खेलता रहा कैरम बोर्ड। मैंने जीपपर बैठे-बैठे ही किलेका चक्कर लगा लिया। सुश्री रतनप्रभाने दिखाया ऊपरसे : देखिये वह है अपनी शिंदेकी छावनी और वह है अपना मकान—वागलेकी कोठी!

× × ×

मेहरोत्रा सबके साथ आया हमें स्टेशन पहुँचाने। प्लेटफार्म टिकट ले लिया उसने। थोड़ी देरमें कहता है : 'मैं भी चलूँ, झाँसीतक? बहन है वहाँ। बरसोंसे नहीं गया!'

मैंने कहा : 'नेकी और पूछ-पूछ!'

झाँसी पहुँचते-पहुँचते अँधेरा हो गया। लम्बा प्लेटफार्म पार करते-करते मुझे नानी याद आ गयी। खा-पीकर मेहरोत्राने कानपुरवाली ट्रेनमें अच्छी जगह हमारा बिस्तर लगा दिया।

ताई तो काशी चली आयी। मैं कानपुरमें चार दिन रुक गया। भैया गंगाचरण शर्माने रोक लिया। बोरिकसे पैरकी खूब सेंकाई की गयी। सूजनमें कुछ कमी आयी, दर्द भी कुछ घटा। पर आज स्टेशनके लिए थोड़ी दूर पैदल चलनेमें और मुगलसरायमें पुल पार करनेमें बड़ी मुसीबत रही। लहुरावीरके बसस्टैण्डसे रिक्शा करके आ पहुँचा घर।

अम्मा दौड़ीं : "लला आओ!" आँसू टपक रहे थे जोरसे। पत्नी-बच्चे दौड़े। सब चिन्तित थे कि मैं कहाँ रुक गया बीचमें!

और मैं सोच रहा हूँ महादेवीके शब्दोंमें :

कनक-से दिन मोती-सी रात; सुनहली साँझ गुलाबी प्रात,
मिटाता रँगता बारम्बार, कौन जगका वह चित्राधार!
आदिमें छिप जाता अवसान, अन्तमें बनता नव्य विधान,
सूत्र ही है क्या यह संसार, गुँथे जिसमें सुख-दुःख जय-हार!!

आइये, कुछ सोचें !

जग-निस्सिएहिं भूएहिं तसनामेहिं थावरेहिं च ।
नो तेसिमारभे दण्डं, मणसा वयसा कायसा चेव ॥

—महावीर

१. चम्बल घाटीमें आतंकका राज
२. लोग 'बागी' बनते क्यों हैं ?
३. डण्डा, जेल और फाँसीका रास्ता
४. प्रेम, दया और दुआका रास्ता
५. विनोबाका प्रेम-अभियान
६. अब हम करें क्या ?

●

चम्बल घाटीमें आतंकका राज : १ :

स्वरसवाही विदुषोऽपि तथारूढोऽभिनिवेशः।

पतञ्जलि : योगसूत्र २।९

मौतका डर बड़े-बड़ोंके छक्के छुड़ा देता है। वह बाबरदेवा, जिसने ऊपरसे नीचेतक शस्त्रोंसे लैस पुलिसके बड़ेसे बड़े अधिकारियोंको प्रकम्पित कर रखा था, जिसके डरसे बड़ों-बड़ोंको पसीना छूटता था, लोगोंको गोलियोंसे भूननेमें जिसे रत्तीभर भी हिचक नहीं होती थी, वही बाबरदेवा सन् १९२४ में जब फाँसीके तख्तेकी ओर ले जाया जाने लगा, तो फुक्का फाड़-फाड़कर रो उठा ![१]

× × ×

लेकिन सुकरात ?

जहरका प्याला पी रहा है, उसके चेलें छाती पीट-पीटकर रो रहे हैं और वह मुसकराकर कहता है : 'छिः छिः ! तुम लोग व्यर्थको मेरे चेले बने। इस मरणशील चोलेके लिए रोते हो ?'

सरग मड़ैया सब काहूकी, कोऊ आजु मरै कोऊ कालि !

कालदेवका प्रहार तो एक दिन होना ही है, फिर डरना क्या ? भगवान् कृष्णने अर्जुनको अपना विराट् रूप दिखाकर कहा : देखता है अर्जुन, ये सब तो मौतके मुँहमें जानेवाले हैं, मैंने तो पहले ही इनको मार डाला है, तू तो निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् !

बाबा कहते हैं और ठीक ही कहते हैं कि 'कोई आदमी कब मरता है ? तभी जब उसके प्रारब्धका क्षय होता है। बाबाका जिस क्षण प्रारब्ध

---

१. झवेरचन्द मेघाणी : माणसाईना दीवा, पृष्ठ १६७।

क्षय होगा, उसी क्षण वह मरेगा। उसके पहले उसके दो टुकड़े कर दो, तब भी वह नहीं मरेगा !'

तब मौतसे डरना क्यों ? दिनमें हजार बार मरनेकी जरूरत ?

× × ×

चम्बल घाटीमें चारों ओर आतंकका राज है। जिसे देखिये, मौतकी घड़ियाँ गिन रहा है। कैसा तमाशा है कि लोग हाथमें बन्दूक लिये हुए हैं और डरके मारे थर-थर काँप रहे हैं !

कैसी दयनीय दशा है यह !

यहाँकी आबादीको हम सात भागोंमें विभाजित कर सकते हैं :

(१) बागी या डाकू (२) पुलिस (३) ग्राम-रक्षा-दल (४) डाकुओंके मुखबिर (५) पुलिसके मुखबिर (६) पैसेवाले और (७) साधारण जनता।

इनमें सबसे छोटी संख्या है डाकुओंकी, सबसे बड़ी संख्या है जनताकी। पर तमाशा यह है कि ये सातोंके सातों आतंकसे ग्रस्त हैं।

× × ×

बागी या डाकू हमेशा डरते हैं पुलिससे, पुलिसके मुखबिरोंसे। बेहड़ोंमें छिपते फिरते हैं। हर क्षण मौत सिरपर नाचती रहती है। पता नहीं कब पुलिससे गोली चल जाय, पता नहीं कब कौन आदमी दगा दे दे !

६०)-७०) पर जीनेवाले पुलिसके कोई २५ हजार ज्वान जगह-जगह बिखरे हैं। शस्त्र और सत्ताका बल रखते हुए भी वे आतंकग्रस्त रहते हैं। पता नहीं कब डाकू आकर उनपर हमला कर दें अथवा डाकुओंके मुखबिर उनके लिए घातक सिद्ध हो जायँ। मरनेपर ८) मासिककी जो पेंशन मिलेगी, उससे बे-बापके बच्चे पेटभर दूध भी तो नहीं पी सकेंगे !

ग्रामरक्षा-दलवालोंको रक्षाके लिए बन्दूकें मिल गयी हैं सही, पर उनपर भी डाकुओंके हमलेका आतंक छाया रहता है। पता नहीं, डाकू कब आकर हमला कर दें ! डाकुओंके पास ज्यादा बन्दूकें होंगी, तो वे पीटे बिना न रहेंगे।

डाकुओंके मुखबिरोंको डाकुओंकी ओरसे रक्षाका आश्वासन रहता है, पर पुलिससे वे डाकुओंकी अपेक्षा ज्यादा डरते रहते हैं। कारण, डाकुओं-को पुलिसका सामना यदा-कदा ही करना पड़ता है, ये तो हरदम मौतके मुँहमें ही रहते हैं। पता नहीं, कब कौन पहचान ले, कब किसकी निगाह टेढ़ी हो जाय!

पुलिसके मुखबिर पुलिसकी बन्दूकोंके सायेमें रहते हैं, पुलिसका वरद-हस्त उनपर रहता है, फिर भी उन्हें यह खौफ खाये जाता है कि पता नहीं, कब डाकू या उनके मुखबिर हमला कर बैठें!

पैसेवालोंकी दुर्गति तो बयान ही क्या की जाय? प्रायः सभी पैसेवाले जान और मालके डरसे भिंड, शिवपुरी या ग्वालियरमें बसकर जान बचाते हैं। फिर भी डाकुओंका भय रात-दिन उनके सिरपर सवार रहता है। पता नहीं कब आकर वे लूट ले जायँ अथवा उन्हें या उनके लड़कोंको उठा ले जायँ। और एक बार उनके चंगुलमें फँसे नहीं कि फिर पैसा तो मुँहमाँगा भरना ही पड़ेगा, जान भी जा सकती है, जलील भी होना पड़ सकता है!

रही साधारण गरीब जनता! वह बेचारी दोनों तरफसे पिसती है। उसके पास तो कुछ है ही नहीं। न बन्दूकोंका सहारा है, न पैसेका। वह सबसे दबती है, सबसे डरती है, सबकी लात खाती है!

× × ×

डाकुओंके चलते न किसीकी जान सुरक्षित है, न किसीका माल, न किसीकी इज्जत। कब वे किसपर आकर हमला कर देंगे, किसको गोलीसे भून देंगे, किसकी नाक काट लेंगे, किसके हाथ-पैर तोड़ देंगे, किस सधवाको विधवा बना देंगे, किस बापको निपूता कर देंगे, किस माँकी गोदीका लाल छीन लेंगे, किस युवतीको वेइज्जत कर देंगे, नहीं कहा जा सकता! कभी प्रतिशोधकी भावना, कभी पैसेकी लालसा, उनसे वे-वे कुकृत्य करा डालती है, जिनके स्मरणसे रोंगटे सतर हो उठते हैं!

एक गाँवमें एक बागी अपने एक जातिभाईके यहाँ जाकर ठहरा। कुछ मुखबिरोंके कारण उसकी हत्या हो गयी। जिस बागीके गिरोहका वह

आदमी था, उसने उसका पता चलते ही उन सात-आठ आदमियोंको आकर गिरफ्तार कर लिया, जिनका हाथ उस हत्यामें था। सबको लाइनमें खड़ा करके गोलीसे भून दिया! एक साथ सात-आठ खून!

एक दूसरे गाँवमें एक तरफसे ऐसा ही उत्पात हुआ, तो दूसरी तरफसे भी ऐसी ही घटनाकी पुनरावृत्ति हुई। जंगलमें ले जाकर एक साथ कई आदमी गोलीसे उड़ा दिये गये! पचीसों परिवार तबाह!

× × ×

बन्दूकोंकी यहाँ कमी नहीं है। कुछ लैसंसी हैं, कुछ बेलैसंसी। सन् '५०-'५१ के पहले तो लैसंसका यहाँ सवाल ही नहीं था। छर्रेवाली बन्दूकोंकी संख्या तो बेतादाद है। लोग उन्हें बन्दूकोंमें गिनते ही नहीं! जरा-जरा-सी बातपर ये बन्दूकें उठा ली जाती हैं और विरोधीके सीनेपर दाग दी जाती हैं!

सवाल है कि लैसंसवालोंको तो बन्दूकोंकी दूकानोंसे कारतूसें और बन्दूकें मिल जाती हैं; पर डाकुओंको, बागियोंको कारतूसें और बन्दूकें कहाँसे मिलती हैं? मानना होगा कि कुछ ऐसे मिले-जुले सूत्र हैं, जहाँसे बागियोंको भी शस्त्रास्त्र मिलते हैं। अवश्य ही इसमें उन लोगोंका हाथ रहता है, जिन्हें हथियार रखने और कारतूस पानेकी सुविधा प्राप्त है।

× × ×

और यह तो है ही कि बन्दूक जहाँ रहेगी, आतंक वहाँ रहेगा ही!

सारी चम्बल घाटीमें आतंकका राज है। भिण्ड हो, मुरेना हो, ग्वालियर हो, शिवपुरी हो, दतिया हो—हर जिलेमें आतंक छाया है।

इस आतंकके चलते लोगोंका पुंस्त्व मर गया है। वीरता कुण्ठित हो गयी है। भय हर आदमीकी नस-नसमें समा गया है।

इस आतंकके चलते स्त्रियाँ बेइज्जत की जा रही हैं! लड़कोंका अपहरण हो रहा है! हजारों बीघे अच्छी जमीनें बिना जोती पड़ी हैं। अत्याचारी मनमाना अत्याचार करते हैं। किसीकी हिम्मत नहीं कि 'चूँ' करे!

इस आतंकके चलते लोग सही बात जबानपर नहीं ला सकते।

आँखोंके सामने घटी घटनाओंका इजहार नहीं कर सकते! सच्ची गवाही नहीं दे सकते। सच्ची बात नहीं कह सकते। रोम-रोम काँपता है लोगोंका इस धमकीसे—'कहो सच्ची बात! अभी उड़ाता हूँ गोलीसे!'

इस आतंकके चलते क्रोध, घृणा, अविश्वास, वैर, द्वेष, विश्वासघात, अन्याय, अत्याचार चारों ओर खुलकर खेल रहा है!

कैसी शोचनीय स्थिति है यह!

× × ×

स्पष्ट है कि इस आतंकको मिटाये बिना चम्बल घाटीके निवासी सुखकी नींद नहीं सो सकते।

बापूने कहा था :

"सच तो यह है कि मरना हमें पसन्द नहीं होता, इसलिए आखिर हम घुटने टेक देते हैं। कोई मरनेके बदले सलाम करना पसन्द करता है, कोई धन देकर जान छुड़ाता है, कोई मुँहमें तिनका लेता है और कोई चींटीकी तरह रेंगना पसन्द करता है। इसी तरह कोई स्त्री लाचार होकर, जूझना छोड़, पुरुषकी पशुताके वश हो जाती है।...सलामीसे लेकर सतीत्वभंगतककी सभी क्रियाएँ एक ही चीजकी सूचक हैं। जीवनका लोभ मनुष्यसे क्या नहीं कराता!"[1]

इसलिए जरूरत इस बातकी है कि चम्बल घाटीके निवासियोंके हृदयसे मृत्युका भय पूर्णतः निकाल दिया जाय और उन्हें इतना निर्भय बना दिया जाय कि पिस्तौल और बन्दूक, तोप और तलवारको अपने सीनेपर अड़ी हुई देखकर भी वे मुसकराकर कह सकें :

मौत इक बार जो आना है तो डरना क्या है!
हम सदा खेल ही समझा किये मरना क्या है!!

१. गांधी : हरिजन १-३-'४२, पृष्ठ ६०।

लोग 'बागी' बनते क्यों हैं ? : २ :

आइये, कुछ बागियोंसे मुलाकात करें।

प्रश्न है : आप 'बागी' बने क्यों ? अपने जीवनकी कुछ घटनाएँ सुनाइये।

एक : दस सालकी उम्रमें मुझे अपना जन्मस्थान छोड़ना पड़ा। मेरा चाचा गाँवकी एक लड़कीको लेकर कहीं निकल भागा। तब मैं अपनी माँके साथ एक दूसरे गाँवमें जाकर रहने लगा। हमारी हालत बड़ी खराब थी। रोटी-दालके लाले रहते थे। चार साल पहले हमारी हालत बहुत ही खराब हो गयी, तब रोजी-रोटीकी तलाशमें मैं कलकत्ता चला गया।

कलकत्तेमें मैंने एक हलवाईकी दूकानमें नौकरी कर ली। कोई दो साल वहाँ रहा। तभी मुझे माँका पत्र मिला कि 'हमारी पुश्तैनी जमीनपर हमारे गाँवके एक दुश्मनने कब्जा कर लिया है। चले आओ।'

मैंने गाँवपर लौटकर देखा कि मेरी जमीनपर दूसरेका कब्जा हो गया है। मैंने दौड़-धूप की अधिकारियोंके पास, लेकिन कोई सुनवाई न हुई। पटवारीके कागजोंमें दूसरा नाम चढ़ चुका था। मेरी जमीन छिन गयी ! प्रतिशोधकी भावनासे मैं उबलने लगा।

मेरा मामा फरार था। वह कभी-कभी मेरे घरपर आकर टिकता था। पुलिसको जबसे इस बातका पता चला, तबसे वह मुझे भी आकर तंग करने लगी, सताने लगी। तब पुलिसके उत्पीड़नसे त्रस्त होकर और अपनी जमीनपर कब्जा करनेवाले दुश्मनोंसे बदला लेनेके लिए मैं बागी बन गया।

× × ×

दो : अभी मेरी रेखें भींग ही रही हैं। मुझे मुश्किलसे एक साल हुआ बागी बने। एक बागीने मेरे चाचाकी हत्या कर दी। वह मेरी भी हत्या

करनेवाला था। इसलिए अपनी जान बचानेके लिए मैं दूसरे बागी सरगनाके गिरोहमें शामिल होकर बागी बन गया!

× × ×

तीन : आठ साल पहलेकी बात है। मेरे गाँवमें लड़ाई हो गयी। उसी सिलसिलेमें पुलिसने मुझे गिरफ्तार कर लिया। अदालतसे मैं छूट तो गया, लेकिन व्यर्थ ही फँसा देनेकी बातने मुझे बागी बना दिया। आठ सालसे हूँ, इस धन्धेमें। पुलिस कोशिश करके भी गिरफ्तार नहीं कर सकी, पर बाबाके सन्देशने मुझे गिरफ्तार कर लिया!

गाँवपर मेरी ५० एकड़ जमीन परती पड़ी है।

× × ×

चार : एक बागी सरगना हमारे यहाँ आता-जाता था। पुलिसकी नजर पड़ी। वह हमें मारती-पीटती थी कि तुम मुखबिर बन जाओ। तब हम दिल्ली भाग गये। कुछ दिन बाद लौटकर आये, तो हमने मारसे बचनेको थानेदारको तीन-चार सौ रुपये रिश्वत दी। वह जबतक रहा, तबतक मार नहीं पड़ी। दूसरा आया, तो फिर मार पड़नी शुरू हो गयी। पुलिस हमें थानेपर ले जाकर पीटती, तो हमें उतना बुरा न लगता, लेकिन वह तो हमें हमारे दरवाजेपर, हमारे भाई-बन्धोंके बीचमें खड़ा करके गाली देती, जूते लगाती। यह अपमान बर्दाश्त नहीं हो सका। हम बागी बन गये।

हमारे गिरोहका एक बागी अपने दुश्मनोंको कत्ल करना चाहता था! हमने मना किया। तब वह हाजिर हो गया! पुलिसके एक अफसर-ने उसे बरी करा दिया। उसके जरिये उस अफसरसे हमारी दोस्ती हो गयी! एक दिन उसने हमारे दो साथियोंको बुला भेजा। वे उसके विश्वासमें आकर बिना हथियारके चले गये। उसने धोखेसे उनपर गोली चला दी। गोलीकी आवाज सुनकर हम लोग दौड़ पड़े। दोनों तरफसे गोली चली। एक सिपाही मरा और एक घायल हुआ।

हमारा एक काका ९२ सालका था। पुलिसवालोंने कुछ गाँव-

वालोंके साथ उसे पकड़कर चम्बलमें डुबो दिया। हमने उन गाँववालोंसे बदला लिया। हम इस बातकी कोशिश करते हैं कि किसी बेगुनाहको दण्ड न देना पड़े। जो आदमी हमारे खिलाफ मुखबिरी करता है, उसे भी हम एक-दो मौके देते हैं। सँभल जाय, तो कुछ नहीं कहते। नहीं मानता, तो दण्ड देना ही पड़ता है। जूता-पैजार करनेपर नहीं मानता, तो गोली मारनी पड़ती है। पर गोली मारनेमें हमें दुःख होता है। आखिर वह भी तो हमारा भाई है!

पुलिस कभी-कभी आदमियोंको मारकर हमारा नाम लगा देती है। टोपीदार बन्दूक पासमें रखकर कह देती है कि ये बागी हैं।

गाँवके लोग हमारी इज्जत करते हैं। तकलीफ उठाकर भी हमारा पता नहीं देते। मानते हैं कि हम उन्हें पुलिसके जुल्मोंसे बचाते हैं।

हमारा एक चचेरा भाई फौजमें था। एक कत्लमें पुलिसने उसे फँसा दिया। पर पुलिस उसका कसूर साबित नहीं कर सकी। इसलिए वह छूट गया। अब उसकी नौकरी भी छूट गयी है। बेकार घूमता है। पुलिसने हमारा सारा घर खोद डाला। बच्चे ससुरालमें रहते थे। वहाँ भी पुलिस उन्हें सताती रही। तब वे जाकर दूसरी जगह रहने लगे।

× × ×

पाँच : हम पाँच भाई थे। छोटा भाई दिल्लीमें कम्पोजीटर था। उसे घर बुलवाकर और दूसरे एक भाईको पुलिसकी मददसे दुश्मनोंने मरवा दिया। जिन लोगोंने मरवाया था, उनसे बदला लेनेके लिए तीसरा भाई बागी बन गया। पुलिस उसे सताती रहती थी। बादमें उसे बेहड़में शेर खा गया।

पुलिसकी मारसे बचनेको हम कलकत्ता गये। अपनी जान बचाते फिरे। बादमें लौटकर बागी बन गये। ८० बीघा हमारी जमीन बंजर पड़ी है। पुलिस खेती नहीं करने देती।

छोटे भाईकी १३ सालकी विधवा देखे नहीं देखी जाती! खूनके

आँसू रोती है वह ! बागी होनेमें कोई सुख नहीं है, पर मजबूरीमें आदमी क्या करे !

× × ×

छह : गाँवके एक हरिजनसे हमारी रंजिश थी। उसका खून हो गया। किसीने दूसरे दो आदमियोंके साथ हमारा भी नाम लिखा दिया। पुलिसने हमें भी फाँस दिया। बादमें छूट तो हम तीनों गये, पर इस अन्यायसे जी खौल उठा और हम बागी बन गये।

जबरका साथ दुनिया देती है। गरीबोंको सब सताते हैं !

× × ×

सात : हमारे एक चाचाको २० सालकी सजा हुई थी। उसे काट-कर वे आये। उसके बाद दुश्मनोंने उन्हें मरवा दिया। हमारे पीछे भी बहुत दिनोंसे पुलिस पड़ी थी। उसने मैनपुरी, एटा, आगरामें कत्ल और डकैतीके ४ मुकदमे हमपर चलाये। चारोंमें हम बरी हो गये।

उसके बाद एक दफा पुलिस हमें हारमें पकड़ ले गयी। बाजरामें हथियारबन्द पुलिस छिपी थी। उसने चारों तरफसे हमें घेर लिया और हमसे कहा : 'फलाँ-फलाँ बागियोंको पकड़ा दो। पुलिसके मुखबिर बन जाओ।' हमें ५०) भी दिये। हमने कहा : 'अच्छी बात है। हम उन लोगोंको पकड़वा देंगे।' ऐसा कहकर हम भाग गये।

पुलिसका एक अफसर हमारे पिताका दोस्त था। उसने हमसे कहा कि तुम भाग जाओ, नहीं तो जानसे हाथ धो बैठोगे।

जान बचानेको मैं बागी बन गया !

× × ×

आठ : गाँवमें पार्टीबन्दी थी। झगड़ेमें पुलिसने हमें भी फाँस लिया। मुकदमेमें हम जीत गये। जिस बनियेसे झगड़ा था, उसने अपने घरपर पुलिस बैठा ली। यह पुलिस जब-तब हमें पकड़कर पीटने लगी। मार खाते-खाते तबीयत ऊब गयी, तब हम बागी बन गये।

× × ×

नौ : पुलिसने हमसे कहा कि फलाँ आदमीको मार दो। बहुत डराया-धमकाया। हमारे घरके तमाम बर्तन-भाँड़े फोड़ दिये। पुलिससे जान बचानेको हम तीन साल इधर-उधर भागते फिरे। बादमें बागी हो गये।

गाँवमें पार्टीबन्दी हो गयी। लोगोंने बन्दूकें ले लीं। हमारे एक साथी-को गाँववालोंने मरवा डाला। कई आदमी हमारे दुश्मन बन गये।

बन्दूक सारी खुराफातकी जड़ है। सबकी बन्दूकें, पिस्तौलें छीन ली जायँ, तो तमाम झगड़े खतम हो जायँ!

× × ×

दस : मेरी बहनको गाँवके जमींदारने बेइज्जत किया। मैंने फरियाद की, पर उसकी कोई सुनवाई नहीं हुई।

बलात्कार करना और ऊपरसे डाँट-फटकारकर भगा देना—यह देखकर मेरा खून खौल उठा। मैंने किसी तरह बन्दूक हासिल कर ली और बेइज्जतीका बदला लेनेको मैं बागी बन गया!

× × ×

ऐसी दस नहीं, बीसों आपबीती कहानियाँ सुनी हैं मैंने। सम्भव है, इनमें अतिशयोक्ति भी हो, अपने विरोधियोंपर दोष लादनेकी भी बात हो, फिर भी हम इनसे हवाके रुखका पता तो लगा ही सकते हैं।

किसीकी जमीन छीन ली जाती है, किसीको खेती नहीं करने दी जाती, किसीको झूठे मुकदमोंमें फँसा दिया जाता है, किसीको खुलेआम बेइज्जत किया जाता है, किसीकी बहन-बेटीकी अस्मत लूट ली जाती है, किसीके भाई-भतीजेको, किसीके काका-ताऊको गोलीका शिकार बना दिया जाता है। किसीको किसी तरहसे सताया जाता है, किसीको किसी तरहसे!

नतीजा यह होता है कि आदमी 'बागी' बन बैठता है!

अन्याय, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न, गरीबी, कुलीनताका अहंकार और पारस्परिक वैर-विरोध—इस विषम समस्याके मूलमें विराजमान है।

× × ×

आदमी यहाँके पानीदार हैं। फौजका पुश्तैनी असर है। किसीकी बात बर्दाश्त करना, अपमान सह लेना उनके लिए कठिन होता है। जरा-जरा-सी बातमें गाली-गलौजसे बात शुरू होकर फौजदारी हो जाती है, गोली चल जाती है। फिर कानूनसे और पुलिससे जान बचानेको लोग 'फरार' हो जाते हैं! और एक बार जब मनुष्य 'फरार' हो गया, घर-गाँवसे निकलकर चम्बलके वेहड़ोंमें चला गया, फिर उसका वापस लौटना कैसा ?

'फरार'—'बागी'—'डाकू'का बिल्ला उसकी पीठपर लगा सो लगा !

तब आगेका दुष्टचक्र चालू होता है।

किसी गलतीसे मनुष्य बागी बन बैठता है। अब उसके सामने अपने पेटकी समस्या है, घरवालोंके पेटकी समस्या है, प्राण बचानेके लिए शस्त्रास्त्रोंकी खरीदकी समस्या है, और है रिश्वत देकर अपने पीछे पड़ने-वालोंका मुँह बन्द कर देनेकी समस्या !

इन सबके लिए चाहिए पैसा !

तब लूटपाट, डकैती, अपहरण और कत्लका सिलसिला शुरू होता है।

विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः !

× × ×

एक बात और है।

चम्बलके वेहड़ोंमें गाँवके सीधे-सादे गरीब लोग बागियोंको खुले-आम न सही, भीतर ही भीतर आदरकी दृष्टिसे देखते हैं। कारण, एक तो उनके हाथमें बन्दूक रहती है; दूसरे वे देखते हैं कि उनमें साहस है, वे जान हथेलीपर लेकर घूमते हैं; तीसरे, जरूरत पड़नेपर वे गरीबोंको कुछ मदद ही देते हैं, लूटते हैं पैसेवालोंको और अपने दुश्मनोंको। नतीजा यह होता है कि गाँववाले यथाशक्ति उनकी सहायता ही करते हैं। जिन लोगोंके मनमें आदर और सहानुभूति नहीं रहती, वे इसलिए चुप रहते हैं कि **'जलमें रहकर मगरसे वैर मोल लेना ठीक नहीं !'**

× × ×

बागियोंमें सवर्ण भी हैं, हरिजन भी। एक हरिजन एम० एल० ए० कह रहे थे कि 'सात सौसे ऊपर बागियोंमें हरिजनोंकी संख्या १०० से अधिक है। ऊँची जातिवाले हमें सताते हैं, नतीजा होता है कि हमारे कुछ हरिजनभाई भी बागी बन बैठते हैं!'

गाँवोंमें जगह-जगह पार्टीबन्दियाँ चलती हैं, चुनाव चलते हैं। मुखिया, पटेल, पटवारी, अन्य सत्ताधारी एक तरफ, दूसरे लोग एक तरफ। अन्याय, अत्याचार, वैर-विरोध फलता-फूलता रहता है। इस विषवृक्षकी शाखाओंमें कोंपलें फूटती हैं, जिन्हें हम कहते हैं—'बागी!'

कहते तो लोग यहाँतक हैं कि कुछ सियासी पार्टीवाले भी डाकुओं-का अपने ढंगसे उपयोग करते हैं। चुनावमें वोटतक डलवानेके लिए डाकुओंके कुप्रभावका उपयोग किया जाता है! उन्हें बचाने और शरण देनेमें, हथियार देने-दिलानेमें भी कुछ लोगोंका हाथ रहता है।

यह सब न हो, तो डाकू टिकेंगे कैसे? 'चोरके पाँव ही कितने!'

× × ×

चम्बल घाटीमें शान्तिकी स्थापनाके लिए इस दुष्चक्रको तोड़ना पड़ेगा। विषवृक्षकी जड़पर कुठाराघात किये बिना यह समस्या सुलझने-वाली नहीं। ऊपर-ऊपरकी फुनगियाँ काटनेसे क्या होनेवाला है?

जरूरत है इस बातकी कि बागी बननेके मूल कारण मिटाये जायँ, ताकि नये बागी पैदा न होने पायें। पुराने बागियोंको समझा-बुझाकर राहेरास्तपर लाया जाय। उसके लिए सही रास्ता खोजना होगा। कारण,

राही कहीं है, राह कहीं, राहबर कहीं,
ऐसे भी कामयाब हुआ है सफर कहीं?

●

डण्डा, जेल और फाँसीका रास्ता : ३ :

डण्डा, जेल, फाँसी !

अपराध-निर्मूलनके ये ही सब तरीके हैं, जो ब्रिटिश सरकार अपनी विरासतमें छोड़ गयी है हमारे देशमें।

जेबमें जो पैसा होगा, वही लेकरके तो हम बाजारमें जायेंगे !

× × ×

गाली और डण्डेकी भाषा मनुष्यमें सुधार लाना तो दर-किनार, वह उसकी आत्मसम्मानकी भावनाओंको ठेस पहुँचाकर उसे समाजका शत्रु बनानेमें ही सहायक होती है। अच्छा असर तो उसका कभी होता ही नहीं। कभी भी नहीं।

लांछित और अपमानित व्यक्तिके मनपर जो विरोधी प्रतिक्रिया होती है, उसके लिए दूर जानेकी जरूरत नहीं। रोज ही तो हम देखते हैं कि छोटे-छोटे बच्चे भी डाँट-फटकार सुनकर उबल पड़ते हैं, विद्रोह कर बैठते हैं ! फिर बड़ोंका तो पूछना ही क्या ! हाँ, विवश होनेसे मानव अपनी भावनाओंकी अभिव्यक्ति न कर सके, यह बात दूसरी है। वरना दब जाने-पर नन्हीं सी चींटी भी काट खाती है !

× × ×

दण्डशास्त्रका आजतकका इतिहास इस बातका प्रमाण है कि गाली-गलौज, मार-पीट, बेंत, कैद, जुर्माना, कालापानी, फाँसी जैसे पत्थरका जवाब पत्थरसे देनेके तमाम साधन अपराधियोंको अपराध करनेसे विरत नहीं कर सके। यह बात दूसरी है कि दण्ड देनेके तरीकोंमें समय-समयपर कुछ हेर-फेर होता रहा है।

घोरसे घोर अमानुषिक उपाय काममें लाकर देखे जा चुके हैं। कभी अपराधीको हाथीके पैरोंतले कुचला जाता था, कभी शेर-चीतोंसे उसकी

कुश्ती करायी जाती थी, कभी सूलीपर उसे लटकाया जाता था, कभी आगकी जलती भट्ठीमें उसे झोंक दिया जाता था, कभी गरम तेलके कड़ाहमें या गरम तवेपर उसे भून दिया जाता था, कभी बन्दर, कुत्ते, मुर्गी, साँपके साथ बोरेमें बन्द करके पानीमें उसे फेंक दिया जाता था, कभी ढेले मार-मार उसे मार डाला जाता था, कभी पहियोंके तले उसे रौंदा जाता था, कभी भालेकी नोकपर उसे उछाला जाता था, कभी क्रूसपर उसे लटकाया जाता था, कभी उसके शरीरमें गरम सलाखें घुसेड़ दी जाती थीं, कभी जिन्दा जमीनमें गाड़कर ऊपरसे कुत्ते छोड़ दिये जाते थे ! कहीं गिलोटिनसे सिर कलम करनेकी प्रथा थी, कहीं जलाकर भस्म कर डालनेकी !

अपराधीके गलेमें रस्सीका फंदा डालकर फाँसी लगानेकी प्रथा तो आज विश्वके अनेक देशोंमें चालू ही है। हाँ, अमेरिकामें इधर बिजलीकी कुर्सी या सुगन्धित गैसका भी प्रयोग किया जाने लगा है—इस उद्देश्यसे कि जान लेनी ही है, तो तड़पा-तड़पाकर क्यों ली जाय, जब कि विज्ञान इतना बढ़ गया है कि एक एटम बम आनन-फानन लाखों जीवोंका इस दुनियासे उस दुनियामें तबादला कर देता है !

दण्ड देनेके चार प्रमुख प्रकारोंका विश्वमें अभीतक प्रयोग होता है :

१. फाँसी, निर्वासन या कैद

२. शारीरिक दण्ड

३. सामाजिक अप्रतिष्ठा और

४. जुर्माना ।

आइये, हिंसासे हिंसाको मिटानेके इन साधनोंपर थोड़ा-सा विचार करें ।

× × ×

अत्यन्त प्राचीन युगमें ही नहीं, मध्यकालीन युगमें भी मृत्युदण्ड खूब प्रचलित रहा। जलाकर, तेलमें भूनकर, सूली देकर यह 'कानूनी हत्या' अनादि कालसे जारी है। प्राचीन भारत हो या रोम, जर्मनी हो या

फ्रांस, इजराइल हो या स्विट्जरलैण्ड, अमेरिका हो या इंग्लैण्ड, सबकी एक-सी ही कहानी है।

रिकार्ड कहता है कि जूरिख और श्वाजमें सोलहवीं शताब्दीमें ५७२, सत्रहवींमें ३३६ और अठारहवींमें १४९ व्यक्तियोंको मृत्युदण्ड दिया गया।[1] इंग्लैण्डमें पन्द्रहवीं शताब्दीके आरम्भमें १७ व्यक्तियोंको, सन् १७८० में ३५० को मौतके घाट उतारा गया। सन् १८१४ में वहाँ ८, ९ और ११ सालके तीन बच्चोंको इसलिए फाँसी दी गयी कि उन्होंने एक जोड़ी जूते चुराये थे![2] फाँसी पाये व्यक्तिका शव जंजीरोंमें जकड़ा या तारकोलसे पुता हुआ बहुत दिनोंतक लटका रहता था, ताकि लोग दहलते रहें! चित्रकारोंके चित्रोंमें प्रकृतिके साथ-साथ इसका भी चित्रण रहता था![3]

एक जमानेमें इंग्लैण्डमें साधारणसे साधारण २२० जुर्मोंके लिए फाँसीका दण्ड था!

कोई पाँच शिलिंग चुरा ले, तो फाँसी!

किसीको धमकीका पत्र लिखे, तो फाँसी!

सड़कपर वेष बदले पाया जाय, तो फाँसी!

छोटा पेड़ काट डाले, तो फाँसी!

खरगोश जैसे जानवरको मार डाले, तो फाँसी!

वेस्ट मिन्स्टर एवेको नुकसान पहुँचाये, तो फाँसी!

और यह फाँसी ऐसी-वैसी नहीं; उसकी भयंकरताका अनुमान राजद्रोहके अपराधी क्रोमर्टी और वेल मेनर्नीको सुनाये गये दण्डपत्रसे किया जा सकता है[4] :

'न्यायका फैसला है कि तुम··· टावरकी जेलमें, जहाँसे आये हो,

---

१. कार्ल एल० फानबार : ए हिस्ट्री ऑफ कण्टीनेण्टल क्रिमिनल लॉ, १९१६; पृष्ठ २९९।

२. 'पनिशमेण्ट ऑफ डेथ', फिलनथ्रापिस्ट, ४ : १९०; १८१४।

३. डब्लू० एण्ड्रूज : ओल्ड टाइम पनिशमेण्ट्स, १८९०, पृष्ठ २११-२१२।

४. पेनल रिफार्मर, भाग १, अंक ५, पृष्ठ ९-१०।

वापस जाओगे । यहाँसे तुम फाँसीके स्थानपर ले जाये जाओ । तुम जब वहाँ पहुँचो, तो गलेमें रस्सी लगाकर तुम्हें लटकाया जाय, किन्तु तुम्हारा गला इतना न कसा जाय कि तुम्हारे प्राण निकल जायँ, क्योंकि तुम्हें जिन्दा ही काटना जरूरी है । तुम्हारे जीवित रहते ही तुम्हारे शरीरसे अँतड़ियाँ निकाल ली जायँगी और तुम्हारे शरीरके चार टुकड़े किये जायेंगे । यह सब होगा शासककी मर्जीसे !'

और इतना होनेपर भी तमाशा यह कि एक तरफ चोरीके जुर्ममें आदमी फाँसीपर लटकाया जा रहा है और दूसरी तरफ वहीं उसके ठीक सामने साहसी चोर तमाशबीनोंकी जेबें कुतर रहे हैं !

फाँसी जैसे महानतम दण्डकी व्यर्थताका और क्या प्रमाण चाहिए ?

× × ×

धीरे-धीरे यह 'कानूनी हत्या' लोगोंको खटकने लगी । साथ ही लोग यह भी महसूस करने लगे कि इस दण्डसे घृणा उत्पन्न करनेका उद्देश्य विफल होता है, उल्टे दण्डित व्यक्तिके प्रति जनताकी सहानुभूति उमड़ने लगती है । चार्ल्स डिकेन्स कहता है : 'मृत्युदण्डके चारों ओर एक अद्भुत आकर्षण होता है, जो कमजोर और बुरे लोगोंको अपनी ओर आकृष्ट करता है और उससे सम्बद्ध बातों और उससे उत्पन्न होनेवाली बुराइयोंके प्रति रुचि उत्पन्न कर देता है । भले आदमी भी इसकी उपेक्षा नहीं कर पाते !'

तब फाँसीकी सजा उठा देनेके लिए प्रयत्न होने लगे ।

पिछली शताब्दीमें फाँसीकी सजा समाप्त करनेके लिए रोमिली, बेंथम, पील, मिकिण्टाश, माण्टेग्यू, क्रुकशैन्क आदिने जोरदार प्रयत्न किया । हालैण्ड, नार्वे, आस्ट्रिया, स्वीडन, न्यूजीलैण्ड, डेनमार्क, लटेविया, फिनलैण्ड, बेलजियम जैसे कोई ३० देशोंने फाँसीकी सजा उठा दी है और अन्य देशोंमें उसे केवल हत्याके जुर्ममें ही देनेके लिए रखा है । इनमेंसे ६ देशोंने उसे फिर जारी कर दिया है ।[१] अमेरिकामें सन् १८४७ से १९११

१. फ्रैंक ई० हार्टुंग : ओन कैपिटल पनिशमेण्ट, १९५१, पृष्ठ २ ।

तक ६ राज्यों—मिशिगन, मिनेसोटा, उत्तरी डकोटा, विस्कान्सिन, मेन और रोडद्वीप—में फाँसीकी सजा पूर्णतः उठा दी गयी है। सात अन्य राज्योंने भी उसे उठा दिया था, पर बादमें उसे फिर लागू कर दिया।[१]

फाँसीकी सजा उठा देनेसे अपराधोंकी संख्या बढ़ जायगी, इस आशंकासे लोग उसे उठानेमें हिचकते हैं। यह हिचकिचाहट इसी कारण है कि हमने मान रखा है कि हिंसासे ही हिंसाको काबूमें किया जा सकता है। सोचनेकी बात है कि फिनलैण्डमें सन् १८२६ से और बेलजियममें १८६३ से फाँसी बन्द है, तो भी अपराधोंकी संख्या नहीं बढी। बम्बईमें सन् १८०४ से १८११ तक सर जेम्स मिकिण्टाशने फाँसीकी सजा उठा दी थी, तो कौन-सा बुरा असर हुआ ?[२]

× × ×

हम निष्पक्ष होकर देखें, तो हमें यह मानना पड़ेगा कि फाँसीका दण्ड पैशाचिकताका जघन्यतम रूप है। जब हम किसी प्राणीको जीवनदान नहीं कर सकते, तो उसके प्राण लेनेका ही हमें क्या अधिकार है ! और फिर इसी बातका क्या ठिकाना कि अपराधीको दिया गया प्राण-दण्ड सर्वथा उचित ही है ? कितनी ही बार किसीके फाँसी पड़ जानेके बाद यह पता लगा है कि वह व्यक्ति निरपराध था ![३] आखिर जज भी तो गलती कर सकता है। जजोंमें मतभेद रहनेपर बहुमत फाँसीके पक्षमें हो और अपराधीको फाँसीपर लटका दिया जाय, तो इसे उचित कहा जायगा ?

इतना ही नहीं, क्षणिक आवेश या उत्तेजनामें आकर मानव कोई गलती कर बैठता है। होश आनेपर वह उसके लिए प्रायश्चित्त करके अपना जीवन सुधार करता है। फाँसीपर लटका देनेसे मानवके सुधारका अवसर ही समाप्त हो जाता है।

---

१. सदरलैण्ड और क्रेसी : प्रिंसिपल्स ऑफ क्रिमिनालॉजी, १९५५, पृष्ठ २६३।

२. पेनल रिफार्मर, भाग १, अंक ८, पृष्ठ २१।

३. लेसली हेल : हैंग्ड इन एरर, १९६१, पृष्ठ ७–११०।

डाकेके अभियोगमें मौतकी घड़ियाँ गिननेवाले फाँसीके एक बन्दीका पत्र मैंने देखा है। लिखता है वह : 'भारत सरकार यदि उचित समझे, तो डाकुओंकी भारी शक्तिको फाँसीपर न चढ़ाकर मणिपुरके नागाओंके सामने अथवा कश्मीरमें पाकिस्तानकी सीमा-रेखापर अथवा चीनकी सीमा-रेखापर जूझनेके लिए भेज दे। भारत-भूमिकी रक्षाके लिए वीर पुरुषोंकी भाँति अगर हमारा बलिदान हो, तो हमें कितनी प्रसन्नता होगी ! एक जल्लादके हाथसे फाँसी लगाकर निरर्थक मरवा देनेसे ऐसी मृत्यु लाख दर्जे वरेण्य है !...'

फाँसीपर लटकानेके बजाय देशके लिए प्राण न्यौछावर करनेकी यह माँग क्या विचारणीय नहीं है ?

× × ×

और घुला-घुलाकर मारनेका तरीका—निर्वासन ?

अवांछनीय अपराधियोंको निर्वासित कर देना भी दण्डका एक प्रकार है। पर लोग ऐसा मानते हैं कि 'कालेपानीकी सजासे तो फाँसी ही अच्छी। जिन्दगीभर घुलनेसे तो थोड़ी देरका कष्ट, चाहे वह कितना ही भयानक क्यों न हो, अच्छा समझा जाना चाहिए।' भाई परमानन्दकी 'काले पानीकी कारावास कहानी' बताती है कि कालेपानीमें क्या होता है। भिन्न-भिन्न प्रदेशोंसे लाये गये भिन्न-भिन्न प्रकृतिके लोग गन्दे जलवायुवाले प्रदेशोंमें घर-परिवारवालोंसे हजारों मील दूर रहकर कैसा नारकीय जीवन बिताते हैं, इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है।

और फिर दिन-रात उनके मनपर यह बोझ रहता है कि हमारा कोई देश नहीं, हमारा कोई घर नहीं, हमारा कोई परिवार नहीं !

आस्ट्रेलियामें निर्वासित एक आयरिश विद्रोही जॉन मिचेलने वहाँकी सन् १८५१ की स्थितिका वर्णन करते हुए लिखा है :

"हम जिस नैतिक और सामाजिक वातावरणमें रहते हैं, वहाँ हमें यह अपमान ही हरदम कोंचा करता है कि हमारा कोई देश नहीं है सिवा इस

अपराधी उपनिवेशके ! हमारा कोई नौकर नहीं ! पड़ोसी भी हैं बहुत थोड़ेसे ! हम इस जेल-व्यवस्थाका तीव्र विरोध करना चाहते हैं ।"[१]

× × ×

जेलोंमें कैदियोंका जो हाल होता है, वह किसीसे छिपा नहीं है । क्रोपाटकिन जेलखानोंको राज्यके धनपर चलनेवाले, अपराध सिखानेके विश्वविद्यालय बताते हुए ठीक ही कहता है कि 'कुछ दिनों जेलमें रहकर चोर, डाकू आदि अपने पिछले धन्धेके लिए अधिक दक्ष होकर लौटते हैं । वे अपना काम पहलेकी अपेक्षा सफलतासे करना सीख जाते हैं और समाजके प्रति अधिक कटुता उत्पन्न कर लेते हैं ।'

जेल तो आज सचमुच ही कारखाना बन गया है बदमाश ढालनेका ! जिन अपराधोंके जुर्ममें मनुष्य कैद भुगतनेको जेलमें बन्द किया जाता है, उनमेंसे कौन-सा अपराध जेलके भीतर नहीं होता ?

जिन लोगोंको जेलमें रहनेका मौका मिला है, वे इस तथ्यको स्वीकार करेंगे कि जेलोंमें अपराधियोंका सुधार तो दूर, उलटे उनका पतन और बढ़ जाता है ! जेलसे वे पक्के बदमाश बनकर बाहर आते हैं । पहले कुछ कमी रहती है, तो जेलमें पहुँचकर वह पूरी हो जाती है ![२] बाबू श्रीप्रकाश जैसे सुलझे व्यक्तिका कहना है कि 'जेलका जीवन ऐसा है कि हममेंसे अच्छेसे अच्छे लोग भी वहाँ पहुँचकर 'तिकड़म' सीख लेते हैं और ऐसी-ऐसी हरकतें करने लगते हैं, जिनपर बाहर हमें बड़ी शर्म लगे !' इसमें आश्चर्यकी बात ही क्या है ? को न कुसंगति पाय नसाई ?

कोई मनुष्य एक बार जेल चला जाता है, तो तिरस्कार और अपमान उसके भाग्यमें लिख जाता है । वह छूटकर बाहर आता है, तो समाजमें उसे कोई स्थान नहीं, फिर उसके सुधारके सभी दरवाजे बन्द ! घूम-फिर-कर वह फिर जेलमें ही पहुँच जाता है ।

और यह बात भारतमें ही नहीं, विदेशोंमें भी है ।

---

१. जॉन मिचेल : जेल जर्नल, १८६४, पृष्ठ २६४ ।

२. के० सन्तानम : सत्याग्रह एण्ड दि स्टेट, १९६०, पृष्ठ ३४ ।

उदाहरण लीजिये :

'मैं जबतक जेलमें रहा, आदिसे अन्ततक मुझे तीव्र अपमान और तिरस्कार ही झेलते रहना पड़ा। कैदी जिस क्षणसे जेल अधिकारियोंके हाथमें पड़ता है, उसी क्षणसे उसके दुर्भाग्य और तिरस्कारका आरम्भ हो जाता है! इससे कैदीका क्रुद्ध और हताश होना परम स्वाभाविक है। जेलमें मनुष्यके लिए सबसे खटकनेवाली बात यही है।'[१]

अन्तर्राष्ट्रीय कुख्यातिवाला एक कैदी, जिसने जेलोंमें २५ वर्ष बिताये, अपने दुर्भाग्यका रोना रोते हुए लिखता है : 'मैं जहाँ जाता हूँ, मुझे समाज-बहिष्कृत माना जाता है। कानूनका चोगा पहननेवाले किसी भी व्यक्तिका मैं 'कानूनी शिकार' बन जाता हूँ। समाजसे मेरे जो भी सम्पर्क आते हैं, वे मुझपर यही प्रभाव डालते हैं कि सभ्य समाजमें मेरे लिए कोई स्थान नहीं। जो भी लोग मुझसे बात-व्यवहार करते हैं, उनकी भाषासे, उनके व्यवहारोंसे, उनके कार्योंसे एक ही स्वर निकलता है कि 'तुम खराब आदमी हो, हम तुमसे घृणा करते हैं!' समाज मेरे गालपर चपतें लगाता है! मैं उलटकर उसे चपत न लगाऊँ, तो मैं आदमी क्या?'[२]

शिकागोके पैरण्टल स्कूलमें एक लड़का रखा गया सुधारके लिए। वहाँसे जब वह निकलता है, तो कहता है :—

'बाहरके छात्रोंसे मिलनेमें मुझे हीनता लगती है। लोग मुझपर विश्वास नहीं करते। मैं लाख कहता हूँ कि मैं आगे बढ़ना चाहता हूँ, सीधे रास्ते हाईस्कूल करके कॉलेजमें जाना चाहता हूँ, पर सभी मुझसे यही आशंका रखते हैं कि मैं फिर कुछ चुरा लूँगा! अपने साथियोंसे मैं किस विषयपर चर्चा करूँ, यह मुझे सूझता नहीं। स्कूलमें हमें बात करनेकी मनाही थी। अब किसीसे बात करनेमें मुझे शर्म लगती है। मैं जबतक वहाँ रहा, किसीसे जी खोलकर बात नहीं कर सका। तबसे मुझमें हीनताकी जो भावना

---

१. एल्फ्रेड हैसलर : डायरी ऑफ ए सेल्फमेड कन्विक्ट, १९५४, पृष्ठ १७७।

२. जे० पी० अलेक्जेंडर : दि फिलॉसफी ऑफ पनिशमेण्ट, जर्नल ऑफ क्रिमिनल लॉ एण्ड क्रिमिनालॉजी, जुलाई-अगस्त १९२२।

पनपी, वह कभी निकल नहीं सकी। कोई भी मुझे नहीं चाहता था। लोग मुझसे डरते रहते थे और सभी मुझपर अविश्वास करते थे !'[1]

जानते हैं बादमें इस बाल-अपराधीका क्या हश्र हुआ ?

वह दो अन्य सुधारशालाओंमें भेजा गया और उसके बाद वह बन्द कर दिया गया सरकारी जेलमें २३ सालकी कैदकी सजा भुगतनेके लिए !

× × ×

अवधविहारी द्विवेदीका कहना है कि उनका एक अध्यात्मवादी, योगवाशिष्ठ-प्रेमी और वेदान्ती मित्र एक हत्याके सिलसिलेमें ७ सालको जेल गया और लौटा तबसे इतना दुराचारी, व्यभिचारी और बदमाश बन गया है कि जिसकी कभी कल्पना नहीं की जा सकती थी !

जेलके सीखचोंमें रहकर आदमी जो कुकृत्य न सीख ले, सो थोड़ा !

× × ×

और एक बात। औसत आदमीको जेलमें बाहरसे अच्छा खाना-पीना मिलता है, बावजूद इस बातके कि जेलके बहुत-से कर्मचारी कैदियोंकी खुराकमेंसे खुद भी अपना हिस्सा लगाते हैं !

बम्बई और मद्रासके मिल-मजदूरोंको और बम्बई प्रान्तके कैदियोंको मिलनेवाले भोजनकी तुलनासे इसका अन्दाज लग सकता है[2] :

	मिल-मजदूरोंको (पौण्डमें)		कैदियोंको (पौण्डमें)	
पदार्थ	बम्बई	मद्रास	हलका श्रम	कड़ा श्रम
अन्न	१·२९	१·१३	१·३८	१·५
दाल	·०९	·०७	·२१	·२७
अन्य पदार्थ	·१६	·१७	·१०	·१०
योग	१·५४	१·३७	१·६९	१·८७

१. क्लिफर्ड आर० शा : डेलिन्क्वेन्सी एरियाज, १९२९, पृष्ठ ४१।

२. कन्हैयालाल मुन्शी : दि रिडन दैट ब्रिटेन राट, पृष्ठ ५७-५८।

तो, जब जेलमें वक्तपर बाहरसे अच्छा खाना मिलता है, चिकित्साकी भी सुविधा रहती है, फिर यदि एक बारका कैदी दुबारा जेल आना पसन्द करता है, तो इसमें आश्चर्य क्या ?

एक बार सन् '३२-'३३ में मैं तनहाईकी सजामें था, तो मैंने एक शीघ्र छूटनेवाले 'पक्का कैदी'को अपने कानों यह कहते सुना : 'अब बाहर जाकर काम करना तो मुश्किल है अपने लिए। एकाध हफ्तेमें कुछ खुराफात करके फिर लौट आऊँगा यहाँ। फिर इसी तरह मौजसे कटने लगेगी !'

बाबू श्रीप्रकाशको बाईस बारके एक सजायाफ्ता कैदीने बताया कि 'मेरे लिए जेल ही सबसे बढ़िया और सबसे सुरक्षित ठिकाना है !'

यों जेलखाना कैदियोंको 'जेलका पंछी' बनानेमें मदद ही करता है। बाहर उनपर अविश्वास है, उनके प्रति घृणा है, तिरस्कार है, कोई सीधे मुँह बात नहीं करना चाहता; ईमानदारीसे पेट पालना चाहे, तो काम नहीं मिलता। तो फिर उसका यह सोचना स्वाभाविक है कि चलूँ, फिर लौट चलूँ उन बदनाम साथियोंके बीच, जहाँ सभी एक नावपर सवार हैं : न तू कहे मेरी, न मैं कहूँ तेरी !

× × ×

अपराधी इधर जेलमें सड़ता है, उधर उसका परिवार भूखों मरता है, दाने-दानेको तबाह होता है। तभी तो बाबा कहते हैं : अपराधके जुर्ममें सजा अपराधीको कहाँ होती है ? वह होती है, उसके बाल-बच्चोंको ! मेरा बस चले, तो मैं कहूँ कि जा, तुझे ३ एकड़की सजा। इस जमीनपर तू खोद खा और बच्चोंको खिला !

× × ×

जेलोंमें बन्दीके प्रति किये जानेवाले अत्याचारोंकी कहानियोंने जब मानवकी मानवताको स्पर्श करना आरम्भ किया, तब जेल-व्यवस्थामें सुधारकी ओर लोगोंका ध्यान खिंचना शुरू हुआ। इंग्लैण्डमें एलिजाबेथ फ्राई और प्रिजन डिसिप्लिन सोसाइटीने इस दिशामें अच्छा काम किया।

फलतः सन् १८२३ और १८२४ में ब्रिटिश पार्लमेण्टने दो कानून बनाये। तबसे इस दिशामें थोड़ा-बहुत प्रयत्न चालू है, यद्यपि सुधारकी गति अत्यधिक धीमी है और पहलेसे बहुत कुछ मिलती-जुलती ही है। पहलेकी स्थितिका वर्णन करते हुए हक्सलेने लिखा है :[1]

'Prisons were houses of torture in which the innocent were demoralized and the criminal became more criminal.'

'जेलखाने अत्याचारके ऐसे ठिकाने थे, जहाँ सीधे-सादे लोगोंको भ्रष्ट बनाया जाता था और सामान्य अपराधियोंको घोर अपराधी !'

अपना दोष दूसरोंके मत्थे मढ़नेवाले और दूसरोंकी पीड़ामें सुखकी अनुभूति करनेवाले डण्डेके समर्थक शुरूसे ही इस मानवतावादी आन्दोलनका विरोध करते आ रहे हैं। उनका कहना है कि 'अपराधियोंको पाल-पोसकर मोटा करना साँपको दूध पिलाना है !'[2] फिर भी आज विश्वके विभिन्न अंचलोंमें इस बातपर जोर दिया जाता है कि जेलमें या काले पानीमें सड़नेवाले कैदियोंके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए।[3]

× × ×

जेलका तो यह हाल है। और शारीरिक दण्ड ?

बेंत या कोड़ेकी कहानी कुछ कम द्रावक है क्या ?

Spare the rod and spoil the child ! 'पीटनेमें कोताही की कि लड़का बिगड़ा !' यह कहावत बच्चोंके विकासमें कितनी घातक सिद्ध हुई है, इसका पता तो मनोवैज्ञानिकोंको पूछनेसे ही लगेगा। पर आज तो हमारे घरोंका सामान्य कानून बन गया है : दश वर्षाणि ताडयेत् !

---

१. एल्डस हक्सले : एण्ड्स एण्ड मीन्स, १९५७, पृष्ठ १४२।

२. हक्सले : एण्ड्स एण्ड मीन्स, पृष्ठ १४३।

३. परमेश्वरीलाल गुप्त, धूम बिहारीलाल सक्सेना : अपराध और दण्ड, सं० २००८, पृष्ठ ९९।

लड़केसे कोई काम बिगड़ा नहीं कि उसकी पीठसे छड़ीकी मुलाकात हुई नहीं !

नतीजा ?

मार खा-खाकर बच्चे पलते हैं। वे जिद्दी बनते हैं, 'कुटाइल' पड़ जाते हैं और प्रायः वही करते हैं, जिसके लिए उन्हें मना किया जाता है !

हमारी सरकार भी दण्ड-शक्तिकी कायल है।

सरकारके नुमाइन्दे, पुलिसके अधिकारी, बड़े-बड़े सत्ताधारी इस बात-को पत्थरकी लकीर मान चुके हैं कि दुष्ट लोग डण्डेसे ही काबूमें आते हैं :

ये सब ताड़नके अधिकारी !

ताड़ना ही यदि किसीके सुधारका उपाय होती, तो इतनी अधिक ताड़नाके बाद विश्वमें अपराध होते ही नहीं। अनुभव उलटा ही है।

स्कूलका एक लड़का चन्द्रशेखर मामूली-से राजनीतिक अपराधके कारण बेंतोंसे पीटा गया। भारतकी अंग्रेजी सरकारने मान लिया कि अब वह क्या खाकर ऐसी हिमाकत करेगा ! पर कुछ दिनों बाद सरकारने देखा कि बेंतोंके दागोंने तो सरकारका तख्ता उलट देनेकी ही तैयारी कर रखी है। भारतमें सशस्त्र क्रान्तिका एक सूत्रधार बन बैठा वह लड़का !

उसका 'आजाद' नाम सरकारके लिए एक आतंक बन बैठा।

लाख कोशिश की सरकारने उसे जिन्दा पकड़नेकी, पर हाथ लग सकी इलाहाबाद पार्कमें गोलियोंसे क्षत-विक्षत उसकी लाश ही ! रोम-रोम कह रहा था उसका :

दुश्मनोंकी गोलियोंका हम सामना करेंगे,
'आजाद' हैं हम और हमेशा आजाद ही रहेंगे !

× × ×

कहीं बचकी छड़ीसे, कहीं बेंतसे, कहीं चमड़ेके पट्टेसे, कहीं 'कैट' नामक नौ रस्सियोंके कोड़ेसे बेंतकी सजा दी जाती है। अक्सर ही उससे शरीरकी खाल उचड़ जाती है, मांसतक कट जाता है, खूनके फौवारे तो

उड़ते ही हैं। यह सब किसलिए कि अपराधी इस कष्टसे पीड़ित होकर इतना भयभीत हो जाय कि फिर कभी अपराध न करे। पर होता क्या है?

इंग्लैण्डमें कुछ ही वर्ष पूर्व एक कमेटी बैठी थी, शारीरिक ताड़नाके परिणामका पता लगानेको।

उसने समान अपराधके अपराधियोंकी जाँच की। इनमें १४२ को बेंतकी सजा मिली थी, २९८ को अन्य प्रकारकी सजाएँ मिली थीं।

पाया यह गया कि अन्य सजाएँ जिन्हें मिली थीं, उनकी अपेक्षा बेंत खानेवाले अपराधियोंका जीवन अधिक नीचे गिर गया! आँकड़ोंसे अपनी बातकी पुष्टि करते हुए कमेटीने बताया कि लिवरपूलमें जस्टिस डेने सन् १८८७ से १८९४ के बीच डाकुओंको कोड़े लगवाये और डाकोंकी संख्या बढ़ गयी! एक साल तो डाकोंकी संख्यामें १९८ की वृद्धि हो गयी! सन् १९०८ में जार्ज कार्डिफको भी ऐसा ही अनुभव मिला। कमेटीका निष्कर्ष है कि 'हमें ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला कि बेंतकी सजाकी अधिकतासे अपराध घटे हों अथवा बेंतकी सजा कम करनेसे अपराध बढ़े हों।'

ब्रिटिश पार्लमेण्टके सदस्य बेन्सन अपनी 'फ्लॉगिंग' नामक पुस्तकमें यही बताते हैं कि बेंतकी सजा पानेवाले अपराधी अपने अपराधोंको बार-बार दुहराते हैं। 'हावर्ड लीग' नामक दण्ड-सुधारक संस्थाने 'कारपोरल पनिशमेण्ट' नामक अपनी पुस्तकमें इंग्लैण्ड और स्काटलैण्डमें पड़नेवाले डाकोंकी तुलना करते हुए बताया है कि स्काटलैण्डमें कम डाके पड़ते हैं, यद्यपि वहाँ बेंतकी सजा नहीं है। इंग्लैण्डमें बेंतकी सजा रहनेपर भी डाकोंकी संख्या अधिक है।

इंग्लैण्डमें बेंतकी सजा है, देखादेखी भारतमें भी। अमेरिकाके मेरीलैण्ड और डेलावेयर नामक दो राज्योंमें भी बेंतकी सजा है। हाँ, वहाँ बेंतकी सजा पानेवाले हब्शियोंकी संख्या रहती है ८० फीसदी, गोरोंकी केवल २० फीसदी।[1]

---

१. राबर्ट जी० काल्डवेल : रेड हन्नाह, डेलावेयर्स ह्विपिंग पोस्ट, १९४७, पृष्ठ ६९-७०।

बेंत खानेवाले अनेक व्यक्ति आत्महत्या भी करते पाये गये हैं। डॉक्टर ग्रुवर कहता है : 'कोड़ेकी सजा अपराधीको अपराधपर विचार करनेका मौका नहीं देती। इससे अपराध करनेकी प्रवृत्ति पैदा होती है!'

क्या लाभ है ऐसे अमानुषी दण्डसे ?

× × ×

और सामाजिक अप्रतिष्ठा ?

उससे अपराध कुछ घटते हैं क्या ?

सत्रहवीं शताब्दीकी घटना है। न्यूयार्कमें एक आदमीने पड़ोसीके बगीचेसे कुछ गोभी चुराये। उसे दण्ड मिला कि वह उन गोभियोंको सिर-पर रखे हुए कटघरेमें खड़ा रहे और फिर पाँच सालके लिए बस्तीसे निर्वासित रहे।[१]

इंग्लैण्डमें सन् १६९८ में एक कानून बना कि अपराधीका बायाँ गाल लोहेसे दाग दिया जाय। आठ साल बाद इस दण्डको रद कर देना पड़ा। क्यों ? इसलिए कि "...इससे अपराध रोकनेमें मदद नहीं मिल सकी। उलटे हुआ यह कि ऐसे दागिल आदमियोंपर कोई विश्वास नहीं करता और वे जब ईमानदारीसे रोजी-रोटी नहीं पैदा कर पाते, तो विवश होकर गलत रास्तेपर ही चलते हैं!'[२]

कुकृत्योंके अपराधीको सामाजिक रूपसे अप्रतिष्ठित करनेके लिए आज जिस पद्धतिका विशेष रूपसे प्रचलन है, वह है नागरिकताके अधिकारोंसे वंचित कर देना, वोट न डालने देना, कोई प्रतिष्ठित पद न देना, संविदा करने, कुछ धन्धे करने, विवाह करने, विदेशमें प्रवास करने आदिसे वंचित कर देना।

× × ×

दण्डका चौथा तरीका है—जुर्माना।

---

१. फिलिप क्लीन : प्रिजन मेथड्स इन न्यूयार्क स्टेट, १९३०, पृष्ठ २३।

२. ल्यूक ओ० पाइक : ए हिस्ट्री ऑफ क्राइम इन इंग्लैण्ड (१८७३–१८७६), खण्ड २, पृष्ठ २८०।

जुर्माना है तो बहुत पुराना, पर है वह निरर्थक-सा ही।

अमीरोंके लिए उसका कोई मूल्य नहीं। गरीबोंका वह प्राणलेवा है।

अमीरोंपर उसका कोई असर नहीं पड़ता। ग़रीब बेचारे तबाह हो जाते हैं! अपराध करता है एक, फल भोगना पड़ता है सारे परिवारको!

जुर्माना दण्डका स्वयं उपहास है!

× × ×

सवाल है कि दण्ड आखिर दिया क्यों जाता है? दण्डका उद्देश्य क्या है? उसका लक्ष्य क्या है?

दण्ड-विधायकोंका कहना है—दण्डके तीन लक्ष्य हैं।

पहला लक्ष्य है—अपराधीसे अपराधका बदला लेना और इस प्रकार उसके द्वारा की गयी क्षतिकी पूर्ति करना। प्रतिकार, प्रतिशोध, प्रतिहिंसा!

दूसरा लक्ष्य है—भय या आतंक उत्पन्न करना, ताकि फिर कोई वैसी हिमाकत या हरकत न करे।

तीसरा लक्ष्य है—अपराधीका सुधार।

ब्रिटिश कारागार-पद्धति जाँच समितिके सदस्य जार्ज बर्नर्ड शाने इसका तार्किक विवेचन करते हुए कहा है कि 'प्रतिहिंसाकी भावनाके चलते अपराधीके सुधारकी कल्पना ही नहीं की जा सकती। यह भावना ईसाइयतके सर्वथा प्रतिकूल है। इसमें द्वेषकी भावना भी है और है यह 'पाप-नाशक अन्धविश्वास' कि दो काले मिलकर एक गोरा हो जायगा!

'आतंक उत्पन्न करनेका लक्ष्य इसलिए पूरा नहीं होता कि इस बातका कोई ठिकाना नहीं कि सही अपराधीको ही उचित दण्ड मिल सकेगा। उसके कई कारण हैं। जैसे, अधिकारियोंके तरीके इतने दुष्टतापूर्ण हैं कि उन्हें जनताका पूरा सहयोग नहीं मिलता; अभियोक्ताको भारी असुविधा उठानी पड़ती है; समय भी बहुत बर्बाद होता है; अधिकांश लोग अत्यधिक संदिग्ध न्याय पानेकी अपेक्षा असन्दिग्ध पारिवारिक अप्रतिष्ठाका संकट उठाना पसन्द नहीं करते; और ऐसे अपराधोंकी संख्या अत्यधिक है,

जिनका कि पता ही नहीं चल पाता, जिससे इस बातकी पूरी सम्भावना रहती है कि असली अपराधी कभी कानूनके शिकंजेमें फँसेगा ही नहीं' ![1]

× × ×

दादा धर्माधिकारी ठीक कहते हैं :

'क्या हमने कभी सोचा है कि आखिर सजा किसलिए है ? बदला अलग चीज है और सजा अलग। सजामें बदलेकी भावना जितनी कम रहेगी, उतनी सजा शुद्ध होगी। दण्डमें न्याय होना चाहिए। न्याय तब होता है, जब उसमें प्रतिशोध और क्रूरता कमसे कम होती है। सजाका, दण्डका उद्देश्य मनुष्यको नाकाबिल बना देना नहीं है।'[2]

× × ×

स्पष्ट है कि सताकर, प्रतिशोध लेकर अपराधको रोकनेका तरीका गलत है। डण्डा, जेल और फाँसीके रास्तेसे आतंक पैदा किया जा सकता है, अपराधीका सुधार नहीं !

तब रास्ता ?

रास्ता एक ही है और वह है—प्रेम, दया और दुआका रास्ता :

नीच बन जाता है इन्सान सजाएँ देकर।
जीतना चाहिए दुश्मनको दुआएँ देकर !

---

१. जी० बी० शा : इम्प्रिजनमेण्ट, १९२५; इंग्लिश प्रिजन्स अण्डर लोकल गवर्नमेण्ट, सुप्रा; भूमिका, संक्षेप, पैरा ३-४।

२. दादा धर्माधिकारी : 'सजाका उद्देश्य', भूदान-यज्ञ, २४ जून '६०।

प्रेम, दया और दुआका रास्ता : ४ :

जफाएँ तुम किये जाओ, वफाएँ हम किये जायें,
हमें भी देखना है यह कि कितने बेवफा तुम हो !

अहिंसासे हिंसाका प्रतिकार !

पतञ्जलि भगवान् कहते हैं योगसूत्रमें :

अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः । २।३५

'अहिंसाकी प्रतिष्ठा हुई कि आसपासके सभी प्राणियोंका वैर छूटा !' और तब शेर और गाय एक घाटपर पानी पीने लगते हैं !

आप कहेंगे कि तू क्या बाबा आदमकी बात करता है ! आजकल ऐसा कहीं देखनेमें आता है ?

मैं कहता हूँ : हाँ !

गांधीके सत्याग्रहोंकी कहानी तो हम सबकी आँखों-देखी कहानी है।

इसके अलावा भी देश-विदेशमें पिछली शताब्दियोंमें अनेक स्थानोंपर अहिंसात्मक प्रतिकार होते रहे हैं । सफल प्रतिकार !

हंगरी, अफ्रीका, ब्रिटेन, भारत आदिके हालके ऐसे अनेक उदाहरण देते हुए ग्रेग साहब कहते हैं :

"अनेक देशोंके अनेक संतों और वीर पुरुषोंने अहिंसात्मक प्रतिकारके सिद्धान्तकी खोज करके उसका प्रयोग किया है । लाओत्से, कनफ्यूशियस, बुद्ध, जैन तीर्थंकर, ईसा, असाइसीके संत फ्रांसिस, जार्ज फाक्स, लियो टॉल्स्टॉय और अनेक ऐसे व्यक्तियोंने इसका प्रयोग किया है । आधुनिक युगके विशिष्ट व्यक्ति गांधीने इस सिद्धान्तका विशद और सामूहिक रूपसे विधिवत् प्रतिपादन करके उसमें सफलता प्राप्त की है ।

"प्रश्न है कि यह अहिंसात्मक प्रतिकार क्या केवल बुद्धिजीवियों और

साधु-सन्तोंके उपयोगके लिए ही है ? क्या यह केवल पूर्वीय मनोविज्ञान और पूर्वीय विचार-पद्धति तथा पूर्वीय रहन-सहनके ही अनुकूल है ? नहीं, ऐसा कतई नहीं है। इसका रिकार्ड देखनेसे पता चलता है कि निरक्षर किसानोंने, औद्योगिक मजदूरोंने, शहरमें पले बुद्धिजीवियोंने, साधु-संतोंने और अत्यन्त साधारण कोटिके मनुष्योंने सफलतापूर्वक इसका प्रयोग किया है। अमीरों और गरीबोंने, सम्पत्तिशाली लोगों और सर्वहारा लोगोंने, मांसाहारियों और निरामिषाहारियोंने, युरोपियनों और अमेरिकनोंने, हवशियों और चीनियोंने, जापानियों और भारतीयोंने, आस्तिकों और नास्तिकोंने इसका सफल प्रयोग किया है। राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संघर्षोंमें सफलतापूर्वक इसका प्रयोग किया गया है। व्यक्तिगत रूपसे भी इसका प्रयोग किया गया है, सामूहिक रूपसे भी।"[1]

प्रेमका रास्ता है ही ऐसा :

> असर सोजेमुहब्बतमें न हो यह गैरमुमकिन है।
> शमाका जिस्म घुल जाता है, गर पर्वाना जलता है !

× × ×

आप शायद कहें कि रास्ता तो यह माकूल है, पर सवाल है कि क्या अपराधियोंपर, डाकुओंपर, लुटेरोंपर, चोरोंपर, बदमाशोंपर, हत्यारोंपर भी इसका प्रयोग किया जा सकता है ?

जरूर किया जा सकता है।

और जब हम अपराधकी तहमें घुसेंगे, तो देखेंगे कि हम सब एक ही नावपर बैठे हैं ! यह बात दूसरी है कि किसीका अपराध सेरभर है, किसीका सवा सेर !

एक स्त्री हाजिर की गयी ईसाके सामने।

सामने खड़ी क्रुद्ध भीड़की ओर देखकर पूछा ईसाने : क्यों भाई, बात क्या है ?

---

१. रिचर्ड बी० ग्रेग : दि पावर ऑफ नान-वायलेंस, १९३८, पृष्ठ ३२।

लोग चिल्ला पड़े : यह पतिता है, दुष्टा है। इसे हम जिन्दा नहीं देखना चाहते !

ईसा बोले : ठीक है। तुम इसको दण्ड दो, पर मेरा कहना सिर्फ इतना ही है कि इसपर पहला पत्थर वह मारे, जिसने कभी कोई पाप न किया हो !

अरे, यह क्या हुआ ?

सारा मैदान साफ ! सबने अपना-अपना रास्ता नापा !

हाथमें लिये हुए उनके सारे पत्थर अपने-आप उनके हाथोंसे नीचे गिर गये !

× × ×

विनोबा कहते हैं कि पिछले युगोंमें क्रोध और कामका प्राबल्य था, जिसके चलते ऋषियोंमें भी दुर्वासा और विश्वामित्र दीख जाते थे, आजके युगमें प्राबल्य है लोभका।

और यह लोभ होता है, जर और जमीनको लेकर।

आजका युग पैसेका युग है :

टका धर्मष्टका कर्म टका हि परमं पदम्।
यस्य गृहे टका नास्ति हाटके टकटकायते !

जिसके पास पैसा है, उसकी तूती बोलती है—सर्वे गुणाः काञ्चन-माश्रयन्ते ! जीवनके सारे व्यवहार आज पैसेपर आश्रित हैं। इसलिए हर कोई चाहता है, पैसेवाला बनना। समाजने आज पैसेको इतनी प्रतिष्ठा दे रखी है कि हर नागरिक **येन केन प्रकारेण** अपनी हवेली खड़ी करनेको उत्सुक है, 'बैंक-बैलेंस' बढ़ानेको उत्सुक है।

पैसेकी यह माया मनुष्यसे कौन-कौनसे कुकर्म नहीं कराती ?

ईमानदारीसे तो कोई लखपती बन नहीं सकता, दन्द-फन्द, छल-प्रपंचसे ही पैसेका अम्बार लगता है। आज सत्ता और कानून, सब कुछ पैसेके इशारेपर नाचते हैं। पैसेवाले ही अपने हितोंकी दृष्टिसे कानून बनवा

लेते हैं; जिसके चलते पैसेवाला चोरी करके भी 'चोर' नहीं कहलाता, दूसरोंके पसीनेकी कमाईको हड़पकर भी 'भला आदमी' बना रहता है, पर गरीबको ईमानदारीकी 'सूखी रोटी' पानेके लाले पड़े रहते हैं ! इस अन्धेर-गर्दीके कारण एक ओर सम्पत्तिका अम्बार लगता चलता है, दूसरी ओर अभावोंपर अभाव बढ़ते चलते हैं ।

× × ×

हेनरी जार्ज (१८३९—१८९७) ने अपने जीवनके दस वर्ष लगा दिये यह खोजनेमें कि आखिर ऐसा क्यों है कि एक ओर समृद्धि अपनी चरम सीमापर है, तो दूसरी ओर दरिद्रता ।

उसने देखा कि भूमिकी दुर्लभताके कारण भूमिके मूल्यमें गगन-चुम्बी वृद्धि होती चलती है, यही इसका मूल कारण है ।

कहता है वह : कल्पना कीजिये कि सभ्यताके विकासके साथ एक छोटा-सा ग्राम दस सालमें एक बड़े नगरके रूपमें परिवर्तित हो जाता है । वहाँ घुड़बग्घीके स्थानपर रेल आ जाती है, मोमबत्तीकी जगह बिजली । आधुनिकतम मशीनें वहाँ लग जाती हैं, जिनसे श्रमकी शक्तिमें अत्यधिक वृद्धि हो जाती है । अब किसी लक्ष्मीभक्त व्यापारीसे पूछिये : "क्या इन दस वर्षोंमें व्याजकी दरमें वृद्धि होगी ?"

वह कहेगा : "नहीं ।"

"साधारण श्रमिककी मजदूरी बढ़ेगी ?"

"नहीं । वह उलटे घट सकती है ।"

"तब, किस वस्तुका मूल्य बढ़ेगा ?"

"मूल्य बढ़ेगा भूमिके भाटकका; जाओ, वहाँ एक भूमिखण्ड लेकर उसपर अपना अधिकार जमा लो !"

हेनरी जार्ज कहता है कि अब आप यदि उस व्यापारीकी बात मान लें, तो आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा । आप मौजसे बैठिये और अपना सिगार फूँकिये, अथवा नेपुल्स या मैक्सिकोके कोढ़ियोंकी तरह पड़े रहिये, चाहे आकाशमें उड़िये, चाहे समुद्रमें गोते लगाइये, रत्तीभर हाथ डुलाये

बिना, समाजकी सम्पत्तियोंमें एक कौड़ीकी भी वृद्धि किये बिना, आप दस वर्षके भीतर समृद्धिशाली बन जायँगे ! नये नगरमें आपका महल खड़ा होगा और उसके सार्वजनिक स्थानोंमें होगा एक भिखारी-निवास ![1]

भूमिका भाटक किस गतिसे बढ़ता है, आपको पता है ?

शिकागोमें चौथाई एकड़का एक भूमिखण्ड सन् १८३० में २० डालरमें खरीदा गया, १८३६ में वह २५००० डालरमें बेचा गया और १८९४ में उसका मूल्य आँका गया साढ़े बारह लाख डालर !

× × ×

जमीनका यह हाल है, और जरका ?

'टाकाय टाका बाढ़े !' पैसेसे पैसा बढ़ता है। शोषण, उत्पीड़न और बेईमानीके द्वारा एक ओर पैसेमें वृद्धि होती चलती है, दूसरी ओर दरिद्रता बढ़ती चलती है।

मार्क्सने पूँजीका विश्लेषण करते हुए पूँजीवादके भयंकर रूपका चित्रण किया है और बताया है कि पूँजीवादी समाजमें कैसे कुछ थोड़े-से हाथोंमें पूँजी एकत्र होती चलती है और अधिकांश जनता सर्वहारा बनती चलती है। उसने **श्रमका मूल्य** और **अतिरिक्त मूल्यका** सिद्धान्त स्पष्ट करते हुए बताया है कि पूँजीपति किस प्रकार शोषण करता चलता है और मजदूर किस प्रकार शोषित होता चलता है ! स्ट्रैचीके शब्दोंमें : "वस्तुस्थिति यह है कि मजदूरी करनेवाला श्रमिक अपना श्रम पूँजीपतिके हाथ बेचता है और पूँजीपति उस श्रमशक्तिको बेचता है, जो उस वस्तुमें निहित है।"[2] छहके बजाय दस घण्टे श्रमिकसे काम लेकर पूँजीपति अपनी हवेली खड़ी करता है। पूँजीपतिका उत्पादन होता है अतिरिक्त मूल्यके लिए, उपयोगिताके लिए नहीं। इसका नतीजा होता है, किसानोंका असहाय होना और बेकारोंकी पलटन खड़ी होना।

× × ×

---

१. हेनरी जार्ज : प्रोग्रेस एण्ड पावर्टी, पृष्ठ २९४।

२. जान स्ट्रैची : दि नेचर ऑफ दि कैपिटलिस्ट, पृष्ठ २७९।

'पेनल रिफार्मर'के कोई बीस साल पुराने एक अंकमें अन्नमलई विश्व-विद्यालयके एस० आर० एन० बदरीरावने अपराधकी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि (The Socio-economic background of crime) का विवेचन करते हुए लिखा है कि 'सारा झमेला है सम्पत्तिका । व्यक्तिगत सम्पत्ति जिस समाजकी आधारशिला है, और जो समाज व्यक्तिगत प्रेरणाके पावित्र्यमें तथा उसके भीतर रहनेवाले जीवन-संघर्षमें विश्वास करता है, उसमें अनेक वर्ग बनने ही वाले हैं, जिनमें दो वर्ग प्रमुख होंगे : (१) सम्पन्न ("Haves") और (२) दरिद्र ("Have-nots")। यह दरिद्र वर्ग अभावोंकी चक्कीमें दिन-रात पिसता रहेगा । कलकी कौन कहे, शामके भोजनकी भी जुगाड़ नहीं रहेगी उसके सामने ! इसी वर्गमें असन्तोष, घृणा और अपराधके कीड़े तीव्रतासे पनपते हैं ! जिनके पेटके लिए दाने-दानेके लाले पड़े हैं, जो नंगे और उघारे बदन शीतमें ठिठुर रहे हैं, सड़क ही जिनका बिस्तर है, वे यदि उस समाज-व्यवस्थाके प्रति विद्रोह कर उठें, तो आश्चर्य क्या, जिसमें थोड़े-से आदमी गुलछर्रे उड़ाते हैं और शेष जनताको गरीबीमें मरनेको छोड़ देते हैं ! किस कामकी है वह अर्थ-व्यवस्था, जो दो वर्गोंके बीच इतनी गहरी खाई बनी रहने देती है ? सम्पन्नताके बीच यह दरिद्रता क्यों ? आज क्यों ऐसा हो रहा है कि एक ओर लाखों आदमी भूखों मर रहे हैं और दूसरी ओर हजारों टन खाद्य-पदार्थ समुद्रमें व्यर्थ ही डुबाये जा रहे हैं ? अति-उत्पादन और न्यून-उपभोगका यह तमाशा क्यों ?'

तो यह जमीन और जर, भूमि और सम्पत्ति है, हमारे सारे अपराधोंकी मूल बुनियाद !

× × ×

'पेनल रिफार्मर'के इसी अंकमें बाबू श्रीप्रकाशने मोकू नामके एक 'जेलके पंछी'की कहानी देते हुए कहा है कि 'हमारे आजके समाजका ढाँचा पूँजीवादी है । उसकी दृष्टिमें सभी गरीब आदमी अपराधी हैं !

जेलके सारे नियम भी इसी दृष्टिसे बनाये गये हैं कि [illegible] ही रखा जाना है !'

कैसी गलत धारणाएँ हैं ये हमारे समाजकी !

अपराध-शास्त्रियोंके मतसे अपराधोंकी उत्पत्तिके एक-दो कारण नहीं होते। मनष्यकी आनुवंशिक स्थिति, मानसिक स्थिति, शारीरिक स्थिति, उसकी प्राकृतिक परिस्थिति, आर्थिक परिस्थिति, सामाजिक परिस्थिति, राजनीतिक परिस्थिति भी उसके लिए जिम्मेदार होती है। धार्मिक असहिष्णुता और अन्धविश्वास, आधुनिक सभ्यता, कल-कारखाने और मनोरंजनके प्रकार आदि भी उसके लिए जिम्मेदार हैं।

कारण जो भी हो, जनताको अपराधके चलते कष्ट भुगतना ही पड़ता है, चाहे प्रत्यक्ष रूपमें, चाहे अप्रत्यक्ष रूपमें। फिर वह चाहे राजद्रोहके रूपमें हो, चाहे चोरी, डकैती या व्यक्तिगत सम्पत्तिकी हानिके रूपमें हो; चाहे वह ताजीरी पुलिस और अदालतोंके भारवहनके रूपमें हो, चाहे भय या आतंकके रूपमें हो ![१]

तो जरूरत है इस बातकी कि अपराधोंके आतंकसे जनताको छुटकारा मिले। पर वह कोई दाल-भातका कौर तो है नहीं। उसके लिए सारे आर्थिक ढाँचेमें, सारे सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक ढाँचेमें परिवर्तन लाना होगा। समाजमें प्रचलित गलत मूल्योंकी प्रतिष्ठा घटाकर ऐसे श्रम-निष्ठ समाजकी रचना करनी होगी, जो वर्ग-संघर्ष और शोषणकी समाप्ति कर जन-जनमें प्रेम, सद्भाव, मैत्री और करुणाकी भावनाका प्रसार करे।

× × ×

भूदान-आन्दोलन, सर्वोदय-आन्दोलन ऐसे ही नये समाजकी रचनाके लिए प्रयत्नशील है। सत्य, प्रेम और करुणाका ही मार्ग ऐसा है, जिससे कि अपराध और हिंसापर विजय प्राप्त की जा सकती है। भारतीय और पूर्वीय ज्ञान तो यह कहता ही है, आधुनिक मनोविज्ञान भी अब मानने लगा है कि अहिंसा ही हिंसाको रोक सकती है। राग, द्वेष, क्रोध, भय,

---

१. मदरलैण्ड और क्रेसी : प्रिन्सिपल्स ऑफ क्रिमिनालॉजी, पृष्ठ २०-२१।

आवेश, प्राणरक्षा आदिके लिए की गयी हिंसाका प्रतिकार अहिंसासे करनेमें ही बुद्धिमानी है।[१] नित्शे कहता है कि बुद्धने 'न हि वेरेन वेरानि...' की जो बात कही है, उसमें नैतिकताका उपदेश नहीं है, वल्कि है शरीर-विज्ञानका उपदेश ![२] चिकित्सा-विज्ञान भी मानने लगा है कि क्रोधका उत्तर प्रेमसे देनेसे स्वास्थ्यको लाभ पहुँचता है ! रोगोंसे बचना है, तो प्रेम करो ।[३]

जब ऐसी बात है कि ज्ञान और विज्ञान दोनों ही एक ही नतीजेपर पहुँचते हैं कि हिंसाका तरीका बुरा है, अहिंसाका तरीका अच्छा है, तो हम क्यों न प्रेम, करुणा और क्षमाका रास्ता अपनायें ?

हाँ, यह अवश्य है कि इसमें त्याग और बलिदान पग-पगपर करना पड़ेगा, और अहंकारको उठाकर ताकपर रख देना होगा। कारण :

चाखा चाहे प्रेम रस, राखा चाहे मान।
एक म्यानमें दो खडग, देखा सुना न कान ॥

१. रिचर्ड बी० ग्रेग : दि पावर ऑफ नॉनवायलेन्स, पृष्ठ ६४।
२. नित्शे : एक होमो, खण्ड १७, १९२४, पृष्ठ २१।
३. ग्रेग : दि पावर ऑफ नॉनवायलेन्स, पृष्ठ २०६—२१८।

तरीके-फनामें कदम रखके पूछो,
मुहब्बतकी रस्में, मुहब्बतकी राहें!

'भिण्ड-मुरेनाकी अपराध-परम्पराओंका आतंक मध्य-भारतपर ही नहीं, उत्तर प्रदेश और राजस्थानपर भी छाया हुआ है। इस आतंकने उक्त शासनोंको विचलित-चिन्तित बना दिया है। कुछ समयसे इन तीनों प्रदेशोंने मिलकर सम्मिलित प्रयास भी किये हैं, किन्तु आतंक मर्यादित अवश्य बना है, उसका अन्त नहीं आ पाया है।...दीक्षित समितिकी रिपोर्टसे आतंकके अन्त लानेके मूलाधारोंका अपेक्षित उपाय विदित नहीं होता।...उसके लिए जिस मनोवैज्ञानिक प्रयासकी योजना आवश्यक है, वह समितिने सूचित नहीं की, संचित नहीं की। जहाँतक हम जान सके हैं, आतंककारी...समझदार, उदार और लोकप्रियता भी रखते हैं। यही कारण है कि निरन्तर १५ वर्षोंसे शासकीय प्रयत्नोंके होते हुए भी वे सुरक्षित बने हुए हैं और उन्हें आत्मरक्षाके लिए निरन्तर अपराधी बनते जानेको विवश होना पड़ रहा है।...क्या...उनका विश्वास संपादन कर उन्हें मानवताकी ओर नहीं पलटाया जा सकता?...हिंसाका उपाय अहिंसासे नहीं किया जा सकता?...क्या ही अच्छा हो कि तीनों सम्बद्ध प्रदेश एक साथ मिलकर आतंककारियों (बागियों) से किसी प्रकार सम्पर्क स्थापित करें और उनका हृदय-परिवर्तन करनेका, पश्चात्ताप करनेकी ओर प्रेरित करनेका प्रयास करें।...यह असम्भव नहीं है।...आवश्यकता है परिस्थिति, वातावरण पलटनेकी। यदि शासन अपनेको अक्षम अनुभव करता हो, तो हमारा यह भी सुझाव है कि वह आचार्य विनोबासे अनुरोध कर उन्हें उस क्षेत्रमें आमंत्रित करें और उन्हें आतंककारियोंसे सम्पर्क

स्थापित करनेकी आवश्यक उचित सुविधाएँ सुलभ करे। हमारा अनुमान ही नहीं, विश्वास भी होता है कि इस उत्तम, सरल और मनोवैज्ञानिक उपायसे सम्भव है यह विषम समस्या सुलझ सके और शासनके संयुक्त प्रयास, व्यय-भार, चिन्ता, हानि, आतंकका अन्त आ जाय।..."

यह है उस सम्पादकीय टिप्पणीका अंश, जो उज्जैनके मासिक 'विक्रम'ने लिखी थी जुलाई, १९५३ के अपने अंकमें।

× × ×

सन् '५६ में भाई महावीर सिंह, लोकसेवक इटावाने बाबा राघवदासके सामने प्रस्ताव रखा कि चम्बल घाटी-क्षेत्रका आतंक मिटानेके लिए हमें अहिंसक शक्तिका संघटन और प्रयोग करना चाहिए। पर बाबाजीके चल बसनेसे शान्ति-प्रयास आगे नहीं चल सका।

आजसे तीन साल पहले मध्य-प्रदेशके डिप्टी-इंस्पेक्टर-जनरल पुलिस कोहिली साहबने अपनी सरकारको यह सुझाव दिया कि हिंसासे हिंसा मिटानेका प्रयोग तो हम कर चुके, जरूरत है अहिंसाके प्रयोगकी। आचार्य विनोबा भावेको बुलाया जाय इसके लिए!

सन् '५९ में इधर आगराके भाई चिम्मनलालने उत्तर प्रदेशीय शान्ति-शिविर, पसना (इलाहाबाद) में इसकी बात उठायी, उधर भिण्ड-मुरेनावाले लोगोंने दौड़-धूप शुरू की। हरिसेवक मिश्र कश्मीर दौड़ गये बाबाके पास। ग्वालियरके होनेके नाते मेजर जनरल यदुनाथ सिंह पहलेसे ही इस विषयमें दिलचस्पी ले रहे थे। डॉक्टर सुशीला नायरने भी दिलचस्पी ली इस समस्यामें।

आखिर पठानकोटमें सर्व-सेवा-संघकी बैठकमें बाबाके सामने यह चर्चा आयी और प्रोग्राम बन गया चम्बल घाटीमें बाबाके दौरेका। तहसीलदार सिंहने फाँसीकी कोठरीसे जो पत्र लिखा, उसने भी उन्हें प्रेरित किया कि वे इस आतंकग्रस्त इलाकेमें यहाँके निवासियोंको सत्य, प्रेम और करुणाका सन्देश देनेके लिए पहुँचें।

× × ×

५ मई, १९६० को बाबा आगरा पहुँचे।

बोले : आज सवेरे किसीने हमसे पूछा कि 'आप डाकू-क्षेत्रमें जा रहे हैं ?' हमने कहा : जी न, हम सज्जनोंके क्षेत्रमें जा रहे हैं, डाकुओंके क्षेत्रमें नहीं! डाकू कौन है, कौन नहीं, इसका फैसला करनेवाला तो परमेश्वर है।

८ मईसे बाबाकी सज्जन-क्षेत्रकी यात्रा प्रारम्भ हुई। उसकी समाप्ति हुई ८ जूनको, जब आत्मसमर्पण करनेवाला पहला बागी रामऔतार सिंह जलेश्वरभाईके साथ चल पड़ा आगरा जेलमें बन्द होनेके लिए।

प्रसन्नताकी बात है कि उत्तर प्रदेश तथा मध्यप्रदेशकी सरकारोंने, उनके अधिकारियोंने तथा पुलिसने बाबाके इस शान्ति और प्रेमके अभियानमें योगदान किया और अपने कानूनको थोड़ा ढीला करनेका भी खतरा उठाया!

× × ×

विनोबाके इस प्रेम-अभियानकी फलश्रुति ?

शस्त्रास्त्रों सहित निम्नांकित बीस बागियोंका आत्मसमर्पण :

१० मई	१. रामऔतार सिंह	केंजरा	फतेहाबाद	मुरेना
१७ मई	२. पातीराम	कुरेठा	सिलावली	मुरेना
,,	३. श्रीकिशन	सिलावली		मुरेना
,,	४. मोहरमन	कनेरा	अटेर	भिण्ड
१८ मई	५. लच्छी	खड़ीत	गोरमी	भिण्ड
,,	६. परभू	खड़ीत	गोरमी	भिण्ड
१९ मई	७. लोकमन (लुक्का)	महुआ	बाह	आगरा
,,	८. कन्हई	खेड़ा राठौड़	बाह	आगरा
,,	९. तेजसिंह	मोंधना	अटेर	भिण्ड
,,	१०. डरेलाल	बसई	पिनहट	आगरा
,,	११. रामसनेही	निवारी	पावई	भिण्ड
,,	१२. दुर्जन	दीनपुरा	कोतवाली	भिण्ड
,,	१३. विद्याराम	असामपुरा	अटेर	भिण्ड

१९ मई	१४. भूपसिंह	अच्छाई	गोरमी	भिण्ड
,,	१५. जंगजीत	रामदासपुरा	फीरोजाबाद	आगरा
,,	१६. मटरे	डरावली	राजाखेड़ा	भरतपुर
,,	१७. भगवानसिंह	रूअर	महुआ	मुरेना
२० मई	१८. रामदयाल	खोहरी	बाह	आगरा
,,	१९. बदनसिंह	खोहरी	बाह	आगरा
२६ मई	२०. खचेरे	सिकाटा	उमरी	भिण्ड

× × ×

२० मईको करणसिंहने भी आत्मसमर्पण किया था, पर वारण्ट न होनेसे पुलिस उसे भिण्ड जेलमें नहीं ले गयी। खचेरेको यद्यपि ४ जूनको अधिकारियोंने वारण्ट न होनेकी बात कहकर छोड़ दिया था, पर बादमें उसे गिरफ्तार कर लिया।

× × ×

"डाकू क्यों शरण आये ?" इस प्रश्नकी चर्चा करते हुए थाना कसनाके पड़ावपर २२ जून, '६० को विनोबाने कहा :

बहुतसे लोग ऐसी बात करते हैं कि डाकुओंको रियायत मिली या मिलनेका भरोसा हुआ, इसीलिए वे शरण आये होंगे या पुलिसकी वजह-से पीड़ित हुए होंगे, इसलिए आये होंगे। ऐसा इसलिए होता है कि मनुष्यके मनमें यह भाव रहता है कि 'हमारा परिवर्तन तो नहीं हुआ, हम तो पापोंको छोड़ नहीं सके, दूसरोंने ऐसा कैसे किया होगा ?' लेकिन वे समझते नहीं हैं कि अन्दरका और बाहरका, दोनों कारण मिलकर ही काम बनता है।

महात्मा तुकारामकी जिन्दगीके पहले २१ साल संसारमें गये। उनकी पत्नी मर गयी, तरह-तरहकी आपत्तियोंसे वे गुजरे। लेकिन आज महाराष्ट्र-की हर झोपड़ीमें 'ज्ञानबा तुकाराम' का जप चलता है। भगवान्‌के नामसे उनका नाम मिल गया है। लेकिन ये लोग क्या कहते हैं ? "तुकारामपर आफत गुजरी, इसलिए वे संसारसे विरक्त हो गये। उन्हें वैराग्य हो
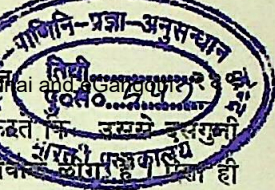
आया !” ऐसा कहनेवाले यह खयाल नहीं करते कि उसमें [illegible] विपत्ति आनेपर भी बेशर्मीसे संसारमें फँसे रहनेवाले लोग हैं। ऐसा ही मान लिया जाय कि तुकारामको आपत्तिने परमेश्वरकी तरफ ढकेल दिया। माना कि डाकुओंको आपत्तिने प्रेरणा दी मेरे पास आनेकी। गीतामें भी भगवान्‌ने कहा है : ‘तू दुःखमय संसारमें आया है, तो तू क्यों नहीं मेरी भक्ति करता है ?’ दुःखका उपयोग पश्चात्ताप होनेमें हुआ, तो उस पश्चात्तापकी कीमत कम नहीं होती। किसीका लड़का मर गया, तो वह विरक्त होता है, भोगपरायणता छोड़ता है। लेकिन बहुत लोग ऐसे भी होते हैं, जिनका लड़का मर जाता है, तो कहते हैं ‘ठीक है ! दूसरा होगा।’ उनको तुरन्त विरक्ति नहीं होती।

होता क्या है कि आज हम चाहते ही नहीं कि दुनियामें कोई सत्कार्य बने। इसलिए दूसरेमें विश्वास नहीं रखना चाहते हैं। इसलिए नहीं कि हमारा हृदय खराब है, लेकिन हमारा अनुभव ही वैसा है। मैं मानता हूँ कि उन डाकुओंके मनमें परिवर्तन हुआ है। ‘यह जिन्दगी कुत्तेकी-सी है’—यह समझकर ही उन्होंने समर्पण किया, माना; लेकिन समर्पण तो किया। जितनी संख्यामें उन्होंने समर्पण किया, उतनी मात्रामें लोगोंको राहत मिली। यह सब परमेश्वरकी कृपा है।

भिण्ड-मुरेनामें जो कुछ हुआ, वह सब परमेश्वरकी ही कृपा है। जहाँतक मेरा अनुभव है, इसका सोलह आने श्रेय परमेश्वरको है। पर अगर श्रेय बाँटना ही हो, तो पहला श्रेय उन डाकुओंको देना चाहिए, जो शरण आये। दूसरा श्रेय पुलिसको है, अगर वह चाहती, तो यह चीज नहीं बनने देती। तीसरा श्रेय है मेरे साथियोंको और कार्यकर्ताओंको, जो दूर-दूर जंगलमें जाकर उनसे मिले और उनको विचार समझाया। चौथा श्रेय मुझे है—रुपयेमें, १०० नये पैसेमें १ नये पैसे जितना ! और वह भी भगवान्‌के चरणोंमें रखकर, मुक्त होकर मैं आगे आया हूँ।

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये !

अब हम करें क्या ? : ६ :

चम्बल घाटी-क्षेत्र आज आतंकग्रस्त है ! जिधर देखिये दुःख, वेदना, पीड़ा, हाहाकार !

माताएँ बिलख रही हैं, बहनें रो रही हैं, बच्चे सिसक रहे हैं !

सवाल है कि ऐसी स्थितिमें अब हम करें क्या ?

एक ही उत्तर है : सेवा । जो भी पीड़ित है, जो भी त्रस्त है, वह हमारी सेवाका सबसे पहला हकदार है । फिर वह कोई भी क्यों न हो, वह बागी हो, पुलिसवाला हो, बागियोंका मुखबिर हो, पुलिसका मुखबिर हो, ग्राम-रक्षा दलवाला हो, पैसेवाला हो या सर्वहारा हो ! इन्सानकी सेवा हमें करनी है इन्सानके नाते !

× × ×

इस क्षेत्रमें तीन चीजें मूल हैं : (१) गरीबी, (२) वैमनस्य और (३) आतंक ।

मध्य प्रदेशके अन्य स्थानोंकी अपेक्षा भिण्ड-मुरेनामें जमीन कम है । सारे प्रान्तमें जहाँ प्रति वर्गमीलकी आबादी ३०० से कम है, वहाँ भिण्डमें ३२५ है । यद्यपि अन्य प्रदेशोंमें आबादी यहाँसे कहीं ज्यादा है : उत्तर प्रदेशमें है ५५०, बिहारमें है ५७५, तमिलनाडमें है ६००, बंगालमें है ७५० और केरलमें है ९२५ ।

जमीनपर लोगोंकी निर्भरता अधिक है, कटावसे भी काफी नुकसान है । खेतीकी जमीन उत्तरोत्तर घटती जाती है । बी० आर० स्कूल ऑफ सोशियालॉजी एण्ड इकॉनॉमिक्सने हालमें जो शोध की है, उसके अनुसार पिछले ७० वर्षोंमें खेतीवाली जमीन ५२·८ प्रतिशतसे घटकर रह गयी है ३६·७ प्रतिशत और परती जमीन ४७·२ प्रतिशतसे बढ़कर हो गयी है ६३·३ प्रतिशत ।

खेतीकी स्थिति यह है। उद्योग-धन्धे यहाँपर नहींके बराबर हैं। आमदनीके जरिये अत्यन्त सीमित हैं। इसीलिए यहाँ ऐसी कहावत मशहूर है कि घरमें तीन भाई हैं, तो एक करेगा खेती, दूसरा ... फौजमें और तीसरा बन्दूक लेकर बन जायगा 'बागी'।

× ×

तो पहली समस्या है, गरीबीको दूर करनेकी।

सरकारका इस दिशामें जो कर्तव्य है सो तो वह करे ही, करेगी भी; बाबा यह चाहते हैं कि यहाँ भूदानका काम चले, सम्पत्तिदानका काम चले, सर्वोदय-पात्रका काम चले और चले ग्राम-स्वराजका काम। सारा गाँव एक परिवार बन जाय।

ईसाकी बात : दो कोटमेंसे एक उसे दे दो, जिसके पास एक भी न हो !

जमीनवाले, जरवाले, भूमिवाले, पैसेवाले अपनी सम्पत्ति बाँटना सीख लें, अपनी मिल्कियत मिटाना सीख लें, मिल-बाँटकर खाना-पीना सीख लें, तो गरीबी कबतक टिकेगी ?

और वैमनस्य ?

इस विषवृक्षकी जड़ें बड़ी गहरी हैं। पुश्त-दरपुश्त दुश्मनीकी आग भभकती रहती है। यह समस्या केवल चम्बल-क्षेत्रमें ही हो, सो नहीं। देशके विभिन्न अंचलोंमें इसका विकृत रूप दिखाई पड़ता है। रामदुलार शर्मा उस दिन बता रहे थे कि उनके गाँवके पास दो परिवारोंमें तीन पुश्तकी दुश्मनी उन्होंने आँखों देखी है। एक ओरका लड़का जैसे ही कसरत करके पुष्ट होता है, वैसे ही दुश्मनका खून करके अपने पिताकी कब्रपर रक्त चढ़ाकर उसका तर्पण करता है ! दूसरी ओरसे भी वही हाल है ! कैसा बीभत्स है यह दृश्य !

इस वैर-विरोध और झगड़ेको दूर किये बिना हमारा काम चलनेवाला नहीं। इसकी तहमें जो अन्याय और अत्याचार छिपा है, वह भी दूर करना पड़ेगा। और यह दूर हो सकता है केवल प्रेमसे, करुणासे, क्षमासे।

इसके लिए गाँव-गाँवमें सत्संगका, सत्‌शिक्षाका आयोजन हो। प्रेम, करुणा और क्षमाकी भावना भरनेवाले गीतों और भजनोंका घर-घरमें प्रचार हो। बच्चे, जवान, बूढ़े—सबके मानसमें ये भाव भरे जायँ। रामायण, भागवत जैसे धर्मग्रन्थोंसे दया, करुणा और क्षमा सिखानेवाले प्रसंग पढ़-पढ़कर लोगोंके हृदयमें बैठा दिये जायँ। ऊँच-नीच, कुलीन-अकुलीन, छोटे-बड़े आदि सभी भेद मिटाये जायँ।

वैर, अन्याय और अत्याचार मिटाने हम जायँगे, तो स्वार्थी व्यक्ति हमारा विरोध करेंगे, हमें मारने-पीटनेको आमादा होंगे, पर हमें शान्तिसे उनका वार सहना होगा और प्रेमसे उन्हें जीतना होगा।

रही बात आतंककी।

उसकी कारगर दवा है—शस्त्र-त्याग।

बन्दूकोंकी खैरात तो रोकी ही जाय, जो बन्दूकें अभी लोगोंके पास हैं, वे भी जमा करवा लेनेका प्रयत्न हो। 'सच्ची वीरताके लिए बन्दूककी कतई जरूरत नहीं', यह भाव बच्चे, बूढ़े, जवान हरएकमें भरना होगा। सबमें निर्भयताका भाव लाना जरूरी है।

तो—

हमें मिटाना है यहाँका दारिद्रय। हमें मिटाना है यहाँका वैमनस्य। हमें मिटाना है यहाँका आतंक।

कैसे?

वही—प्रेम, दया और दुआके रास्ते।

वही—एक कोट उसे देकर, जिसके पास एक भी नहीं है!

वही—सबके सहयोगसे, सबके प्रेमसे।

प्रेमसे पत्थर भी पसीज सकता है, आदमी न पसीजेगा? हमें देखना यही है कि सेवाका ऐसा पुण्य अवसर हम खो न बैठें!

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्॥

आत्मसमर्पणके बाद

मई-जून १९६० में चम्बलके बेहड़ोंमें हिंसाने अहिंसाके चरणोंमें घुटने टेके। सारा विश्व चमत्कृत हो उठा अहिंसाके इस चमत्कारपर। देश-विदेशसे विनोबाके पास बधाइयोंका ताँता लग गया।

सबको आशा बँधी कि इस प्रेरक घटनासे भारतका ही नहीं, सारे संसारका कल्याण होगा, दुर्जन सज्जन बनेंगे, डाकू साधु बनेंगे।

पर हुआ क्या ?

गाली और गोली जिसका अस्त्र है, उस पुलिसको लगा कि यह तो उसकी प्रतिष्ठापर ठेस पहुँचानेवाली घटना घट गयी ! पूँजीपतियोंके अखबारोंको भी ऐसा ही लगा। उधर हमारे जनरल साहब भी जाते रहे !

नतीजा यह हुआ कि जहाँ वातावरण सुधरनेकी पूरी आशा थी, वहाँ उल्टा ही वातावरण बना दिया गया। आत्मसमर्पणकारी बागियोंके प्रति भी दुर्व्यवहार करनेमें कोई कसर न छोड़ी गयी—एकको तो बिजली-के धक्केतक लगाये गये, कुछपर बन्दूकोंके कुन्दोंके प्रहार किये गये। पुलिसने 'खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे'की कहावत चरितार्थ की।

रामऔतार सिंहको फाँसीकी सजा सुनायी गयी, पर बादमें अपीलमें वह बरी हो गया। और भी कई आत्मसमर्पणकारी बागी छूट गये हैं। वे श्रमाधारित जीवन बिता रहे हैं। औरोंपर अभी मुकदमे चल रहे हैं।

हमें सिर्फ इतना ही अफसोस है कि स्वतन्त्र भारतमें अहिंसाके इस अद्‌भुत प्रयोगको विफल करनेकी भरपूर चेष्टा की जा रही है !

फिर भी हम आशा करते हैं कि कभी-न-कभी अहिंसाकी यह छोटी-सी किरण मानवताको प्रभावित करनेमें सफल होगी और जरूर होगी। कारण, न हि कल्याणकृत्कश्चित् दुर्गतिं तात गच्छति।

आत्मसमर्पणकारी बागियोंके मुकद

नवम्बर १९६३ तककी स्थिति

श्री विनोबाजीके समक्ष जिन २० बागियोंने आत्मस था, उनमें निम्नलिखित १३ व्यक्ति मुकदमोंसे बिलकुल बरी

सर्वश्री रामऔतार सिंह, खचेरे, मोहरमन, पातीर, लक्ष्मीनारायण (लच्छी), प्रभूदयाल, श्रीकृष्ण और जंगजीत ही

श्री रामदयाल, वदनसिंह, मटरे और भूपसिंहको हाईकोर्टने मुक्त करनेका आदेश दे दिया है।

निम्नलिखित ७ व्यक्ति या तो सजा भुगत रहे हैं या धीन हैं :

श्री लोकमन (लुक्का)	२० सालकी कैद	: जिलाजेल,
श्री तेजसिंह	२० ,,	: ग्वालियर जे
श्री डरेलाल	२० ,,	,,
श्री कन्हई	विचाराधीन	,,
श्री विद्याराम	,,	,,
श्री भगवान सिंह	,,	,,
श्री रामसनेही	,,	जयपुर

चम्बल घाटी शांति समिति इन लोगोंकी पैरवीमें तो करती ही है, इसके अलावा मुक्त होनेवाले बागियोंके पुन की भी व्यवस्था करती है। पीड़ित परिवारोंकी देखभाल और शिक्षा-दीक्षामें भी वह सहायता करती है।

समितिको अपने काममें अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ, गांधी स्मारक निधि, उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक निधि, मध्यप्रदे मण्डल, उत्तर प्रदेश सर्वोदय मण्डल, राजस्थान समग्र सेवा भारत भूदान-यज्ञ पर्षद, व्रजग्राम सेवा-मण्डल, नगरपालिका अनेक संस्थाओंका भी सतत सहयोग मिलता रहता है।

: ३

म्बल-क्षेत्रमें अपराधोंकी स्थिति

१९५७ से १९६१ तक ५ सालके भीतर भिण्ड, मुरेना, ; शिवपुरी और दतिया जिलोंमें अपराधोंकी स्थिति क्रमशः इस ही :

के : २७५, १६८, १९७, २५१, १८७।
ाएँ : ६३, ४६, ७५, ४७, ७४।
हरण : ५८, ४३, ८६, ५८, ८९।
कू मारे गये : ६४, ३२, ५८, ३५, ४९।
कू पकड़े गये : ३९५, २१४, ३४०, २१५, ३०७।

जिलेकी स्थिति

के : ११२, ४९, ४७, ५६, ३४।
याएँ : ६९, ५४, ४५, ४४, ३९।
पहरण : २१, १०, २५, ४४, ६७।
कू मारे गये : ३९, ८, २५, १४, २४।
कू पकड़े गये : ११६, १२०, ६४, ९३, ७२।

जिलेकी स्थिति

के : १२८, ६१, ६४, १२५, ९९।
त्याएँ : ६२, ५६, ७०, ५४, २९।
पहरण : ३२, २९, ४०, २४, ४०।
डाकू मारे गये : १३, २२, २४, २१, १८।
डाकू पकड़े गये : ५५, १०९, ९३, ६८, १२८।
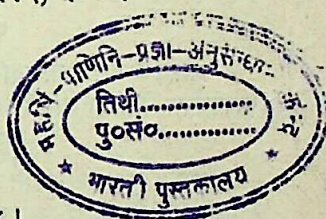
—मध्यप्रदेश सरकारसे
प्राप्त सूचनाके अनुसार।

लेखककी अन्य रचनाएँ

नक्षत्रोंकी छायामें

विनोबाजीके साथ ढाई मासकी पदयात्राके दैनन्दिन, संस्मरण और सन्त-सान्निध्यका सफल चित्रण। पृष्ठ ३४४, मूल्य १.५०।

आर्थिक विचारधारा : उदयसे सर्वोदयतक

इस पुस्तकमें विस्तारसे पढ़िये कि विश्वकी आर्थिक विचारधाराका विकास कैसे-कैसे हुआ और अत्यन्त प्राचीनकालसे लेकर हम सर्वोदयके इस युगतक कैसे पहुँचे हैं? बड़े आकारके ४८८ पृष्ठ, मूल्य ६.००।

प्यारे भूले भाइयो!

पाँच भागोंमें प्रकाशित इन पुस्तकोंमें आत्मजाग्रतिका उद्घोष वेदोंसे लेकर गांधी-विनोबा आदिने किन-किन शक्तिशाली शब्दोंमें किया है, यह बताया है : १. बयरु न कर काहू सन कोई! २. डरनेकी क्या बात है? ३. मक्खन बनाओ अपना दिल। ४. डाकू भी साधु बनते हैं! ५. आओ, सही राहपर। प्रत्येक भागका मूल्य सिर्फ ०.३०।

चलो, चलें मँगरौठ

भारतके प्रथम ग्रामदानी गाँव मँगरौठने कैसी प्रगति की और वहाँका वातावरण कैसे बदला, इसका विस्तृत विवरण। पृष्ठ १४४, मूल्य ०.७५।

जातिवाद और कौमवाद

प्रस्तुत पुस्तकमें जातिवाद और कौमवादका इतिहास और उससे होनेवाली हानियोंका उदाहरण-सहित वर्णन। पृष्ठ ७२, मूल्य ०.५०।

बाबा विनोबा

विनोबाजीकी जीवन-झाँकी कीजिये : १. जब छोटे थे! २. जब आश्रममें थे! ३. जब घूमने लगे! ४. करते क्या हैं? ५. कहते क्या हैं? ६. चाहते क्या हैं? प्रत्येक भागकी पृष्ठ-संख्या ४८, मूल्य ०.४०।

धर्म क्या कहता है?

इस मालाकी निम्न १२ पुस्तकोंमें लेखकने बताया है कि सत्य, प्रेम और करुणा ही सब धर्मोंकी बुनियाद है : १. धर्मोंकी फुलवारी २-३-४. वैदिक धर्म क्या कहता है? (३ भाग) ५. जैन धर्म क्या कहता है? ६. बौद्ध धर्म क्या कहता है? ७. पारसी धर्म क्या कहता है? ८. यहूदी धर्म क्या कहता है? ९. ताओ और कनफ्यूश धर्म क्या कहता है? १०. ईसाई धर्म क्या कहता है? ११. इस्लाम धर्म क्या कहता है? १२. सिख धर्म क्या कहता है? प्रत्येक भागका मूल्य सिर्फ ०.५०।

●

त्रिपुरा के स्कूलों में यौन शिक्षा दी जाएगी

अगरतला। त्रिपुरा सरकार ने अगले शैक्षणिक सत्र से विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में यौन शिक्षा को शामिल करने के प्रस्ताव को स्वीकार